उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम

पर्यटन (337)

1

विद्याधनम् सर्वधनं प्रधानम्

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्था)

ए-24-25, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर - 62, नोएडा - 201309 (उ.प्र.)

वेबसाइट: www.nios.ac.in, टॉल फ्री नंबर 18001809393

सलाहकार-समिति

अध्यक्ष
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

निदेशक
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

उप निदेशक
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

पाठ्यक्रम समिति

प्रो. सैयद इनायत अली ज़ैदी
अध्यक्ष, इतिहास एवं संस्कृति विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

प्रो. सम्पद सवैन
अध्यक्ष, पर्यटन विभाग हास्पिटलिटी एंड
होटल मैनेजमेंट, इंदिरा गांधी नेशनल
ट्राइबल यूनिवर्सिटी, अमरकंटक

डॉ अब्दुल गनी
कुलसचिव
कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर

श्री विपुल सिंह
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
मोतीलाल नेहरू कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

फादर बाबू जोसेफ
अध्यक्ष, इतिहास और पर्यटन विभाग
सेल्सियन कॉलेज, सोनाडा
दार्जिलिंग, प. बंगाल

एच.के. भूटानी
एक्जीक्यूटिव मैनेजर
अशोक होटल आईटीडीसी
नई दिल्ली

डॉ. अज़मत नूरी
शैक्षिक अधिकारी (इतिहास)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

डॉ. सौम्या राजन
शैक्षिक अधिकारी (अंग्रेजी)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

पाठ-लेखक

डॉ. बी.बी. पारिदा
प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, पर्यटन विभाग
बर्दवान यूनिवर्सिटी, बंगाल

प्रो. सैयद इनायत अली ज़ैदी
अध्यक्ष, इतिहास एवं संस्कृति विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

डॉ. रामाश्रय प्रसाद
सहायक प्रोफ़ेसर
भीमराव अम्बेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. अब्दुल कादिर
सहायक प्रोफ़ेसर, पर्यटन, होटल
हास्पिटलिटी एंड हेरिटेज स्टडीज़
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

डॉ. सुभाष आनंद
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. आर. एस. पसरीचा
उप-प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
एम.बी.डी.ए.वी. सीनियर
सेकेण्डरी स्कूल, नई दिल्ली

डॉ अब्दुल गनी
कुलसचिव
कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर

डॉ. मुश्ताक ए लोन
सहायक प्रोफ़ेसर
मैनेजमेंट स्टडीज़ विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय, कश्मीर, श्रीनगर

डॉ. नुसरत यास्मीन
सहायक प्रोफ़ेसर, पर्यटन विभाग
होटल, हास्पिटलिटी एंड हेरिटेज
स्टडीज़, जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

डॉ. सम्पद सवैन
अध्यक्ष, पर्यटन विभाग
हास्पिटलिटी एंड होटल मैनेजमेंट
इंदिरा गांधी नेशनल ट्राइब्ल
यूनिवर्सिटी, अमरकंटक

डॉ. रोशन आरा
वरिष्ठ व्याख्याता (वाणिज्य)
शिक्षा विभाग, जम्मू-कश्मीर
श्रीनगर

डॉ. सैयद फहर अली
सहायक प्रोफ़ेसर
नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी
नोएडा

सुश्री महिंद धंडा
सहायक प्रोफ़ेसर, स्टेट इंस्टीट्यूट
ऑफ़ होटल मैनेजमेंट, रोहतक

डॉ. अज़मत नूरी
शैक्षिक अधिकारी (इतिहास)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

अनुवादक

डॉ. नीरज धनकर
प्रोफ़ेसर
हिमगिरी जी विश्वविद्यालय, देहरादून

सुश्री मैत्रेय दुआ
सीनियर कन्टेंट डेवलपर
एसचांद एंड संस

श्री कृष्ण कुमार
पी.जी.टी., शिक्षा निदेशालय
दिल्ली

सुश्री सोनी चड्ढा
स्वतंत्र अनुवादक

श्री विनय कुमार
स्वतंत्र अनुवादक

सुश्री कान्ता जोशी
स्वतंत्र अनुवादक

श्री एम. एल. साहनी
सेवानिवृत्त व्याख्याता
शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

श्री दिवाकर मनी
हिंदी अधिकारी
जयपुर

भाषा-संपादक

डॉ. वेद प्रकाश
प्रोफ़ेसर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

डॉ. प्रेम तिवारी
सहायक प्रोफ़ेसर
दयाल सिंह महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. अंशुमान ऋषि
शिक्षक, कुलाची हंसराज स्कूल
दिल्ली

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. अज़मत नूरी
शैक्षिक अधिकारी (इतिहास)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

सुश्री तरुण
सहायक निदेशक (शैक्षिक)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

आपसे दो बातें

प्रिय शिक्षार्थी,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, पर्यटन के उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम में आपका स्वागत करता है। 'पर्यटन के आधार' के अंतर्गत पर्यटन की अवधारणाएँ, पर्यटन के भौगोलिक और सांस्कृतिक आयाम, पर्यटन-आकर्षणों में क्षेत्रों की भूमि और लोग, पर्यटन व्यापार-प्रबंधन, यात्रा और पर्यटन में व्यवसाय-संचालन, अतिथि-सत्कार प्रबंधन, क्षेत्र विशेष के सांस्कृतिक धरोहर के आयामों के साथ-साथ पर्यटन के विकास एवं प्रारूप को सन्निहित किया गया है।

शिक्षार्थी के ज्ञान में बढ़ोतरी एवं कौशल के विकास के लिए इस पाठ्यक्रम में पर्यटन के विविध क्षेत्रों से संबंधित जानकारी को अध्ययन-सामग्री के रूप में समावेशित किया गया है। इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पढ़ने के पश्चात शिक्षार्थी पर्यटन को व्यावसायिक कार्यक्रम के एक विकल्प के रूप में चुन सकते हैं। आज के समय में पर्यटन व्यवसाय के रूप में स्थापित हो चुका है इसलिए इससे संबंधित पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों के लिए एक अच्छे विकल्प के रूप में उभरकर आया है। आज के समय में लोगों की बढ़ती आय के कारण बेहतर जीवन जीने की इच्छा बढ़ती जा रही है। इससे पर्यटक के रूप में विभिन्न आकर्षक स्थलों भ्रमण पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दें रहा है। इसलिए आने वाले समय में एक उद्योग के रूप में पर्यटन का विशाल क्षेत्र बनता दिख रहा है। अत: इस उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सक्षम लोगों को आमंत्रित किया जाना चाहिए।

पर्यटन के पाठ्यक्रम को मॉड्यूल के रूप में बनाया और विकसित किया गया है। पाठ्यक्रम सामग्री को पाँच अनिवार्य मॉड्यूल और एक वैकल्पिक मॉड्यूल में बाँटा गया है। प्रत्येक मॉड्यूल में कुछ पाठ हैं। चूँकि प्रत्येक मॉड्यूल स्व-निहित या स्वतंत्र है, इसलिए अपनी रुचि एवं पसंद के अनुसार किसी भी मॉड्यूल से पढ़ाई शुरू की जा सकती है।

हमें उम्मीद है कि यह पाठ्यक्रम पर्यटन उद्योग में प्रयोग किए जाने वाले अवधारणा, प्रतिमान अभ्यास/कार्य को समझने एवं ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होगा। यह पाठ्यक्रम क्षेत्र विशेष से संबंधित प्राकृतिक सुंदरता एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति गर्व और चेतना विकसित करेगा। उपर्युक्त तत्व पर्यटन संसाधनों के प्रमुख तत्व है। इसलिए व्यवस्थित एवं सिलसिलेवार ढ़ंग से इनका अध्ययन बहुत ही प्रासंगिक है।

इस पाठ्यक्रम से संबंधित किसी भी प्रकार की कठिनाई से उबारने एवं मदद के लिए कृपया हमें लिखने में संकोच न करें। आपकी हर जरूरत में आपकी मदद करने के लिए हम यहाँ हैं। आपकी जरूरत को पूरा करने में आपके द्वारा दी गई प्रतिक्रिया (फीडबैक) एक दिशा-निर्देश देता है।

आपको धन्यवाद

पाठ्यक्रम समन्वयक

पाठ-सामग्री का प्रयोग कैसे करें

बधाई! आपने स्वाध्यायी शिक्षार्थी बनने की चुनौती को स्वीकार किया है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान प्रत्येक कदम पर आपके साथ है और आपको ध्यान में रखकर हमने विषय विशेषज्ञों की टीम की सहायता से पाठ्य सामग्री तैयार की है। स्वतंत्र अधिगम के प्रारूप का पालन किया गया है। निम्नलिखित बिंदु आपको सुझाएँगे कि इस मुद्रित सामग्री का सर्वोत्तम उपयोग आप कैसे कर सकते हैं? आपकी मदद के लिए इन बिंदुओं के बारे में विस्तार से बताया गया है।

शीर्षक : एक अग्रिम संगठक है और आपको पाठ की विषयवस्तु का आभास आपको देता है। इसे अवश्य पढ़ें।

प्रस्तावना : यह पाठ को पिछले पाठ से जोड़कर पाठ का पूरा परिचय देगी।

उद्देश्य : ऐसे कथन हैं जो स्पष्ट करते हैं कि पाठ से आप को क्या सीखना है? यह जाँचने में भी सहायता करेंगे कि पाठ को पढ़ने के बाद आपने क्या सीखा? इन्हें अवश्य पढ़िए।

नोट्स : प्रत्येक पृष्ठ के एक ओर खाली स्थान छोड़ा गया है जिसमें आप नोट्स बनाने के लिए आवश्यक बिंदु लिख सकते हैं।

पाठगत प्रश्न : प्रत्येक खंड के बाद स्वयं की जाँच किए जाने वाले अति लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे गए हैं। ये आपको अपनी प्रगति जाँचने में सहायता करेंगे। पाठगत प्रश्नों को अवश्य हल कीजिए। इन्हें सफलतापूर्वक पूरा करने से आपको यह निर्णय लेने में आसानी होगी कि आप आगे बढ़ें या पीछे आकर दोबारा सीखें।

आपने क्या सीखा : यह पाठ के मुख्य बिंदुओं का सार है। यह पुनर्स्मरण और पुनरावृत्ति में सहायता करेगा। आप इसमें अपने बिंदु भी जोड़ सकते हैं।

पाठांत अभ्यास : ये दीर्घ और लघु उत्तरीय प्रश्न हैं जो विषय को स्पष्ट रूप से समझने के लिए अभ्यास करने के लिए प्रेरित करता है।

क्या आप जानते हैं? : ये बॉक्स कुछ अतिरिक्त जानकारी देते हैं। बाक्स में दी गई सामग्री महत्वपूर्ण है और इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। यह सामग्री मूल्यांकन के लिए नहीं, अपितु आपके सामान्य ज्ञान को बेहतर बनाने के लिए है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर : इनकी सहायता से आप जान सकेंगे कि आपने पाठगत प्रश्नों के जो उत्तर दिए हैं वे कितने सही हैं।

क्रियाकलाप : सिद्धांत को बेहतर ढंग से समझने के लिए कुछ क्रियाकलाप सुझाए गए हैं।

वेब-साइट : ये वेब-साइट्स विस्तृत अधिगम प्रदान करती हैं। सामग्री में आवश्यक जानकारी शामिल की गई है और अधिक जानकारी के लिए आप इनको देख सकते हैं।

विषय-सामग्री : एक विहंगम दृष्टि

माड्यूल-1: पर्यटन के आधार

1. पर्यटन का विकास
2. पर्यटन उद्योग एवं इसका गठन
3. पर्यटन का प्रभाव
4. यात्रा और पर्यटन : भूगोल के मौलिक तत्व
5. पर्यटन के लिए परिवहन

माड्यूल-2: पर्यटन के सांस्कृतिक आयाम

6. भारतीय संस्कृति और धरोहर की समझ
7. भारत की मंचीय कला की विरासत
8. पर्यटकों को लुभाती भारतीय वास्तुकला

माड्यूल-3: भारत में पर्यटन के सांस्कृतिक एवं धरोहर संबंधी दृष्टिकोण

9. भारत में संस्कृति और धरोहर-I: हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म
10. भारत में संस्कृति और धरोहर-II: सिख, इस्लाम और ईसाई धर्म
11. भारत के सांस्कृतिक आकर्षण

माड्यूल-4: पर्यटन आकर्षण के रूप में प्राकृतिक विविधता

12. भारत में पर्यटन के प्राकृतिक आकर्षण
13. भारत में पर्यटन की प्रगति और प्रतिरूप
14. विश्व में पर्यटन का विकास और स्वरूप

माड्यूल-5: पर्यटन व्यवसाय का प्रबंधन

15. पर्यटन प्रबंधन
16. मानव संसाधन प्रबंधन-I
17. मानव संसाधन प्रबंधन-II
18. संप्रेषण तथा व्यक्तित्व-विकास
19. पर्यटन-विपणन

माड्यूल-6A: यात्रा एवं पर्यटन संचालन व्यापार

20. यात्रा एजेंसियों के कार्य एवं पर्यटन-संचालन व्यापार
21. यात्रा-एजेंसियों के कार्य एवं पर्यटन-संचालन
22. यात्रा-विवरण एवं पर्यटन पैकेजिंग

अथवा

माड्यूल-6B: अतिथि-सत्कार प्रबंधन

20. आतिथि-सत्कार एवं खान-पान उद्योग
21. मुख्य कार्यालय का परिचालन
22. होटल के सहायक संचालक

विषय-सूची

माड्यूल-1: पर्यटन के आधार

1. पर्यटन का विकास 1
2. पर्यटन उद्योग एवं इसका गठन 14
3. पर्यटन का प्रभाव 39
4. यात्रा और पर्यटन : भूगोल के मौलिक तत्व 56
5. पर्यटन के लिए परिवहन 77

माड्यूल-2: पर्यटन के सांस्कृतिक आयाम

6. भारतीय संस्कृति और धरोहर की समझ 93
7. भारत की मंचीय कला की विरासत 105
8. पर्यटकों को लुभाती भारतीय वास्तुकला 127

माड्यूल-1: पर्यटन के आधार

1. पर्यटन का विकास
2. पर्यटन उद्योग एवं इसका गठन
3. पर्यटन का प्रभाव
4. यात्रा और पर्यटन : भूगोल के मौलिक तत्व
5. पर्यटन के लिए परिवहन

टिप्पणियाँ

1

पर्यटन का विकास

विश्व में पर्यटन के विकास को वर्तमान स्तर तक पहुँचने में हजारों वर्ष लगे हैं। यह मनुष्य के अपने पर्यावरण एवं परिवेश के साथ विभिन्न प्रकार की पारस्परिक क्रियाओं का परिणाम रहा है और इसका विभिन्न स्तरों पर विकास हुआ है। इस पाठ में विभिन्न कालों में पर्यटन के विकास पर विचार करने का प्रयास किया गया है। प्राचीन काल से शिक्षा एवं धर्म को पर्यटन की वृद्धि के घटकों के तौर पर देखा जाता रहा है। पर्यटन को व्यापार एवं वाणिज्य की बढ़ती जरूरत से भी प्रोत्साहन मिला है। इसलिए हमने अतीत में सिल्क एवं गरम मसाले के व्यापार की बातें सुनी हैं और वर्तमान में भी वे हमारा ध्यानाकर्षित कर रही हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- भारत में पर्यटन के ऐतिहासिक परिदृश्य की व्याख्या कर सकेंगे;
- अनेक पूर्ववर्ती घटनाओं की पहचान कर सकेंगे जिनके कारण व्यापार पर्यटन को बढ़ावा मिला। उदाहरण के लिए सिल्क रूट, गरम मसाले मार्ग एवं समुद्री यात्राएँ;
- प्राचीन काल से नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, देवबंद में शैक्षिक पर्यटन की चर्चा कर सकेंगे तथा
- अनेक प्रकार की धार्मिक और तीर्थयात्रा पर्यटन पर चर्चा कर सकेंगे।

1.1 भारत में पर्यटन का ऐतिहासिक परिदृश्य

पर्यटन के विकास को ऐतिहासिक परिदृश्य के माध्यम से देखा जा सकता है। इसमें प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय तक अनेक परिवर्तन पाए जाते हैं।

1.1.1 प्रारम्भिक काल में पर्यटन

प्रारंभिक काल से ही लोग भोजन, व्यापार, धार्मिक उद्देश्यों एवं शिक्षा हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण करते रहे हैं पर ये यात्राएँ अनेक कारणों से नजदीक के स्थानों तक सीमित रहीं। तब

टिप्पणियाँ

सड़कें कम थीं, भोजन उपलब्ध नहीं था। सड़कें असुरक्षित थीं और यहाँ तक कि स्थानों के साथ-साथ मार्गों की जानकारी भी नहीं थी। कभी-कभी शाही सौजन्य मिलने से यात्रा करना आसान हो जाता था। ऐसी यात्रा का एक अच्छा उदाहरण मौर्यकाल के 262 बीसी. में देखा जा सकता है। राजा अशोक से राजकीय सहयोग मिलने पर व्यक्ति दूरवर्ती स्थानों जैसे पाटलीपुत्र (पटना), लुंबिनी, कपिलवस्तु, सारनाथ और गया की यात्रा कर सके। इन सभी स्थानों पर स्मारक एवं विश्राम-गृह बनाए गए थे जिनमें यात्री आराम कर सकते थे। हर्षवर्धन भी बौद्ध धर्मानुयायी था। उन्होंने यात्रियों हेतु अनेक धर्मशालाएँ बनवाईं और यात्रियों के लिए अनेक मठ भी निर्मित किए गए। यह दर्शाता है कि यात्रा सुविधाओं में कैसे सुधार किए गए और यात्रा करना आसान हो गया।

भारत में यात्रा करने वाला पहला विदेशी समूह शायद फ़ारसी था। फ़ारस से भारत की यात्रा करने वाले काफिलों के अनेक प्रमाण हैं। अनेक यात्रियों ने यूनान से फ़ारस अथवा मैसोपोटामिया के रास्ते भारत में प्रवेश किया। यूनान में वर्णन मिलता है कि भारत में रथों के लिए अच्छे मार्ग थे और घोड़े, हाथी एवं ऊँट यातायात के सामान्य साधन थे। फ़ारस और भारत के बीच व्यापार, वाणिज्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का वर्णन भी मिलता है। 633 ईस्वी में एक चीनी बौद्ध ह्यूनसांग भारत आया था और उसे अपनी यात्रा कठिन एवं खतरनाक लगी। उसका उद्देश्य प्राचीन बौद्ध ग्रन्थों को एकत्र करना एवं उनका अनुवाद करना था।

भीतरी प्रदेशों से लाए गए सामान शहरों और बाजारों में पहुँचते थे। यात्रियों को रात्रिकालीन ठहरने के स्थानों में ठहराया जाता था। उन्हें सराय के नाम से जाना जाता था और शहर के द्वार के पास निर्मित सरायों में यात्रियों को सभी सेवाएँ दी जाती थीं। मनोरंजन एवं नाच गाने के बड़े कमरे होते थे। जुआ खेलने का लाइसेंस दिया जाता था जो राज्य के लिए आय का जरिया होता था। मुगलों के शासन काल में शासकों ने बहुत अधिक यात्राएँ कीं और सड़कों एवं अन्य सुविधाओं के विकास पर ज़ोर दिया। आज भी हमें मील के पत्थरों, सरायों और सड़कों के जाल के अवशेष मिलते हैं जो इस विशाल देश के सभी मार्गों को सुगम बनाते हैं।

1.1.2 औपनिवेशिक काल में पर्यटन

वर्ष 1498 में वास्को-डी-गामा केरल के पश्चिमी घाट पर कालीकट पहुँचा और भारत व यूरोप के बीच व्यापार व वाणिज्य का रास्ता तैयार किया। इसके बाद डच और ब्रिटिश भी पहुँचे। भारतीय शासकों के मध्य आंतरिक कलह के कारण विदेशी व्यापारियों को धीरे-धीरे अपने राजनीतिक प्रभाव को स्थापित करने के अवसर प्राप्त हुए। इनमें से ब्रिटिश सफल सिद्ध हुए और उन्होंने धीरे-धीरे भारतीय शासकों से शक्तियों को हथिया लिया। समय के साथ उनका प्रभाव बढ़ा और उन्होंने सम्पूर्ण देश पर कब्जा कर लिया। तब उन्होंने भारत में रेलवे का जाल बिछाया जो एक स्थान से दूसरे स्थान में यात्रा करने का सबसे बड़ा साधन बन गया।

1.1.3 आधुनिक काल में पर्यटन

भारतीय रेल घरेलू यात्रियों के लिए यातायात के क्षेत्र में सबसे बड़ी सुविधा रही है। पहली रेल वर्ष 1853 में वाणिज्य के उद्देश्य से बंबई (मुंबई) से थाणे के बीच प्रारम्भ हुई थी। भारत में

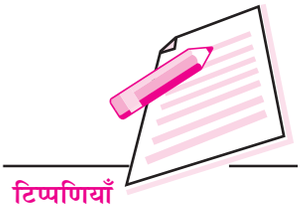

रेलों के विस्तार ने आरामदायक यात्रा की संभावना को बढ़ाया। देश में हवाई यात्रा शुरू होने से शीघ्र ही अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या भी बढ़ी। पहली हवाई यात्रा 18 फरवरी 1911 में प्रारम्भ हुई। इसे इलाहाबाद से 10 मिलोमीटर दूर नैनी जंक्शन तक शुरू किया गया। लेकिन वास्तविक शुरुआत 15 अक्तूबर 1932 से हुई। इस दिन जेआरडी टाटा ने एकल इंजन के हवाई जहाज से करांची से मुंबई (तब बम्बई) तक की उड़ान भरी। उन्हें भारत में नागरिक विमानन का जनक माना जाता है और वे एयर इंडिया के संस्थापक थे। ये दोनों काल परिवहन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। सड़कें व जलयान प्राचीन समय से परिचालन में थे। परिवहन प्रणाली के सभी स्वरूपों ने पर्यटन उद्योग को अधिकतम सहयोग दिया।

1.1.4 स्वतंत्रता के पश्चात पर्यटन

भारत में अनेक प्रकार की भौतिक एवं जलवायु के कारण पर्यटक स्थलों की एक लम्बी सूची है। भारत सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिकता, सुंदर दृश्यों, इतिहास एवं अन्य अनेक दृष्टियों से विविधता में एकता वाला देश है। आज भारत ने देश में पर्यटन की वृद्धि व विकास के लिए बहुत बड़ा ढाँचा खड़ा किया है।

स्वतंत्र भारत में परिवहन सुविधाओं में सुधार से पर्यटन उद्योग को बहुत बढ़ावा मिला है। होटल एवं आतिथ्य सुविधाओं ने पर्यटकों को बहुत आराम दिया है। चार महानगरों, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई एवं मुंबई को जोड़ने वाली स्वर्णिम चतुर्भुजीय सड़कों से पर्यटन में और वृद्धि होगी। उत्तरी-दक्षिण कोरिडोर उत्तर में श्रीनगर से दक्षिण में कन्याकुमारी को जबकि पश्चिम-पूर्व कोरिडोर पश्चिम में पोरबंदर एवं पूर्व में सिलचर को जोड़ते हैं। स्वर्णिम त्रिकोणीय कोरिडोर उत्तर के तीन शहरों - दिल्ली, आगरा व जयुपर को जोड़ता है। यह त्रिकोणीय मार्ग अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के साथ-साथ देशी पर्यटकों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसी तरह स्वर्णिम चतुर्भुजीय कोरिडोर देश के पूर्वी भाग के पुरी, कोणार्क व भुवनेश्वर को जोड़ता है। भारत में पर्यटन को चिकित्सा क्षेत्र से भी जबरदस्त उछाल मिला है क्योंकि बहुत बड़ी संख्या में लोग भारत में बेहतर एवं कम कीमत की चिकित्सा सुविधा पाने के लिए आते हैं। यह हमारी प्राचीन चिकित्सा पद्धति, जैसे आयुर्वेद एवं पंचतत्व पद्धति की चिकित्सा के कारण भी है जिससे बहुत से पर्यटक भारत की ओर आकर्षित होते हैं।

अब आप समझ सकते हैं कि देश में किस प्रकार पर्यटन का विकास हुआ है। स्वतंत्रता के बाद पर्यटन पर विशेष ज़ोर बढ़ा दिया गया। यह अनेक कारणों से हुआ जिनके बारे में आप आगे पढ़ेंगे।

पाठगत प्रश्न 1.1

1. अतीत के शैक्षिक संस्थानों ने किस प्रकार पर्यटन को बढ़ाने में सहयोग दिया?
2. पर्यटन को बढ़ाने में समुद्री यात्रा की क्या भूमिका है?
3. हाल ही के वर्षों में पर्यटन को प्रभावित करने वाले कौन-से कारक हैं?

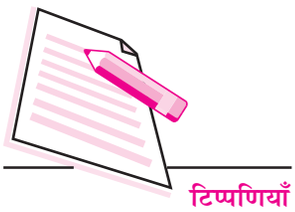

टिप्पणियाँ

1.2 मानव जीवन शैली में विकासोन्मुख परिवर्तन

प्रारंभ में मनुष्य खानाबदोश थे और वे भोजन एवं जीविका की खोज में घूमते थे। वे आनन्द की अपेक्षा भोजन पाने में अधिक रुचि रखते थे। उनकी यात्राएँ केवल पदयात्रा तक ही सीमित थीं।

कृषि–कार्य एवं पशुपालन से मानव का एक स्थान पर बसना प्रारम्भ हुआ। उस समय लोगों को कठिन प्राकृतिक परिस्थितियों में जीवित रहना पड़ता था। उनका निवास ऐसे इलाकों तक सीमित रहता था जहाँ जीवन कुछ आसान हो और वह स्थान नदी के किनारे हो। ये वही इलाके थे जहाँ सभ्यता का विकास हुआ। सभ्यता के विकास एवं विभिन्न अतिशेष मदों के उत्पादन में वृद्धि से नजदीकी बस्तियों के साथ व्यापार प्रारम्भ हुआ। शायद यह पर्यटन की शुरुआत थी। यद्यपि व्यक्तियों की यात्रा का उद्देश्य केवल व्यापार से संबंधित था। लेकिन इसे नोट करना चाहिए कि पर्यटन की वर्तमान परिभाषा उस समय लागू नहीं होती थी एवं यह कहना कठिन है कि आधुनिक पर्यटन की शुरुआत कब हुई। जैसे–जैसे अफ्रीका, एशिया और मध्य–पूर्व के साम्राज्य बढ़ते गए, यात्रा व पर्यटन के लिए जरूरी अवस्थापनाएँ, जैसे सड़कें एवं जलीय मार्ग निर्मित किए गए। लम्बी दूरी की यात्रा के लिए ऊँट, घोड़े व नावों इत्यादि का उपयोग किया जाता था। मिस्र की सभ्यता के दौरान व्यापार एवं आनंद दोनों हेतु यात्राएँ प्रारम्भ हो गई थीं। प्रमुख मार्गों और शहरों में यात्रियों के ठहराने की व्यवस्था की गई, आस्ट्रियन साम्राज्य में यात्रा के साधनों में वृद्धि हुई और सड़कों को बेहतर बनाया गया। उसके बाद फ़ारसियों ने सड़कों में और सुधार किए जिससे परिवहन के लिए चार पहिए वाले वाहन बने। ऐसा विश्वास किया जाता है कि 776 ईसा पूर्व की गर्मियों में यूनान में आयोजित पहले ओलंपियाड में लोगों की संगठित रूप में पहली यात्रा थी।

रोमन साम्राज्य में शासक वर्ग ने अपने खेलकूद एवं धार्मिक आयोजन किए तथा शहरों की यात्रा की। धनवान रोमनों में सैर–सपाटा भी प्रचलित था और अधिकांश ने यूरोप की यात्रा की। रोम वासी स्फिंक्स एवं पिरामिडों को देखने हेतु मिस्र गए। सिकन्दरिया एक वैश्विक शहर था क्योंकि वहाँ बहुत से राष्ट्रीयता के लोग जैसे मिस्र, ग्रीक, यहूदी, भारतीय एवं सीरिया के लोग रहते थे। इसके अतिरिक्त रोमवासियों ने स्पा थेरेपी को विकसित किया जिसे उन्होंने पूरे संसार को प्रस्तुत किया। 17वीं शताब्दी तक स्पा थेरेपी के साथ विश्राम, मनोरंजन एवं स्वस्थ सामाजिक गतिविधियों को जोड़ा गया। यद्यपि, स्पा थेरेपी, पर्यटन का एक स्वरूप है पर उसके साथ आज के हॉलिडे पर्यटन का कोई मेल नहीं है। थॉमस कुक ने अपने 500 स्थानीय लोगों के साथ लाइचेस्टर, लंदन रोड से लॉगबॉरोग तक का एक टूर 5 जुलाई 1841 को आयोजित किया था तब से थॉमस कुक को प्रथम ऑपरेटर माना जाता है।

1.3 आधुनिक पर्यटन की पूर्ववर्ती घटनाएँ

यह जानना बहुत रोचक होगा कि पर्यटन वास्तव में कैसे प्रारम्भ हुआ? प्रारम्भिक दिनों में लोग एक स्थान से दूसरे स्थान में भोजन की खोज में जाते थे जो या तो पशुओं अथवा जंगली बेर का क्षेत्र होता था। मानव ने जब खेती–बाड़ी के बारे में जाना तब उसने बसना शुरू किया लेकिन जब भूमि का पूरा दोहन कर लिया तो वे पुनः आगे को चलने लगा। कांस्य युग के दौरान शहर निर्मित किए गए जिसने ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में लोगों के प्रवास को प्रोत्साहित किया। वे यहाँ शिल्पी, दस्तकार अथवा अन्य प्रकार के व्यापार की खोज में आए। इसका ज्ञान एक सभ्यता के सिक्कों और मुद्राओं का अन्य सभ्यता के क्षेत्र में मिलने से होता है। ऐसा एक उदाहरण सिंधु घाटी है। जब हम कांस्य–युग से लौह–युग सभ्यता में आते हैं तो यात्राएँ खूब होने लगी थीं तथापि

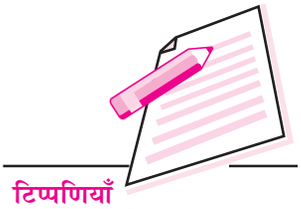

हम यह जानेंगे कि प्राचीन काल से यात्राएँ एवं पर्यटन वास्तव में कैसे विकसित हुए? यदि हम मानव की यात्राओं की खोज करते हैं तो हम खानाबदोश अवधि से प्रारम्भ कर सकते हैं। यह क्रम इस तरह से हो सकता है –

(क) खानाबदोशी

(ख) तीर्थयात्रा

(ग) व्यापार एवं कारोबार हेतु यात्रा

(घ) प्रव्रजन

(ङ) अनुसंधान एवं शिक्षा हेतु यात्रा

(च) बहुलक्षीय पर्यटन

1.3.1 खानाबदोशी

खानाबदोश वे व्यक्ति थे जो भोजन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते थे। आज भी आप देख सकते हैं कि बहुत से व्यक्ति कारवाँ बना कर अपने बच्चों व साज–समान के साथ चलते हैं। हमने पढ़ा है कि व्यक्तियों का यह संचालन जीवित रहने से जुड़ा था। आजकल ये लोग रेगिस्तान व पहाड़ों में ही बचे हैं जहाँ भोजन उपलब्ध नहीं है।

1.3.2 तीर्थयात्रा

तीर्थयात्रा अपने विश्वास व आस्था के पवित्र स्थानों की यात्रा है। अनेक धर्म कुछ स्थानों के साथ बहुत महत्व जोड़ देते हैं जैसे आत्मिक जागृति के संस्थापकों को जन्म अथवा मृत्यु के साथ जोड़ना। विश्वास करने वालों लोगों के बीच इन स्थानों का बहुत महत्व है। आधुनिक समय में तीर्थयात्रा एक सामूहिक पर्यटन का स्रोत बन गई है और परिवहन तथा अन्य सुविधाओं के विकास के साथ ही ऐसे स्थानों पर लोगों का भ्रमण करना भी बढ़ गया है।

1.3.3 व्यापार व कारोबार के लिए यात्रा

जैसे ही व्यापार मार्ग बढ़े, नए स्थानों का ज्ञान हुआ। लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान जाना प्रारम्भ हो गया। शीघ्र ही व्यापार बढ़ा और औद्योगिक क्रान्ति के कारण वस्तुओं का विनिमय बढ़ा। वास्को–डी–गामा व कोलंबस द्वारा खोजे गए जल–मार्ग से नए स्थानों की खोज हुई तथा जहाज निर्माण ने बड़ी भूमिका निभाई और इसी तरह निर्मित मालों के विक्रय एवं कच्चे माल की खरीद की माँग भी बढ़ी। इसी से अपने धर्म का प्रचार–प्रसार के साथ–साथ व्यापार उद्देश्यों के लिए भी यात्राएँ हुई। शीघ्र ही इसने आधुनिक पर्यटन का स्वरूप प्राप्त किया।

1.3.4 प्रव्रजन

पश्चिम में औद्योगिक क्रांति के उदय से संपूर्ण संसार में निर्मित मालों के क्रय–विक्रय हेतु बाज़ार की खोज प्रारंभ हुई। प्रव्रजन लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना है। यह बहुत लंबे समय से चल रहा है। प्रारंभिक प्रव्रजन लगभग लाखों वर्षों पहले प्रारंभ हुआ होगा जब होमोरेक्ट्स का अफ्रीका से यूरोप और एशियाई क्षेत्र में प्रव्रजन हुआ था।

टिप्पणियाँ

1.3.5 अनुसंधान एवं शिक्षा हेतु यात्राएँ

समय के साथ-साथ लोगों की यात्राएँ किसी विशिष्ट कार्य हेतु होने लगीं। तब लोग दूर-दराज़ के स्थानों में अच्छी शिक्षा की खोज में जाने लगे। इसने शैक्षिक पर्यटन को अत्यधिक विस्तार दिया। दूर-दराज़ के इलाकों में अनुसंधान हेतु असंख्य स्कूल व शैक्षिक संस्थान खुल गए। आज भारत में हम बिहार के बहुत प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना देख रहे हैं।

1.3.6 बहुलक्षीय पर्यटन

आज पर्यटन ने अनेक कारणों से विविध स्वरूप पा लिए हैं। यह बहुत से देशों में आर्थिक कार्यकलापों की प्रगति के लिए एक प्रभावकारी व लाभकारी साधन है। पर्यटकों की जरूरत के अनुसार सभी सुविधाएँ देने का ध्यान रखा जाता है, जिनमें परिवहन, आवास पर्यटकों की स्थानीय यात्रा, भोजन व पेय पदार्थ, मनोरंजन एवं आराम शामिल होता है। बहुलक्षीय पर्यटन में यात्रा व पर्यटन के लिए बहुत से स्थानों में घूमना शामिल है। यह पर्यटकों के लिए एक बहुत लोकप्रिय क्रियाकलाप है। जब वे घूमने जाते हैं तो एक के बाद कई स्थानों पर जाते हैं न कि एक स्थान पर। इसलिए बहुलक्षीय पर्यटन आज की एक ज़रूरत है।

क्रियाकलाप 1.1

मान लीजिए आप किसी गाँव अथवा कस्बे में रहते हैं। लेकिन यदि आप अपने मूल स्थान का पता लगाएँ तो हो सकता है कि आपको पता चले कि आपके पूर्वज इस स्थान पर बाहर से आए थे। अपने परिवार/समुदाय के किसी बूढ़े सदस्यों से चर्चा करें और अपने मूल स्थान का पता लगाने की कोशिश कीजिए और यह भी पता लगाएँ कि आपके पूर्वजों के प्रव्रजन के कारण क्या थे? इस व्यक्ति से पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची बनाएँ और सभी संभव उत्तरों को खोजिए।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. मानव जीवन में विकासोन्मुखी परिवर्तनों पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।
2. खानाबदोशी क्या है?
3. व्यापार ने किस प्रकार पर्यटन में वृद्धि की शुरुआत की?

1.4 संसार के प्रारम्भिक व्यापार-मार्ग और पर्यटन

यह समझना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि वास्तव में आधुनिक व्यापार युग में पर्यटन में कैसे और क्यों वृद्धि हुई? यह भी जानना आवश्यक है कि कौन-सी सम्भव स्थितियों और खोजों ने पर्यटन को तीव्र गति से बढ़ावा दिया? चलिए हम उन व्यापार मार्गों से शुरू करते हैं जो विश्व इतिहास के आधुनिक काल के प्रारंभ के दौरान खोजे गए। वास्को-डी-गामा, कोलंबस एवं मागेलन जैसे अन्वेषकों ने भारत, अमेरिका एवं पृथ्वी के अन्य स्थानों के इन मार्गों की खोज में बहुत बड़ा योगदान दिया।

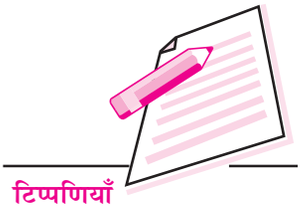

व्यापार मार्ग उन रास्तों को कहा जाता है जिन्हें वस्तुओं के वाणिज्यिक स्थानान्तरण के लिए प्रयोग किया जाता था। ये वस्तुओं को लंबी दूरी तक ले जाने में सहायक होते थे। मुख्य मार्ग को परिवहन की धमनी माना जाता था और इससे विस्तृत इलाकों को जोड़ने हेतु सहायक और अंत:संबद्ध रास्तों का निर्माण किया जाता था। यह सामान्य सिद्धान्त बहुत पहले से लागू था। उस समय सिल्क रूट (रेशम मार्ग) और स्पाइस रूट (मसाला मार्ग) थे।

एफ्रो-यूरेशियन क्षेत्र में फैले व्यापार मार्गों को आपस में जोड़ने में सिल्क रूट एक ऐतिहासिक तंत्र सिद्ध हुआ। यह पूर्वी, दक्षिणी और पश्चिमी एशिया को भूमध्य सागर व यूरोपीय देशों से जोड़ता है। यह सिल्क मार्ग सीरिया, टर्की, ईरान, तुर्कमेनिस्तान उजबेकिस्तान, पाकिस्तान और चीन से गुजरता है। यह लगभग 4500 किमी. लंबा है। इसका नामकरण चीनी सिल्क के लाभकारी व्यापार के नाम पर हुआ जो पूरे मार्ग पर किया जाता था। सिल्क रूट पर व्यापार चीन और भारतीय उपमहाद्वीप, फ़ारस और अरब की सभ्यता के विकास का एक महत्वपूर्ण घटक था।

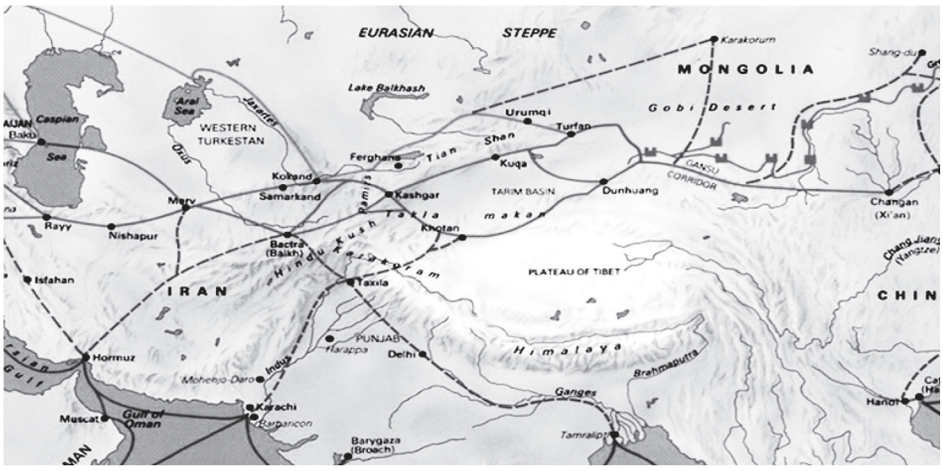

चित्र 1.1: सिल्क एवं मसाला मार्ग

मसालों का व्यापार एशिया, उत्तर-पूर्वी अफ्रीका एवं यूरोप में ऐतिहासिक सभ्यता के मध्य व्यापार को दर्शाता है। दालचीनी, तेजपत्ता, इलाइची, अदरक एवं हल्दी जैसे मसालों को पूर्वी संसार में वाणिज्य के रूप में प्रयोग किया जाता था। ईसा युग के प्रारंभ से पहले इन मसालों ने मध्य पूर्व में प्रवेश किया। पहली सहस्राब्दि के मध्य में भारत एवं श्रीलंका की ओर आने वाले समुद्री मार्गों पर भारतीयों व इथोपियन का नियंत्रण था, लेकिन मध्यकाल में मुस्लिम व्यापारियों का मसालों के समुद्रीय व्यापार पर पूरे हिन्द महासागर पर वर्चस्व रहा। यह व्यापार यूरोपीय खोजों के युग में परिवर्तित हो गया, विशेषकर काली मिर्च का व्यापार यूरोपियन व्यापारियों के लिए एक प्रभावशाली कार्यकलाप हो गया (चित्र 1.1)।

1.4.1 समुद्री यात्रा एवं संसार की खोज

यूरोप से 'केप ऑफ गुड होप' के रास्ते हिन्द महासागर के मार्ग को वर्ष 1498 में पुर्तगाल का अन्वेषी नाविक वास्को-डी-गामा ने तैयार किया था जो व्यापार का एक नया समुद्री मार्ग बन गया। प्रसिद्ध खोजी क्रिस्टोफर कोलंबस भारत की खोज में निकला था परन्तु अक्तूबर 1492 में

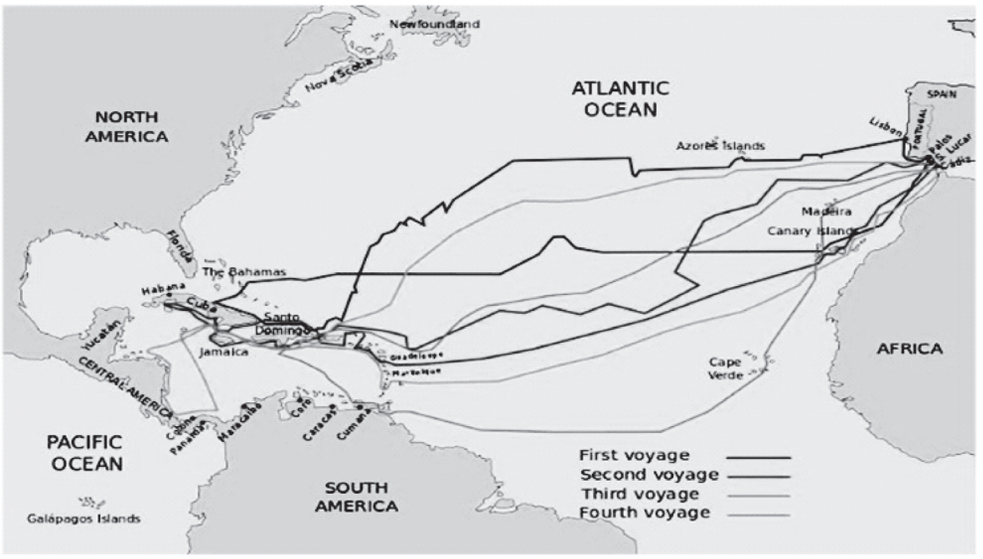

चित्र 1.2: कोलम्बस द्वारा अपनाए गए मार्ग

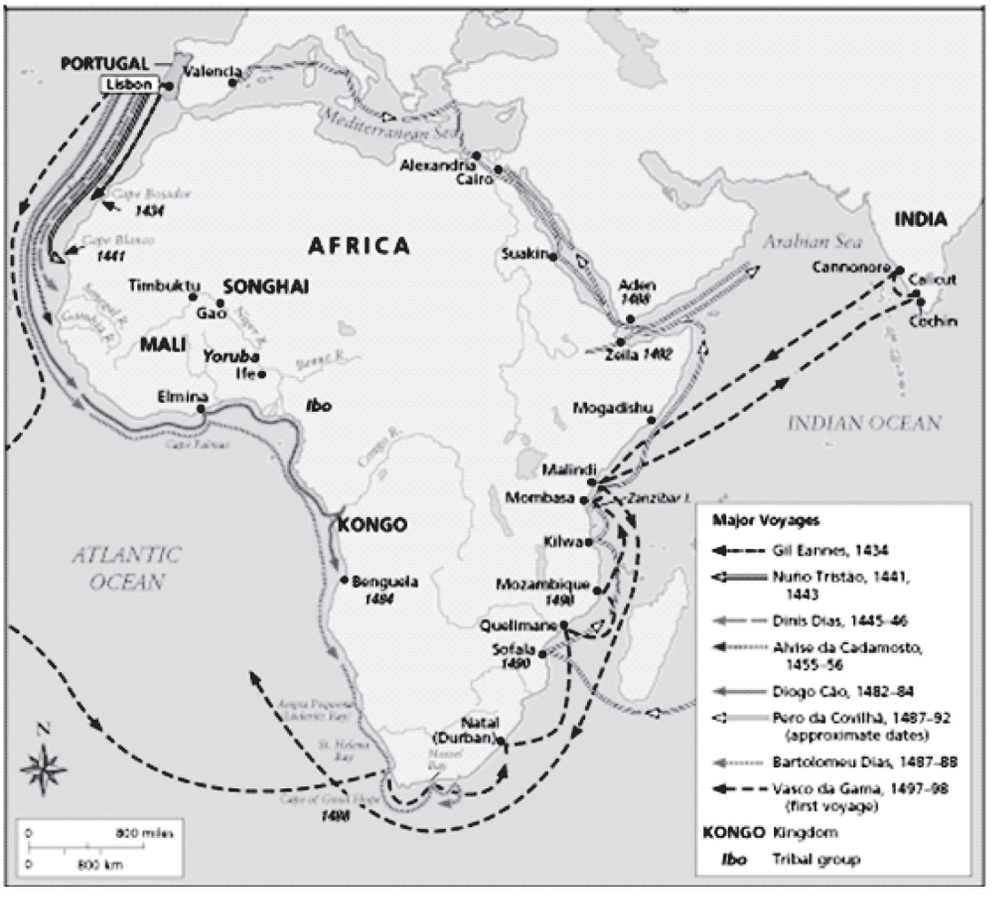

चित्र 1.3: वास्को-डी-गामा द्वारा अपनाए गए मार्ग

भारत के बजाय 'बाहमास सान साल्वेडोर' पहुँच गया। अगली चार समुद्री यात्राओं में कोलंबस ने क्यूबा, जमाइका, हिस्पेनिओला और प्यूरोटो रिको की खोज की। प्रमुख खोजकर्ताओं द्वारा इन मार्गों की खोज ने दुनिया के बारे में बढ़ती जागरूकता में सहायता की। वे मूलत: साहसी थे, उन्होंने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में यात्राएँ की। संभवतया नए स्थानों की खोज ने आधुनिक पर्यटन को जन्म दिया (चित्र 1.2 और 1.3 देखें)।

पाठगत प्रश्न 1.3

1. रेशम और मसाला मार्गों ने पर्यटन को कैसे बढ़ावा दिया?
2. भारत में वास्को-डी-गामा कब और कहाँ आया?

1.5 अतीत में शैक्षिक पर्यटन

प्राचीन काल में **नालंदा** शिक्षा के लिए एक प्रसिद्ध स्थान था। दुनिया के सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय के खंडहर बोधगया शहर से 62 किमी. की दूरी पर और वर्तमान बिहार में पटना से 90 किमी. दक्षिण में स्थित है। 7वीं शताब्दी में चीन के ह्यूनसांग बौद्ध धर्म का अध्ययन करने आए थे और नालन्दा में रुके थे। उन्होनें नालंदा में उत्कृष्ट शैक्षणिक व्यवस्था और मठ की जिंदगी की शुद्धता के बारे में विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने प्राचीन समय के इस अनूठे विश्वविद्यालय के माहौल और वास्तुकला दोनों का, दुनिया के पहले आवासीय अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में विधिवत वर्णन किया।

तक्षशिला, रावलपिंडी के उत्तर-पश्चिम में 30 किलोमीटर दूर ग्रांड ट्रंक रोड पर स्थित है। यह एशिया में सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों में से एक है। सिल्क रोड की शाखा पर रणनीतिक रूप से स्थित यह शहर पश्चिम की ओर चीन से जुड़ता है और यह आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों रूपों से विकसित था। तक्षशिला पहली और 5वीं शताब्दी ई. के बीच अपने शीर्ष पर था। बौद्ध स्मारकों को पूरी तक्षशिला घाटी में खड़ा किया गया था जो एक धार्मिक गढ़ के रूप में परिवर्तित हो गया था और मध्य एशिया तथा चीन के तीर्थयात्रियों के लिए तीर्थस्थल था। इस शहर का बड़ा आकर्षण महान स्तूप है जो पाकिस्तान भर में सबसे बड़ा और सबसे प्रभावशाली है जो भीर माउंड के पूर्व में 2 किमी. की दूरी पर स्थित है। तक्षशिला दुनिया में सबसे पहला शिक्षा-केन्द्र माना जाता था।

विक्रमशिला, पाल वंश के दौरान भारत में बौद्ध ज्ञान के दो अत्यंत महत्वपूर्ण केन्द्रों में से एक था। विक्रमशिला को राजा धर्मपाल (783 ई. पू. से 820 ई. पू.) ने नालंदा में विद्वता की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए स्थापित किया था। पाल काल में प्राचीन बंगाल एवं मगध में अनेक मठ बने हैं। विक्रमशिला सबसे बड़ा बौद्ध विश्वविद्यालय था जिसमें सौ से अधिक अध्यापक और एक हज़ार से अधिक छात्र पढ़ते थे। इस विश्वविद्यालय से अनेक विद्वान निकले जिन्हें बौद्ध ज्ञान, संस्कृति और धर्म के प्रचार हेतु प्राय: विदेशों में आमंत्रित किया जाता था। इनमें से सबसे अधिक

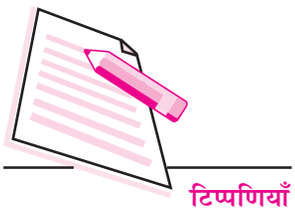

टिप्पणियाँ

विख्यात और प्रकांड अतिशा दिपंकर थे, जिन्होंने तिब्बत बौद्ध की सभा-पद्धति की स्थापना की थी। यहाँ दर्शन, व्याकरण, तत्वमीमांसा और भारतीय तर्कशास्त्र जैसे विषय पढ़ाए जाते थे लेकिन सबसे महत्वपूर्ण विषय तंत्रवाद पढ़ाया जाता था।

देवबंद, देश के प्राचीन शहरों में से एक है। दारूल उलूम देवबंद भारत में इस्लाम का एक स्कूल है जहाँ से देवबंदी इस्लाम आन्दोलन आरम्भ हुआ था। यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के एक शहर देवबन्द में स्थित है। इसे इस्लाम के प्रख्यात विद्वान मौलाना मोहम्मद कासिम ननोत्वी द्वारा वर्ष 1866 में स्थापित किया गया था। इस संस्थान को भारत के साथ-साथ भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य भागों में सर्वाधिक सम्मान प्राप्त है। विदेशों से भी बहुत से विद्वान देवबंद में कुरान के साथ-साथ हदीस का अध्ययन करने आते थे। देवबंद में दारूल उलूम के अलावा अनेक शैक्षिक संस्थान जैसे दारूल उलूम वक्फ़, मदरसा असगरिया, जामिया इमाम अनवर, जामिया तिब्बिया यूनानी भेषज महाविद्यालय, इंटर कॉलेज, तहसील स्कूल, इस्लामिया उच्चतर माध्यमिक स्कूल, संस्कृत महाविद्यालय, पब्लिक स्कूल इत्यादि स्थित हैं।

1.6 धार्मिक एवं तीर्थ-यात्री पर्यटन

इसे सामान्यतया विश्वास पर्यटन से जाना जाता है। धार्मिक पर्यटन पुरातन काल से ही अस्तित्व में रहा है और इसको धार्मिक स्थलों की यात्रा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसे प्रायः धार्मिक यात्रा के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार के पर्यटन में लोग अकेले अथवा समूह में तीर्थ-यात्रा, मिशनरी अथवा विश्राम के लिए यात्रा करते थे। संसार की सबसे बड़ी धार्मिक यात्रा सऊदी अरब में मक्का में हज यात्रा के रूप में होती है। भारत में इलाहाबाद में कुंभ मेला होता है जिसमें तीन नदियों गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम में डुबकी लगाने के लिए श्रद्धालुओं की अत्यधिक भीड़ रहती है। आधुनिक धार्मिक पर्यटक संसार भर में पवित्र शहरों एवं पवित्र स्थलों की यात्रा करते हैं। कुछ प्रसिद्ध पवित्र धार्मिक शहर जेरूसलेम, मक्का, वाराणसी, पुष्कर, इलाहाबाद, अजमेर और अमृतसर हैं।

धार्मिक पर्यटन के दो अलग पहलू हैं (क) घरेलू पर्यटक जिनका अपने धार्मिक विश्वास के अनुसार अपने देवता/स्थान के साथ आत्मिक लगाव है। (ख) विदेशी पर्यटक जो अलग-अलग धर्म, क्षेत्र व देश के हैं जिनके लिए धार्मिक स्थान एवं धार्मिक कार्य एक अनूठेपन की बात होती हैं। अनेक मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारे स्थल और अन्य प्रमुख धार्मिक केन्द्र धार्मिक व तीर्थ यात्रा के पर्यटन के स्थल हैं।

तीर्थ यात्रा व्यक्तियों के किसी समूह द्वारा की जा सकती है, वे अपने संबंधित विश्वास के प्रति निष्ठावान होते हैं। उनका विश्वास होता है कि वे तीर्थ यात्रा करने से और पवित्र हो जाएँगे और सही मार्ग पर चल सकेंगे। इसीलिए तीर्थ-यात्रा के पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है। हिंदू, इसाई, इस्लाम, सिक्ख, जैन व बौद्ध स्थल तीर्थ यात्रा एवं पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल एवं आकर्षण के केंद्र हैं। वे हमारे अध्ययन के अत्यधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र में आते हैं।

क्रियाकलाप 1.2

एटलस की सहायता से आप कुछ पर्यटक स्थलों की पहचान कीजिए। इन स्थलों की महाद्वीप/देशों के अनुसार सूची तैयार कीजिए और इन स्थलों के बारे में संक्षिप्त ब्यौरा लिखिए।

पाठगत प्रश्न 1.4

1. देवबंद पर एक नोट लिखिए।
2. धार्मिक व तीर्थ-यात्रा पर्यटन क्या है?

आपने क्या सीखा

- समय के साथ पर्यटन बदलता रहा है। सभ्यता के प्रारंभ में यात्राएँ केवल पैदल जा सकने वाली दूरी तक सीमित थीं।
- कृषि उत्पादों के अधिक उत्पादन एवं मसालों और सिल्क के व्यापार ने इन व्यापार केंद्रों में पर्यटन को प्रोत्साहित किया।
- व्यापार के कारण लोगों का लंबी दूरी तक जाना हुआ। पर्यटन को धर्म से बहुत अधिक बढ़ावा मिला।
- प्रारंभ से ही धार्मिक व तीर्थ-यात्रा पर्यटन बहुत लोकप्रिय रहा है और समूह पर्यटन का एक कारण माना जाता रहा है।
- अतीत में शैक्षिक संस्थानों की प्रगति से पर्यटक कार्यकलापों में वृद्धि हुई क्योंकि चीन के विद्वानों ने नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों का भ्रमण किया और यहीं अध्ययन भी किया।

पाठांत प्रश्न

1. मानव जीवन-शैली में विकासोन्मुखी परिवर्तनों के बारे में लिखिए।
2. प्रारंभिक मानव प्रव्रजन का विवरण लिखिए।
3. प्रारंभिक काल में पर्यटन की व्याख्या कीजिए।
4. औपनिवेशिक एवं आधुनिक काल में पर्यटन पर चर्चा कीजिए।
5. सिल्क एवं मसाले मार्ग क्या हैं? पर्यटन को बढ़ावा देने में उनकी महत्ता की व्याख्या कीजिए।

6. शिक्षा की महत्ता एवं पर्यटन में उसके सहयोग के बारे में लिखिए
7. समुद्री यात्रा संसार को जानने में कैसे सहायक हुई और इसका पर्यटन में क्या योगदान रहा।
8. ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में पर्यटन एवं उसकी स्थिति पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों का उत्तर

1.1

1. शैक्षिक संस्थानों ने अनेक शिष्यों को ज्ञान अर्जित करने हेतु आकर्षित किया। वे भिन्न-भिन्न स्थानों से आए। उन्होंने एक दूसरे से संवाद किया और अनेक क्षेत्रों के बारे में जाना। इसने अन्य भागों की यात्रा करने की इच्छा को जगाया।
2. बहुत से साहसी व्यक्तियों द्वारा संसार के अनेक इलाकों/देशों की समुद्री यात्रा ने अनेक भागों की जानकारी प्रदान की। इससे उन क्षेत्रों के मध्य व्यापार स्थापित हुआ। इससे उपनिवेशवाद बढ़ा और अधिक लाभ लेने में रूचि बढ़ी। इन सब कारणों से पर्यटन का भी विकास हुआ।
3. हाल ही के वर्षों में पर्यटन के विकास के लिए और भी बहुत से कारण हैं। परिवहन सुविधाएँ, होटल, भोजन व पेय, लोगों की आय वृद्धि, विश्राम की छुट्टियाँ, सरकार द्वारा रियायती छुट्टी यात्रा देना उनमें महत्वपूर्ण कारण हैं। यात्रा संचालकों द्वारा छूट देना तथा सरकार द्वारा रियायती अवकाश यात्रा पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण हैं।

1.2

1. मानव प्राणी अतीत में अनेक विकासोन्मुखी परिवर्तनों से गुजरा है जो पूर्णत: खानाबदोश जीवन से शुरू होकर वर्तमान आधुनिक जीवन-शैली तक पहुँचा है।
2. खानाबदोश व्यक्ति अपने पालतू पशुओं के साथ भोजन व हरे मैदानों की खोज में घूमने वाले लोग थे। कुत्ते और घोड़े महत्वपूर्ण पालतू पशु होते थे। वे उनके लिए शिकार पकड़ने में सहायक होते थे। खानाबदोश स्थायी तौर पर आवास नहीं बनाते थे। मुख्यत: वे तीन प्रकार के होते थे - शिकारी, पशुचारी खानाबदोश और भ्रमणशील खानाबदोश।
3. व्यापार से व्यक्तियों के मध्य संवाद स्थापित हुआ और विस्तृत इलाके की विस्तृत जानकारी मिली जिसके बाद पर्यटन क्रियाकलापों में वृद्धि हुई

1.3

1. सिल्क व मसाला व्यापार में वृद्धि होने के कारण पारस्परिक संवाद बढ़ा। वे बार-बार यात्रा करते थे जो बाद में पर्यटन में परिवर्तित हो गया।
2. वर्ष 1498 में कालीकट।

1.4

1. **देवबंद** देश के प्राचीन शहरों में से एक है। दारूल उलूम देवबंद भारत में एक इस्लामिक स्कूल है जहाँ से देवबंदी इस्लामी आन्दोलन प्रारंभ हुआ था। यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में देवबंद में स्थित है। इसकी स्थापना वर्ष 1866 में मौलाना मोहम्मद कासिम नन्नोत्वी के नेतृत्व में प्रमुख इस्लामी विद्वानों (उलेमा) द्वारा की गई।

2. धार्मिक पर्यटन को विभिन्न धार्मिक उद्देश्यों से की गई यात्रा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें किसी समय की कला, संस्कृति, प्रथाओं और वास्तुकला के अनुभव को शामिल किया जाता है। धार्मिक पर्यटन को प्राय: विश्वास पर्यटन कहा जाता है। तीर्थ यात्रियों में विश्वास और आस्था का स्तर अधिक होता है। तीर्थ यात्रा किसी भी समूह द्वारा की जा सकती है पर सच तो यह है कि लोग इस यात्रा को बढ़ती उम्र में करते हैं। वे अपनी धार्मिक आस्था के पक्के समर्थक होते हैं।

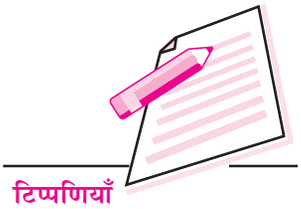

टिप्पणियाँ

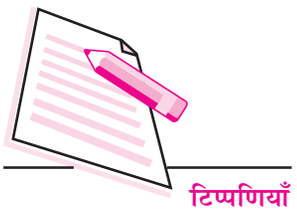

टिप्पणियाँ

2

पर्यटन उद्योग एवं इसका गठन

पर्यटन शब्द से तात्पर्य उन यात्रियों की उन गतिविधियों से है, जो अपने सामान्य निवास या काम के परिवेश से बाहर किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थल पर, केवल अपने खाली/अवकाश के समय को व्यतीत करने के लिए अथवा व्यवसायिक या किसी अन्य उद्देश्य से एक वर्ष से कम अवधि के लिए यात्रा करते हैं। वे अपने गंतव्य स्थान पर जाकर धन कमाने या मानदेय प्राप्ति के लिए कोई भी कार्य नहीं करते। पर्यटन को विश्व में तेज गति से बढ़ने वाले उद्योगों में से एक माना जाता है, परंतु यह व्यवस्थित उद्योग नहीं है, क्योंकि इसमें औपचारिक और अनौपचारिक दोनों क्षेत्र शामिल हैं। यह एक बिखरे हुए उद्योगों में से एक है, परंतु किसी उद्योग को चलाने के लिए कुछ अपेक्षाओं को पूरा करना पड़ता है। उत्पाद को उपयोगी रूप में लाने के लिए तथा चलाने के लिए समुचित जगह, पूंजी और आधारभूत ढांचे की आवश्यकता होती है, इसलिए एक कार्य बल (वर्कफोर्स) का होना अनिवार्य है। आखिर में जब कोई उत्पाद, उद्योग से निर्मित होकर बाहर आता है तो इसके उपभोग के लिए एक बाजार का होना आवश्यक होता है। उद्योग की शर्तों को पूरा करने के लिए इन सब का होना आवश्यक है। लेकिन पर्यटन एक अलग प्रकार का उद्योग है। विश्व की अनेक सरकारों की नीतियों में इसे एक उद्योग माना जाता है। अत: इस पाठ में हमने पर्यटन की अवधारणा, ढांचे और घटकों को एक उद्योग के रूप में परखने की कोशिश की है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- पर्यटन उद्योग के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे;
- पर्यटन उद्योग के घटकों का वर्णन कर सकेंगे;
- एक पर्यटक के लिए आवश्यक सेवा की व्याख्या कर सकेंगे;
- पर्यटन उद्योग में उभरती नई प्रवृतियों को स्पष्ट कर सकेंगे तथा
- देश में पर्यटन को लोकप्रिय बनाने में भारत सरकार की भूमिका पर चर्चा कर सकेंगे।

2.1 उद्योग के रूप में पर्यटन का महत्व

पर्यटन, विश्व में सबसे अधिक श्रमिकों वाले उद्योगों में से एक है। पूरे विश्व में यह अनगिनत लोगों को रोजगार देने वाला उद्योग है। इसे एक उद्योग समझा जाता है, परंतु यह अर्थव्यवस्था के अधीन तृतीय क्षेत्र (टर्शियरी सेक्टर) में आता है। पारंपरिक दृष्टि से कहें तो किसी भी उद्योग में कच्चे माल को तैयार माल में बदला जाता है और उस निर्मित माल को प्रयोग के लिए और अधिक उपयोगी बनाया जाता है, परंतु पर्यटन उद्योग में कच्चे माल और तैयार उत्पाद में अन्तर चिन्हित नहीं हो सकता और न ही तैयार माल स्पष्ट दिखाई देता है। किसी मुद्दे पर हम यह कह सकते हैं कि पर्यटन उद्योग के लिए किया गया निवेश (इनपुट) पर्यटकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाला तैयार उत्पाद हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक टूरिस्ट गाइड इस उद्योग को चलाने वाला कार्यबल होता है। वे ऐसे व्यक्ति हैं, जो पर्यटकों का मार्गदर्शन करते हैं और गंतव्य स्थानों के संबंध में विस्तार से वर्णन करते हैं। पर्यटकों के लिए यह जानकारी बहुत सहायक हो सकती है, लेकिन जब उसी गाइड को उसके द्वारा की गई सेवाओं के लिए पर्यटकों द्वारा भुगतान किया जाता है, तो वे पर्यटन उद्योग के लिए तैयार उत्पाद का रूप ले लेते हैं।

यह किसी क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए बहुत आवश्यक साधन है। यह क्षेत्र के स्थानीय लोगों को विभिन्न प्रकार के रोजगार प्रदान करके वहाँ की आर्थिक स्थिति को मजबूत करता है। पर्यटन के विकास में बहुत लोग शामिल होते हैं। ये लोग औपचारिक शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र से हो सकते हैं। साथ ही अनौपचारिक क्षेत्र से भी हो सकते हैं।

पर्यटन, होटल उद्योग में उच्च योग्यता प्राप्त विशेषज्ञों, सूचना-प्रौद्योगिकी और संचार क्षेत्र, बड़े और मध्यम परिवहन, गाईड्स, टिकट बेचनेवालों, होटल बुक करने वालों, खाद्य और पेय क्षेत्र इत्यादि के लोगों के साथ-साथ फेरी वालों, रिक्शावालों, ऑटो और टैक्सी चालकों को भी अवसर प्रदान करता है। सही अर्थों में यह पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने वाले उद्योग के रूप में अधिक से अधिक लोगों को शामिल करने वाला सेवा-उद्योग है। लोगों को आजीविका प्रदान करके यह अनेक सामाजिक-आर्थिक समस्याओं जैसे गरीबी, अल्प विकास और सामाजिक भेद-भाव को दूर करने में सक्षम है।

पर्यटन ऐसा माध्यम भी है जिसके द्वारा वैश्विक और क्षेत्रीय सामाजिक-राजनीतिक समरसता को स्थापित किया जा सकता है। सामाजिक-आर्थिक अवसर पैदा करना तथा अमीर और गरीब के बीच दूरी को कम करने में सहयोग देना अब बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। पर्यटन की पैरवी करने वाले इसको शान्ति उद्योग मानते हैं, जो विश्व शान्ति प्रक्रिया के माध्यम से सन्तुलन स्थापित करता है। अत: उत्तरदायी और दीर्घजीवी तरीके से विकसित और प्रचलित पर्यटन, पर्यटक स्थलों पर शान्ति और खुशहाली लेकर आएगा और क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर यह भौगोलिक-राजनीतिक स्थायित्व लाएगा।

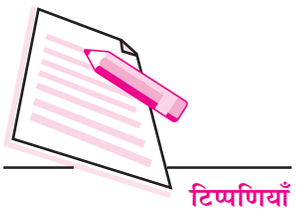

टिप्पणियाँ

2.2 पर्यटन उद्योग के घटक

2.2.1 पर्यटन उद्योग के लिए स्थल

स्थल एक आधारभूत अवयव (घटक) है, जिसके कारण पर्यटन होता है। यह एक से दूसरे क्षेत्र में स्थल का परिवर्तन ही है। पर्यटन के लिए स्थल से अभिप्राय लगभग पूरा विश्व है। पर्यटन के दृष्टिकोण से विश्व के कुछ भागों की अधिक माँग होती है जबकि अन्य उतने महत्वपूर्ण नहीं होते। इसके कारण क्षेत्र-विशिष्ट होते हैं। पर्यटकों के लिए आवश्यक सेवाओं का उपलब्ध होना किसी क्षेत्र को संसाधनपूर्ण बना देता है। दूसरी ओर सेवाओं का उपलब्ध न होना अथवा गुणात्मक या मात्रात्मक रूप से कम उपलब्ध होना क्षेत्र की माँग को घटा देता है। पर्यटकों के लिए किसी क्षेत्र की सुविधाओं में परिवहन, होटल, स्वस्थ और स्वच्छ भोजन इत्यादि आते हैं। पर्यटन विकास में सुरक्षा और बचाव बहुत महत्वपूर्ण पक्षों में से एक है। आतंकवाद के नाम पर बदनाम अथवा राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर क्षेत्र में निश्चित तौर पर अधिक पर्यटक नहीं आएंगे। इसलिए किसी स्थल पर पर्यटन की वृद्धि और विकास उस क्षेत्र में पर्यटक उत्पादों के विकास पर निर्भर करता है।

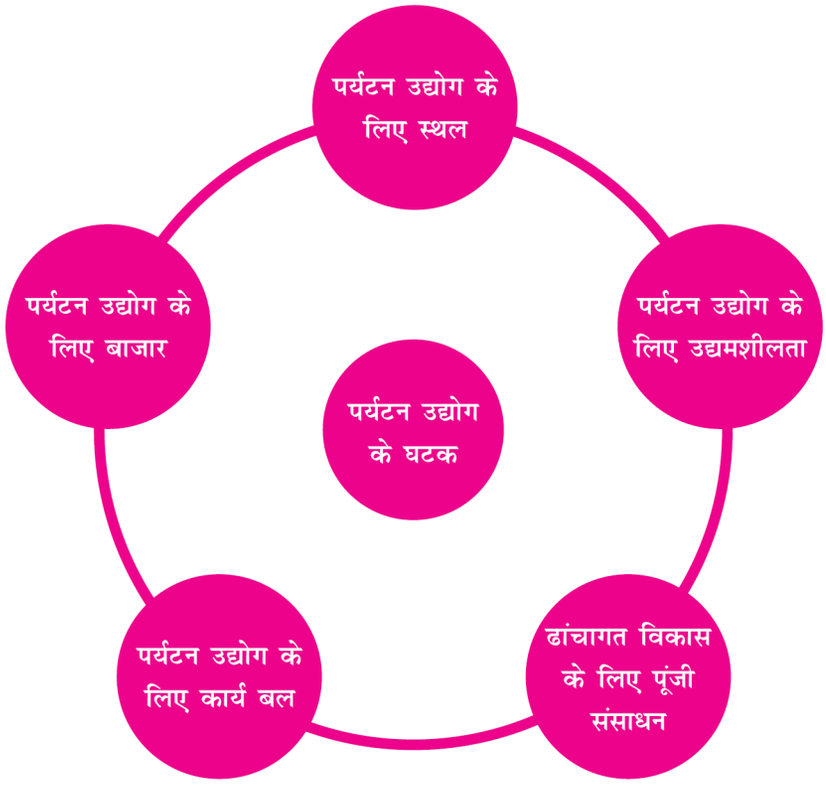

चित्र 2.1: पर्यटन उद्योग के अंग

2.2.2 पर्यटन उद्योग के लिए उद्यमशीलता

किसी उद्योग के स्थापित होने के लिए उसके व्यापार (कारोबार) को चलाने की जिम्मेवारी लेने वाला कोई होना चाहिए। क्योंकि लोग बड़ी संख्या में पर्यटकों की रुचि के स्थलों पर भ्रमण करने

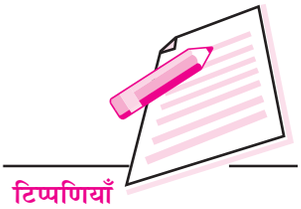

जाना चाहते हैं। अत: भ्रमण करने आए पर्यटकों को सुविधाएँ देने की जिम्मेवारी उद्यमी लेता है। बदले में उन्हें अन्य स्थानीय लोगों के साथ आय प्राप्त होती है। लेकिन अनेक ढांचागत विकास कार्य किसी व्यक्ति/संगठन अथवा संस्था द्वारा नहीं अपितु राज्य सरकार द्वारा करवाए जाते हैं। इसलिए इन सबको भी पर्यटन के विकास में उद्यमी माना जाता है।

2.2.3 पूंजी : ढांचागत विकास के लिए संसाधन

किसी क्षेत्र में किसी उद्योग का ढांचागत विकास करने के लिए बहुत बड़ी पूंजी की आवश्यकता होती है। प्राय: यह पूंजी सरकार द्वारा विभिन्न नीतियों के अन्तर्गत प्रदान की जाती है। ढांचागत विकास केवल पर्यटन उद्योग तक ही सीमित नहीं होता अपितु यह तो क्षेत्र और लोगों की सामान्य भलाई के लिए होता है। क्षेत्र का देश अथवा विश्व के साथ जुड़ा होना, नियमित बिजली की आपूर्ति, होटल, अच्छी कानून-व्यवस्था, पर्यटकों के लिए आकर्षण तथा अच्छे भोजन की सुविधाएँ पर्यटकों के लिए आवश्यक सुविधाओं में से कुछ हैं। इनमें से अधिकांश सरकार द्वारा दी जाती हैं तथा कुछ को विभिन्न इच्छुक औद्योगिक संस्थानों, संगठनों, उद्यमियों अथवा होटलों द्वारा उपलब्ध करवाया जाता है।

2.2.4 पर्यटन उद्योग के लिए कार्यबल

पर्यटन के कई घटक हैं, जिनपर इसका ढांचा निर्भर करता है। इनमें से परिवहन, निवास, भोजन, मनोरंजन, शिष्टाचार, पर्यटक हेतु आकर्षण, यात्रा प्रचालक, ट्रेवल एजेंट्स और अन्तिम रूप से पर्यटक बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह सभी अलग इकाईयाँ नहीं हैं, अपितु सब परस्पर जुड़ी हुई हैं। उनकी अन्त:क्रिया एक जाल की तरह होती है जो अन्त में पर्यटकों की सेवा ही होती है। पर्यटन उद्योग तब फलता-फूलता है जब पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सुयोग्य कार्यबल उपलब्ध होता है। मानवशक्ति को कुशल, अर्द्धकुशल और अकुशल समूहों में बाँटा जा सकता है। सबको पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। उदाहरण के लिए एक कुशल व्यक्ति को टिकट बुक करना, होटल प्रबन्ध का ध्यान रखना, मनोरंजन प्रदान करना, गाईड तथा उच्च गुणवत्तापूर्ण भोजन प्रदान करना होता है। स्थानीय परिवहन टैक्सी चालक अथवा अन्य सहायक कर्मचारियों द्वारा प्रदान किया जाता है। अकुशल कार्यबल की भी आवश्यकता होती है और प्रयोग किया जाता है। ढांचा विकसित करना भी मिलकर काम करने वाले सभी प्रकार के कार्य बलों से जुड़ा हुआ है।

2.2.5 पर्यटन उद्योग के लिए बाजार

आपके विचार से पर्यटन कब फलता-फूलता है? उत्तर है, जब ढांचागत सुविधाएँ उपलब्ध करवाया जाता है, प्राकृतिक आकर्षण हों, गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदाता हों, कानून व्यवस्था उच्च श्रेणी की हो और बड़ी संख्या में पैसे और खाली समय के साथ लोग उपलब्ध हों तो पर्यटन फले-फूलेगा ही। पर्यटक अपनी इच्छानुसार प्राप्त की गई सेवाओं का उपभोक्ता होता है। मूर्त रूप में प्रदान की गई सेवाओं के अतिरिक्त पर्यटक अमूर्त सेवाओं का भी उपयोग करते हैं। मूर्त सेवाओं में भौतिक रूप से उपलब्ध होटल, भोजन, सोविनियर, टैक्सियाँ, गाईड्स और सहायक आते हैं; परन्तु अमूर्त सेवाएँ बिल्कुल भिन्न होती हैं। इनमें खाने का स्वाद, शान्त वातावरण, संस्कृति, मनोरंजन, स्वागत और

सौन्दर्य बोध इत्यादि शामिल होता है। पर्यटक इन सब का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रयोग करते हैं। किसी क्षेत्र में पर्यटन उद्योग की वृद्धि एवं विकास के लिए ये सभी अच्छे कारण हैं। पर्यटन विपणन से पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित उत्पादों को बढ़ावा मिलता है।

प्राय: उद्योगों में एक जैसी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है और वे निरन्तर एक दूसरे से मुकाबला करते रहते हैं। उदाहरण के लिए चिप्स का उत्पादन, ठण्डे पेय, आइसक्रीम, कपड़े, कागज़, सीमेन्ट, लोहा इत्यादि अपने वर्गों में एक दूसरे के साथ मुकाबला कर रहे हैं। इस प्रकार का मुकाबला बहुत कड़ा नहीं होता अपितु एक दूसरे का उत्पाद और सेवाएँ उपलब्ध करवाने में पूरक होता है। एक एयरलाईन, होटल, ट्रेवल एजेंट भले ही अपने वर्ग में एक दूसरे के साथ मुकाबला कर रहे हों परन्तु उस क्षेत्र में पर्यटन की गतिविधियों को सहारा देते हैं। पर्यटन के लिए वे पर्यटन की वृद्धि को समरस बनाते हैं जो पर्यटकों की सहायता करता है। उनका उद्देश्य पर्यटकों को उनके चयन और आवश्यकतानुसार सबसे बेहतर सेवाएँ और सुविधाएँ प्रदान करना है।

पर्यटन उद्योग में निवेश और परिणामों को बहुत स्पष्ट ढंग से विलग नहीं किया जा सकता। आपूर्ति के सन्दर्भ में अन्य उद्योगों को उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं से परिभाषित किया जाता है। पर्यटन के सन्दर्भ में यह उद्योग पर्यटकों की माँग से चलता है। क्षेत्र में अन्य सुविधाएँ पर्यटकों की माँग के अनुसार विकसित एवं प्रदान की जाती है।

क्रियाकलाप 2.1

अपने क्षेत्र के एक यात्रा प्रचालक के पास जाकर निम्नलिखित सूचनाएँ एकत्र करने का प्रयास कीजिए,

अ) यात्रा प्रचालन से पूर्व यात्रा प्रचालक ने कौन से कदम उठाए थे?

ब) आपके अनुसार यात्रा प्रचालन शुरू करने के लिए क्या-क्या आवश्यकताएँ होती हैं।

स) यात्रा प्रचालक प्रारम्भ में किन कठिनाईयों का मुकाबला करते हैं

एकत्र की गई जानकारी के आधार पर यात्रा प्रचालक की स्थिति रिपोर्ट तैयार कीजिए।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. पर्यटन उद्योग की अवधारणा क्या है?
2. पर्यटन उद्योग को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक क्या हैं?

2.3 पर्यटन के साथ सम्बद्ध सेवाएँ

पर्यटन के अनेक घटक हैं। पर्यटन के प्रमुख घटकों को उत्पादक, प्रचालक, ट्रेवल एजेन्ट और पर्यटकों के रूप में रखा जा सकता है। उत्पादक पर्यटन की आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न संसाधन

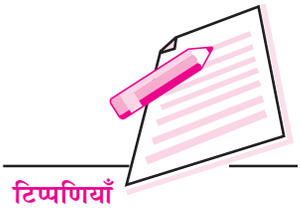

निर्मित करता है। इन संसाधनों को सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है। आइये हम संक्षेप में एक-एक करके उन पर विचार करें। कुल मिलाकर पर्यटन उद्योग के अनेक प्रमुख घटक हैं। उनमें प्रमुख हैं-

I. निवास
II. भोजन और पेय पदार्थ
III. यात्रा कारोबार
IV. परिवहन
V. आकर्षण
VI. आयोजन और सम्मेलन
VII. पर्यटन सेवाएँ

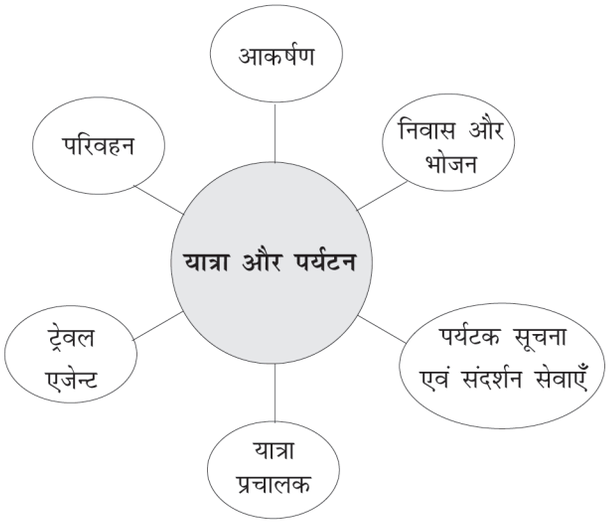

चित्र 2.2: पर्यटन उद्योग के घटक

2.3.1 निवास

निवास, पर्यटन उद्योग का तेजी से बढ़ता क्षेत्र है। इसकी भूमिका अतिमहत्वपूर्ण है और यह उद्योग का आधारभूत घटक है। होटलों की माँग लगभग पूरे वर्ष रहती है। पर्यटकों के लिए निवास को भिन्न-भिन्न तरीकों से वर्गीकृत किया जाता है जैसे स्टार देकर, आकार, स्थान, अतिथियों के प्रकार, वैकल्पिक प्रबन्ध इत्यादि द्वारा।

पर्यटकों/अतिथियों को प्रदान की गई सेवाओं और सुविधाओं के आधार पर स्टार दिए जाते हैं। यह वर्गीकरण केन्द्रीय सरकार की होटल रेस्टोरेण्ट अप्रूवल क्लासीफिकेशन कमेटी (HRACC) द्वारा किया जाता है। एक स्टार वाले होटल में स्टार वर्गीकरण के अन्तर्गत बहुत कम सुविधाएँ और सेवाएँ उपलब्ध होती हैं। जबकि पाँच सितारा में सेवाएँ और सुविधाएँ अधिकतम होती हैं। अब कुछ सात सितारा होटल भी उभर रहे हैं जहाँ आरामदायी सुविधाओं की अधिकता है। ये सुविधाएँ गुणवत्ता और स्थान की दृष्टि से उच्चतम होती हैं। स्टार देने के अतिरिक्त कुछ प्राइवेट निजी होटल और अतिथि गृह भी सस्ते वर्ग में निवास सुविधाएँ उपलब्ध करवा रहे हैं जैसे शयनागार और बिस्तर तथा नाश्ता।

टिप्पणियाँ

स्थान के आधार पर वर्गीकरण: होटलों का वर्गीकरण करने में स्थान भी एक महत्वपूर्ण घटक है। कुछ की माँग उनके स्थान के कारण अधिक होती है जैसे अनेक होटल हवाई अड्डा, रेलवे स्टेशन अथवा बस डिपो के निकट स्थित होते हैं। राजमार्गों पर स्थित होटल भी माँग में होते हैं क्योंकि पर्यटकों को रास्ते में एक रात रूकने की जरूरत होती है। इस वर्ग के अन्तर्गत उन्हें आगे फिर कारोबारी या वाणिज्यिक निवास के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है जो प्राय: बड़े शहरों, व्यापारिक केन्द्रों, पर्यटन केन्द्रों पर स्थित होते हैं। शहरों और कस्बों की बाहरी सीमा पर अर्द्धशहरी निवास उपलब्ध करवाया जाता है। इसी प्रकार हवाई अड्डे के निकट भी निवास उपलब्ध होता है। पहाड़ी क्षेत्रों अथवा राजमार्गों पर रिर्जाट्स और मोट्लस भी पर्यटकों की जरूरत को पूरा करते हैं।

अतिथि के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण: सुविधाओं, स्थान और निजता के साथ-साथ अतिथियों की देय क्षमता के आधार पर निवासों को वाणिज्यिक, स्वीट, एयरपोर्ट, होटल, रिजॉर्ट और मोटल में वर्गीकृत किया जाता है। कमरे के किराये के आधार पर पहले तीन प्रकार के होटल बहुत उच्च स्तरीय होते हैं। स्वीट शायद सबसे अधिक आरामदेह उच्च स्तरीय निवास होता है जिसमें बेडरूम (शयन कक्ष) के अतिरिक्त लिविंग रुम (रहने का कमरा) और डाइनिंग रुम (खाना खाने का कक्ष) होता है। यह अमीर श्रेणी के लोगों जैसे व्यापारी, फिल्म स्टार्स और राजनीतिज्ञों की जरूरतों को पूरा करते हैं।

पूरक/वैकल्पिक निवास के आधार पर वर्गीकरण: उपरोक्त उल्लिखित वर्गों के अतिरिक्त अन्य प्रकार के निवास भी उपलब्ध होते हैं। उनमें सर्किट हाऊस, युवा हास्टल, यात्री निवास, फारेस्ट लॉज, डाक बंगले और फार्म हाउस होते हैं। सर्किट हाऊस उच्च श्रेणी के सरकारी अधिकारियों को निवासीय कमरे प्रदान करता है। इनको इस प्रकार बनाया जाता है कि ये अच्छा निवास और भोजन दें। दिनों और सेवा के आधार पर नकद भुगतान लिया जाता है। युवा हास्टल युवा पर्यटकों को सस्ते कमरे उपलब्ध कराते हैं। यात्री निवास प्राय: सस्ता निवास होता है जो समुद्री तटों, झीलों, रेलवे स्टेशनों, तीर्थ स्थलों इत्यादि के निकट पाए जाते हैं। फारेस्ट लॉज वन्य जीवन अभ्यारण्यों को देखने आए पर्यटकों के लिए होता हैं। डाक बंगले सरकारी काम पर आए सरकारी कर्मचारियों के लिए होते हैं।

2.3.2 भोजन और पेय पदार्थ

भ्रमण पर आए पर्यटकों की बढ़ती संख्या ने भोजन और पेय पदार्थों की माँग को बढ़ा दिया है। पर्यटन के इस घटक ने युवाओं की बड़ी संख्या को रोजगार दिया है। उपभोक्ताओं की पसन्द में परिवर्तन बहुत स्पष्ट है। इससे मुकाबला बढ़ रहा है और उत्पादों को परिष्कृत और विशिष्ट बनाया जा रहा है। बहुत से रेस्तरां विशेषज्ञ बनते जा रहे हैं और उनकी अपनी चेन निर्मित हो रही है। उनके उत्पादों में विविधता है। भोजन और पेय क्षेत्र में बाजार-बल द्वारा प्रयोग की जाने वाली उपभोग की सभी वस्तुएँ शामिल होती हैं। उनकी माँग बहुत अधिक है और सड़क के किनारे उनकी दुकानें खुलती जा रही हैं। उनकी माँग होटलों, पब्स, लाउंजेस, भोजन कक्षों, कॉफी की दुकानों, फास्ट फूड केन्द्रों और मयखानों में ज्यादा होती है।

2.3.3 यात्रा व्यापार (ट्रैवल ट्रेड)

पर्यटकों द्वारा यात्रा के दौरान किया जाने वाला व्यापार यात्रा व्यापार (ट्रैवल ट्रेड) कहलाता है। इसमें यात्रा के लिए आरक्षण (रिजर्वेशन) बेचना/ बुक करना, आवास, टूर, परिवहन, भोजन और पेय इत्यादि शामिल होते हैं। यह बुकिंग दो वर्गों में की जाती है- सभी चीजों की समग्र रूप से अथवा व्यक्तिगत स्तर पर। समग्र टूर बुकिंग वह है, जिसमें पर्यटकों को टूर ऑपरेटरों और पर्यटकों के बीच निर्धारित/ परस्पर वार्तालाप द्वारा निश्चित राशि का भुगतान करना होता है। साधारणतया, टूर ऑपरेटर, पर्यटकों के समूह के आकार और अवधि के आधार पर दर निर्धारित करते हैं। यहाँ तक कि वे शुल्क कम करने के लिए वार्तालाप भी करते हैं। पर्यटन के किसी क्षेत्र के लिए, किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह के लिए, टूर ऑपरेटर द्वारा रिजर्वेशन की बुकिंग अधिकतर निर्धारित दर पर होती है। इसमें यात्रा के लिए आरक्षण की बिक्री/ बुकिंग, आवास, टूर, परिवहन, भोजन और पेय अथवा कुछ और भी शामिल होता है। इसे खुदरा यात्रा संचालन (रिटेल ट्रैवल ऑपरेशन) कहते हैं। संपूर्ण समग्र पैकेजों में यात्रा, आवास, दर्शनीय स्थलों की यात्रा, भोजन, मनोरंजन इत्यादि सभी कुछ का ध्यान रखना शामिल होता है। टूर ऑपरेशन के इस समूह को कभी-कभी थोक मात्रा में यात्रा का संचालन (होलसेल टूर ऑपरेशन) कहते हैं।

2.3.4 परिवहन

परिवहन, पर्यटन की गतिविधियों के अत्यावश्यक घटकों में से एक है। पारंपरिक रूप से परिवहन और पर्यटन विकास में परस्पर 'चूजे और अंडे' जैसा अभिन्न रिश्ता माना जाता है। परिवहन, संबंधित क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक विकास को पूरा करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान करता है। इससे दूरी की भौतिक बाधा को दूर किया जाता है और किसी दूसरे स्थान पर मनुष्यों के जाने के लिए संचलन की जरूरतों को परिवहन ही पूरा करता है। पर्यटन के शुरू होने के स्थल और गंतव्य स्थल के बीच परिवहन ही संबंध जोड़ता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जो भी मानवीय संचलन संभव हो रहा है, वह सब परिवहन के विविध साधनों के कारण ही संभव हो रहा है। लाखों की संख्या में पर्यटक यह अपेक्षा रखते हैं कि उन्हें समुचित दरों पर सुरक्षित, शीघ्र और आरामदेह तरीके से उनके गंतव्यों तक ले जाया जाएगा। वास्तव में, परिवहन और इससे जुड़े सहायक ढांचे के कारण ही इतने बड़े स्तर पर और बहुत कम समस्याओं के साथ, मानवीय संचलन सुलभ हो सका है। परिवहन क्षेत्र को चार प्रकारों में विभाजित किया गया है। यह है हवाई, रेल, सड़क और जल-परिवहन। प्रत्येक की अपनी विशेषताएँ और एक-दूसरे की तुलना में लाभ हैं। यह विभिन्न आर्थिक स्थिति वाले वर्गों के सभी यात्रियों/पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इन सभी की विशेषताओं का एक अति संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है :

रेलवे : किसी भी देश अथवा राष्ट्र के समूह में, जहाँ रेलवे की सुविधा उपलब्ध हो, किसी लंबी दूरी की यात्रा के लिए रेलवे बहुत लाभदायक है। यह परिवहन का सबसे सस्ता साधन है और प्रत्येक वर्ग के यात्रियों की सेवा करता है। लोगों की बड़ी संख्या इससे एक साथ यात्रा कर सकती है। यदि लंबी दूरी की यात्रा करनी हो तो सड़क की तुलना में रेलवे परिवहन का बहुत ही सुविधाजनक

माध्यम है। यह सड़क की तुलना में तेज और सुरक्षित है। भारत में पर्यटकों के लिए विशेष गाड़ियाँ शुरू की गई हैं। इनमें यात्रा करने के दौरान हर प्रकार की सुविधा प्रदान की जाती है। रेल परिवहन (रेलवेज ट्रांसपोर्ट) और इसकी विशेषताओं के संबंध में आप इन्टरनेट से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

चित्र 2.3: रेल परिवहन

स्रोत: https://www.google.co.in/search?q=railways&source=lnms&tbm=isch&sa=X&ei=

हवाई मार्ग : विदेशी पर्यटकों के लिए हवाई मार्गों का बहुत महत्व है, क्योंकि अनेक देश रेल अथवा सड़क मार्ग से जुड़े हुए नहीं होते। यह सर्वाधिक तेज गति से चलने वाला परिवहन है, परंतु बहुत महंगा है। अनेक देश हवाई मार्ग से जुड़े हैं और इससे यात्रा की दूरी में कमी आती है। हवाई परिवहन ने पर्यटन को बहुत अधिक बढ़ाया है, विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को।

चित्र 2.4: हवाई परिवहन

सड़क मार्ग : सड़कें घर से घर तक परिवहन सेवाएँ उपलब्ध करवाती हैं और यह एक-दूसरे को जोड़ने वाली सभी परिवहन प्रणालियों को परस्पर जोड़ती हैं। इसने पर्यटकों के लिए गंतव्यों तक पहुंचने को संभव बनाया है। हवाई परिवहन ने संपूर्ण विश्व को आपके दरवाजे तक ला खड़ा किया है, परंतु सड़क परिवहन ने दरवाजे के भीतर के सुविधा कक्षों को परस्पर जोड़ा है। सड़क परिवहन के महत्व और इसकी विशेषताओं के संबंध में आप 'पर्यटन के लिए परिवहन' संबंधी पाठ 5 में पढ़ सकते हैं। वास्तव में यह पर्यटक को सीधे स्मारक, पूजा स्थल अथवा मेजबान के घर तक ले जाती हैं।

चित्र 2.5: सड़क परिवहन

स्रोत: http://bangaloreinfraplus.blogspot.in/2012/02/artists-impression-ofnayandahalli.html

जलमार्ग : जलमार्गों में फैरी, क्रूज, वाटर टैक्सी और अन्य प्रकार के जल परिवहन शामिल हैं। ये खुले सागरों अथवा अन्तर्देशीय परिवहन भी हो सकते हैं। मोटरचालित वाहनों से पहले जल परिवहन बहुत लोकप्रिय था। प्राचीनकाल में, जल मार्ग को परिवहन का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता था। सड़क, रेल और हवाई सेवाओं का महत्व बढ़ने के कारण यात्रियों द्वारा जल परिवहन की सेवाओं का लाभ लेने में अत्यधिक कमी आई है। जल परिवहन के लिए पाठ 5 में पढ़ सकते हैं।

चित्र 2.6: जल परिवहन

स्रोत: https://www.google.co.in/search?hl=en&site=imghp&tbm=isch&source=hp&biw

टिप्पणियाँ

क्रियाकलाप 2.2

अपने क्षेत्र के विभिन्न होटलों में जाइये और वहाँ कमरों की संख्या, एक समय पर अतिथियों की अधिकतम संख्या, अतिथियों को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के बारे में सूचनाएँ एकत्र कीजिए तथा पर्यटकों के लिए आवश्यक गतिविधियों की एक सूची बनाइये।

पाठगत प्रश्न 2.2

1. पर्यटन उद्योग के कौन-कौन से विभिन्न घटक हैं?
2. आवास वर्गीकरण के संबंध में संक्षिप्त विवरण दें।
3. विविध प्रकार के परिवहनों पर चर्चा कीजिए।

2.3.5 आकर्षण

साधारणतया, पर्यटकों के लिए आकर्षण से तात्पर्य है किसी क्षेत्र/ गंतव्य स्थल पर यात्रा करने की इच्छा में वृद्धि। अतः इसमें शामिल ऐतिहासिक और धरोहर (हैरिटेज) स्थल, संग्रहालय, कला दीर्घाएँ (आर्ट गैलरीज), वनस्पति उद्यान (बॉटैनिकल गार्डन्स), मनोरंजन पार्क्स, जलजीव शाला (एक्वेरियम), चिड़ियाघर (जू), वाटर पार्क्स, सांस्कृतिक आकर्षण, समुद्री तट (बीच), गुणवत्ता की दृष्टि से सस्ती चिकित्सा सुविधाएँ, पारंपरिक स्वास्थ पुनः ऊर्जा (रीजॉविनेटिंग) प्राप्ति केंद्र इत्यादि पर्यटकों के लिए आकर्षणों में से कुछ हैं। अत्यधिक विविधताओं के कारण, भारत में अनेक पर्यटन आकर्षण हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे सारणी के रूप में किया गया है :

हैरिटेज स्थल	सांस्कृतिक	समुद्री तट	स्वास्थ्य/ चिकित्सा	वन्य जीव/पार्क
अजंता एलोरा की गुफाएँ	होली	अंजुना, गोवा	आयुर्वेद	कॉर्बेट नैशनल पार्क
खजुराहो	दीपावली	कोवलम, केरल	योग	सरिस्का नैशनल पार्क
कुतुबमीनार	पोंगल	मैरिना, गोवा	ध्यान (मेडिटेशन)	रणथंभोर नैशनल पार्क
ताजमहल	कुंभ मेला	जुहू, महाराष्ट्र	शिरोधारा तेल चिकित्सा (थिरैपी)	काजीरंगा नैशनल पार्क
कोणार्क मंदिर	पुष्कर मेला	बागा, गोवा	पंचकर्म चिकित्सा	कान्हा नैशनल पार्क
स्वर्ण मंदिर	सूरजकुंड मेला	दोना पौला, गोवा	भाप चिकित्सा	गिर नैशनल पार्क
अक्षरधाम तमिलनाडु	मरुस्थल उत्सव	मामल्लापुरम,	सस्ती शल्य-चिकित्सा सर्जरी	मुदुमलय अभयारण्य
बोध गया	संगीत और नृत्य	पुरी, ओडिशा	नालौर	पेरियार नैशनल पार्क

यह सभी पर्यटकों के लिए बड़ा आकर्षण हैं और पर्यटक इन क्षेत्रों/ गंतव्यों की ओर बार-बार जाने के लिए खिंचे चले आते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि इस देश की विस्तृत लंबाई-चौड़ाई और इससे जुड़ी विविधतापूर्ण भौतिक विशेषताएँ, जिसमें समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विविधता समाहित है। यह विविधता है दक्षिण में स्थित समुद्र तट तो उत्तर में ऊंची हिमालयी शृंखला, पश्चिम में राजस्थान में मरुस्थल तो पूर्व में मेघालय में अत्यधिक नमी वाले क्षेत्र। देश के सभी भागों में अनेक प्रकार के आकर्षण निहित हैं। यही कारण है कि भारत में पर्यटन उद्योग में अत्यधिक विकास (वृद्धि) विशेष रूप से हाल ही की कुछ दशकों के दौरान देखने में आई है।

2.3.6 समारोह (इवेंट्स) और सम्मेलन (कान्फ्रेंसिज)

अनेक शैक्षणिक, पेशेवर (प्रोफैशनल), व्यावसायिक अथवा नौकरशाही (ब्यूरोक्रैटिक) से संबद्ध समारोह (इवेंट्स), बैठकें और सम्मेलनों इत्यादि की व्यवस्था की जाती है। इनका आयोजन इवेंट्स के लिए चुने गए विषयों के आधार पर किया जाता है। इसमें विश्व के सभी भागों से लोगों को आमंत्रित किया जाता है। इन लोागें से समारोह (इवेंट) स्थलों और इसके आस-पास के क्षेत्रों में यात्रा की अपेक्षा की जाती है। निर्धारित स्थान पर, आवास और भोजन की आवश्यकता इनके लिए अनिवार्य होती है। इनके मनोरंजन की व्यवस्था भी की जाती है। इसमें पर्यटक की ओर से धन खर्च करना भी शामिल होता है। वे अपनी जेब से धन खर्च करते हैं अथवा इसे प्रायोजित कराया जाता है। कभी-कभी जिस संगठन में वे काम कर रहे होते हैं। वे ही इसका खर्च उठाते हैं। कुछ प्रतिनिधियों की आयोजकों द्वारा वित्तीय सहायता भी की जाती है। इन आयोजकों को भी सरकार, मंत्रालयों, व्यावसायिक घरानों, शैक्षणिक संस्थाओं इत्यादि से वित्तीय सहायता प्राप्त होती है।

सम्मेलन (कॉन्फ्रेंस), सेमिनार, बैठकें (मीटिंग्स), व्यापार मेले (ट्रेड शो), प्रदर्शनियाँ और समागम (कनवेंशन) इत्यादि अनेक समुदायों के लिए बड़े व्यवसाय हैं। इस प्रकार के आयोजनों से स्थानीय लोग, पर्यटक सेवाओं और उत्पादों को उपलब्ध करवाकर और बेचकर काफी धन कमा सकते हैं। जब लोग इन स्थानों पर आते हैं तो वे नजदीक के क्षेत्र/ गंतव्य स्थलों पर भ्रमण के लिए जाते हैं। इसलिए विश्व के अधिकांश शहर समय-समय पर अनेक बैठकों और सम्मेलनों को आयोजित करते हैं। विशषत: पर्यटकों की रूचि के स्थलों जैसे गोवा, दिल्ली, मुम्बई, कोलकता में आयोजित करते हैं। इसके अतिरिक्त दिल्ली में प्रगति मैदान ऐसे आयोजनों के लिए राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, लगभग पूरे वर्ष ही आरक्षित (बुक) रहता है। भारत और विदेशों में अन्य शहरों और कस्बों का भी लगभग यही हाल है।

3.4.7 पर्यटन सेवाएँ

पर्यटन सेवाओं के क्षेत्र (सेक्टर) में अनेक संगठन, संस्थाएँ, सरकारी एजेसियाँ और कंपनियाँ इत्यादि शामिल होती हैं। इन सभी के पास वे सभी विशिष्ट सेवाएँ उपलब्ध होती हैं, जिनकी पर्यटन उद्योग में आवश्यकता होती है। यह मूलत: एक प्रकार के विनियामक (रेगुलेटर) होते हैं, जो सेवाएँ उपलब्ध करवाते हैं। वे न सिर्फ यात्रियों और पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, बल्कि

किसी विशिष्ट क्षेत्र में संवृद्धि (ग्रोथ) और विकास के उद्देश्य को भी पूरा करते हैं। अत: शोध करना भी पर्यटन का एक महत्वपूर्ण घटक बन जाता है। पर्यटन में शोध किए जाने के अतिरिक्त पर्यटन के संबंध में विज्ञापन, विपणन, शिक्षण/ सूचित करना इत्यादि भी पर्यटन सेवाओं के अन्य अच्छे घटक हैं।

बुनियादी आधारभूत ढांचा (इन्फ्रास्ट्रक्चर) उपलब्ध करवाने में सरकार बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, ताकि पर्यटन भली-भाँति विकसित और व्यवस्थित हो सके। यह धन, सूचना और सेवाएँ उपलब्ध करवाकर इस व्यवसाय को प्रोत्साहित करती है। इस प्रक्रिया में सरकार पर्यटकों की माँगों, समस्याओं और पृष्ठभूमि को जानने के लिए समय-समय पर शोध करवाती है। अत: यह पर्यटकों को दी जाने वाली सेवाओं और सुविधाओं की विपणन योजना (मार्केटिंग प्लैनिंग) और प्रबंधन को सहायता करने का महत्वपूर्ण साधन है। पर्यटन में इनकी माँग का आकलन किया जाता है और अंतत: कोई निर्णय लिया जाता है जो पर्यटन के दायरे की वृद्धि में सहायक होता है। इन सभी के लिए, एक समुचित और संतुलित योजना और नीतियों की आवश्यकता होती है, जिसके लिए तद्नुसार कार्य करने के लिए सरकार एक सही/ समुचित अधिकारी होता है। प्रतिदिन, समाचार-पत्रों के अनेक पृष्ठों में पर्यटन संबंधी भरे हुए दर्जनों विज्ञापन देखे जा सकते हैं। यह विज्ञापन विविध समूहों से संबंधित होते हैं। उदाहरण के लिए- हनीमून ट्रिप, तीर्थयात्रा ट्रिप, क्रूज ट्रिप, पर्वतारोहण, राफ्टिंग, राष्ट्रीय स्थलों की यात्रा, अंतरराष्ट्रीय यात्रा, यह सभी पर्यटन के प्रोत्साहन के साथ-साथ अपने निजी वित्तीय लाभ के लिए मिल-जुलकर काम करते हैं।

क्रियाकलाप 2.3

अपने क्षेत्र के किसी पर्यटक गतिविधि केन्द्र पर जाइए और जानिए कि वहाँ कौन-कौन से आकर्षण उपलब्ध हैं। उन आकर्षणों की एक सूची बनाइए। उन आकर्षणें को अपनी सूचना के आधार पर अथवा पृष्ठ पर दी गई तालिका के आधार पर वर्गीकृत कीजिए। उन आकर्षणों पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।

पाठगत प्रश्न 2.3

1. पर्यटन के लिए कुछ प्रमुख स्रोतों के नाम लिखिए।
2. पर्यटन को प्रोत्साहित करने में सम्मेलनों (कान्फ्रेन्सिज) के महत्व की चर्चा कीजिए।
3. पर्यटन को सुविधाजनक बनाने में सरकार की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

2.4 पर्यटन में ताजा रुझान (अभिवृतियाँ)

भारत में पर्यटन के विकास और बढ़ावे के लिए राष्ट्रीय नीतियाँ संघीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा अन्य केन्द्रीय मंत्रालयों, राज्य सरकारों, संघीय क्षेत्रों और निजी क्षेत्र के प्रतिनिधियों के परामर्श और सहयोग से तैयार की जाती हैं। नए प्रकार के पर्यटन को परखने के लिए तथा वर्तमान पर्यटन को नवीनतम

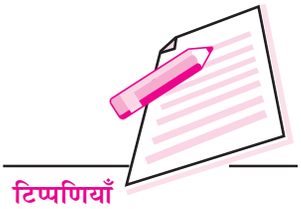

अभिवृतियों के साथ प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रयास किये जाते हैं जैसे हाऊस बोट पर रुकना, ग्रामीण अंचल को अनुभव करने के लिए गांवों में ठहरना। अन्य रूझानों में क्रूज, चिकित्सा, कारोबार, खेल और पारिस्थितिक पर्यटन इत्यादि शामिल हैं।

मध्य बीसवीं सदी से विश्व भर में पर्यटन में बहुत वृद्धि हुई है। पर्यटकों का पूर्व एशिया और प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में आगमन बहुत बढ़ा है। नए अज्ञात स्थल बड़ी संख्या में सामने आ रहे हैं और ऊँची वृद्धि दिखा रहे हैं। वर्ष 2000 से पूर्व यूरोप और अमेरिका मुख्य पर्यटन स्थल थे लेकिन पिछले दिनों उनकी हिस्सेदारी में क्रमश: 10 प्रतिशत और 13 प्रतिशत की कमी हुई है। वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन का 51 प्रतिशत आराम के लिए यात्रा, मनोरंजन और अवकाश गुजारने से जुड़ा हुआ है। लगभग 15 प्रतिशत पर्यटक व्यापार और व्यावसाय के लिए यात्रा करते हैं। अन्य 27 प्रतिशत मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने के लिए, धार्मिक यात्राओं के लिए और चिकित्सीय पर्यटन करते हैं। बाकी बचे 7 प्रतिशत उपलब्ध आँकड़ो के अनुसार किसी विशेष उद्देश्य के लिए यात्रा नहीं करते। कुल पर्यटकों का 52 प्रतिशत हवाई यात्रा, 38 प्रतिशत सड़क से, 3 प्रतिशत रेल से तथा 6 प्रतिशत जलीय मार्ग से यात्रा करता है। विश्व पर्यटन में रूझानों के बारे में आप अगले अध्याय में पढ़ सकते हैं।

विश्व पर्यटन संघ ने अनुमान लगाया है कि 2020 तक अंतरराष्ट्रीय आगमन 1.6 बिलियन से अधिक हो जाएगा। इनमें से 1.2 बिलियन अन्त: क्षेत्रीय और 0.4 बिलियन लंबी दूरी के यात्री होंगे। पूर्व एशिया और प्रशान्त, मध्य पूर्व और अफ्रीका में प्रतिवर्ष 5 प्रतिशत की वृद्धि की आशा है जबकि विश्व में इनकी औसत वृद्धि 4.1 प्रतिशत होगी। यूरोप और अमेरिका जैसे पुराने क्षेत्रों में वृद्धि दर औसत से कम होगी। पर्यटकों का कुल आगमन दर्शाता है कि 2020 तक तीन उच्च स्थान रखने वाले स्थल यूरोप (717 मिलियन) पूर्व एशिया (397 मिलियन) और अमेरिका (282 मिलियन) के साथ तीसरे स्थान पर होगा।

2.4.1 भारत में पर्यटन के ताजा रुझान

विदेशी पर्यटकों के लिए भारत एक प्रिय स्थल है। 2009 से 2011 तक यहाँ विदेशी पर्यटकों का आगमन विश्व के सभी देशों से खूब तेजी से बढ़ा है। 2011 में भारत में पूर्वी यूरोप से पर्यटकों का आगमन 20.6 प्रतिशत था, जिसके बाद दक्षिण पूर्व एशिया से (18.8 प्रतिशत), पश्चिम एशिया से (18.5 प्रतिशत), पूर्व एशिया से (15.5 प्रतिशत), अफ्रीका से 13.6 प्रतिशत, आस्ट्रेलिया से 10.9 प्रतिशत, दक्षिण एशिया से 8.8 प्रतिशत, उत्तर अमेरिका से 5.6 प्रतिशत और पश्चिमी यूरोप से 5.0 प्रतिशत रहा।

ऐसा इस कारण से है कि भारत में पर्यटन स्थलों और आकर्षणों की विविधता है। यह भी वास्तविकता है कि भारत एक कम खर्चीला स्थल है। इसको सामान्य पर्यटन के साथ-साथ चिकित्सकीय पर्यटन के सन्दर्भ में देखा जा सकता है। इस कारण भारत में रहना बहुत महँगा नहीं है और लोग यहाँ लंबी अवधि के लिए रुकते हैं। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार विदेशी पर्यटकों का भारत में रुकना सबसे ज्यादा है जो औसत एक महीने से अधिक 31.2 दिन है। इसके बाद आस्ट्रेलिया में 27 दिन, पाकिस्तान में 25 दिन है। भारत में पर्यटन के ताजा रुझान आगामी पाठों में पढ़ सकते हैं।

टिप्पणियाँ

2.5 पर्यटन को लोकप्रिय बनाने में भारत सरकार की भूमिका

पर्यटन मंत्रालय, केन्द्रीय सरकार की विभिन्न एजेन्सियों, राज्य सरकारों, केन्द्र शासित क्षेत्रों और निजी क्षेत्रों के बीच भारत में पर्यटन के विकास और बढ़ावा देने वाली गतिविधियों में समन्वय स्थापित करने वाली तथा नीतियों और कार्यक्रमों को बनाने वाली शीर्ष एजेंसी है। मंत्रालय का मुखिया केन्द्रीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) होता है। मंत्रालय का प्रशासनिक मुखिया सचिव, (पर्यटन) होता है जो महानिदेशक पर्यटन के रूप में भी काम करता है।

पर्यटन के महानिदेशक के पास देश के भीतर 20 कार्यालय, विदेशों में 14 कार्यालय और एक परियोजना 'स्काईंग और पर्वतारोहण का भारतीय संस्थान 'गुलमर्ग', शीतकालीन खेल परियोजना (IISM) है।

- केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय के अन्तर्गत एक सार्वजनिक क्षेत्र की ईकाई 'भारतीय पर्यटन विकास निगम' तथा निम्नलिखित स्वायत संस्थान हैं।
- भारतीय पर्यटन और मात्रा प्रबंधन संस्थान (IITTM) एवं भारतीय जल क्रीडा संस्थान (इन्डियन इंस्टीच्यूट आफ वाट्र स्पोर्ट्स)
- राष्ट्रीय होटल प्रबंधन एवं केटरिंग टेक्नालोजी परिषद् एवं होटल प्रबंधन संस्थान।

2.5.1 पर्यटन मंत्रालय की भूमिका और कार्य

- विकास नीतियाँ, प्रोत्साहन वेतन, बाह्य सहायता, प्रोत्साहन, विपणन आदि के सभी नीतिगत मामले।
- भोजन बनाना तथा अन्य मंत्रालयों, विभागों, राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों के साथ समन्वय बनाना।
- मानव संसाधन विकास।
- प्रचार एवं विपणन।
- अनुसंधान, विश्लेषण, निगरानी तथा मूल्यांकन।
- कानून तथा संसदीय कार्य।
- सतर्कता मामले।
- होटल तथा रेस्तरांओं की स्वीकृति एवंम वर्गीकरण।
- यात्रा एजेन्ट, अंतर्गामी यात्रा संचालक (इनबाउन्ड टूर ऑपरेटर) व पर्यटन परिवहन संचालक के लिए स्वीकृति लेना।
- गुणात्मक पर्यटन के लिए पर्यटन के आधारभूत ढाँचे का विकास करना इस मंत्रालय का मुख्य कार्य क्षेत्र है।
- विभिन्न पर्यटन स्थलों व राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के परिपथों पर पर्यटन के विकास हेतु मंत्रालय के व्यय का 50% से अधिक खर्च किया जाता है।

देश के तेजी से बढ़ते आवास सुविधा व खान-पान उद्योग की व्यवसायिक श्रमशक्ति की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, पर्यटन मंत्रालय ने विभिन्न प्रशिक्षण की पुनः स्थापना व पुर्नगठन किया है; ताकि संसाधनों को उपयोग में लाया जा सके और केन्द्रीय पर्यटन उद्योग को बल प्राप्त हो सके। अतः वर्ष 1982, में केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय ने नेशनल कांउसिल फॉर होटल मैनेजमेंट एण्ड कैटरिंग टॅक्नोलॉजी (NCHMCT) की स्थापना की। देश में तेजी से विस्तार करते व आधुनिकीकृत होते आतिथ्य उद्योग, होटल मैनेजमेंट व कैटरिंग के शैक्षिक कार्यक्रमों ने जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की। परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय संघ द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले पाठयक्रम अंतरराष्ट्रीय मानक स्तर तक पहुंच गए।

नेशनल काउंसिल की अपनी वेबसाइट है जिसे डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.एनसीएचएमईटी.ओआरजी (www.nchmet.org) पर पहुँचा जा सकता है।

2.5.2 विपणन उद्देश्य

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार विदेशों में अपने 14 कार्यालयों द्वारा पर्यटन पैदा करने वाले बाजार में भारत को पंसदीदा पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने तथा वैश्विक पर्यटन बाजार में भारत की भागीदारी को बढ़ाने के लिए विभिन्न भारतीय पर्यटन उत्पादों को प्रोत्साहित करने का कड़ा प्रयास कर रहा है। इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न पर्यटन संस्थाओं के सहयोग से एकीकृत विपणन व प्रोत्साहन रणनीति अपनायी गयी है।

प्रोत्साहन के इन प्रयासों में प्रिंट व इलैक्ट्रानिक मीडिया, मेलों तथा प्रदर्शनियों में भाग लेना, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ (वर्कशाप) आयोजित करना, रोड शो, विवरिणका छपवाना, यात्रा एजेन्टों एवं यात्रा संचालकों के साथ मिलकर विज्ञापन देना, मीडिया व पर्यटन उद्योग से जुड़े लोगों को भारत भ्रमण के लिए निंमत्रित करना शामिल है।

? क्या आप जानते हैं

- विश्व पर्यटन मेला, शंघाई, में भारतीय पर्यटन को सर्वश्रेष्ठ पर्यटन प्रोत्साहन पुरस्कार मिला था।
- विश्व पर्यटन मेला, कोरिया, में भारतीय पर्यटन को सर्वश्रेष्ठ मण्डप (बूथ) संचालन पुरस्कार मिला था।
- बिशाऊ अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मेला, दक्षिण कोरिया, में भारत को सर्वश्रेष्ठ पर्यटन प्रोत्साहन पुरस्कार मिला था।

2.5.3 अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 2002 में भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विश्व भर के लोगों के लिए अंतरराष्ट्रीय विपणन अभियान चलाया गया था।

टिप्पणियाँ

भारतीय संस्कृति व इतिहास के विभिन्न पहलुओं जैसे योग, अध्यामिकता आदि को दर्शातें हुए इस अभियान ने भारत को एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में प्रस्तुत किया।

2009 वर्ष में तत्कालीन पर्यटन मंत्री ने अतुल्य भारत अभियान को घरेलू क्षेत्र में भी बढ़ाने हेतु अभियान चलाया।

स्थानीय लोगों को विदशी पर्यटकों से अच्छे व्यवहार व शिष्टाचार हेतु शिक्षित करने के लिए 2008 में मंत्रालय ने एक विशेष अभियान आरम्भ किया। आमिर खान द्वारा प्रस्तुत 'अतिथि देवो भव:' का विज्ञापन इसी अभियान का अंग था।

2.6 भारतीय पर्यटन विकास निगम (ITDC)

भारत में पर्यटन के विकास, प्रोत्साहन व विस्तार का मुख्य चालक भारतीय पर्यटन विकास निगम है। यह अक्टूबर, 1966 को अस्तित्व में आया–

आईटीडीसी के मुख्य उद्देश्य हैं–

- वर्तमान होटलों और होटलों के बाजार, समुद्री तटों, यात्री लॉज तथा रिजोर्ट्स आदि का निर्माण करना तथा अपने हाथ में लेना।
- परिवहन, मनोरंजन, खरीदारी और परम्परागत सेवाएँ प्रदान करना।
- पर्यटन की प्रचार सामग्री का उत्पादन व वितरण करना।
- भारत तथा विदेशों में परामर्श और प्रबंधकीय सेवाएँ प्रदान करना।
- संपूर्ण मुद्रा परिवर्तक के रूप में तथा सीमित मुद्रा परिवर्तक इत्यादि के व्यापार को आगे बढ़ाना।

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु भारतीय पर्यटन विकास निगम पर्यटकों की रूचि के विभिन्न स्थानों पर होटल एवं रेस्तरां चला रहा है। यह परिवहन की सुविधाएँ उपलब्ध करता है और प्रचार सामग्री, मनोरंजन और डयूटी मुक्त खरीददारी की सुविधाएँ प्रदान करता है। निगम अनेक प्रकार की दूसरी क्रियायें व गतिविधियाँ भी चलाता है। भारतीय पर्यटन विकास निगम "द अशोका इंस्टीयूट ऑफ हॉस्पीटिलिटी एण्ड टयूरिज्म मैनेजमेन्ट" चलाता है और इसके द्वारा पर्यटन व अतिथ्य के क्षेत्र में प्रशिक्षण व शिक्षा प्रदान कर रहा है।

? क्या आप जानते हैं

वर्तमान समय में, आईटीडीसी के पास अशोक ग्रूप ऑफ होटलस के 8 होटल, संयुक्त उद्यम के 6 होटल, 2 रेस्तंरा, 12 परिवहन इकाईयाँ, 1 पर्यटक सर्विस स्टेशन, विभिन्न हवाई अड्डों पर 37 ड्यूटी फ्री दुकानें और एक कर मुक्त दुकान तथा दो ध्वनि एवं प्रकाश शो दिखाने का ढाँचा है।

2.6.1 भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (इण्डियन रेलवे कैटरिंग एण्ड टूरिज्म कॉरपोरेशन IRCTC)

जहाँ तक रेलवे के टिकट कटाने का सम्बन्ध है, भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (IRCTC) ने क्रांति ला दिया है। इंटरनेट आधारित रेल टिकट की बुकिंग इसके वेबसाइट के माध्यम अथवा मोबाइल फोन के माध्यम से आज बहुत ही आसान हो गया है। टिकटों को रद्द करना या उसमें बदलाव लाना ऑनलाइन के इस्तेमाल से किया जा सकता है। आजकल आप अपने मोबाइल के माध्यम से या ऑनलाइन पीएनआर की स्थिति जान सकते हैं।

फरवरी 2017 में नई रेलवे खानपान नीति को लागू किया गया जिसके अनुसार भोजन तैयार करने एवं उसके वितरण में भेद करते हुए पूरा करने के लिए आइआरसीटीसी को अनिवार्य बनाया गया है। भोजन की गुणवत्ता में सुधार करने हेतु, आईआरसीटीसी को नई रसोई बनाने एवं वर्तमान में उपलब्ध रसोई में सुधार करना है।

नई नीति के प्रमुख विशेषताएँ हैं :

1. सभी चलनशील (मोबाइल) इकाई पर खानपान की सेवा का आईआरसीटीसी द्वारा प्रबंधन करना है। आईआरसीटीसी द्वारा पुनः सौपा गया पैंट्री कार का अनुबंध आंचलिक रेलवे द्वारा किया जाएगा।
2. आईआरसीटीसी द्वारा नामित रसोई या स्वामित्व, संचालित और प्रबंधित रसोइयों से ही सभी खाना चलनशील (मोबाइल) इकाई को लेना होगा।
3. खानपान की सेवाओं के लिए किसी भी प्राइवेट लाइसेंस धारक को आईआरसीटीसी सीधे आउटसोर्स नहीं करेगी या किसी अन्य को लाइसेंस नहीं देगी। आईआरसीटीसी अपने पास मालिकाना हक रखेगी और वह इसके लिए जिम्मेवार होगी। यह जिम्मेवारी रसोई बनाने उसको चलाने तथा उसकी गुणवत्ता को बनाए रखने से संबंधित होगा।
4. ट्रेनों में खाना की सेवाओं के लिए आतिथ्य उद्योग से सेवाओं को देने के लिए आईआरसीटीसी काम पर रखेगी।
5. आंचलिक रेलवे के अंतर्गत विभागीय संचालन में चार मौलिक रसोइयाँ हैं। वह है क्षत्रपति शिवाजी टर्मिनस, मुम्बई सेंट्रल टर्मिनस, बल्हारशह और नागपुर। सभी A1 तथा A श्रेणी के स्टेशनों पर रसोई इकाईयाँ या जलपान गृह है। ''जैसा है और जहाँ पर है'' के आधार पर सभी जनआहार तथा सेल रसोईघर को आईआरसीटीसी को सौंपा जाएगा।

? क्या आप जानते हैं

आईआरसीटीसी आई-टिकट भी प्रदान करता है जो सामान्य रूप से आम टिकटों जैसी ही होती है लेकिन यह उनसे अलग होती है जो ऑनलाइन बुक की जाती है तथा पोस्ट द्वारा भेजी जाती है।

'शुभ यात्रा' हाल ही में प्रारम्भ हुआ एक ऐसा कार्यक्रम है जो नियमित रूप से यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए है जिससे पूरे वर्षभर बुक की जाने वाली सभी टिकटों पर वार्षिक फीस भर कर छूट का लाभ ले सकते हैं।

समस्या मुक्त ई-टिकट बुकिंग के लिए रोलिंग डिपोसिट स्कीम (RDS) है। यह यात्रियों को निगम के पास अग्रिम राशि जमा करके सीटें आरक्षित करने की अनुमति देता है।

- **पर्यटन** – आईआरसीटीसी द्वारा घरेलू और विदेशी पर्यटकों के लिए भ्रमण यात्राओं का आयोजन भी किया जाता है। भारत दर्शन, देश भर के महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों को कवर करता है और विशेष रूप से बजट पर्यटकों के लिए ही तैयार किया गया है। इसी प्रकार विशेष लक्जरी ट्रैन जैसे पैलेस ऑन व्हीलस, रॉयल ओरिएन्ट एक्सप्रेस, स्वर्ण रथ, डेक्कन ओडिसी, रॉयल राजस्थान ऑन व्हीलस और बौद्ध सर्किट ट्रनें सभी पयर्टकों, विशेषकर विदेशी पर्यटकों के लिए उपलब्ध हैं।

- **तत्काल आरक्षण** – इस योजना के तहत, यात्री भारतीय रेलवे के इंटरनेट पोर्टल के माध्यम से अल्प समय में अपनी टिकट बुक कर सकते हैं। बुकिंग का समय रोजाना सुबह 10 बजे से है। स्रोत स्टेशन से कोई भी यात्री गाड़ी प्रस्थान के एक दिन पहले तक टिकट बुक कर सकता है।

? क्या आप जानते हैं

सम्पर्क के लिए वेबसाइट हैं–

- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.इण्डियनरेल.जीओवी.इन (www.indianrail.gov.in)
- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.आईआरसीटीसी.को.इन (www.irctc.co.in)
- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.ईएन.विकीपिडी.ओआरजी/विकी/टूरिज्म-इन-इण्डिया (www.en.wikipedi.org/wiki/tourism-in-india)

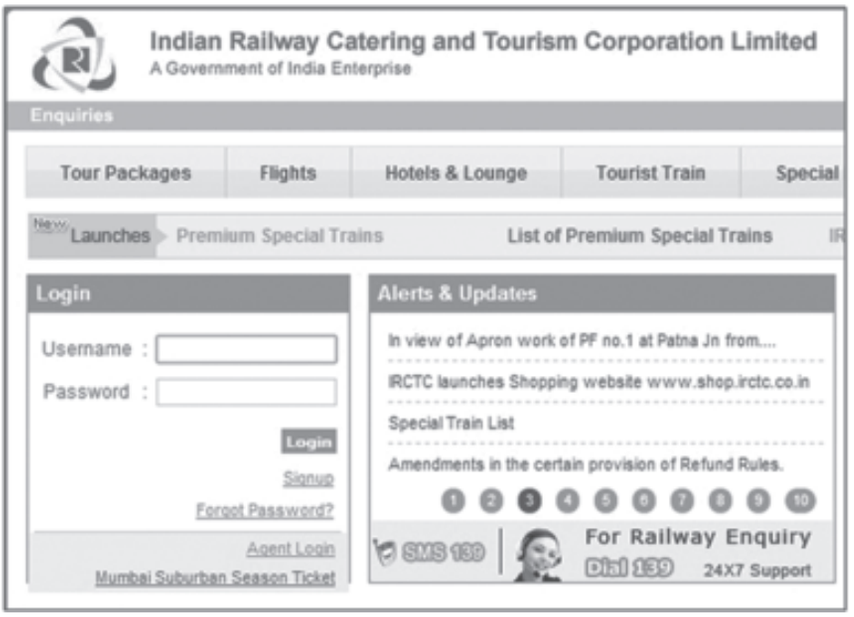

चित्र 2.7: आईआरसीटीसी वेब पेज

2.6.2 राज्य पर्यटन विकास निगम

राज्य निगम का मुख्य उद्देश्य ऐसी परियोजनाएँ और योजनाओं की स्थापना, विकास और निष्पादन करना हैं जो राज्य में पर्यटन को सुगम बनाते हुए उसे तेजी से आगे बढ़ाए। यह पर्यटकों को सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के लिए पर्यटक बंगलों, रेस्तंरा, केफेटेरिया, होटलों और बार आदि का अधिग्रहण, निर्माण व देखरेख भी करता है। निगम सर्वव्यापी पर्यटन (पैकेज टूर), मनोरंजन के लिए मेले तथा त्यौहार, खरीददारी और परिवहन की भी व्यवस्था करता है। वे पर्यटकों की रूचि के स्थलों को विकसित करते हैं और मुद्रित पुस्तिकाओं एवं वेबसाईट्स के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। सभी राज्य पर्यटन विकास निगम पर्यटकों को कमखर्च में अपने राज्य के सबसे आकर्षक स्थल के सौन्दर्य का अनुभव करने का मौका देते हैं। किसी भी राज्य के पर्यटन गतितिधि यों और योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने का सबसे आसान तरीका संबंधित वेबसाइट पर अभिगम्यता है। आपकी सुविधा के लिए 29 राज्यों व 7 केन्द्र शासित प्रदेशों की विभिन्न इंटरनेट वेबसाइट हमने पाठ के अन्त में दी है। अपनी पंसद के राज्य की वेबसाइट पर जाए, जानकारी प्राप्त करें और उसके अनुसार अपने टूर की योजना बनाएं। आपको ज्ञात होना चाहिए कि भारत विश्व के समृद्ध देशों में से एक है जिसे भौतिक, सांस्कृतिक और जीव सम्पदा की धरोहर वरदान में मिली है। भारत के प्रत्येक राज्य, क्षेत्र और कोनों में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बहुत कुछ है। राजस्थान के समृद्ध प्राकृतिक सौन्दर्य और महान इतिहास को जानने के लिए आइए हम राजस्थान पर्यटन विकास निगम के बारे में कुछ पढ़े।

2.6.3 राजस्थान पर्यटन विकास निगम (रा. प. वि. नि.) http://www.rajasthantourism.gov.in/home/rtdc.aspx

राजस्थान पर्यटन विकास निगम (रा. प. वि. नि.) भारतीय कम्पनी एक्ट 1956 के अर्न्तगत एक प्राइवेट कम्पनी है। यह 1978 में आरम्भ हुई और बजट आवास प्रदान करने में पथ प्रर्दशक निगम बना, जिसे पर्यटन उद्योग में एक ट्रेड मार्क माना जाता है। रा. प. वि. निगम भलीभांति जानता

चित्र 2.8: पैलेस-ऑन-व्हील रेलगाड़ी

है कि गुणवत्ता प्राप्त करना, उपभोक्ता सेवा संस्कृति, अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत अतिथि सत्कार की कुंजी और पर्यटन उद्योग की सफलता का सूत्र है। रा. प. वि. नि. राजस्थान के प्रसिद्ध स्थलों जैसे ऐतिहासिक किलों, स्थानों, कला व संस्कृति को अनुभव करने का सुअवसर प्रदान करता है। भरपूर प्राकृतिक सुन्दरता और महान इतिहास के कारण, राजस्थान में पर्यटन उद्योग फल-फूल रहा है। प्रत्येक तीसरा विदेशी पर्यटक भारत के गोल्डन ट्राइएंगल के इस भाग में भ्रमण के लिए आता है।

पर्यटकों के लिए जयपुर के महल, उदयपुर की झीलें, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर के किले अधिक लोकप्रिय स्थल हैं। राजस्थान के पर्यटन ने आतिथ्य क्षेत्र में रोजगार को बढ़ाया है। कुछ महत्वपूर्ण स्थानों की खूबसूरती का प्रमाण है चित्र संख्या 2.8 से 2.13।

चित्र 2.9: जयपुर का हवामहल

चित्र 2.10: उदयपुर का लेक पैलेl

चित्र 2.11: उदयपुर का सिटी पैलेस

चित्र 2.12: जयपुर का जल महल

चित्र 2.13: जोधपुर का महेन्द्रगढ़ किला

क्या आप जानते हैं

विभिन्न राज्यों की पर्यटन इंटरनेट साइट-भारत

राज्य का नाम	पर्यटन साइट
अंडमान और निकोबार द्वीप यू.टी	डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.अंडमानटूरिज्म.इन
आन्ध्र प्रदेश	डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.एपीटीडीसी.इन
अरूणाचल प्रदेश	डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.अरूणाचलटूरिज्म.काम

मुस्लिमों और गैर-मुस्लिमों में अच्छी समझ को बढ़ाने हेतु अजमेर में मोइनुद्दीन चिश्ती दरगाह है जो विश्व में अजमेर शरीफ और अपनी सूफी अवधारणा (सभी के लिए शान्ति) के लिए जाना जाता है।

अजमेर में मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह जो अजमेर शरीफ के नाम से लोकप्रिय है- को पूरे विश्व में मुसलमानों और गैर मुसलमानों के बीच समझ बढ़ाने की अवधारणा के लिए जाना जाता है। अजमेर शरीफ की दरगाह को यह विशेषता प्राप्त है कि उसे विश्व की सभी चिश्ती दरगाहों की जननी कहा जाता है। यदि इस छोटी सी जानकारी ने मोइनुद्दीन चिश्ती के बारे में आपकी उत्सुकता को जगाया है तो आप राजस्थान पर्यटन विकास निगम की इन्टरनेट साईट www.rajasthan tourism.gov.in की सहायता से उनके प्रारम्भिक जीवन और पृष्ठभूमि के बारे में अधिक जानकारी लीजिए, वह भारत कब आए और किस प्रकार भारत में चिश्ती अनुशासन की स्थापना हुई।

पाठगत प्रश्न 2.4

1. विश्व स्तर पर पर्यटन की प्रगति की विवेचना कीजिए।
2. 2020 तक अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की कितनी संख्या के आवागमन का अनुमान है?
3. ग्लोब के किस क्षेत्र से पर्यटक भारत भ्रमण पर आते हैं?

आपने क्या सीखा

- पर्यटन विश्व स्तर पर निरन्तर प्रगति करता हुआ उद्योग है। यह तृतीय क्षेत्र है जो लोगों को रोजगार प्रदान कर रहा है। यह मेजबान देश को विदेशी पर्यटकों के कारण विदेशी मुद्रा कमाने में सहायता कर रहा है।
- यह मेजबान देश को अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सन्तुलन बनाने हेतु सहायता करता है। इसके अनेक घटक हैं। संचालन के लिए स्थान, बहुत बड़ी पूँजी और संचालन के लिए मानवशक्ति तथा आवास, भोजन और पेय, यात्रा व्यापार, परिवहन, सांस्कृतिक आकर्षण और आयोजन जैसे महत्वपूर्ण घटक भी पर्यटन सेवाओं के रूप में काम करते हैं।

- इन सबकी वहाँ जरूरत पड़ती है जहाँ पर्यटक जाते हैं। पर्यटकों की व्यक्तिगत सुरक्षा और हिफाजत देश में भ्रमण करने वाले पर्यटकों की संख्या को बढ़ाती है। इससे अन्ततः उस क्षेत्र के स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ पहुँचता है।

पाठान्त प्रश्न

1. पर्यटन उद्योग की अवधारणा क्या है? पर्यटन उद्योग के विभिन्न कारक (घटक) क्या हैं?
2. पर्यटन किस प्रकार एक उद्योग हैं? पाँच कारण लिखिए।
3. मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. पर्यटन एक उद्योग है क्योंकि यह अनेक लोगों को रोजगार के अवसर देता है। जीवन के सभी क्षेत्रों से लोगों को आकर्षित करता है तथा प्रदान की गई विभिन्न सेवाओं का पर्यटक प्रयोग करते हैं। इसलिए पर्यटन उद्योग है। यह एक उद्योग है क्योंकि इसके लिए अनेक निवेश और प्राप्तियाँ हैं। यद्यपि प्राप्तियाँ एक समान नहीं होती परन्तु कुल मिलाकर यह पर्यटकों को सेवाएँ प्रदान करता है, इसलिए उद्योग है।
2. पर्यटन उद्योग के विभिन्न कारक–

   (अ) इसको स्थान की आवश्कता होती है।

   (ब) जोखिम उठाने के लिए किसी की आवश्यकता होती है।

   (स) पूंजी और कार्यबल आवश्यक होता है।

2.2

1. पर्यटन उद्योग के विभिन्न अवयव हैं–

   आवास, भोजन और पेय, यात्रा, व्यापार, परिवहन, आकर्षण, आयोजक और सम्मेलन तथा पर्यटन सेवाएँ

2. आवास को भिन्न-भिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है।

   अ) सितारा वर्गीकरण

   इ) आकार

ब) अवस्थिति

क) अतिथियों का प्रकार

म) पूरक/वैकल्पिक आवास

3. (अ) रेलवे

(इ) सड़क मार्ग

(ब) वायु मार्ग

(क) जल मार्ग

2.3

1. धरोहर स्थल, सांस्कृतिक, समुद्री तट, स्वास्थ्य/चिकित्सा/वन्य जीव/राष्ट्रीय पार्क
2. सम्मेलनों में पूरे विश्व से लोग आते हैं। यह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन गतिविधियों को तेज करते हैं।
3. पर्यटन के प्रति सरकार की नीति पर्यटन की प्रगति के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त हैं। इसलिए पर्यटन को सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार की भूमिका अति महत्वपूर्ण है।

2.4

1. पर्यटन पूरे विश्व में बढ़ रहा है। यह विश्व स्तर पर सर्वाधिक प्रदर्शनीय गतिविधियों में से एक है। अत: यह निरन्तर बढ़ रही है।
2. 2020 तक अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या 1.6 बिलियन होने का अनुमान है।
3. पूर्व यूरोपीय क्षेत्र से भारत आने वाले पर्यटक की संख्या कुल पर्यटकों की संख्या का 20.6 प्रतिशत है।

टिप्पणियाँ

3

पर्यटन का प्रभाव

पर्यटन सामान्यत: दुनिया में और विशेष रूप से भारत में एक बहुत तेजी से बढ़ने वाला उद्योग है। इसने पर्यटक उत्पत्ति और गंतव्य क्षेत्रों में कई आधारभूत संरचनाओं की स्थापना का नेतृत्व किया है। कई गतिविधियों पर पर्यटकों की आवश्यकतानुसार ध्यान दिया जाता है। पर्यटकों का उस क्षेत्र और लोगों पर काफ़ी प्रभाव होता है, जहाँ से वे यात्रा शुरू करते हैं या जहाँ वे पर्यटन के दौरान पहुँचते हैं। इस पारस्परिक मेलजोल के कारण कुछ प्रभाव स्वभाविक होते हैं। इस अध्याय में, उन प्रभावों को समझने की कोशिश की गई है, जो अच्छे या बुरे हो सकते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- पर्यटन को प्रोत्साहित करने और रोकने वाले कारकों का वर्गीकरण कर सकेंगे;
- पर्यटन के सकारात्मक और नकारात्मक आर्थिक प्रभावों का पता लगा सकेंगे;
- समाज पर पर्यटन के प्रभाव को समझा सकेंगे;
- क्षेत्र की संस्कृति पर पर्यटन के प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे;
- सरकार द्वारा लिए गए राजनीतिक निर्णय के प्रभाव को समझा सकेंगे;
- पर्यावरण/परिवेश पर प्रभाव को पहचान सकेंगे;
- स्थायी पर्यटन को समझा सकेंगे।

3.1 परिचय

पर्यटन को एक उद्योग माना जाता है। इस उद्योग में लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्थानांतरण शामिल होता है। लोगों के स्थानांतरण के लिए परिवहन से संबंधित बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता होती है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण के बाद लोगों के लिए आवास और उसके साथ ही भोजन और पेय की आवश्यकता होती है। उन स्थानों पर ठहरते ही लोगों

के साथ हम बात-व्यवहार करने लगते हैं। ये सब रोजगार के अवसर और आर्थिक गतिविधियाँ उत्पन्न करते हैं। स्थानीय लोगों के साथ मेल-जोल को आगे विभिन्न मूलों की संस्कृतियों के मिश्रण से जोड़ा जाता है। पर्यटकों के उपभोग का तरीका स्थानीय लोगों से अलग होता है। अपशिष्ट उत्पादन और उसका निपटान एक बड़ी चुनौती है। दूसरे शब्दों में, पर्यटन के प्रभावों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है :

- आर्थिक प्रभाव
- सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव
- राजनीतिक प्रभाव
- पर्यावरणीय प्रभाव

3.2 पर्यटन को बढ़ावा देने वाले कारक

भारत एक जैव-भौतिक विविधता वाला विशाल देश है। भूमि के इस विशाल विस्तार में उत्तर-पूर्व में भरपूर वर्षायुक्त भागों से लेकर पश्चिम में सबसे शुष्क भाग तक शामिल हैं। इसमें द्वीप-समूहों, तटीय भूमि (समुद्र तल), ऊँची पर्वत चोटियों को शामिल किया गया है। इसमें नम हरी घाटियों, फूलों की घाटी, तीव्र पहाड़ी ढाल, सुंदर झरने, लंबे-चौड़े सपाट मैदान, शुष्क रेगिस्तान आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त इसमें गुफाएँ, स्मारक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के स्थल, धार्मिक संरचनाएँ, पहाड़ी रास्ते, साहसिक पयर्टन, चट्टानी चढ़ाई, राफ्टिंग आदि भी शामिल हैं। देश के विभिन्न भागों में प्राकृतिक दर्शनीय स्थलों के अलावा, उनमें से अधिकांश, नवीन पर्यावरण, मनोरंजन केंद्रों, स्वास्थ्य पुनर्युवन केंद्रों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। देश पर्यटकों की रुचि के अनुसार वर्ष भर दुनिया के विभिन्न भागों से पर्यटकों को आमंत्रित करता है। दक्षिण भारत की शीतकालीन जलवायु पर्यटकों के लिए अनुकूल स्थल बनाती है, जबकि हिमालय क्षेत्र गर्मियों के दौरान अनुकूल माना जाता है। ये सभी कारक मूल रूप से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए अनुकूल हैं।

कभी एक स्थान पर बड़ी संख्या में पर्यटकों/लोगों के आने के बाद, उन स्थानों में घूमने के साथ-साथ, वहाँ कुछ परिणामों का सामना भी करना पड़ता है। ये परिणाम अच्छे के साथ-साथ बुरे भी हो सकते हैं। आइए, इन प्रभावों का अध्ययन करते हैं।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. पर्यटन गतिविधियाँ किस प्रकार गंतव्य क्षेत्रों को प्रभावित करती हैं?
2. पर्यटन के प्रभाव क्या हैं?

3.3 आर्थिक प्रभाव

इस क्षेत्र का आर्थिक महत्व इसमें शामिल लोगों की संख्या के साथ-साथ इससे उत्पन्न आय द्वारा भी निर्धारित किया जा सकता है। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, पर्यटन क्षेत्र में बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं। इसमें परिवहन, आवास, भोजन, टिकट, गाइड, नौका विहार, राफ्टिंग, ट्रैकिंग,

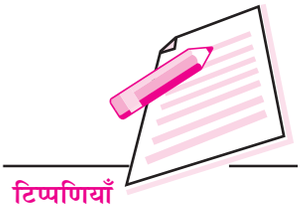

पर्यटन स्थलों का अनुरक्षण आदि शामिल है। मेजबान मेहमानों को सभी आवश्यक सेवाएँ एवं सुविधाएँ प्रदान करते हैं। मेहमान इन सेवाओं के लिए भुगतान करते हैं। इसलिए, पर्यटन से दोनों क्षेत्रों/देशों के लोगों को, जहाँ पर्यटन का आरंभ और गंतव्य स्थान है, काफी लाभ होता है। ये विभिन्न पर्यटन संबंधी गतिविधियाँ आधारभूत संरचना के विकास द्वारा प्रकट होती हैं। आने या जाने वाले पर्यटकों के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक बेहतर आवागमन सुविधाएँ प्रदान करने के लिए, दोनों क्षेत्रों में अच्छी आधारभूत संरचना की आवश्यकता होती है।

विकासशील देशों में विदेशी पर्यटकों के लिए पर्यटन स्थल को बढ़ावा देना प्राथमिक उद्देश्यों में से एक है। यह विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में उनकी मदद करता है। विदेशी मुद्रा भंडार की अच्छी मात्रा व्यापार के संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है।

देश में व्यापार संतुलन के अलावा, यह बेरोजगार युवाओं के लिए रोज़गार के अवसर भी उत्पन्न करता है। इस तरह वे अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं और अपने जीवन-यापन और कल्याण के लिए आय उत्पन्न करते हैं। लेकिन पर्यटन हर समय अर्थव्यवस्था के लिए बहुत अच्छा नहीं होता है। इसका एक नकारात्मक प्रभाव भी है। आइए, एक-एक करके उन पर नजर डालते हैं:

3.3.1 पर्यटन के नकारात्मक आर्थिक प्रभाव

पर्यटन के कारण गंतव्य स्थानों के आर्थिक जीवन पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं, विशेष रूप से, विकासशील देशों या आर्थिक रूप से कम विकसित देशों में। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

- पर्यटन की कई छिपी लागतें होती हैं, जिनका गंतव्य देशों पर प्रतिकूल आर्थिक प्रभाव पड़ता है। ज्यादातर, अमीर देशों को गरीब देशों की तुलना में बेहतर लाभ प्राप्त होता है। अनेक उपभोग योग्य उत्पादन, खाद्य और पेय विकसित देशों से आयात किए जाते हैं। इस प्रकार लाभ विकसित देशों में चला जाता है, क्योंकि कई मेजबान देशों में उपलब्ध उत्पाद विदेशी पर्यटकों के लिए अच्छे मानक के नहीं होते हैं।

- पूर्ण-समावेशी पैकेज यात्राओं में, लगभग दो-तिहाई व्यय एयरलाइन, होटल और अन्य अंतरराष्ट्रीय कंपनियों को जाता है और स्थानीय व्यवसायों या श्रमिकों को नहीं जाता है।

- पूर्ण-समावेशी पैकेज यात्राओं में पर्यटक अपना पूरा प्रवास एक ही क्रूज, जहाज या रिसॉर्ट में बिताते हैं, जो उनकी जरूरत के अनुसार सब कुछ प्रदान करता है। वहाँ भी स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभ प्राप्त करने हेतु कोई विकल्प नहीं होता है।

- सामान्यत: गरीब विकासशील गंतव्यों में, धन का निवेश सरकार द्वारा पर्यटन के लिए आधारभूत संरचना विकसित करने के लिए किया जाता है, किंतु लाभ अन्य विकसित देशों में निर्यात हो जाता है, जब विदेशी निवेशक रिसॉर्ट और होटलों को वित्त पोषित करते हैं।

- पर्यटकों द्वारा बुनियादी सेवाओं और वस्तुओं के लिए अधिक से अधिक माँग, गंतव्य देश में कीमतों में वृद्धि को प्रेरित करती है। यह उन स्थानीय लोगों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, जिनकी आय उस अनुपात में नहीं बढ़ती है।

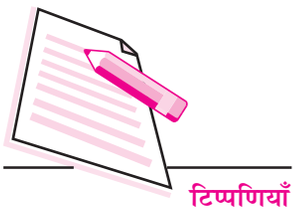

टिप्पणियाँ

- गंतव्य राष्ट्र में पर्यटन का विकास, सेवाओं और भूमि के मूल्य में वृद्धि करता है। इस प्रकार, उस स्थान के लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करना, उनके लिए बहुत मुश्किल हो जाता है।
- कई देश मौसमी या कठोर जलवायु परिस्थितियों के कारण पर्यटन का समर्थन नहीं करते हैं। जब वहाँ पर्यटन का मौसम होता है, तो स्थानीय लोगों को कुछ रोजगार का अवसर मिलता है। लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं होती है कि उन्हें अगले मौसम में भी रोजगार मिलेगा। इसलिए वे अपनी आजीविका प्राप्त करने में असुरक्षित होते हैं।
- लोग हवाई अड्डों, रिसॉर्ट, होटलों, प्राकृतिक भंडारों और अन्य पर्यटन विकास परियोजनाओं के निर्माण के लिए ऐतिहासिक और अन्य आकर्षण वाले स्थानों पर विस्थापित हो जाते हैं।

3.3.2 पर्यटन के सकारात्मक आर्थिक प्रभाव

विशेषकर आर्थिक रूप से कम विकसित या विकासशील देशों में पर्यटन के कारण, गंतव्य के स्थानीय क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था पर, कई सकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

- पर्यटन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया खर्च मेजबान देशों में आय उत्पन्न करता है। यह अन्य आर्थिक क्षेत्रों के विकास में वृद्धि कर सकता है।
- जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने से मेज़बान देश में विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। यह अच्छी अंतरराष्ट्रीय व्यापार क्षमता रखने के लिए एक अच्छा संकेत है।
- एक मेजबान देश की सरकार को पर्यटन रोजगार, व्यवसाय, विभिन्न पर्यटक स्थलों/ स्मारकों/ टोल करों आदि पर प्रवेश शुल्क से प्राप्त आय पर करों के रूप में राजस्व की प्राप्ति होती है।
- पर्यटकों की आवश्यकता की कई वस्तुएँ अन्य देशों से आयात की जाती हैं। सरकार इन वस्तुओं पर आयात शुल्क लगाती है और इस प्रकार, सरकार को वित्तीय लाभ प्राप्त होता है।
- तेजी से बढ़ते हुए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन ने महत्वपूर्ण रोज़गार के अवसर उत्पन्न किए हैं। इसने पर्यटन में, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शामिल लोगों को एक बेहतर आर्थिक स्थिति प्रदान की है। यह होटलों, रेस्तरां, गाइड, नाइट क्लबों, टैक्सी, स्थानीय शिल्प, पेंटिंग, स्थानीय सांस्कृतिक उत्पादों आदि के माध्यम से होता है।
- पर्यटन स्थानीय लोगों के साथ-साथ पर्यटकों को बेहतर सुविधाएँ देने के लिए अग्रसर, कई प्रकार की आधारभूत संरचनाओं के निर्माण करने के लिए सरकार को अधिक निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- पर्यटक खोमचा लगाने वालों, रिक्शा चालकों, चाय/ कॉफी स्टालों, पत्रिका कॉर्नरों, पैक की गई भोज्य सामग्री आदि की दुकानों, जैसे अनौपचारिक क्षेत्रों में आजीविका प्राप्त करने के अवसर देकर स्थानीय लोगों को बढ़ावा देता है।

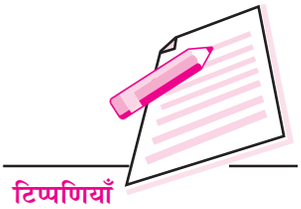

- अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगार स्थानीय अर्थव्यवस्था में धन के प्रवाह को बढ़ाता है। इसने एक ही साथ निवेश करने और अधिक आय उत्पन्न करने के द्वारा लोगों को प्रभावित किया है।

क्रियाकलाप 3.1

अपने आसपास के किसी पर्यटक स्थल का भ्रमण करें और उन आर्थिक लाभों को सूचीबद्ध करें, जो स्थानीय लोगों को पर्यटन के कारण प्राप्त हो रहे हैं।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. किस प्रकार पर्यटक गंतव्य की अर्थव्यवस्था पर्यटन से प्रभावित होती है?

2. पर्यटन के कोई दो सकारात्मक आर्थिक प्रभाव लिखें।

3.4 सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

किसी समुदाय या एक निश्चित क्षेत्र में रहने वाले लोगों का व्यापक समूह है, जिसकी परंपरा, संस्था, गतिविधियाँ और रुचियाँ समान होती हैं, उसे समाज कहा जाता है। वास्तव में समान पहचान रखने वाले लोगों के समूह के बीच संबंध की प्रणाली को समाज कहा जाता है। यह एक परिवार/इलाके की तरह छोटा या एक पूरे राष्ट्र की तरह बड़ा हो सकता है। संस्कृति उस समाज की प्रथाएँ हैं। यह समाज के लोगों को एक साथ बांधे रखती है। इसमें इनके आचार, नैतिकता, मान्यताएँ, मूल्य और मानक शामिल हैं।

एक अच्छा आचरण, सामाजिक संबंध निर्माण का स्वीकार्य मार्ग है। इसमें दूसरों के लिए सम्मान, देखभाल और विचार शामिल होते हैं। नैतिकता लोगों के एक समूह या एक समाज द्वारा स्वीकार्य नियमों, सिद्धांतों और कर्तव्यों का एक समूह है, जो सामान्यत: धर्म से स्वतंत्र है। विश्वास व्यवहार की नींव है। व्यवहार एक व्यक्ति और समाज के दृष्टिकोण और सोच की प्रक्रिया को निर्धारित करता है। व्यवहार वह तरीका है, जिसमें कोई व्यक्ति या समाज के सदस्य व्यवहार करते हैं या कार्य करते हैं। इसे आयोजन, घटना या एक प्रतिक्रिया के संदर्भ के साथ देखा जाता है। इसलिए यह सदस्यों की एक प्रतिक्रिया है। मानदंड समाज के औपचारिक नियम होते हैं। यह सद्भाव बनाए रखने में समुदाय, समूह या समाज के सदस्यों को विनियमित करते हैं। मूल्य वे आदर्श हैं, जो समाज में सभी के ऊपर समान रूप से लागू होते है, जैसे ईमानदारी, सम्मान, करुणा ये मूल्य मानदंडों की नींव की ईंटें हैं। ये सामाजिक व्यवहार और समाज के लोगों के आचरण के कुछ बुनियादी नियम हैं।

जब अधिकांश लोग सुदूर स्थानों से आते हैं और किसी भी क्षेत्र के स्थानीय निवासियों के साथ बातचीत करते हैं, तो वे वहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते हैं। पारस्परिक क्रियाओं के कारण मूल्य प्रणाली, व्यवहार, स्वदेशी पहचान में बदलाव

दिखाई पड़ते हैं। समुदाय संरचना, पारिवारिक संबंध, सामूहिक परंपरागत जीवन-शैली, समारोहों और नैतिकता में विचलन देखे जाते हैं। इसके अलावा कुछ सकारात्मक प्रभाव भी देखे जाते हैं। आइए, उनका संक्षिप्त अध्ययन करते हैं :

3.4.1 नकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

विशेष गंतव्य स्थानों पर पर्यटन के कई नकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव पड़ते हैं। उनमें से महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं :

- पारिवारिक संरचना के बंधन/संपर्क को कम करता है और एकाकी परिवार की मान्यता पर बल देता है।
- यह शहरीकरण को प्रोत्साहित करता है।
- भीड़-भाड़ और स्थानीय लोगों के लिए मनोरंजन सुविधाओं की कमी के कारण पर्यटकों से टकराव और असंतोष होता है।
- कुछ पर्यटन स्थलों पर मादक पदार्थों का सेवन और वेश्यावृत्ति बढ़ता हुआ दिखाई पड़ सकता है।
- पर्यटन उद्योग में वृद्धि के कारण बच्चों, युवा और महिलाओं का व्यावसायिक लैंगिक शोषण, दुनिया के कई भागों में बढ़ा है। बच्चों को वेश्यालय में अवैध रूप से फंसाया जाता है और सेक्स गुलामी में ढकेल दिया जाता है।
- विदेशी पर्यटकों के साथ बदसलूकी और बलात्कार पर्यटन को बाधित करता है।
- पर्यटकों का कुछ स्थानों और होटलों/ हवाई अड्डों पर परंपरागत रूप से स्वागत किया जाता है। कभी-कभी, पारंपरिक स्वागत और आतिथ्य मानदंडों का व्यवसायीकरण भी दिखलाई पड़ता है, जो उन चीजों का मजाक ज्यादा लगता है।
- विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के लोगों के साथ मेल-जोल होने से गंतव्य क्षेत्र की अपनी संस्कृति में ह्रास परिलक्षित होता है। बाद में, यह सांस्कृतिक पहचान हेतु लोगों में संघर्ष की भावना पैदा करता है।
- पर्यटक स्थानीय अकुशल लोगों की तुलना में अधिक धनी होते हैं। यह पैसे कमाने और पर्यटकों द्वारा लाए गए उपकरणों को पाने के लिए लालच को जन्म देता है। इस तरह का लालच स्थानीय लोगों को अपराध करने के लिए मजबूर कर सकता है।
- स्थानीय लोगों के नैतिक आचरण में गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई देती है और विशेष रूप से स्थानीय युवा विदेशी की नकल करने का प्रयास करते हैं। वे धूमपान, शराब पीने, जुआ खेलने, लड़की का हाथ पकड़कर चलने या खुले में चुंबन करने का प्रयास करने आदि पर्यटकों जैसी आदतों को अपनाने की कोशिश करते हैं।
- विदेशी पर्यटकों द्वारा स्थानीय नियमों और रूढ़ियों का उल्लंघन करना मेज़बान और मेहमान के बीच संघर्ष को जन्म देता है।

- स्थानीय भाषा और बोली अपनी शुद्धतायुक्त पहचान खो रही है, एक नई मिश्रित भाषा का जन्म हो रहा है।
- सांस्कृतिक भिन्नता के कारण सांस्कृतिक टकराव हो रहे हैं। जातीयता, धर्म, मूल्यों, व्यवहार, जीवन-शैली और समृद्धि के स्तर में अंतर के कारण भी टकराव का जन्म हो रहा है।
- कई पर्यटक विभिन्न जीवन-शैलियों के साथ विभिन्न समाजों से आते हैं। वे हर तरह के सुख की तलाश करते हैं और अधिक पैसा खर्च करते हैं। कभी-कभी उनका व्यवहार भी बहुत ही अहंकारपूर्ण होता है। यहाँ तक कि कभी-कभी उनके अपने समाज में भी वे व्यवहार स्वीकार्य नहीं हो सकता, जहाँ से वे आए हैं।
- आर्थिक रूप से कम विकसित देशों में विशेषकर 'संपन्न' और 'वंचितों' के बीच अंतर बढ़ रहा है। यह सामाजिक तनाव और कई बार जातीय तनाव को जन्म देता है।
- अज्ञानता या लापरवाही के कारण, पर्यटक अक्सर स्थानीय रूढ़ियों और नैतिक मूल्यों का सम्मान करने में असफल होते हैं। यह स्थानीय लोगों में क्रोध उत्पन्न कर सकता है।

3.4.2 सकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

पर्यटन के सकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव भी हैं, विशेष रूप से गंतव्य स्थानों पर। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

- पर्यटन राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मूलों के कई सांस्कृतिक समूहों के लोगों के साथ परिचित होने के लिए एक उपयुक्त अवसर प्रदान करता है।
- पर्यटन में शिक्षा का एक घटक भी शामिल होता है। शिक्षा के माध्यम से पर्यटन एक साथ दो या अधिक सांस्कृतिक समूहों के लोगों के बीच समझ को संवर्धित करता है। यह मेज़बानों और मेहमानों के बीच सांस्कृतिक विनियम की पेशकश करता है।
- सांस्कृतिक विनिमय के कारण लोग एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहानुभूति और समझ विकसित करते हैं और यह उनके पूर्वाग्रहों को कम करता है।
- अंततः सहानुभूति और समझ दो समुदायों/ देशों के बीच तनाव को कम करने में मददगार साबित हो सकता है। इस तरह शांति के साथ अच्छे संबंध प्रगाढ़ होने की संभावना बढ़ जाती है।
- पर्यटन सामुदायिक सुविधाओं और सेवाओं के विकास का समर्थन करता है। ये सुविधाएँ और सेवाएँ लोगों द्वारा भी उपयोग की जाती हैं, इस प्रकार बेहतर जीवन शैली का नेतृत्व करती हैं।
- पर्यटन प्राकृतिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक या ऐतिहासिक स्थलों के महत्व और मूल्य के बारे में जागरूकता उत्पन्न करता है। यह स्थानीय और राष्ट्रीय विरासत पर गर्व की भावना को बढ़ाता है। यह उनके संरक्षण के लिए नेतृत्व करता है।

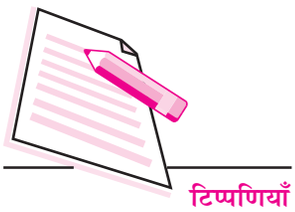

टिप्पणियाँ

- पर्यटक अपने साथ यादगार के रूप में ले जाने के लिए एक विशेष क्षेत्र/ राष्ट्र की कई कलाओं और शिल्पों को खरीदने में रुचि रखते हैं। निवासियों के लिए मौद्रिक लाभ इन कलाओं और शिल्पों को हमेशा के लिए जीवित रखने के विचार को भी बढ़ावा देता है।
- वर्ष के कुछ भागों में आयोजित पर्व, पर्यटकों द्वारा बड़े उत्साह के साथ देखे जाते हैं। स्थानीय युवाओं के सुशिक्षित होने और व्यापक दृष्टिकोण और समझ रखने के बावजूद ये लोगों को स्थानीय संस्कृति को जीवित रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं

क्रियाकलाप 3.2

समाचार-पत्रों से स्थानीय कपड़े पहने हुए विदेशी पर्यटकों की तस्वीरें और चित्र एकत्र करें। वे स्थानीय लोगों के साथ नाच रहे हो सकते हैं या उनकी संस्कृति के साथ मिश्रित हो रहे हो सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 3.3

1. संस्कृति शब्द का वर्णन करें।
2. समाज पर पर्यटन के किन्हीं तीन नकारात्मक प्रभावों का उल्लेख करें।
3. कभी-कभी स्थानीय लोग पर्यटकों से परेशान क्यों हो जाते हैं? समझाकर लिखिए।

3.5 राजनीतिक प्रभाव

पर्यटन पर राजनीतिक प्रभाव न केवल दिखाई पड़ते हैं, बल्कि पर्यटन, प्रत्यक्ष रूप से राजनीति को प्रभावित करता है। परोक्ष रूप से, विकसित देशों की सरकारें जिनके धनी पर्यटक कुछ देशों की यात्रा करते हैं, यात्रियों को सौहार्दपूर्ण स्थितियाँ प्रदान करने के लिए गंतव्य स्थान की सरकारों को प्रभावित करती हैं।

प्रत्येक पर्यटक गंतव्य और अपने स्थान तक वापस पहुँचने की दृष्टि से सुरक्षित यात्रा के लिए बहुत चिंतित होता है। घूमे गए क्षेत्रों को जानने के साथ-साथ मजा और आनंद पर्यटन के मुख्य उद्देश्य हैं। पर्यटक इसी के लिए आते हैं और इसलिए वे उन क्षेत्रों में जाना चाहते हैं, जो उनके उद्देश्यों को पूरा करते हैं। वे दुनिया में सभी स्थानों में पर्यटकों के हित को सुरक्षित महसूस नहीं करते हैं। एक पर्यटन नीति पर्यटन को दिशा प्रदान करती है। यह नीति पर्यटन के उद्देश्य के विकास और संवर्धन के लिए नियमों, विनियमों, निर्देशों और विनिर्देशों का एक समूह है। यह एक रूप-रेखा प्रदान करता है, जिसके साथ सामूहिक और व्यक्तिगत निर्णय पर्यटन के विकास को प्रभावित करते हैं। सरकार पर्यटन के लिए एक आचार संहिता का निर्माण कर सकती है। कुछ बिंदु पर्यटन का पक्ष लेते हैं और उनमें से कुछ इसे बाधित करते हैं। वे निम्नलिखित हैं :

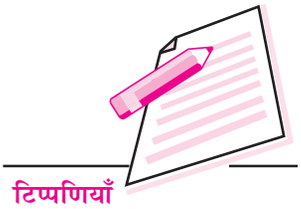

3.5.1 नकारात्मक राजनीतिक प्रभाव

पर्यटन पर, विशेषकर गंतव्य स्थानों पर, कई नकारात्मक राजनीतिक प्रभाव होते हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं :

- गंतव्य क्षेत्र/ देश में राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष पर्यटन के लिए एक बाधा साबित होता है। वास्तव में, राजनीतिक अस्थिरता एक देश की ऐसी स्थिति है, जहाँ सरकार अस्थिर है या गिरा दी गई है। कभी-कभी सरकारों का तख्तापलट किसी गुट विशेष द्वारा किया जाता है। ऐसी स्थिति में कानून और व्यवस्था एक बड़ी समस्या होती है। इसलिए, पर्यटकों को ऐसे स्थानों से दूर रखा जाता है।
- कभी-कभी पर्यटकों के अपने देशों की सरकारें अपने नागरिकों को ऐसे देशों की यात्रा न करने की चेतावनी देती हैं, जहाँ राजनीतिक अस्थिरता या संघर्ष मौजूद होता है।
- जब पर्यटक पहले ही किसी देश में जा चुके होते हैं और कुछ राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न होती है, तो नागरिकों को यथाशीघ्र अस्थिर देश को छोड़ने के लिए राजनीतिक रूप से पुनः चेतावनी जारी की जाती है।
- अस्थिर सरकार देश के नागरिकों के लिए कानून और व्यवस्था को स्थिर बनाए रखने में सक्षम नहीं होती है। वे विदेशी पर्यटकों की उचित देखभाल करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। अतः यह पर्यटन के लिए एक बाधा है।
- सरकार किसी भी संबंध में नीति का निर्माण करने के लिए एकमात्र प्राधिकरण है। नीति का परिणाम प्राप्त करने के लिए पर्यटन के विषय में सभी नीतिगत मामलों का सरकार द्वारा ध्यान रखा जाता है।
- पर्यटन के पक्ष में अपनाई गई नीति और आधारभूत संरचना विकास पर्यटन की बढ़ती प्रवृत्ति का नेतृत्व करती है और व्युत्क्रम परिस्थितियों में, प्रतिकूल परिणाम उत्पन्न करते हैं। घरेलू/ गंतव्य क्षेत्र/ देश में कोई क्रियात्मक उथल-पुथल, उस क्षेत्र/ देश की यात्रा न करने के एक निर्णय में परिणाम देती है।
- आतंकवाद दुनिया के किसी भी भाग में पर्यटन के विकास की संभावना को कम कर देता है। कश्मीर घाटी में, पर्यटन काफी कम हो गया है।
- भीख माँगना, अपहरण का जोखिम और झाँसा देना पुनः पर्यटन के विकास की पंक्ति में एक नकारात्मक पहलू है।

3.5.2 सकारात्मक राजनीतिक प्रभाव

पर्यटन के कई सकारात्मक राजनीतिक प्रभाव होते हैं, विशेष रूप से गंतव्य स्थानों पर। उनमें से महत्वपूर्ण प्रभाव निम्नलिखित हैं :

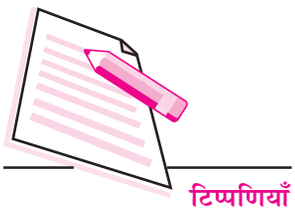

टिप्पणियाँ

- राजनीतिक स्थिरता पर्यटकों की सर्वप्रथम चिंता है। किसी भी पर्यटक गंतव्य पर सुरक्षा बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करती है।
- कानून और व्यवस्था सरकार के लिए चिंता का विषय है। एक बार जब इसे अच्छी तरह से प्रबंधित कर लिया जाता है, तो यह पर्यटकों के आगमन में मदद करता है।
- राजनीतिक स्थिरता और सरकारी तंत्र से पर्यटकों के लिए सुरक्षा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए टॉनिक है।
- पर्यटक आकर्षण क्षेत्रों में आधारभूत संरचनाओं की स्थापना करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति पर्यटन को प्रोत्साहित करती है। यह आसान पहुँच, आवास, गाइड और पर्यटकों के लिए आवश्यक अन्य सुविधाओं को आसान बनाती है।
- इसके अलावा एक पर्यटक लक्षित योजना पर्यटन को तेजी से प्रभावित करती है। प्राकृतिक परिदृश्य के लिए अधिक परिवर्तन के बिना, सुरक्षा के साथ, स्थल का सौंदर्यीकरण भी पर्यटकों को काफी आकर्षित करता है।
- आतंकवाद को रोकना विश्व के कुछ भागों में एक बड़ी चुनौती है। यह समाज के लिए एक अभिशाप है। ऐसे क्षेत्र लगभग किसी भी पर्यटन विकास से वंचित होते हैं, जो आतंकवाद से ग्रस्त होते हैं।
- जोखिम बोध गंतव्यों के बारे में निर्णय की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है। यह नकारात्मक मामले में गंभीर रूप से प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

क्रियाकलाप 3.3

जम्मू-कश्मीर सरकार की पर्यटन नीति की समीक्षा और आकलन करें। यह जानने का प्रयास करें कि यह कैसे गुजरात सरकार की पर्यटन नीति से भिन्न है?

पाठगत प्रश्न 3.4

1. पर्यटन को प्रभावित करने में सरकार की भूमिका पर चर्चा करें।
2. पर्यटन के कोई तीन राजनीतिक प्रभाव लिखें।

3.6 पर्यावरणीय प्रभाव

पर्यावरण एक पूर्ण परिवेश या परिस्थिति है, जिसमें एक व्यक्ति, पशु-पक्षी या पौधा रहता है या व्यवहार करता है। एक व्यक्ति का वातावरण उन सभी चीजों से बना होता है, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, जीवन स्थितियों से संबद्ध होती हैं। इसमें घर, इमारतें, साथी व्यक्ति, जानवर, पौधा, भूमि, जल, तापमान, प्रकाश, वायु, वनस्पति और जीव, अन्य मानव, विकसित आधारभूत संरचना आदि शामिल होते हैं। जीवित पौधे और पशु-पक्षी न केवल परिवेश में मौजूद होते हैं, बल्कि एक-दूसरे के साथ व्यवहार भी करते हैं। व्यवहार, व्यवहार की गतिशीलता पर निर्भर करते हुए

भी काफी हद तक प्रभावी होता है। पर्यटन विशाल संख्या में विविध दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों को लगाकार एक क्षेत्र में लाता है। उन स्थानों तक पहुँचने वाले लोगों की विशाल संख्या के कारण विभिन्न संसाधनों पर बहुत तीव्र दबाव बन गया है। अधिकाधिक आधारभूत संरचनाएँ बनाई जा रही हैं, जो पुनः क्षेत्र के परिदृश्य में बहुत परिवर्तन कर रही हैं। अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए कुछ पर्यावरणीय सुधार भी किए जाते हैं। अतः पर्यटन पर्यावरण के संरक्षण में मदद करता है। आइए, पर्यावरण/ परिवेश पर उन नकारात्मक और सकारात्मक प्रभावों पर एक नज़र डालते हैं।

3.6.1 नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव

विशेष रूप से गंतव्य स्थानों पर, पर्यटन के कई नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव हैं। उनमें से महत्वपूर्ण प्रभाव निम्नलिखित हैं–

- भूमि उपयोग को घरों/ होटलों/ रेस्तरां के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित किया जाता है, क्योंकि इसकी माँग पर्यटकों और इससे संबंधित लोगों के लिए होती है।
- जंगल काट दिया जाता है। कृषि योग्य भूमि को इमारतों/ सड़कों/ कचरा निपटान में बदल दिया जाता है।
- पहाड़ी क्षेत्र में ढलान पर सड़कों का निर्माण मृदा–कटाव जैसी कई समस्याओं को जन्म देता है, जो पारिस्थितिक असंतुलन उत्पन्न करता है। पौधों और वनस्पति का नष्ट होना, पर्यावरण पर भयानक दुष्प्रभाव उत्पन्न करता है।
- ऐसे क्षेत्रों में प्राकृतिक पारस्थितिकी की गिरावट और गड़बड़ी के मामले सामान्य होते जा रहे हैं। पर्यटन के कारण जैव–विविधता का भारी नुकसान भी होता है।
- ऐसे क्षेत्रों में मानव हस्तक्षेप के कारण भू–स्खलन विस्तृत रूप से देखा जाता है।
- जल–रिसाव की कमी के कारण जल–प्रवाह ज्यादा होता है। अत्यधिक जल–प्रवाह के कारण अधिक मृदा–क्षरण देखा गया है। ऊपरी परत में उच्च कटाव, निम्नवर्ती भाग में गाद की भारी मात्रा उत्पन्न करता है। गंदे कीचड़ का जमाव और उच्च जल–प्रवाह उच्च बाढ़ को जन्म देता है और बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र को लगभग बंजर बना देता है।
- किसी भी स्थल पर आने वाली पर्यटकों की भारी संख्या गंतव्य क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव उत्पन्न करते हैं। वे संसाधनों का क्षय करते हैं।
- संसाधनों की भारी माँग, गुणवत्ता और मात्रा के संदर्भ में अपक्षय और गिरावट लाता है। यह जल, वायु और भूमि जैसे संसाधनों के प्रदूषण का कारक बनता है।
- बढ़ती पर्यटन गतिविधियों के कारण, समुद्र तटों, झीलों, नदियों, भूमिगत जल का प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।
- पर्यटकों की बड़ी संख्या, विभिन्न चीजों की बढ़ती उच्च माँग और उनके लिए बढ़ती हुई अन्य सहयोगी सुविधाएँ पर्यटन स्थलों में बेहद भीड़ बढ़ाती हैं।
- ऐसे क्षेत्र में मल निपटान और जल निकास का प्रबंधन एक मुश्किल कार्य है।

टिप्पणियाँ

- पर्यटन दुनिया भर के पर्यटकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। वे लघु अवधि में बड़ी दूरी को कवर करने के लिए हवाई यात्रा करते हैं। हवाई यात्रा के फलस्वरूप वातावरण में भारी मात्रा में विषैली गैसें, जैसे- कार्बन-डाई-ऑक्साइड, मोनो-ऑक्साइड आदि उत्सर्जित होती हैं। कुल मिलाकर, दुनिया भर में पर्यावरणीय समस्याएँ बढ़ रही हैं।
- स्थानीय परिवहन जैव ईंधन की खपत द्वारा पर्यावरण को भी प्रदूषित करता है। पर्यटकों की अधिक भीड़ के कारण पुरातात्विक, ऐतिहासिक, वास्तुशिल्प और प्राकृतिक स्थलों की स्थिति बिगड़ती जा रही है।
- कई पर्यटन झरनों, पुलों, बदलते वन प्रकारों, बादलों, बर्फ़, स्कीइंग आदि की प्राकृतिक सुंदरता से पूर्ण पर्वतीय स्थानों में घूमने में रुचि रखते हैं। ये सभी पर्वतीय ढलानों के एक नाजुक क्षेत्र में पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों की यात्रा करने वाले पर्यटकों की अधिक संख्या के फलस्वरूप वहन-क्षमता पर दबाव की स्थिति उत्पन्न होती है।
- सड़कों/ रास्तों/ कैंपों की जमीन पर कूड़ा पाया जाता है।
- पार्कों/ वन्य जीव अभयारण्यों/ आरक्षित जैव मंडलों में पर्यटकों की अधिक यात्रा, जंगली जानवरों के व्यवहार और यहाँ तक कि प्रजनन चक्र को भी परिवर्तित कर देता है। वे पर्यटकों से डर जाते हैं और प्राय: अपने प्राकृतिक निवास स्थान से दूर चले जाते हैं और वे परिधि से बाहर चले जाते हैं। अधिक जल गतिविधि और नौकायन के कारण जलीय जानवरों और पादप जीवों में भी समान परिणाम देखे जाते हैं।
- पर्यटन मनोरंजन गतिविधियों द्वारा आवास का अपक्षय हो सकता है। उदाहरण के लिए, वन्य जीवन को देखना, जानवरों के लिए तनाव उत्पन्न कर सकता है और उनके प्राकृतिक व्यवहार को परिवर्तित कर सकता है, जब पर्यटक अधिक करीब आते हैं।
- जब कई पर्यटक पैदल घूम रहे होते हैं तो पैदल मार्गों के नजदीक वनस्पति को उनके पैरों तले कुचलने से नुकसान होता है। घास, पौधे और झाड़ियाँ विनष्ट हो जाती हैं और उनका विकास धीमा हो जाता है।
- एक ही पगडंडी का बार-बार उपयोग करते हुए पर्यटक मिट्टी और वनस्पति को रौंदते हैं, जो अंतत: क्षय का कारण बनता है, जो जैव-विविधता को नुकसान पहुँचा सकता है।
- ऊँची इमारतों/ होटलों का निर्माण क्षितिज को बाधित करता है और प्राकृतिक सौंदर्य को धूमिल करता है।
- जो भी सुविधाएँ पर्यटकों के गंतव्य पर प्रदान की जाती हैं, वे कुछ समय के बाद अपर्याप्त हो जाती हैं और क्षमतानुसार जरूरतों को पूरा करने के लिए पुन: बढ़ाई जाती है। इस प्रकार, ऐसे क्षेत्रों में आवश्यकताओं की संतुष्टि एक अस्थायी घटना है।

3.6.2 सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव

विशेषकर गंतव्य स्थानों पर पर्यटन के कई सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव होते हैं। उनमें से महत्वपूर्ण प्रभाव निम्नलिखित हैं-

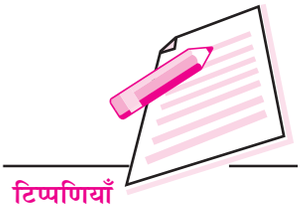

- चूँकि बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं और पर्यटकों से आय उत्पन्न होती है, इसलिए अधिक से अधिक पर्यावरणीय चेतना की उम्मीद की जाती है।
- कभी-कभी विदेशी पर्यटक, पर्यावरण पर दबाव को कम करने के बारे में एक अच्छा विचार देते हैं और स्थायी पर्यटन पर बल देते हैं।
- एकत्रित धन का उपयोग अधिक संसाधनों के निर्माण और क्षेत्र के सौंदर्यीकरण के लिए किया जाता है।
- सफ़ाई अभियान अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए संचालित किया जाता है।
- अधिक से अधिक पर्यावरणीय सुरक्षात्मक उपायों को अपनाया जाता है।
- पारिस्थितिक संतुलन अनुरक्षण पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करने के लिए उद्देश्य बन जाता है।
- वहाँ विभिन्न गतिविधियों का व्यवसायीकरण होता है, किंतु दुष्प्रभावों से बचने के लिए रक्षात्मक कदम भी उठाए जाते हैं।
- पर्यावरण पर पर्यटन के दुष्प्रभावों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न अनुसंधान गतिविधियाँ/ परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं। ये अध्ययन सामाजिक समस्याओं को समझाने में फायदेमंद होते हैं। इन अध्ययनों के निष्कर्षों और अनुशंसाओं का पालन किया जाता है। यह सही पर्यावरण/ पारिस्थितिकी संतुलन बनाने में मदद करता है।
- स्थानीय लोगों को भी पर्यावरण/ परिवेश के महत्व के बारे में अवगत कराया जाता है। वे संतुलन को बनाए रखने में भी सहयोग करते हैं।
- गलियों, सड़कों, झीलों, समुद्र-तटों, पर्वतीय ढालों आदि को साफ़ करने के लिए अधिक से अधिक प्रयास किए जाते हैं। यह क्षेत्र को साफ़-सुथरा बनाता है।
- स्मारकों, ऐतिहासिक स्थलों, खुदाई स्थानों, संग्रहालयों आदि को उचित उपायों द्वारा संरक्षित किया जाता है। उन्हें नियामक रूप से अनुरक्षित किया जाता है और साफ़ रखा जाता है।
- सार्वजनिक पार्क, उद्यान, सड़कों के किनारे की हरियाली, मूर्ति सदृश परिदृश्य, औषधीय जड़ी-बूटियों में प्रयोग किए जाने वाले उद्यानों, पौधों की नर्सरी को विकसित और अनुरक्षित किया जाता है।
- उपेक्षित, विकृत बेकार भूमि को पार्कों के रूप में बदल दिया जाता है और आकर्षक बनाया जाता है।
- निजी और सार्वजनिक इमारतों को पुनर्निर्मित किया जाता है। इससे क्षेत्र बहुत सुंदर प्रतीत होता है। यह हमारी आँखों को आनंद प्रदान करता है। यह स्थानीय लोगों के साथ-साथ पर्यटकों के लिए भी अच्छा है।

टिप्पणियाँ

क्रियाकलाप 3.4

अपने आसपास के किसी पर्यटक स्थल का पता लगाएँ और यह पता लगाने का प्रयास करें कि इसकी स्थिति किस प्रकार पर्यटकों के आने से बदल रही है।

पाठगत प्रश्न 3.5

1. पर्यावरण शब्द की व्याख्या करें।

2. पर्यटन के किन्हीं तीन नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों को सूचीबद्ध करें।

3.7 नकारात्मक प्रभावों से निपटना

पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों से निपटना, आज पर्यटन उद्योग द्वारा सामना की जाने वाली गंभीर चुनौतियों में से एक है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इसके चार व्यापक प्रभाव हैं। आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय। वास्तव में, पर्यटन स्थिरता के तीन घटक- आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक हैं। सामाजिक स्थिरता को पुनः दो भागों- सामाजिक और सांस्कृतिक में विभाजित किया जा सकता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि स्थायी पर्यटन के चार स्तंभ होते हैं। पर्यटन की स्थिरता क्षेत्रीय और स्थानीय सुविधाओं/ संसाधनों की निरंतरता, सुरक्षा और विकास को सुनिश्चित करने से संबंधित है, जो भविष्य के लिए पर्यटन की संपत्ति है। दूसरे शब्दों में, पर्यटन को एक ऐसे तरीके से और एक ऐसे पैमाने पर किसी भी विशिष्ट क्षेत्र में विकसित और अनुरक्षित किया जाता है, जिसे हमेशा के लिए लाभप्रद बनाए रखा जाए। इसके लिए आवश्यक है कि पर्यावरण का संतुलन बना रहे।

स्थायी पर्यटन का मुख्य उद्देश्य हमेशा स्थिरता की गारंटी को बनाए रखना है। इसके लिए व्यक्ति को आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और पर्यावरणीय कारकों पर विचार करना पड़ता है और एक उचित/ उपयुक्त संतुलन बनाए रखा जाता है। क्षेत्र/ प्रदेश की सफ़ाई, स्वच्छता और सुंदरता पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। इसलिए आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और पर्यावरणीय कारकों के बीच एक उपयुक्त सामंजस्य बनाए रखना, स्थायी पर्यटन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय है।

हर क्षेत्र/ प्रदेश में पर्यटकों को सुविधाएँ प्रदान करने के लिए अपनी क्षमता होती है। जब पर्यटकों की संख्या सीमा के भीतर होती है तो संसाधन भी उपलब्ध होते हैं। लेकिन जब सीमा पार हो जाती है, तो इसकी हालत खराब होने लगती है। तब सभी पर्यटकों को उचित सम्मानजनक व्यवहार प्रदान करना संभव नहीं होता है। एक अराजक स्थिति बन जाती है। अतः जिस सीमा तक इसे अच्छी तरह बनाए रखा जाता है, उसे क्षेत्र/ प्रदेश की पर्यटन वहनीय क्षमता के रूप में जाना जाता है। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) ने इसे लोगों की अधिकतम संख्या के रूप में परिभाषित किया है, जो एक पर्यटक गंतव्य पर एक ही समय में, भौतिक, आर्थिक और

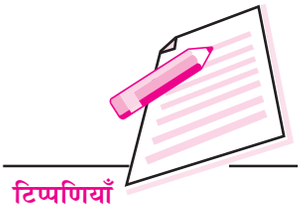

सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और जीवन की गुणवत्ता में कमी लाए बिना यात्रा कर सकते हैं। इसलिए सामंजस्य स्थायी पर्यटन के लिए समय की आवश्यकता है, अन्यथा अतिथि देवो भव: की मूल अवधारणा निरर्थक हो जाती है।

देश में पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा एक नई पर्यटन नीति की घोषणा की गई थी। यह नीति सप्त 'स' (7 एस) मंत्रों पर आधारित है। वे हैं-

क्र.सं.	'स' सप्त मंत्र (हिंदी)	अंग्रेजी
1.	स्वागत	वेलकम
2.	सूचना	इंफॉर्मेशन
3.	सुविधा	फैसिलिटेशन
4.	सुरक्षा	सिक्युरिटी
5.	सहयोग	कॉपरेशन
6.	संरचना	इंफ्रास्ट्रक्चर
7.	सफ़ाई	क्लीनलिनेस

पर्यटन के संवर्धन की उपरोक्त नीति अच्छी है, किंतु विभिन्न कारकों के बीच एक उचित संतुलन आगमन के हर समय के लिए पर्यटन के अनुरक्षण और स्थायीत्व के लिए भी समान रूप से महत्वपूर्ण है।

आपने क्या सीखा

पर्यटन पर्यटकों द्वारा दौरा किए गए क्षेत्रों को प्रभावित करता है। पर्यटन, पर्यटकों और उनके अनुभवों को लिखने से दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों को जानने का बहुत अच्छा अवसर प्रदान करता है। इसे चार विस्तृत समूहों में बाँटा जा सकता है-

(i) आर्थिक प्रभाव

(ii) सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

(iii) राजनीतिक प्रभाव

(iv) पर्यावरणीय प्रभाव

- प्रभाव के चार समूहों को आगे दो भागों में सकारात्मक और नकारात्मक रूप से विभाजित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, ऊपर उल्लेख किए गए सभी चार समूहों के कुछ सकारात्मक के साथ-साथ कुछ नकारात्मक प्रभाव होते हैं।

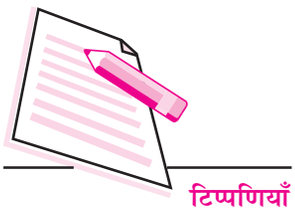

टिप्पणियाँ

- पर्यटन दुनिया भर में बड़ी संख्या में लोगों के लिए आजीविका प्रदान कर रहा है। यह बेरोज़गारी को कम कर रहा है।
- इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव होते हैं।
- बड़ी संख्या में पर्यटकों का स्थानीय लोगों के साथ व्यवहार सकारात्मक रूप में सामाजिक-सांस्कृतिक स्थितियों को जानने का एक अवसर प्रदान करता है, जबकि सामाजिक-सांस्कृतिक संघर्ष नकारात्मक भी हो सकते हैं।
- सरकार द्वारा लिए गए राजनीतिक निर्णय या राजनीतिक स्थिरता या अस्थिरता पर्यटन की वृद्धि और विकास को निर्धारित करती है।
- पर्यावरण पर्यटन के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। प्रत्येक पर्यावरण/परिवेश में पर्यटकों को वहन करने की क्षमता होती है। यदि पर्यटकों का आगमन वहन क्षमता से अधिक होता है, तो यह पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है।
- संक्षेप में, पर्यटन का मीठा फल प्राप्त करने के लिए एक उचित संतुलन की आवश्यकता होती है, अन्यथा पर्यटन एक कड़वा फल होगा।

पाठांत प्रश्न

1. प्रत्येक के लिए कम से कम तीन बिंदु देते हुए पर्यटन के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का वर्णन करें।
2. पर्यटन के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों की व्याख्या करें।
3. राजनीतिक स्थिरता या अस्थिरता पर्यटन को किस प्रकार प्रभावित करती है?
4. 'पर्यटन में वृद्धि के कारण पर्यावरण भारी तनाव से ग्रस्त है' उदाहरण सहित कथन की व्याख्या करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. पर्यटकों का स्थानीय/गंतव्य भूमि और लोगों के साथ व्यवहार सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरीके से प्रभावित करते हैं।
2. पर्यटकों के चार प्रभाव : आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय हैं।

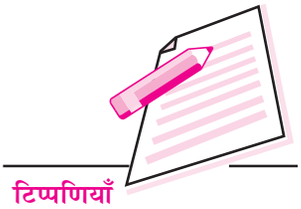

टिप्पणियाँ

3.2

1. गंतव्य क्षेत्र की अर्थव्यवस्था सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित होती है। यह रोज़गार के अवसर, आधारभूत संरचनाओं का विकास प्रदान करती है, आकस्मिक श्रमिक लाभों में वृद्धि उच्चतर भाग में चली जाती है और निचले भाग की उपेक्षा की जाती है।
2. कृपया अनुभाग 3.3.1 और 3.3.2 देखें।

3.3

1. संस्कृति समाज का सामान्य व्यवहार है, जिसमें शिष्टाचार, नैतिकता, मान्यताएँ, व्यवहार, मूल्य और मानदंड शामिल होते हैं।
2. कृपया अनुभाग 3.4.1 देखें।
3. विदेशी/ बाहरी पर्यटकों द्वारा स्थानीय मानदंडों और रूढ़ियों का उल्लंघन और तोड़ना स्थानीय लोगों में क्रोध को जन्म देता है।

3.4

1. सरकार आधारभूत संरचना के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने के साथ-साथ देश में स्थिरता प्रदान करती है। पर्यटन तदनुसार प्रभावित होता है।
2. कृपया अनुभाग 3.5.1 और 3.5.2 देखें।

3.5

1. पर्यावरण वह संपूर्ण परिवेश या परिस्थिति हैं, जिनमें एक व्यक्ति, पशु-पक्षी या पौधा रहता है और परस्पर व्यवहार करता है।
2. कृपया अनुभाग 3.6.1 देखें।

टिप्पणियाँ

4

यात्रा और पर्यटन : भूगोल के मौलिक तत्व

पर्यटन में यात्रा शामिल होती है। लेकिन सभी यात्राएँ पर्यटन नहीं होती हैं। एक व्यक्ति विभिन्न कारणों से यात्रा करता है, उनमें से पर्यटन एक है। विभिन्न स्थानों के महत्व एवं इसकी प्राकृतिक सुन्दरता के बारे में जानकारी दे करके अनेकों यात्रियों को पर्यटक बनने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसीलिए वहाँ के भौगोलिक पहलुओं का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। यह इन गंतव्य स्थानों में पर्यटकों की यात्रा में वृद्धि की संभावनाओं को बढ़ाता है। यदि यात्री को स्थानों के आकर्षण के बारे में उचित जानकारी दी जाए तो वे पर्यटकों के रूप में बदल जाते हैं। आमतौर पर यात्रा और पर्यटन दोनों शब्द एक दूसरे के स्थान पर और समानार्थक शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। लेकिन पर्यटन शब्द का एक बड़ा दृष्टिकोण है। इसमें यात्रा से बड़ा आशय और धारणा शामिल होती है। यात्रा का अभिप्राय किसी भी उद्देश्य से लिए एक स्थान से दूसरे स्थान का सफर है। पर्यटन का अभिप्राय फुरसत में मनोरंजन, आनन्द, पुनर्युवन अथवा जीवन के व्यस्त कार्यक्रमों से मुक्त होकर विविध गतिविधियों में शामिल होना है। इस पाठ में हम यात्रा और पर्यटन भूगोल के मौलिक तत्व के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- यात्रा और पर्यटन में भूगोल के महत्व का वर्णन कर सकेंगे;
- अक्षांश और देशान्तर रेखाओं की मदद से किसी स्थान को नक्शे पर दिखा सकेंगे;
- विभिन्न देशान्तरों पर दो स्थलों के बीच समय अंतराल की गणना कर सकेंगे;
- अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को पार करने के प्रभाव को घड़ियों के समय के साथ किए जाने वाले बदलाव को समझा सकेंगे;
- किसी भी स्थान के मानक समय की गणना करने के लिए चरणों का पालन कर सकेंगे; और
- विभिन्न चार्टों में दी गई जानकारी की प्रस्तुति को समझ सकेंगे।

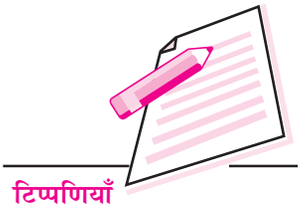

4.1 यात्रा और पर्यटन की वृद्धि में भूगोल का महत्व

पृथ्वी के सतह पर हरेक प्रकार की घटनाओं अथवा स्थितियों की मौजूदगी को भूगोल में वर्णन किया जाता है। यह किसी खास समय का हो सकता है अथवा कालानुक्रमिक हो सकता है। अत: भूगोल मानचित्रों, आरेखों, तस्वीरों के जरिए पृथ्वी की सतह को चित्रित करता है। यह लिखित वर्णनों के अतिरिक्त दृश्य माध्यम होता है। दूसरी तरफ पर्यटन में परिवहन, दूरी तय करना, उद्गम व गंतव्य स्थानों के बीच समय अंतराल, रुकना और खाने की व्यवस्था, स्थानीय स्तर पर परिवहन के साधन, स्थल और जगह के विभिन्न आयामों को सम्मिलित किया जाता है। वर्तमान मौसमी जानकारी के साथ-साथ यात्रियों के रूझान को भौगोलिक विश्लेषण की सहायता से आसानी से बताया जा सकता है।

यात्रा और पर्यटन में भूगोल बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इनमें से कुछ तरीके इस प्रकार हैं:

यह हमें सहायता करता हैं:

- एक विशिष्ट क्षेत्र का नक्शे पर पता लगाने में,
- उद्गम और गंतव्य स्थानों के बीच भौगोलिक समय-अंतराल का पता लगाने में,
- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में घड़ी का समय निर्धारित करने में,
- नक्शे और चार्ट के माध्यम से तथ्यात्मक आंकड़ों के प्रदर्शन में,
- विभिन्न प्रकार के नक्शों को समझने में,
- समझ के साथ नक्शों को पढ़ने में,
- विभिन्न प्रकार की तालिका को समझने में,
- अन्य प्रकार के उपयोगी नक्शे और पर्यटन से संबंधित तालिका को पढ़ने में।

4.2 विश्व/नक्शे पर स्थान

हम सभी जानते हैं कि हमारी पृथ्वी एक त्रि-आयामी गोले का प्रतिरूप है। हमारी पृथ्वी लगभग गोले के आकार की है और सौर मंडल की एक सदस्य है। जब हम नक्शा तैयार करते हैं तो पूरी पृथ्वी को या इसके किसी एक भाग को दिखाते हैं। पृथ्वी की सतह वक्र है। एक समतल कागज पर वक्र सतह को दिखाना आसान नहीं है। इसीलिए इसे दिखाने के लिए हम भौगोलिक निर्देशांकों की सहायता लेते हैं। किसी भी स्थान को निर्देशित करने के लिए हम अक्षांश और देशांतर द्वारा दर्शाते हैं। इन दोनों निर्देशांकों की सहायता ने किसी भी बिन्दु को हम शुद्धता से दिखाते हैं। ये ग्राफ पेपर की तरह है जिस पर हम 'एक्स' और 'वाई' निर्देशांको को मान कर किसी भी मान को दर्शाते हैं।

अक्षांश

किसी भी स्थान का अक्षांश वह कोणीय दूरी है जो पृथ्वी के केन्द्र पर भूमध्यरेखीय तल से उत्तर या दक्षिण दिशा में मापी जाती है (चित्र 4.1)। अक्षांश की मुख्य विषेशताएँ है:

- यह उत्तरी गोलार्ध में 0° भूमध्य रेखा से लेकर 90° उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी गोलार्ध में 0° भूमध्य रेखा से 90° दक्षिणी ध्रुव तक फैला है।
- पूर्व से पश्चिम तक जाने वाली सभी अक्षांश रेखाएँ पृथ्वी पर काल्पनिक लकीरें हैं जो भूमध्यरेखा के समानान्तर चलती हैं।
- सभी अक्षांश रेखाएँ पूर्ण वृत होती हैं।
- चूंकि वे एक दूसरे के समानान्तर होती है अत: उनको समानान्तर रेखाएँ भी कहा जाता है।
- जैसे-जैसे इन समानान्तर रेखाओं का मान ध्रुव की तरफ बढ़ता है, उनकी परिधि कम होती जाती है।
- पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी दो ध्रुवों के मध्य से भूमध्य रेखा गुजरती है।
- भूमध्य रेखा एकमात्र अक्षांश है, जिसका तल पृथ्वी के केन्द्र से गुजरता है। इसलिए इसे वृहत् वृत के रूप में जाना जाता है।
- यदि आप भूमध्य रेखा के साथ-साथ यात्रा करते हैं, तो यह भूमध्य रेखा पर पाये जाने वाले स्थानों के बीच सबसे कम दूरी होगी।
- अन्य अक्षांशों के साथ-साथ यात्रा सबसे छोटी दूरी नहीं है।

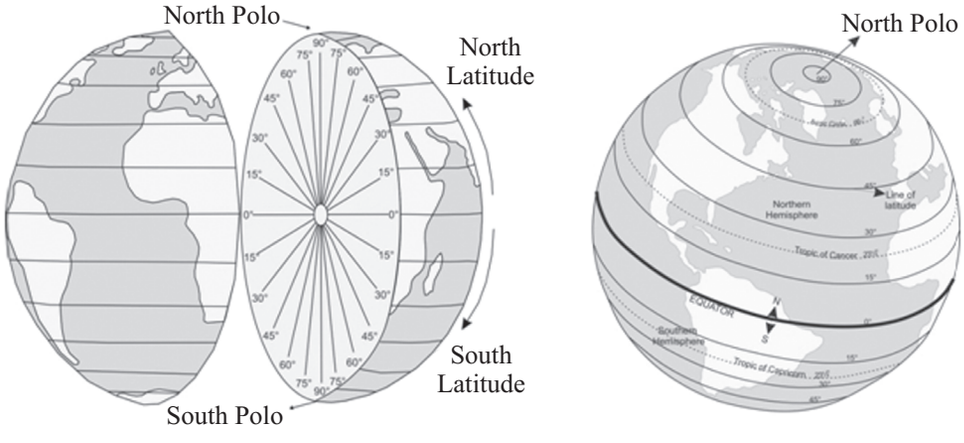

चित्र 4.1: अक्षांश

देशांतर

किसी भी स्थान का देशांतर वह कोणीय दूरी है जो पृथ्वी की धूरी के साथ-साथ प्रधान मध्याह्न रेखीय तल तथा उस स्थान के समांतरीय तल के बीच बनती है (चित्र 4.2)। देशांतर की मुख्य विशेषताएँ हैं:

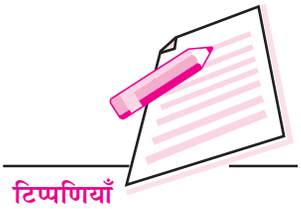

- यह एक काल्पनिक रेखा है जो उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक चलती है।
- लंदन के पास ग्रीनविच से गुजरती रेखा प्रधान मध्याह्न रेखा है जिसका मान 0° है।
- प्रधान मध्याह्न रेखा से पूर्व या पश्चिम की ओर दूरी अंशों में होती है।
- प्रधान मध्याह्न रेखा के पश्चिम में 0° से 180° पश्चिमी देशांतर के रूप में गिने जाते हैं।
- प्रधान मध्याह्न रेखा के पूर्व में 0° से 180° पूर्वी देशांतर के रूप में में गिने जाते हैं।
- देशांतर रेखाएँ समानान्तर नहीं होती है; वे बड़ी अर्धवृत हैं जो ध्रुव से ध्रुव तक पहुँचती हैं।
- प्रधान मध्याह्न रेखा पृथ्वी को दो गोलार्द्धों में विभाजित करती है। पूर्व की ओर का भाग पूर्वीय गोलार्द्ध है और पश्चिम की ओर का भाग का पश्चिमी गोलार्द्ध है।
- देशांतर की सभी रेखाएँ अक्षांतर की रेखाओं को 90° (समकोण) पर कर काटती है।
- ध्रुव की ओर देशान्तर के अन्तर की जगह कम होती जाती है।
- देशांतर की सभी रेखाएँ एक ओर से देखने पर अर्द्धवृत दिखती है। परन्तु दूसरी ओर को एक साथ जोड़ कर देखने पर वे पूर्ण वृत हो जाती है।

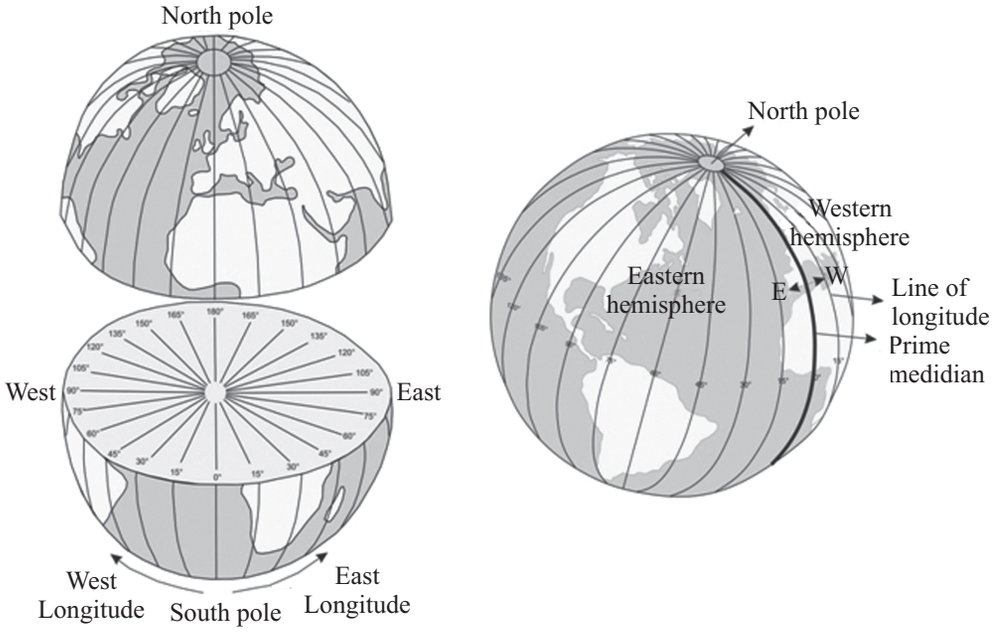

चित्र 4.2: देशांतर

अक्षांश, देशांतर और गोलार्द्ध

चित्र संख्या 4.3 में अक्षांश ओर देशांतर दोनों रेखाएँ दिखती हैं।

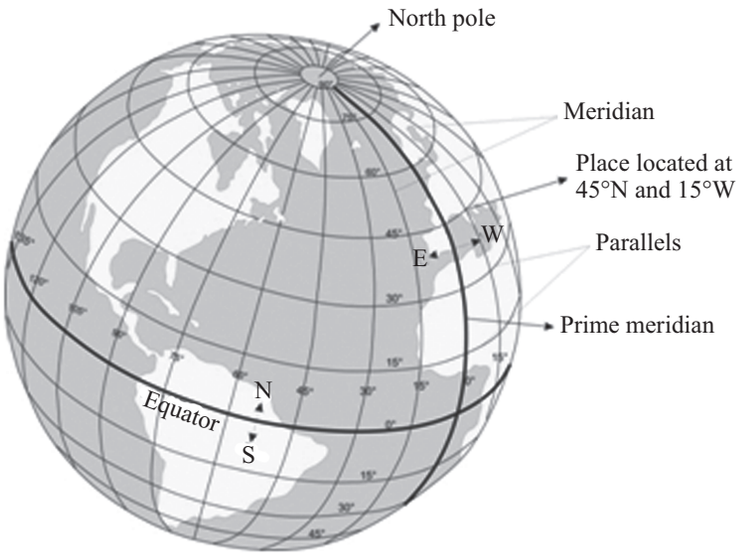

चित्र 4.3: गोलार्द्ध

जैसा कि पहले भी उल्लेख किया है, भूमध्य रेखा दोनों ध्रुवों – उत्तरी एवं दक्षिणी– के बीच से गुजरती है। भूमध्यरेखा से उत्तरी ध्रुव तक के क्षेत्र को उत्तरी गोलार्द्ध कहा जाता है। इसी तरह से, भूमध्यरेखा से दक्षिणी ध्रुव तक के क्षेत्र को दक्षिणी गोलार्द्ध कहा जाता है। प्रधान मध्याह्न रेखा 0° और 180° एक दूसरे के विपरीत हैं। दोनों को एक साथ मिलाने से पूर्ण वृत बन जाता हैं। 0° से 180° तक पूर्व में पूर्वी गोलार्द्ध है और 0° से 180° तक पश्चिम में पश्चिमी गोलार्द्ध है (चित्र 4.4)।

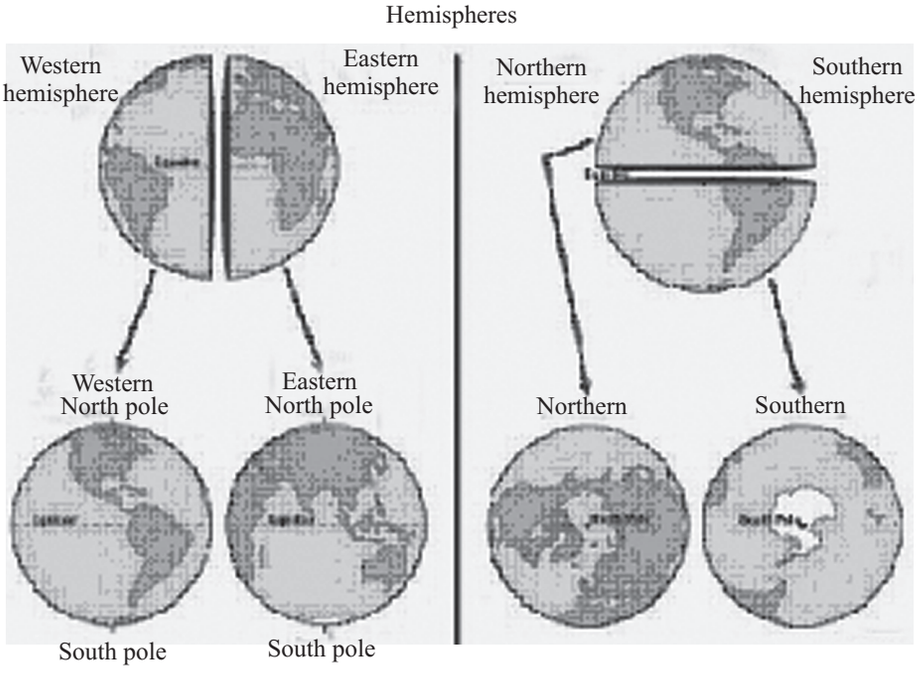

चित्र 4.4: गोलार्द्ध का विभाजन

पाठगत प्रश्न 4.1

(क) रिक्त स्थानों को भरिए

1. ..... एकमात्र अक्षांश है जिसका तल पृथ्वी के केन्द्र से गुजरता है।
2. भूमध्य रेखा पृथ्वी को दो ..... में बांटती है।
3. 0° देशांतर लंदन के पास ..... से गुजरती है।
4. भारत ..... गोलार्द्ध में स्थित है।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए:

1. यात्रा और पर्यटन में भूगोल की भूमिका की चर्चा कीजिए।
2. अक्षांश और देशांतर का क्या अभिप्राय है?
3. यात्रियों को अक्षांश और देशांतर की मूल जानकारी क्यों होनी चाहिए?

4.3 भौगोलिक समय अंतराल

हम सब जानते हैं कि पृथ्वी अपने अक्ष पर 24 घंटे में एक बार घूम जाती है। इस तरह पृथ्वी का घूमना एक पूरा चक्र है। 360° का पूरा चक्कर 24 घंटे में पूरा होता है। यदि 360° कोण को 24 घंटे से विभाजित किया जाए तो एक घंटे में 15° घूम जाती है। एक घंटा 60 मिनट के बराबर होता है जिसका मतलब है कि पृथ्वी चार मिनट में 1° घूमती है। यह सूर्य के संदर्भ में पृथ्वी सतह की स्थिति होती है। किसी स्थान का सही समय सूर्य की स्थिति से निर्धारित किया जाता है। जब सूर्य ठीक सिर के ऊपर होता है तो इसे दोपहर माना जाता है और इसी प्रकार समय का निर्धारण आगे के 24 घंटा में होता है। इस प्रकार हमारी घड़ी के समय को इसके अनुरूप तय करना उस स्थान विशेष का समय होता है। इसे स्थानीय समय कहते हैं।

किसी भी देश के देशांतर का फैलाव छोटा/कम नहीं होता इसीलिए कोई देश किसी भी स्थान के स्थानीय समय को देश का मानक समय नहीं मानता। एक ही देश में विभिन्न समयों से बचने के लिए उस देश का मानक समय का निर्धारण किया जाता है। इसके लिए उस देश के मध्य से गुजरने वाली देशांतर रेखा के आधार पर किया जाता है। उदाहरण के तौर पर भारत के देशांतर का फैलाव 68° से 97° पूर्व देशांतर है। भारत के लिए मुख्य अक्ष 82° 30' पूर्वी देशांतर है (जो नैनी इलाहाबाद) है। अगर 4 मिनट से गुना किया जाए तो यह 330 मिनट होगा जो 5 घंटे 30 मिनट के बराबर है। 82° 30' मिनट पूर्वी देशांतर प्रधान मध्याह्न रेखा (0°) से लिया गया है जो ग्रीनविच, लंदन के पास से होकर गुजरती है। इसलिए भारतीय समय ग्रीनविच समय से 5 घंटा 30 मिनट आगे रहता है क्योंकि यह ग्रीनविच से पूर्व में है। पूर्वी छोर और पश्चिमी छोर के स्थानीय

समय मे लगभग दो घंटे का अंतर है। जब अरूणाचल प्रदेश के लोग नाश्ता करके ऑफिस के लिए निकलते हैं तब गुजरात के लोग सोकर उठते हैं। फिर भी पूरे देश का समय हर स्थान पर एक समान होता है। यह विभिन्न समय की समस्या से बचने के लिए किया जाता है।

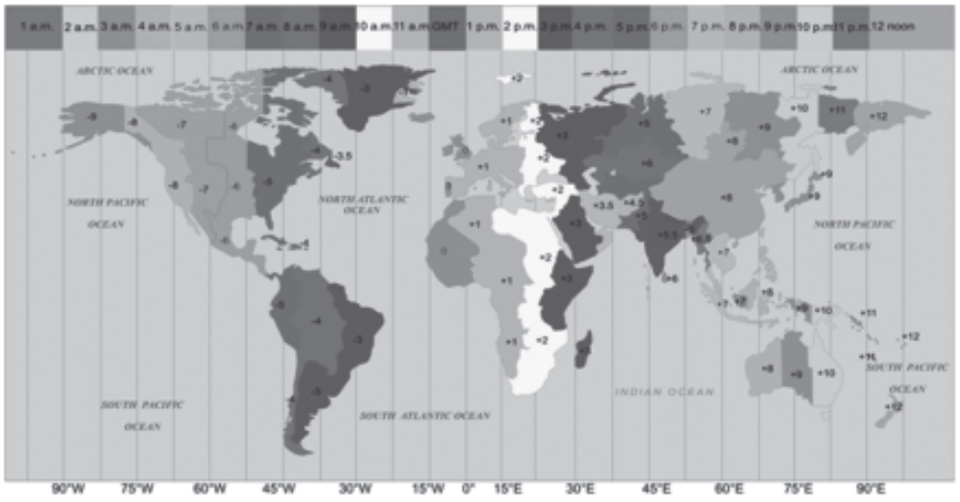

चित्र 4.5: समय अंतराल

कुछ देशों के देशांतरीय विस्तार ज्यादा होता है। ऐसे देशों में बहुत से टाइम जोन होते हैं। आस्ट्रेलिया में तीन टाइम जोन, यूएसए में चार, कनाडा में छः, रूस में नौ टाइम जोन हैं। विश्व के स्वीकृत टाइम जोन को चित्र 4.5 में दर्शाया गया है। किसी भी अंतरराष्ट्रीय यात्री को किसी भी देश में भ्रमण के लिए उस देश के मानक समय के अनुसार अपनी घड़ी को मिलना पड़ता है। अतः समय की जानकारी बहुत जरूरी है क्योंकि यह अपने देश और उस देश की स्थिति की जानकारी पाने में मददगार होता है। यह समय-अंतराल को समझने में भी मददगार होता है। मानव शरीर को जलवायु के साथ-साथ देशांतरों के बदलाव के कारण जो समय अंतराल हुआ है उसके अनुसार अभ्यस्त होना होता है। यह निद्राविकार को भी निर्धारित करता है क्योंकि पर्यटक को उसके अनुसार अपनी जैविक घड़ी को समायोजित करना पड़ता है। यह समस्या मुख्यतः पूरब-पश्चिम की ओर प्रस्थान करने में होती है।

4.4 अंतरराष्ट्रीय समय रेखा

अंतरराष्ट्रीय समय रेखा पृथ्वी के सतह पर एक काल्पनिक रेखा है जो उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक चलती है और एक कलैण्डर दिन को एक तरफ से दूसरी तरफ अलग करती है। चित्र 4.6 में दिखता है कि अंतरराष्ट्रीय समय रेखा 180° देशांतर के साथ-साथ चलती है जो लगभग प्रशांत महासागर के मध्य से नीचे होती है। एक राष्ट्र से अंतरराष्ट्रीय समय रेखा के गुजरने से रोकने के लिए इसे रूस के दूर पूर्वी भाग एवं प्रशांत महासागर के अनेक समूहों के दूर से निकाली गई है। ये विभिन्न परिवर्तन (पूर्वी अथवा पश्चिमी) सामान्यतया एक देश के विभिन्न भागों को अंतरराष्ट्रीय समय रेखा के एक ओर रखने के लिए किया गया है। अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को पार कर यदि

कोई पर्यटक पूर्व की ओर आता है, तो एक दिन अथवा 24 घंटे उसका अपनी घड़ी में पीछे करना पड़ता हैं। अंतरराष्ट्रीय रेखा के पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाले पर्यटकों के घड़ी में 24 घंटे अथवा एक कलैण्डर दिन जुड़ जाता है। अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा दिन और समय की सही गणना हेतु आवश्यक है।

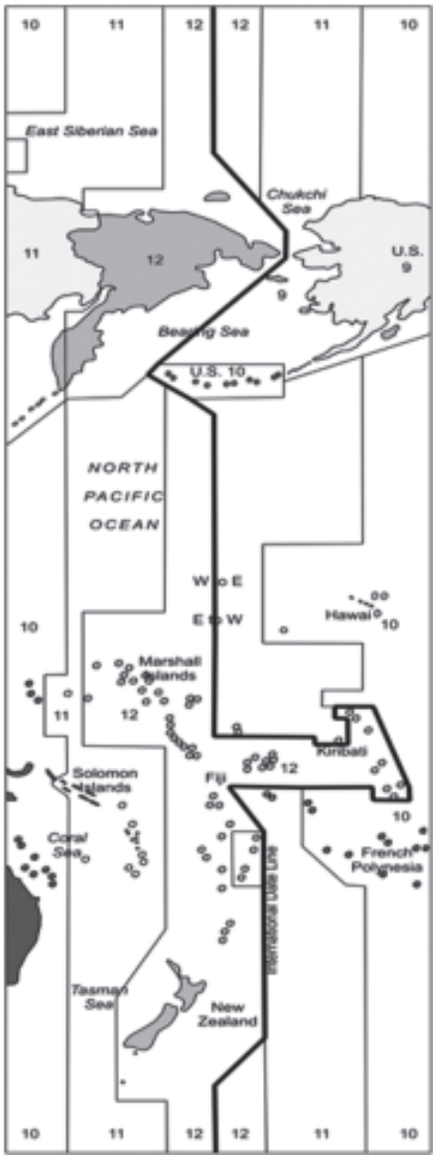

चित्र 4.6: अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा

4.5 ग्लोब पर समय निर्धारण

जैसा ऊपर कहा गया है, पृथ्वी को एक देशांतर से दूसरे देशांतर की दूरी तय करने में में चार मिनट का समय लगता हैं। यदि आपके सामने ग्लोब को रखा जाए और आप ग्लोब को देख रहे हैं तो ज्ञात होगा कि पृथ्वी अपने धुरी पर घड़ी की विपरीत दिशा में घुमती है। सूर्य को पूर्व

दिशा में स्थिर माना जाता है। सूर्य के संदर्भ में पृथ्वी के धरातल में परिवर्तन उसकी परिक्रमा के कारण होता है। ग्लोब का पश्चिमी भाग पूर्व की ओर सूर्य की ओर घुमता है। इसीलिए पूर्व के नजदीक का भाग सूर्य के सामने पहले आता है और पश्चिमी भाग बाद में आता है। इसी कारण पूर्व के भाग का समय पहले आता है और पश्चिम के हिस्से का बाद में आता है। पुन: पूर्व व पश्चिम का निर्धारण देशांतरों के मान पर होता है। पूर्व के देशों/स्थानों का समय आगे होता है। समय का विस्तारण देश/स्थान के पूर्व–पश्चिम के विस्तार से होता है। हमारे देश का मानक समय एवं मुख्य देशांतर के समय से निर्धारित होता है। इसे भारतीय मानक समय (आई एस टी) कह जाता है। यह ग्रीनविच से 82° 30' पूर्व में स्थित है। अत: ग्रीनविच समय की तुलना में भारत का समय 5 घंटे और 30 मिनट आगे हैं।

4.5.1 समय की गणना करने का तरीका

निम्नलिखित तरीके अपनाए जाने चाहिए :

- जिन दो स्थानों के बीच समय का निर्धारण करना हो, उन दोनों स्थानों का देशांतर पता कीजिए।
- दोनों स्थानों के देशांतरों के बीच अंतर की गणना डिग्री में कीजिए।
- अगर दोनों स्थान एक ही गोलार्द्ध (पूर्व या पश्चिम) में है तो बड़े देशांतर मान मे से छोटे देशांतर मान को घटा कर अंतर निर्धारित कीजिए।
- अगर दोनों स्थान भिन्न गोलार्द्ध में है तो अन्तर जानने के लिए देशांतर मानों को जोड़ दीजिए।
- प्राप्त अन्तर को चार से गुणा करें, क्योंकि पृथ्वी को एक डिग्री देशांतर को पार करने में चार मिनट का समय लगता है।
- इस प्रकार प्राप्त संख्या मिनट में होगी।
- इन आंकड़ों को घंटों में बदलने के लिए 60 से भाग करें क्योंकि एक घंटा 60 मिनट के बराबर होता है।
- समय में जो अन्तर आप पाएँगे, वह अन्तर दो स्थानों के बीच का होगा।
- पश्चिम की तुलना में पूर्व का समय ज्ञात करने के लिए पश्चिम के समय में जोड़ दिया जाता है, क्योंकि पश्चिम के समय की तुलना में पूर्व दिशा का समय अधिक होता है।
- पूर्व की तुलना में पश्चिम का समय ज्ञात करने के लिए पूर्व के समय में से परिकलित समय को घटा दिया जाता है क्योंकि पूर्व की तुलना में पश्चिम का समय कम होता है।

हम कुछ उदाहरणों का अध्ययन करें: स्थान 'A' 45° पूर्व देशांतर पर है जहाँ सुबह के 8 बजे है। दूसरी स्थान 'B' 120° पूर्व देशांतर पर है। स्थान 'B' का स्थानीय समय क्या होगा?

हल: दोनों स्थानों के देशांतरों का अंतर $(120° - 45°) = 75°$ है।

75×4 मिनट = 300 मिनट

300 मिनट ÷ 60 मिनट = 5 घंटे

'A' (पश्चिम) के संदर्भ में 'B' (पूर्व), का समय ज्ञात करना है। अत: 'B' का समय 'A' से 5 घंटे ज्यादा होगा। इसलिए 'B' का समय (8+5 = 13 घंटे) 1 अपराह्न होगा।

अन्य उदाहरण लेते हैं: 'P' स्थान का देशांतर 45° पूर्व देशांतर पर है जहाँ का समय के सुबह 8 बजे हैं। दूसरा स्थान 'Q' 120° पश्चिमी देशांतर पर है तो 'Q' का स्थानीय समय क्या होगा?

हल: देशांतरों का अन्तर (120° + 45°) = 165° है।

165 × 4 मिनट = 660 मिनट

660 मिनट ÷ 60 मिनट = 11 घंटे

'P' पूर्व में है और 'Q' पश्चिम में है। इसलिए 'Q' स्थान का स्थानीय समय 'P' की तुलना में 11 घंटे कम होगा। अत: 'Q' का समय (8 पूर्वाह्न - 11 घंटे होगा)

24 (पिछली तारीख) + 8 घंटे = 32 घंटे – 11 घंटे = 21 घंटे अर्थात् = 9 बजे अपराह्न

यदि एक फरवरी 2013 को 'P' स्थान पर सुबह 8 बजे होंगे तो 'Q' स्थान पर 31 जनवरी 2013 की 9 बजे अपराह्न का समय होगा। ('P' स्थान की तारीख की तुलना में पिछली तारीख)।

क्रियाकलाप 4.1

दूर विदेश में रहने वाले अपने दोस्त या रिश्तेदार को फोन करें। वहाँ के स्थानीय समय का पता लगाए। उसके और अपने स्थान के समय अन्तर की गणना करें। दोनों शहरों के मध्य देशांतर अंतर और समय अंतर की गणना करें, और तुलना करें।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को परिभाषित करें।

2. इलाहाबाद और लंदन के मध्य समय में कितना अंतर है?

3. अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को पार करने का क्या प्रभाव पड़ता है?

4.6 मानचित्रों और चार्टों द्वारा संप्रेषण

भूगोल में मानचित्रों और चार्टों के माध्यम से सूचना को प्रदर्शित करने की विधि इस्तेमाल होती है। वे बहुत से तथ्यों को स्पष्ट तौर पर दिखाने में बहुत सहायक होते हैं और सूचनाओं को अधिक बोधगम्य बनाते हैं। यदि एक व्यक्ति ध्यानपूर्वक किसी विशेष स्थान पर जाता है तो देखे हुए

तथ्यों/दृश्यों को भलीभांति बाद में भी व्यक्त कर सकता है। लेकिन यदि तथ्यों/दृश्यों को मानचित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है तो यह मानचित्र उन व्यक्तियों के लिए भी बोधगम्य होता है जो वहाँ कभी भी नहीं गये होते हैं।

मानचित्र का बहुत महत्व है क्योंकि :

- मानचित्र बड़े क्षेत्र को भी बोधगम्य बना देता है। इसमें उस क्षेत्र के विविध तत्वों का आलेखन किया जाता है,
- बड़ा क्षेत्र भी मानचित्र के माध्यम से बोधगम्य हो जाता है,
- मानचित्रों के माध्यम से विवरण के स्थानिक विविधता और प्रतिरूप को आसानी से समझा जा सकता है परन्तु लिखकर समझना उतना आसान नहीं होता है,
- मानचित्र सुव्यवस्थित होता है और स्थानिक सूचना के संग्रहण हेतु उपयुक्त होता है और
- मानचित्र शब्दों से अधिक स्पष्ट और उपयुक्त होते हैं।

4.6.1 मानचित्रों के प्रकार

उपयोग व सूचना देने के आधार पर मानचित्रों के अनेक प्रकार होते हैं, लेकिन सुविधा के लिए उन्हें दो प्रमुख श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

(i) सामान्य संदर्भ मानचित्र और

(ii) विशिष्ट अथवा विषयक मानचित्र

4.6.2 सामान्य संदर्भ मानचित्र

एक सामान्य संदर्भ मानचित्र भू-सतह के किसी भी इकाई जैसे विश्व, महाद्वीपों, देशों, जिलों, नगरों, नदियों, पहाड़ों, पठारों, मैदानों, सागरों इत्यादि की साधारण जानकारी देता है। इस प्रकार के मानचित्र सामान्यतया किताबों अथवा एटलसों में उपलब्ध होते हैं जिनका उपयोग अक्सर छात्र करते हैं। अत: एटलस विभिन्न प्रकार के मानचित्रों का संकलन होता है जो संबंधित स्थान के वांछित पहलूओं के बारे में सामान्य जानकारी देता है।

4.6.3 विशेष अथवा विषयक मानचित्र

विशेष अथवा विषयक मानचित्र में विषयक सूचनाएँ जैसे जलवायु, वनस्पति, वर्षा, तापमान, फसलों का वितरण, खनिज, उद्योग, सड़क, रेल मार्ग, हवाई मार्ग, पवन का प्रवाह और दिशा, चक्रवात इत्यादि दर्शाता है। इन मानचित्रों को व्यक्ति की अपनी विशिष्ट जरूरतों के आधार पर उप-विभागों में पुन: विभक्त किया जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण मानचित्रों की चर्चा नीचे की गयी है:

राजनैतिक मानचित्र: राजनैतिक मानचित्र पर किसी भी क्षेत्र विशेष जैसे महाद्वीप/देश अथवा राजनैतिक प्रशासन की कोई इकाई दिखाई जाती है। एक राजनैतिक इकाई से दूसरी में अन्तर स्पष्ट

करने के लिए अनेक रंगों का प्रयोग किया जाता है, लेकिन इन रंगों का किसी राजनैतिक इकाई से कोई विशेष महत्व नहीं होता है। आप भारत का कोई राजनैतिक मानचित्र लीजिए अथवा एटलस में कोई राजनैतिक मानचित्र देखिए। इसमें अंतरराष्ट्रीय, राज्य, तटीय सीमाएँ एवं नदियाँ, झीलों, समुद्रों, महत्वपूर्ण सड़कों, रेल मार्गों, राज्य की राजधानियाँ, महत्वपूर्ण शहरों एवं बंदरगाहों के साथ-साथ प्रमुख औद्योगिक और वाणिज्यिक केंद्रों को भी देख पाते हैं। इस प्रकार के मानचित्र पर्यटकों को पर्यटन स्थानों और उनकी स्थिति के बारे में सूचनाएँ देती हैं। इसमें एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए विभिन्न प्रकार के परिवहनों के प्रकारों तथा अनुमानित दूरी के बारे में जान पाते हैं। यह विभिन्न देशों में जाने वाले पर्यटकों एवं व्यक्तियों को यात्रा करने में सहयोग प्रदान करता है।

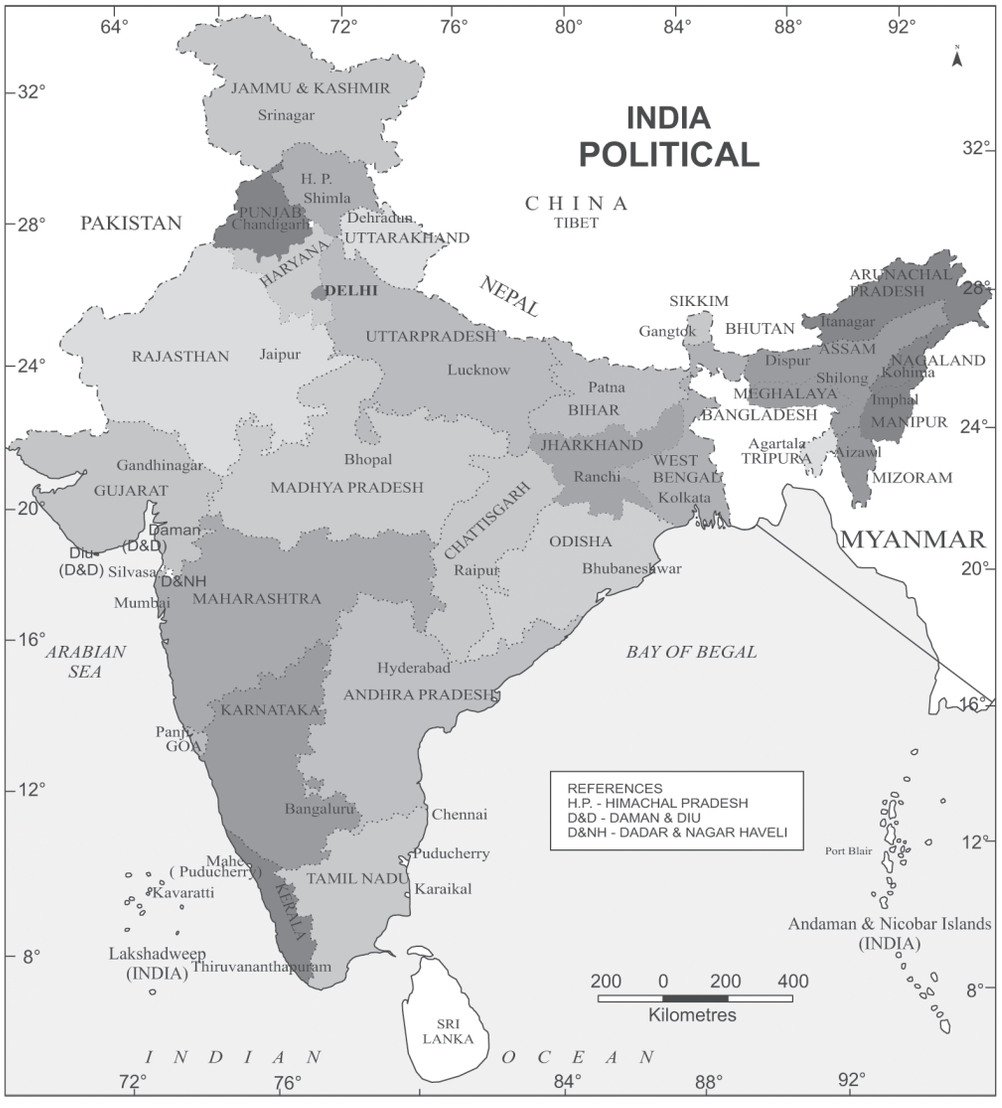

चित्र 4.7: भारत का राजनैतिक मानचित्र

भौतिक मानचित्र : भौतिक मानचित्र किसी इलाके के भौतिक विशेषताओं/ऊंचाई को दर्शाता है। इन मानचित्रों पर अनेक प्रकार के रंगों का प्रयोग किया जाता है। रंग छायित रूप में होते हैं। सामान्यतया गहरे रंग अधिक ऊंचाई को और हल्के रंग कम ऊंचे भाग को दिखाते हैं। विभिन्न प्रकार के ऊंचाई धारण करने वाली आकृतियों जैसे पर्वत शृंखलाएँ, पहाड़ियाँ, गर्म व ठंडे मरूस्थलों, पठारों अथवा मैदानों को दिखाया जाता है। इसके अलावा नदियों, झरनों, झीलों, वन क्षेत्र, दलदल, जलाक्रांत इलाका इत्यादि भी दिखाए जाते हैं (चित्र 4.8)। इस प्रकार के मानचित्र से पर्यटकों को इच्छुक स्थानों में जाने वाले स्थानों के भौतिक विशेषताओं की जानकारी मिलती है। तापमान पर ऊँचाई के प्रभाव को समझते हुए वे वहाँ जाने हेतू अपने आप को तैयार कर पाते हैं। जलवायु के दृष्टिकोण से पर्वतीय भागों की तुलना में मैदानी भाग पूर्णता भिन्न होते हैं। दोनों भागों में पर्यटन की योजना भिन्न ऋतु में की जाती है। इसीलिए पर्यटकों को भौतिक मानचित्र की जानकारी, उसका अध्ययन एवं समझ बहुत ही आवश्यक है।

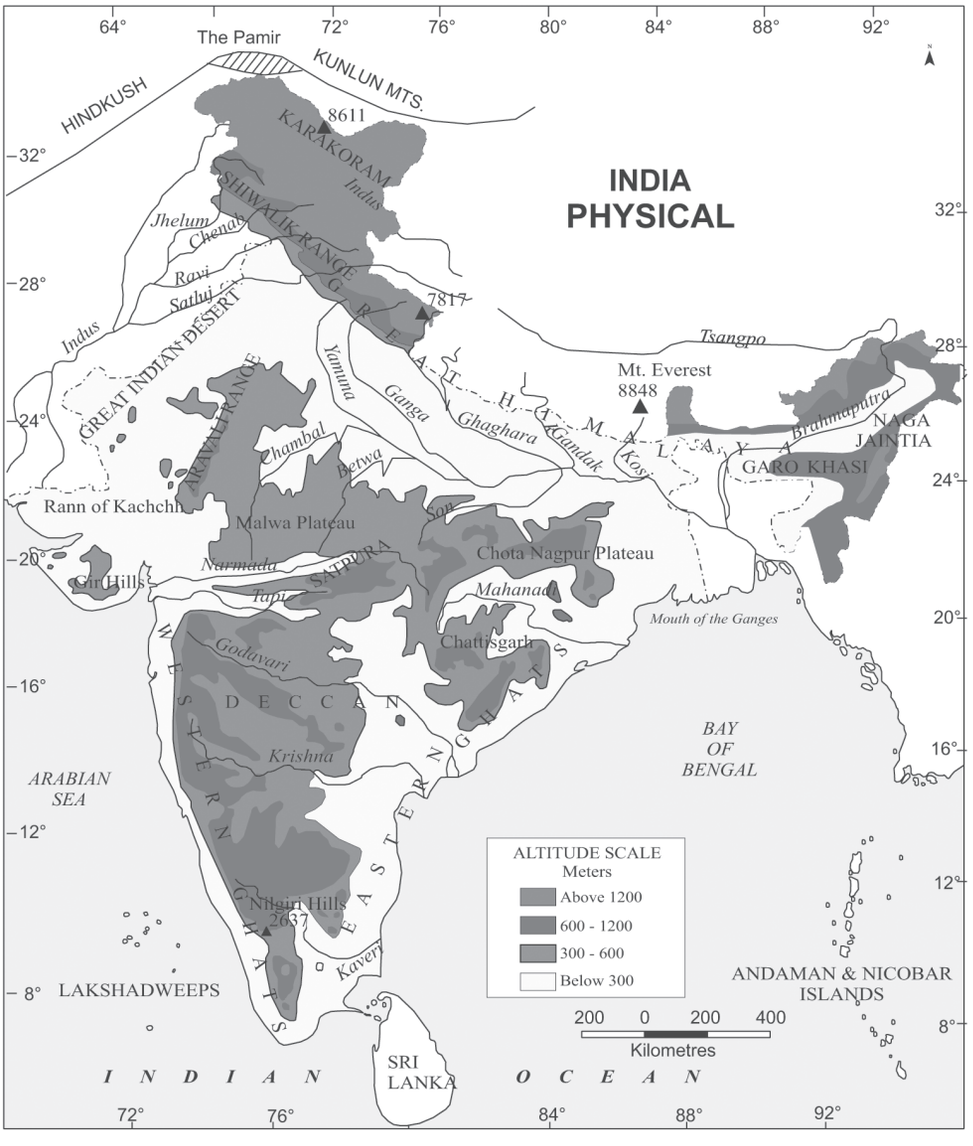

चित्र 4.8: भारत का भौतिक मानचित्र

सड़क मानचित्र: सड़क मानचित्र किसी विशिष्ट क्षेत्र में विभिन्न मौसमों में वाहन चलाने योग्य सड़कों की सूचना के साथ सड़कों की जानकरी देता है। इस मानचित्र पर पेट्रोल पंपों की उपलब्धता, रहने व खाने-पीने की सुविधा एवं सार्वजनिक सहायताओं की सूचना होती है। राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग, जिला राजमार्ग एवं ग्रामीण सड़कों को विभिन्न तरीके से दर्शाया जाता है। इनमें से राष्ट्रीय राजमार्ग और राज्य राजमार्ग बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे सामान्य रूप से लोगों एवं वस्तुओं और विशेषकर पर्यटकों के आवागमन को सुगम बनाते हैं।

सड़कें देशी पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे अपने विभिन्न गंतव्य स्थानों के लिए सड़क से यात्रा करते हैं। अच्छी सड़कें उपयोग कर्त्ता को अच्छी सुविधाएँ एवं सेवाएँ प्रदान करती हैं। पर्यटक उनके द्वारा यात्रा की जाने वाली दूरी को जानने में भी इच्छुक रहते हैं। इसके लिए दूरी संबंधी तालिका (चित्र 4.9) समय की योजना एवं यात्रा का निर्णय लेने के लिए अधिक महत्वपूर्ण होती है।

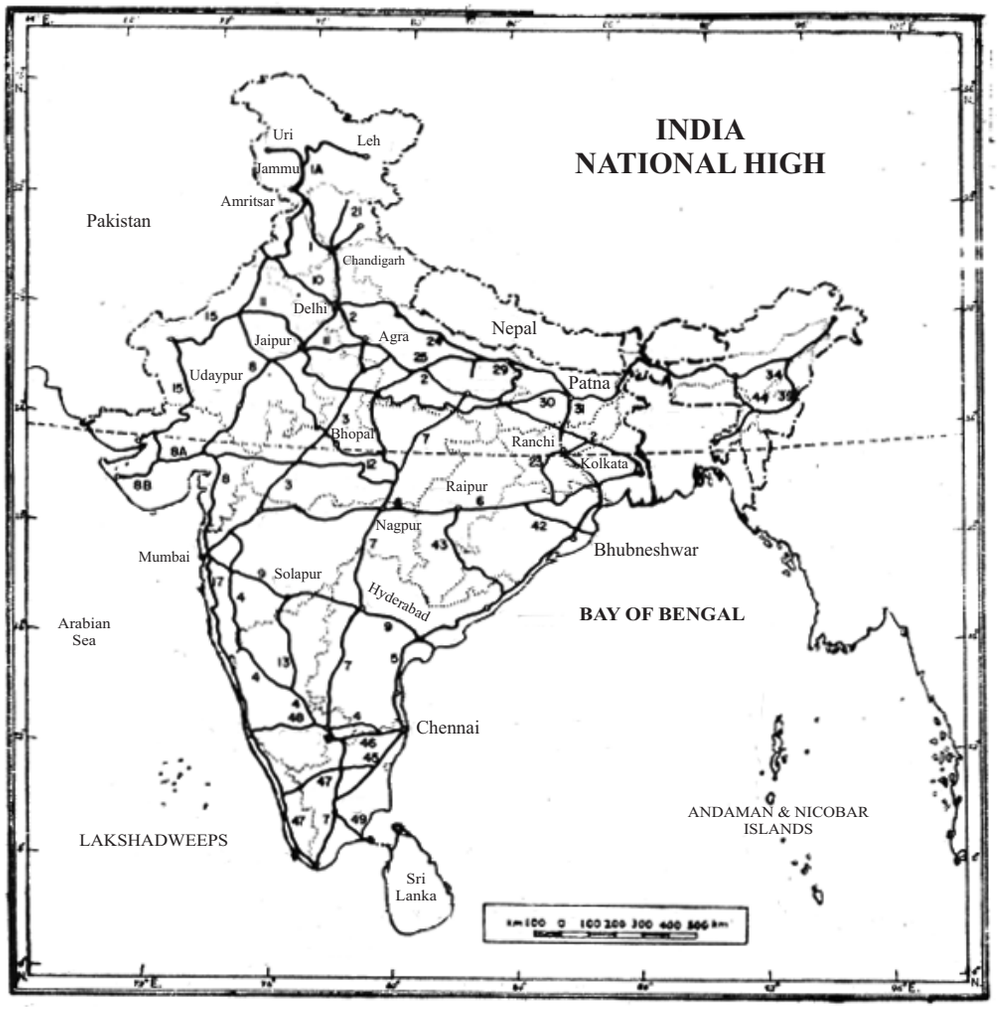

चित्र 4.9: राष्ट्रीय राजमार्ग

रेलमार्ग मानचित्र: रेलमार्ग मानचित्र एक देश अथवा निकटस्थ देशों में बिछे रेल मार्गों के जाल को बेहतर तरीके से दर्शाता है। इस प्रकार के मानचित्रों में हमें सूचना मिलती हैं:

- किसी क्षेत्र विशेष में पाये जाने वाले रेलमार्ग की दो पटरियों की बीच की चौड़ाई,
- उन रेल मार्गों की लम्बाई,
- चलाए जा रहे इंजिन के प्रकार जैसे इलेक्ट्रिक अथवा डीजल,
- पटरियों के स्वभाव एवं प्रकार जैसे एकल, दोहरी, गेज के बदलाव की प्रक्रिया में अथवा निर्माणाधीन।

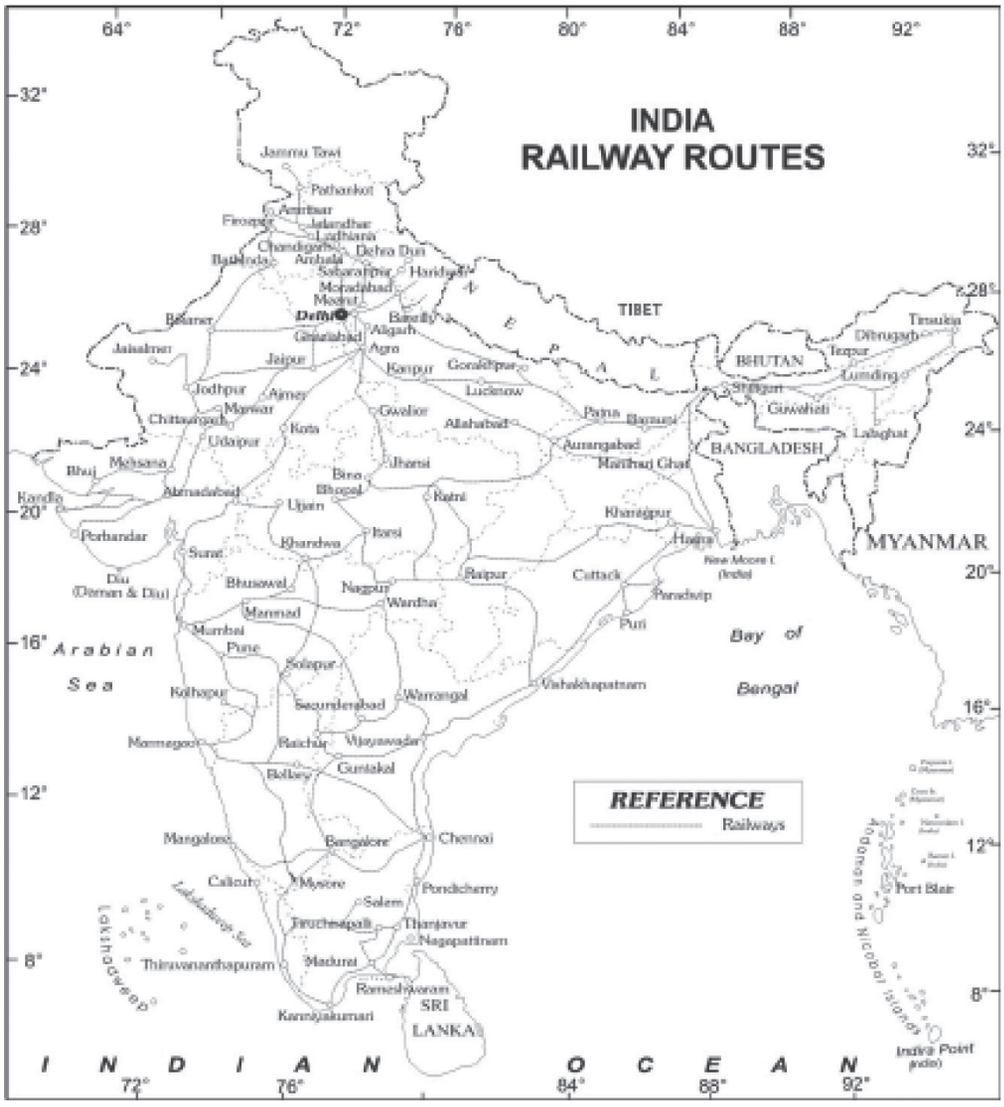

चित्र 4.10: रेलमार्ग मानचित्र

पर्यटक रेलवे मानचित्र का अध्ययन करने से ही गंतव्य स्थान की यात्रा की योजना बना सकता है। यह उनके गंतव्य स्थान रेल मार्ग और ट्रेन की उपलब्धता की जानकरी देने में सहायक होता है। कभी–कभी यह भी होता है कि पर्यटन स्थल सीधे रेल से जुड़ा नहीं होता है। वहाँ पहुँचने

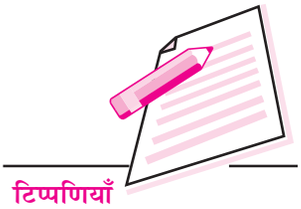

टिप्पणियाँ

के लिए सड़क मार्ग भी होता है। पर्यटक लम्बी दूरी रेलमार्ग से तय कर लेता है तथा छोटी दूरी सड़क मार्ग से तय करता है। उदाहरण के लिए मुंबई से जम्मू व कश्मीर घाटी जाने वाले पर्यटक जम्मू तक रेल मार्ग से और उसके बाद घाटी जाने के लिए बस से जाते हैं।

हवाई मार्ग मानचित्र : हवाई मार्ग मानचित्र प्रमुख एवं लघु राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कार्यशील एयरपोर्ट और उनके मध्य उपलब्ध उड़ानों की जानकारी देता है। हवाई मार्ग मानचित्र पर्यटकों को उनके गंतव्य स्थानों के बीच छोटे हवाई मार्गों के बारे में जानकारी के लिए बहुत सहायक होती है।

पर्यटक मानचित्र : पर्यटक मानचित्र पर्यटकों के लिए उनकी जरूरतों और आवश्यकताओं के अनुसार निश्चित ही बहुत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के मानचित्रों को पर्यटकों की रूचि जैसे प्राकृतिक सौन्दर्य के स्थानों, पहाड़ी केन्द्रों, स्मारकों, धार्मिक स्थानों, समुद्र तटों, वन्य जीव अभ्यारण्य, पार्कों, ऐतिहासिक महत्व के स्थानों, सांस्कृतिक स्थलों, ट्रेकिंग मार्गों और पर्वतारोहण एवं अन्य अनेक पर्यटन गंतव्यों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। इस प्रकार के मानचित्र में अन्य विशेषताएँ जैसे नदियों, झीलों, महासागरों, पर्वतों, पहाड़ों जंगलों इत्यादि स्थानों को भी दर्शाया जाता है। यद्यपि

चित्र 4.11: पर्यटक मानचित्र

ये सूचनाएँ अनेकों मानचित्रों में दिखाया जा सकता है, तथापि सामान्यतया इसे पर्यटकों के लिए एक मानचित्र में प्रदर्शित किया जाता है। इससे पर्यटक अपने गंतव्य स्थान की एक समाकलित तस्वीर प्राप्त कर पाते हैं। इन पर्यटक मानचित्रों को राष्ट्रीय से स्थानीय स्तर पर तैयार किया जाता है, जैसे, भारत, दिल्ली, आगरा अथवा मुम्बई के मानचित्र। चित्र 4.11 पर भारत में स्थिति विभिन्न प्रर्यटक केन्दों को दर्शाया गया है। किसी राज्य का पर्यटन सूचना केन्द्र प्रर्यटक मानचित्र को विस्तार से दिखाता है।

ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र: ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र पर्वतीय क्षेत्र में सम्भावित ट्रेकिंग मार्ग दिखाता है। जो पर्यटक प्रकृति में रोमांच एवं साहसपूर्ण कार्य करने में रूचि रखते हैं वे ट्रेकिंग पर जाना पसंद करते हैं। उनके लिए यह मानचित्र बहुत सहायक होता है। इस मानचित्र पर ट्रेकिंग मार्ग, मार्ग में विभिन्न स्थानों की ऊंचाई, कैम्प स्थल के साथ-साथ नदी व पर्वत श्रेणी की जानकारी भी होती है।

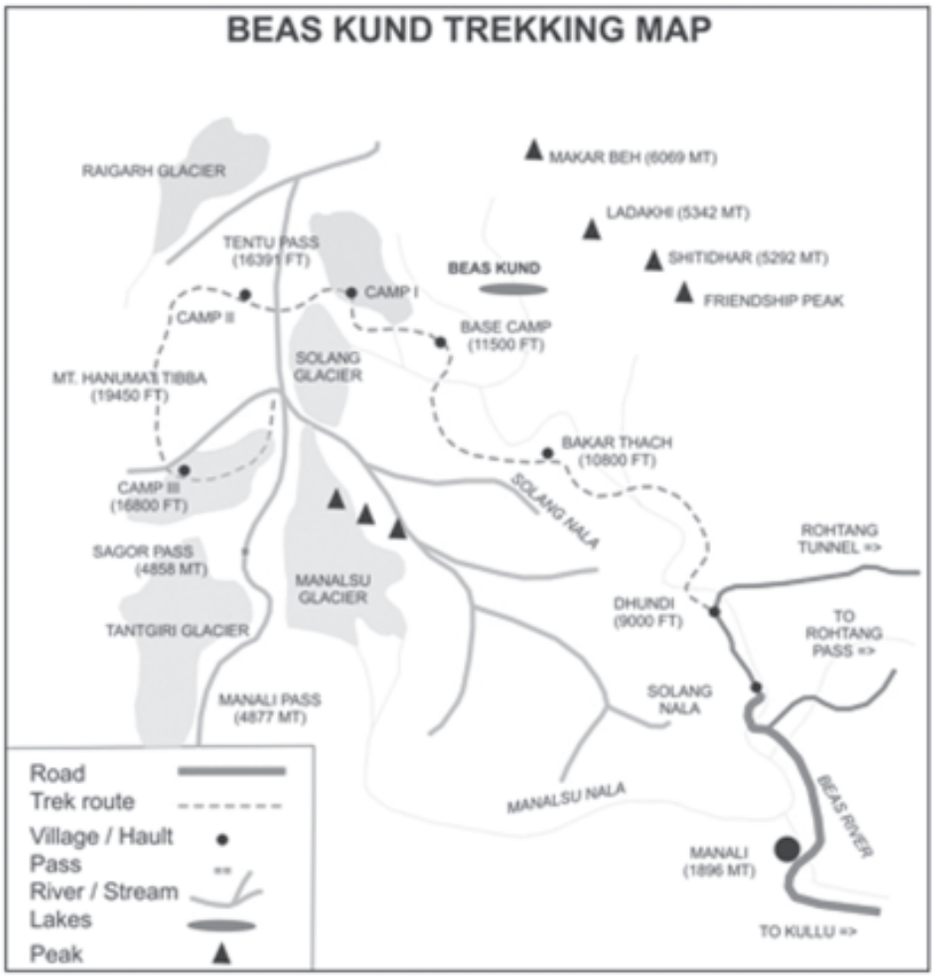

चित्र 4.12: ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र

क्रियाकलाप 4.2

आप दिल्ली से कश्मीर के डल झील जाना चाहते हैं। एक मानचित्र लीजिए और उसमें सभी प्रकार के संबंधित एवं आवश्यक सूचनाएँ जैसे स्थिति, स्थलीय और हवाई मार्ग का जुड़ाव, दूरी इत्यादि एकत्रित करें।

4.6.4 मानचित्र को कैसे पढ़ा जाए

मानचित्र पर्यटकों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। गंतव्य स्थान पर पहुँचने से पहले वे उन जगहों से अवगत हो जाते हैं। पर्यटक-गाइड और किताबें पर्यटकों में रूचि जागृत करने के लिए होते हैं। इसलिए कभी-कभी गाइड और किताबें पर्यटकों को गंतव्य स्थान पर जाने की प्रेरणा देने के माध्यम होते हैं। मानचित्र प्रत्येक प्रकार की सूचना जैसे स्थलाकृति, तापमान, वर्षा, अपवाह, दूरी, मार्ग, जाने का उपयुक्त समय और भी अन्य जानकारियाँ देता है। मानचित्र को ठीक से समझने के लिए पर्यटकों को दर्शनीय स्थलों के अंक्षाशों और देशांशों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। मानचित्र पर दिया गया मापक एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी के आकलन के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार एक स्थान के संदर्भ में दूसरे स्थान की स्थिति जानने के लिए दिशा का ज्ञान होना भी आवश्यक है। मानचित्र को देखकर दिशा पता की जा सकती है। यदि दिशा न दी गई हो तो मानचित्र में दिखाए गए अक्षांश और देशांश रेखाओं की सहायता से दिशा की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। मानचित्र पर विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ दी गई होती हैं। इन्हें मानचित्र के नीचे दी गई सूचनाओं को पढ़कर आसानी से समझा जा सकता है। किसी तथ्य के वितरण को समझने के लिए मानचित्र पर दर्शाये गये स्थानिक प्रतिरूप को देखना चाहिए।

4.6.5 चार्टों के प्रकार

संख्यात्मक सूचना को दृश्य प्रस्तुति के माध्यम से बेहतर समझा जा सकता है। इससे आंकड़ों को आसानी से समझने, तुलना करने और निष्कर्ष निकालने में आसानी होती है। इन आंकड़ों को प्रस्तुत करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण पद्धतियाँ जैसे दंडारेख, पाई चार्ट, लाइन चार्ट, प्रकीर्ण आरेख, आयत चित्र और प्रवाह चित्र चार्ट हैं।

दंडारेख चार्ट : दंडारेख सूचना का एक त्रिभुज द्वय आयामी प्रस्तुतीकरण है। जानकारियों की तुलना करने के लिए दंडारेख तैयार करके एक नजर में अध्ययन करने का यह सामान्य तरीका है। अंकीय आंकड़ों को भिन्न-भिन्न समूहों में वर्गीकृत करके अध्ययन करना बहुत प्रभावी होता है। उदाहरणार्थ विभिन्न पर्यटक केन्द्रों पर आने वाले पर्यटकों की संख्या ज्ञात हो तो उचित श्रेणी का चयन कर विभिन्न केंद्रों का बार तैयार किया जा सकता है। आंकड़ों को प्लॉट करने के बाद तुलनात्मक दृष्टिकोण से निष्कर्ष निकाला जाता है। बार एकल अथवा अनेक हो सकते हैं। उन्हें मानचित्र अथवा अलग कागज या ग्राफ पर बनाया जा सकता है।

लाइन चार्ट : एक निश्चित समयावधि में किसी तथ्य की प्रवृत्ति के अध्ययन के लिए लाइन चार्ट को प्रयोग में लाया जाता है। लाइन चार्ट अलग-अलग आंकड़ा बिन्दुओं को जोड़ता है। यह एक समयावधि में आंकड़ों के विभिन्न मानों को समझने एवं निष्कर्ष निकालने के लिए बहुत

ही आसान व स्पष्ट तरीका है। उदाहरणार्थ यदि किसी पर्यटक केंद्र पर विभिन्न वर्षों में आने वाले पर्यटकों की संख्या उपलब्ध हो तो उन्हें विभिन्न वर्षों के आधार पर अंकित किया जा सकता है। इस प्रकार अंकित करने के पश्चात एक समयावधि के दौरान पर्यटकों की संख्या में होने वाली वृद्धि अथवा कमी अथवा अचानक बदलाव के क्रमों का चित्रण मिल जाता है।

पाई चार्ट : पाई चार्ट अलग-अलग क्षेत्रों द्वारा गठित मूल्यों के अनुपातिक अंश का प्रतिनिधित्व करता है। इस विधि में सभी मानों को एक साथ जोड़ कर 100% माना जाता है जिसके लिए एक वृत बनाया जाता है। विभिन्न क्षेत्रकों के मान के आधार पर उस वृत को विभिन्न भागों में बांटा जाता है। उदाहरणार्थ यदि पर्यटकों को विभिन्न वर्गों में जैसे धर्म, आम समूह, उनके मूल स्थान इत्यादि में विभाजित किया जाए और उनकी संख्या उपलब्ध हो तो पर्यटकों की क्षेत्रवार संख्या के आधार पर पाई चार्ट आसानी से तैयार किया जा सकता है।

क्रियाकलाप 4.3

पिछले 10 वर्षों में आपके राज्य में यात्रा करने आए विदेशी पर्यटकों के आगमन के आंकड़े प्राप्त कीजिए। एक बार चार्ट पर प्रत्येक वर्ष के आंकड़ों को दंडारेख द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

पाठगत प्रश्न 4.3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

1. मानचित्र की दो मुख्य श्रेणियाँ क्या हैं?
2. विषयगत मानचित्र का वर्णन कीजिए।
3. एक विदेशी पर्यटक भारत में विभिन्न पर्यटक स्थलों की यात्रा करना चाहता है। इसके लिए आप उन्हें किस मानचित्र के लिए सुझाव देगें?
4. ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र की क्या विशेषताएँ हैं?

आपने क्या सीखा

- यात्रा और पर्यटन के लिए भूगोल बहुत ही महत्वपूर्ण एवं केन्द्रीय विषय है जो विभिन्न भागों को जोड़ता है। यह किसी भी स्थान को गहराई से समझने के लिए अच्छी जानकारी देता है। यह पर्यटन उद्योग की वृद्धि और विकास में बहुत योगदान देता है।
- पर्यटन एक प्रकार की यात्रा है। इसका मुख्य उद्देश्य फुरसत में मनोरंजन, पुनर्युवन अथवा व्यस्त कार्यों से अलग होकर आनंदपूर्वक समय व्यतित करना है।

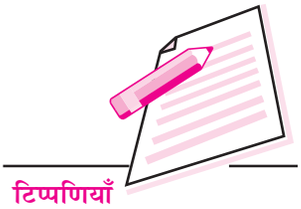

टिप्पणियाँ

- यात्रा व पर्यटन भूगोल उन भौगोलिक पहलुओं की जानकारी देता है जिनसे पर्यटन की संभावनाएँ बढ़ती हैं। यह विधा पर्यटक की सहायता के लिए अनेक प्रकार की सूचनाएँ प्रदान करता है। इससे पर्यटन में वृद्धि होती है।
- अक्षाँश व देशाँश रेखाएँ हमें पृथ्वी पर किसी स्थान की स्थिति के बारे में पता लगाने में सहयोग करती है। इसके अलावा हम जलवायु व विभिन्न समय क्षेत्रों को भी समझ सकते हैं। ग्लोब पर समय का निर्धारण पर्यटक के लिए अति आवश्यक होता है।
- हमारे देश का मानक समय इसके मध्य से गुजरने वाली देशांतर के आधार पर निर्धारित होता है। इस देशांश का मान ग्रीनविच से 82° 30' पूर्व है। इसीलिए भारत का समय अंतरराष्ट्रीय मानक समय अथवा ग्रीनविच समय से 5 घंटे 30 मिनट अधिक आगे है।
- भूगोल में मानचित्र तैयार करना और उनका अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण है। मानचित्रों को मोटे तौर पर दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

  (i) सामान्य संदर्भ मानचित्र और

  (ii) विशेष अथवा विषयगत मानचित्र
- सामान्य संदर्भ मानचित्र किसी स्थानिक इकाई जैसे महाद्वीपों, देशों, जिलों, शहरों, नदियों, पर्वतों, पठारों इत्यादि की सूचनाएँ देते हैं। लेकिन विशेष अथवा विषयपरक मानचित्रों पर पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण वनस्पतियों, वर्षा, तापमान, खनिज उद्योग, सड़कें, रेल मार्गों, वायु मार्गों इत्यादि को दर्शाया जाता हैं।

पाठांत प्रश्न

1. पर्यटन के विकास में भूगोल की समझ कैसे सहायक होती है?
2. अक्षांश और देशांतर के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. विशेष या विषयगत मानचित्र क्या है? किन्हीं चार विषयगत मानचित्रों की व्याख्या कीजिए।
4. अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा को परिभाषित कीजिए।
5. भौगोलिक समय अन्तराल की व्याख्या कीजिए।
6. दंडारेख और पाई चार्ट के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिए

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

(क)

1. भूमध्य रेखा 2. गोलार्द्ध 3. ग्रीनविच 4. उत्तरी

(ख)

1. पर्यटन आयाम जैसे यात्रा, दूरी, परिवहन, मूल स्थान से पर्यटन स्थल के बीच समय अंतराल स्थान की स्थिति, वर्तमान पर्यावरणीय स्थितियों आदि का भौगोलिक विश्लेषण समझा जा सकता है।
2. अंक्षाश – किसी भी स्थान की कोणीय दूरी जो पृथ्वी के केन्द्र पर भूमध्यरेखीय तल से उत्तर या दक्षिण में मापी जाती है।

   देशांश – कोणीय दूरी जो पृथ्वी की धुरी के साथ-साथ प्रधान मध्याह्न रेखीय तल तथा उस स्थान के समांतरीय तल के बीच बनती है।
3. – पृथ्वी के धरातल पर किसी स्थान को दर्शाने हेतु
   – ग्लोब पर समय निर्धारण के लिए देशांतर की समझ आवश्यक है।
   – अक्षांश की जानकारी से पृथ्वी के किसी स्थान की जलवायु की सूचना पाने में मदद मिलती है।

4.2

1. अंतरराष्ट्रीय समय रेखा पृथ्वी के सतह पर एक काल्पनिक रेखा है जो उत्तर से दक्षिण की ओर आती है और दोनों तरफ एक कलैण्डर दिन को अलग करती है।
2. दिल्ली और लंदन के मध्य समय अंतराल 5 घंटे 30 मिनट है क्योंकि कुल देशांश के अन्तर 82° 30' है। लंदन (0°) प्रधान मध्याह्न रेखा पर है और इलाहाबाद का समय 82° 30' पूर्व से निर्धारित होता है।
3. यदि व्यक्ति अंतरराष्ट्रीय समय रेखा को पूर्व से पश्चिम की ओर पार करता है तो उसे अपनी घड़ी में एक दिन (24 घटे) का समय जोड़ना पड़ता है। जब वह पश्चिम से पूर्व की ओर पार करता है तो वह अपनी घड़ी में एक दिन (24 घंटे) कम कर देता है।

4.3

1. (a) सामान्य संदर्भ मानचित्र

   (b) विशेष अथवा विषयक मानचित्र
2. विषयक मानचित्र जलवायु, वनस्पति, वर्षा, तापमान खनिजों, उद्योगों, सड़कों, रेल मार्गों, हवाई मार्गों इत्यादि की सामान्य जानकारी देता हैं।
3. भारत के पर्यटक मानचित्र एवं परिवहन मानचित्र।
4. ट्रेकिंग मार्ग मानचित्र पर्वतीय क्षेत्र में संभावित ट्रेकिंग मार्ग दिखाता है। यह ट्रेकिंग मार्ग, मार्ग में विभिन्न स्थानों की ऊंचाई, कैम्प स्थल के साथ-साथ नदी व पर्वत श्रेणी की जानकारी भी दिखाता है।

टिप्पणियाँ

5

पर्यटन के लिए परिवहन

परिवहन पर्यटन गतिविधियों के आवश्यक अंगों में से एक है। परिवहन और पर्यटन–विकास के बीच बहुत गहरा संबंध है क्योंकि यह पर्यटन के विकास में अहम योगदान देता है। यह मानव के भौतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास को समृद्ध करता है। यह भौतिक बाधाओं को समाप्त कर दूरी पर विजय प्राप्त करता है और पृथ्वी की सतह पर मानव के भ्रमण की इच्छा को पूरा करता है। यह पर्यटन के उद्गम तथा गंतव्य स्थानों के बीच कड़ी का काम करता है। विभिन्न प्रकार के परिवहनों के कारण मानव राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय स्तर की यात्रा कर पा रहा है। लाखों यात्रियों को सुरक्षित, शीघ्र एवं आराम से उनके गंतव्य स्थानों तक कम किराये में पहुँचाया जा रहा है। वास्तव में, परिवहन और उससे संबंधित सुविधाएँ बड़े पैमाने पर मानव को गतिशीलता प्रदान कर रहा है।

इस पाठ में, हम परिवहन प्रणाली और परिवहन एवं पर्यटन के बीच अंतरसंबंध, भारत में परिवहन के साधनों तथा पर्यटन प्रोत्साहन में इसकी भूमिका के विषय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- परिवहन तथा इसके विभिन्न साधनों का वर्णन कर सकेंगे;
- परिवहन एवं पर्यटन के बीच संबंधों की पहचान कर सकेंगे;
- पर्यटक परिवहन की विशेषताओं की चर्चा कर सकेंगे;
- भारत में पर्यटन में संलग्न परिहवन के साधनों की पहचान कर सकेंगे;
- पर्यटन परिवहन संचालन पर चर्चा कर सकेंगे और
- पर्यटन को बढ़ावा देने में परिवहन की भूमिका का वर्णन कर सकेंगे।

5.1 परिवहन की अवधारणा

ट्रांसपोर्ट शब्द लैटिन भाषा के शब्द ट्रांस से लिया गया है जिसका अर्थ 'बंदरगाह के पार' होता है। इसलिए व्यक्तियों या वस्तुओं का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना-जाना परिवहन कहलाता है। प्रत्येक यात्री को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए परिवहन की आवश्यकता होती है। परिवहन यात्रियों को उनके स्थान से उनके गंतव्य स्थान पर पहुँचाने में सहायक होता है। इन दोनों के मध्य परिवहन है। परिवहन के विभिन्न माध्यम होते हैं जैसे सड़क परिवहन, रेल परिवहन, जल परिवहन, वायु परिवहन। प्रारंभ में रेल या जल परिवहन की तुलना में सड़क परिवहन ज़्यादा लोकप्रिय था। यात्रियों के लिए, राज्यों ने इन सड़क मार्गों पर विशेष ध्यान दिया है और कुछ महत्वपूर्ण सुविधाओं का विस्तार किया है। यात्रियों के गंतव्य स्थानों तक की दूरी मापने के लिए कॉस मिनारों का निर्माण किया था (चित्र 5.1)। उसमें से कुछ अभी भी पाए जाते हैं। यात्रियों के लिए सड़कों के दोनों किनारों पर पेड़ लगाए गए और पानी पीने के लिए कुएँ बनाए गए, जिससे यात्रियों को गर्मी और प्यास से बचाया जाए। इसके अतिरिक्त मार्गों में सरायों का (रिहाइस) का निर्माण किया गया था।

चित्र 5.1: कॉस मिनार

उन दिनों यात्री ज़्यादातर पैदल ही यात्रा करते थे। जब सम्राट जहाँगीर (सन् 1605-1627) ने गुजरात में सड़क के साथ 2½ से 3 गज लंबी कुछ दीवारों को देखा तो उसे एहसास हुआ कि

ये थके हारे कुलियों के आराम करने के लिए कितने सुलभ हैं। वह आसानी से सामान दीवार पर रख सकता है और फिर आसानी से बिना किसी की सहायता के अपने सामान को उठाकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकता है। जहाँगीर को यह व्यवस्था बहुत पसंद आई और पूरे शहर में सरकारी खर्चे से ऐसी दीवारों के निर्माण करने का आदेश दिया।

5.2 परिवहन और पर्यटन के बीच संबंध

रोज़गार उद्यम अवस्थापना और राजस्व आय के निर्माण से किसी भी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। यह भूमिका उद्यम आधारिक संरचना, रोज़गार तथा राजस्व आय में वृद्धि द्वारा होती है। पर्यटन को निश्चित रूप से बुनियादी अवस्थापना संघटकों के एकीकृत विकास की आवश्यकता होती है और परिवहन उनमें से एक है। परिवहन का पर्यटन क्षेत्र में एक प्रमुख स्थान है और यह सामाजिक-आर्थिक प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण संचालक है। यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि परिवहन के बिना पर्यटकों का पर्यटन स्थलों की यात्रा करना असंभव होगा। यह निवास स्थान से गंतव्य स्थान के बीच आवश्यक संपर्क प्रदान करता है। यह अवकाश में यात्रा करने वाले, व्यापार यात्रियों, दोस्तों और रिश्तेदारों के यहाँ आने-जाने वाले लोगों और शैक्षिक और स्वास्थ्य पर्यटन में संलग्न लोगों को यात्रा संबंधी सुविधाएँ प्रदान करता है। पिछले कुछ वर्षों में, पर्यटन के कारण विकास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते आर्थिक क्षेत्रों में से एक है। परिवहन प्रणाली में नवीन परिवर्तनों के कारण पर्यटन की प्रौढ़ता और प्रतिरूप बदल रहे हैं। आज हमें यात्रा के लिए सुरक्षित, सुविधाजनक और सस्ते परिवहन की आवश्यकता है। सन् 2015 में युनाइटेड नेशन वर्ल्ड टूरिस्ट आर्गेनाइजेशन (यूएनडब्ल्यूटीओ) 4.4% वृद्धि रिकार्ड की थी जो बढ़कर 1,184 मिलियन यात्री हो गई है। बड़ी संख्या में यात्रियों के यात्रा करने का प्रमुख कारण सड़क, हवाई तथा जल परिवहन के द्वारा ही संभव हो पाया है। भारत में, नीति आयोग के अनुसार रोज़गार के अवसर प्रदान करने के दृष्टिकोण से पर्यटन उद्योग देश का दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है। अधिकांश अर्द्ध-कुशल श्रमिक पर्यटन उद्योग की सहायक गतिविधियों में लगे हुए हैं।

5.3 पर्यटक परिवहन की विशेषताएँ

परिवहन की अच्छी संरचना/नेटवर्क देश के आर्थिक विकास और विकास को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। द्रुतगति से जीवन में होने वाले बदलावों के कारण लोगों के पास समय की कमी है। वे कम से कम समय में ज़्यादा से ज़्यादा गंतव्य स्थानों पर जाना चाहते हैं। नए उपयुक्त परिवहन के साधन जैसे विमान, तीव्र गति की रेल, शताब्दी, राजधानी और दूरंतों के आविष्कार के साथ-साथ दिल्ली से आगरा की एक्सप्रेसवे जैसी अच्छी सड़कें आदि सभी पर्यटन क्षेत्र को एक नवीन रूप प्रदान कर रहे हैं। यात्रा एवं पर्यटन के दृष्टिकोण से परिवहन के सभी प्रकार के साधनों की अपनी विशेषताएँ हैं। अब आप इन परिवहन के साधनों की विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे।

(क) सड़क परिवहन की विशेषताएँ

- सड़क परिवहन मूलत: विभिन्न स्थानों तथा लोगों को जोड़ने का कार्य करता है। इसके अनेक लाभ हैं जैसे यातायात में लचीलापन, विश्वसनीयता, रफ़्तार, अल्पमूल्य आदि।
- यह पर्यटकों का अंतिम गंतव्य स्थान तक ले जा सकता है।
- अच्छे सड़क मार्ग नेटवर्क के विकास में दोनों राष्ट्रीय और राज्य मार्गों का महत्वपूर्ण स्थान है। फ्लाईओवर और सड़कों की बेहतर स्थिति ने पूरे विश्व में यात्रा तथा पर्यटन को बढ़ाने में मदद की है।
- विभिन्न प्रकार के सड़क वाहन प्रयोग में लाए जाते हैं जैसे कार, टैक्सी, कोच, बसें और जीप। ये सभी रेल, हवाई और जल परिवहन को एक दूसरे से जोड़ते हैं।

(ख) रेल परिवहन की विशेषताएँ

लंबी दूरी की यात्रा के लिए रेलमार्ग सबसे ज़्यादा उपयुक्त एवं सस्ता परिवहन का साधन है। सड़क परिवहन की अपेक्षा दूरी के लिए यह बहुत सस्ता और आरामदायक है। व्यापार, शिक्षा, सैर-सपाटा, तीर्थयात्रा, अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से मिलने के उद्देश्य से अधिक संख्या में लोग एक साथ देश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा कर सकते हैं। इसमें विभिन्न श्रेणियों के कोच शामिल हैं जैसे सामान्य, स्लीपर, वातानुकूलित क्लास, वातानुकूलित कुर्सीयान आदि। रेलवे देश के लगभग सभी हिस्सों में पर्यटकों की आवाजाही के लिए बुनियादी ढ़ाँचा प्रदान करता है। आधुनिक समय में उच्च गति वाली ट्रेनों के आगमन के साथ-साथ विभिन्न सुविधाएँ जैसे रिफ्रेशमेंट, बर्थ, खाना, इंटरनेट और वाशरूम आदि रोचक विकास शामिल हैं। इससे यात्रा और पर्यटन क्षेत्र में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

(ग) जल परिवहन की विशेषताएँ

- 20वीं सदी के मध्य तक विदेशों में यात्रा करने का मुख्य साधन पानी के जहाज थे। नाव का प्रारंभिक प्रकार राफ्ट था जिसे घास, लकड़ी तथा अन्य हल्की सामग्री से बनाया जाता था। अब नाव और जहाज़ों की गुणवत्ता में बहुत सुधार हुआ है। दुनिया के अधिकांश खोज जल परिवहन के द्वारा ही किए गए हैं। यह इस बात से स्पष्ट है कि क्रूस के द्वारा पर्यटन दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है और इसमें उत्कृष्ट संभावना है।
- पूरे विश्व में जल आधारित परिवहन के साधन जैसे झील, नदियाँ, नहरे, बाँध, समुद्र आदि बहुत महत्वपूर्ण हैं।

(घ) हवाई परिवहन की विशेषताएँ

- विश्व स्तर पर, सड़क के बाद हवाई यात्रा दूसरा सबसे लोकप्रिय परिवहन का साधन है। यह परिवहन का सबसे तेज साधन है। इसके द्वारा कुछ ही घंटों में हजारों किलोमीटर की

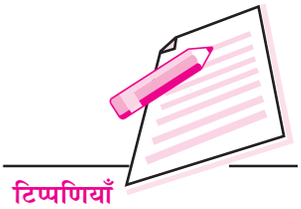

दूरी तय करके अपने लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है। हवाई यातायात ने पूरी दुनिया के राष्ट्रों को जोड़ रखा है। इस परिवहन के साधन ने पूरी दुनिया को एक वैश्विक गाँव बना दिया है। यह परिवहन दुर्गम पहाड़ों, घने जंगलों, दलदल भूमि, बाढ़ग्रस्त इलाकों, गरम और ठंडे रेगिस्तानों जैसी ज़मीनी बाधाओं से मुक्त है।

- तीव्र गति, समय की बचत और शानदार यात्रा प्रदान करना हवाई परिवहन की महत्वपूर्ण विशेषता है। यह सुविधाजनक, आरामदायक और आनंदपूर्ण परिवहन का साधन है।

5.4 भारत में परिवहन के साधन

भारत भौगोलिक विविधता वाला एक विशाल देश है। यहाँ भाषा में बहुलता के साथ अद्भुत धार्मिक, सांस्कृतिक, प्रजातीय तथा भौगोलिक विविधता पाई जाती है। भौगोलिक विविधता के तौर पर उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में समुद्री तट और पश्चिम में थार रेगिस्तान से उत्तर-पूर्व के नमी वाले जंगल हैं। यह विविधता अच्छे और बेहतर परिवहन प्रणाली द्वारा जुड़कर सुलभ है। भारत में परिवहन के साधन के रूप में सड़क, रेलवे, जल और हवाई परिवहन जैसे विभिन्न साधन शामिल हैं। यात्रा और पर्यटन के संबंध में इनमें से प्रत्येक का अपना महत्व है। क्षेत्र का भूगोल, दूरी, समय, आराम, सुरक्षा, तुलनात्मक किराए, उपलब्ध सेवाओं आदि के आधार पर परिवहन का चुनाव किया जाता है। रेलवे और सड़क परिवहन का प्रमुख साधन है जो देश में कुल यातायात का 95 प्रतिशत से ज़्यादा वहन करते हैं। अन्य साधन जैसे तटीय जहाज और अंतर्देशीय जल परिवहन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यात्रा और पर्यटन में लगे परिवहन को निम्नलिखित चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

(i) सड़क परिवहन

(ii) रेल परिवहन

(iii) हवाई परिवहन

(iv) जल परिवहन

(i) सड़क परिवहन

सड़क परिवहन कम दूरी के लिए परिवहन का बहुत महत्वपूर्ण साधन है। यह देश के लोगों और जगहों को जोड़ता है। यह बाज़ारों, सांस्कृतिक केन्द्रों, धार्मिक स्थानों, ऐतिहासिक स्थलों, गाँवों और शहरों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ता हैं।

(अ) राजमार्ग

राजमार्ग और जिला सड़कें ज़्यादातर देश में मुख्य पर्यटक केंद्रों को जोड़ती है। सड़क पर विभिन्न साधनों जैसे कार, टैक्सी, कोच, बस, ऑटोरिक्शा आदि चलते हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच) मुख्य सड़कें है जो विभिन्न राज्य की राजधानी को देश के मुख्य शहरों से जोड़ती है। राष्ट्रीय राजमार्ग

की कुल लंबाई 70934 किलोमीटर है जो सड़कों के जाल (नेटवर्क) का मात्र दो प्रतिशत है परंतु वे सड़क आधारित कुल माल का 40 प्रतिशत की ढुलाई करती है। भारत में विभिन्न लंबाई के 23 राष्ट्रीय राजमार्ग हैं। हाल के समय में भारत में सड़क परिवहन को तीव्र और कुशल बनाने के लिए बहुत से एक्सप्रेसवे और फ्लाईओवर का निर्माण हुआ है। यात्रा का समय और अवरूद्ध यातायात में बहुत कमी आई है। इससे सामान्यतया लोगों की आवाजाही को बढ़ावा और विशेष तौर पर पर्यटन की गतिविधि में विकास हुआ है। पहला एक्सप्रेसवे मुम्बई और पुणे के बीच बना। यमुना एक्सप्रेसवे दुनिया में प्रसिद्ध आगरा में स्थित ताजमहल को दिल्ली से मिलाता है। शहरी इलाकों में निर्मित फ्लाईओवर आवागमन के सुचारू संचालन के लिए चौराहों पर ट्रैफिक के दबाव को कम करता है। दिल्ली को फ्लाईओवर वाले शहर के नाम से जाना जाता है। इससे दिल्ली में प्रदूषण को कम करने तथा यात्रा को सुगम बनाने में मदद मिली है।

चित्र 5.2: भारत के मुख्य राजमार्ग

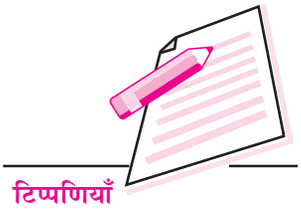

(ब) सुपर राजमार्ग

भारत में स्वर्णिम चतुर्भुज चार प्रमुख नगरों, दिल्ली, मुम्बई कोलकाता और चेन्नई को जोड़ता है। देश की उत्तर-दक्षिण और पूरब-पश्चिम गलियारा (7300 कि.मी.) भारत के लंबाई और चौड़ाई में जोड़ता है। उत्तर-दक्षिण गलियारा उत्तर में श्रीनगर तथा दक्षिण में कन्याकुमारी को जोड़ता है। पूर्व-पश्चिम गलियारा पूर्व में सिलिचर तथा पश्चिम में पोरबंदर को जोड़ता है। स्वर्णिम त्रिभुज तीन शहरों दिल्ली, आगरा और जयपुर को जोड़ता है। त्रिकोणीय आकार के कारण इसे स्वर्णिम त्रिभुज कहते हैं। यह मार्ग विदेशी और घरेलू यात्रियों में बहुत प्रसिद्ध है। ज़्यादतर यात्री दिल्ली से ताजमहल (आगरा) और फिर जयपुर और उसके आसपास रेगिस्तान की यात्रा करते हैं। यह परिपथ (परिधि) लगभग 1000 किमी. लंबा है। इसके अतिरिक्त एक और भी स्वर्णिम त्रिकोण है जो पुरी, कोणार्क और भुवनेश्वर शहरों को जोड़ता है। यह पूर्वी भारत में स्थित है।

(स) सड़क

राज्य राजमार्ग राज्य के राजधानी को जिला मुख्यालयों, राज्य के अंदर आने वाले अन्य महत्वपूर्ण कस्बों और शहरों को जोड़ता है। मुख्य जिला सड़कें यातायात को मुख्य सड़क से लेती है। यह देश में पर्यटन के विकास एवं वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देता है। जिला और ग्राम सड़कों की उपलब्धता ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दे रही हैं। अंर्तराज्यीय बस प्रणाली अच्छी तरह से विकसित होती है और बसों की गुणवत्ता में भी भिन्नता होती है। विभिन्न प्रकार के बस, टैक्सी, ऑटोरिक्शा आदि उपलब्ध होते हैं जो साधारण से सेमी-डीलक्स, डीलक्स, वॉल्वो, पूरी तरह से वातानुकूलित आदि तक उपलब्ध होते हैं। स्वर्णिम चतुर्भुज चार प्रमुख नगरों दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नई को जोड़ता है। स्वर्णिम त्रिभुज उत्तर भारत में तीन नगरों दिल्ली, आगरा और जयपुर को जोड़ता है।

तालिका 5.1: भारत में सड़कों की स्थिति

सड़कों के प्रकार	लंबाई
• एक्सप्रेसवे	950 किमी.
• राष्ट्रीय राजमार्ग	66,590 किमी.
• राज्य राजमार्ग	131,899 किमी.
• मुख्य जिला सड़क	467,763 किमी.
• ग्रामीण एवं अन्य सड़क	2,650,000 किमी.
• एकल लेन/मध्यम	32%
• दोहरी लेन	56%
• चार या अधिक लेन	12%
• कुल लंबाई	3,300,350 किमी.

स्रोत: भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण

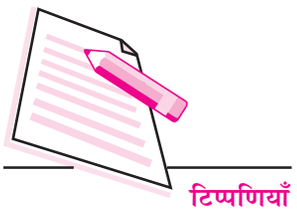

टिप्पणियाँ

(ii) रेल परिवहन: भारतीय रेल मार्ग पब्लिक और यात्रियों के लिए यातायात का मुख्य साधन है। यह विभिन्न क्षेत्रों से व्यापार, भ्रमण, धर्म, शिक्षा आदि उद्देश्यों से लोगों को एक साथ लाता है। भारतीय रेल मार्ग ने पिछले 160 वर्षों से लोगों की एकजुटता के लिए अहम भूमिका निभायी है। यह देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एशिया में भारत दूसरा सबसे बड़ा रेल मार्ग नेटवर्क है और दुनिया में यूएसए. रूस और चीन के बाद चौथा। भारत यात्रियों को प्रति किलोमीटर ढ़ोने के दृष्टिकोण से दुनिया के प्रमुख देशों में सबसे ऊपर है। वर्ष 2008-09 के दौरान यात्रियों की संख्या 6,920 मिलियन थी जो कि वर्ष 1950-51 में मात्र 1,284 मिलियन थी। यह 60 साल से भी कम समय की अवधि में लगभग 5.5 गुना की वृद्धि दर्शाती है। ज़्यादातर घरेलू यात्री लंबी दूरी की यात्रा के लिए मुख्य रूप से रेल मार्ग पर ही निर्भर करते हैं। रेल मंत्रालय यात्रियों की जरूरतों में सुधार के लिए सकारात्मक प्रयास कर रहा है जैसे तीव्र गति की ट्रेनों की वृद्धि, सुरक्षित और आरामदायक यात्रा।

(अ) पर्यटन को बढ़ावा देने वाली ट्रेनें

भारतीय रेलवे पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ विशेष ट्रेनें चला रही है जैसे टॉय ट्रेन, पैलेस ऑन व्हील्स, फेरी क्वीन, हेरिटेज ऑन व्हील्स, भारत दर्शन ट्रेन, ट्रेन ऑफ दार्जिलिंग, दक्षिण भारत की नीलगिरी माऊंटेन रेल और कालका-शिमला रेल ने यूनेस्कों (यूएनईएससीओ) की वर्ड हेरिटेज की लिस्ट में अपना स्थान बना लिया है।

पैलेस ऑन व्हील्स एक राजसी ट्रेन है जो राजस्थान, दिल्ली और आगरा के मुख्य पर्यटक स्थलों को शामिल कर सात दिनों का पैकेज टूर प्रदान करता है। इसके डिब्बों में विलासिता पूर्ण सेवाएँ हैं। यह घरेलू और अंतरराष्ट्रीय यात्रियों में बहुत लोकप्रिय है। जो इस क्षेत्र की दर्शनीय स्थलों का आनंद लेना चाहते हैं वे विलासितापूर्ण यात्रा और स्वादिष्ट भोजन का आनंद एक साथ लेते हैं।

फेरी क्वीन ट्रेन में सबसे पुरानी भाप लोकोमोटिव इंजन है। यह दिल्ली से चलती है और अलवर में रूकती है। वहाँ मेहमानों को सरिस्का टाइगर रिजर्व जंगल में पूरी रात रूकने के लिए ले जाया जाता है।

हेरिटेज ऑन व्हील्स राजस्थान के छोटे शहरों को मिलाने वाली लक्ज़री ट्रेन है जिसमें बीकानेर, गजनेर, नवलगढ़, मनड़वा, रामगढ़ और शेखावटी शामिल हैं। यह एक लक्ज़री ट्रेन है जिसमें 14 सैलून शामिल हैं। राजस्थान की विरासत और संस्कृति को ध्यान में रखकर सभी सैलून को डिजाइन किया गया है।

भारत दर्शन एक विशेष पर्यटक ट्रेन है। यह देश में लगभग सभी महत्वपूर्ण पर्यटक स्थलों को समाविष्ट करती है। टूर पैकेज के अंतर्गत सभी पर्यटकों के लिए आवास की व्यवस्था की जाती है। दर्शनीय स्थल का दौरा करने के लिए पर्यटक बसें, रात्री आवास के लिए हॉल व आवास व्यवस्था, जानकारी प्रदान करने के लिए गाइड जैसी सुविधाएँ भी शामिल होती हैं।

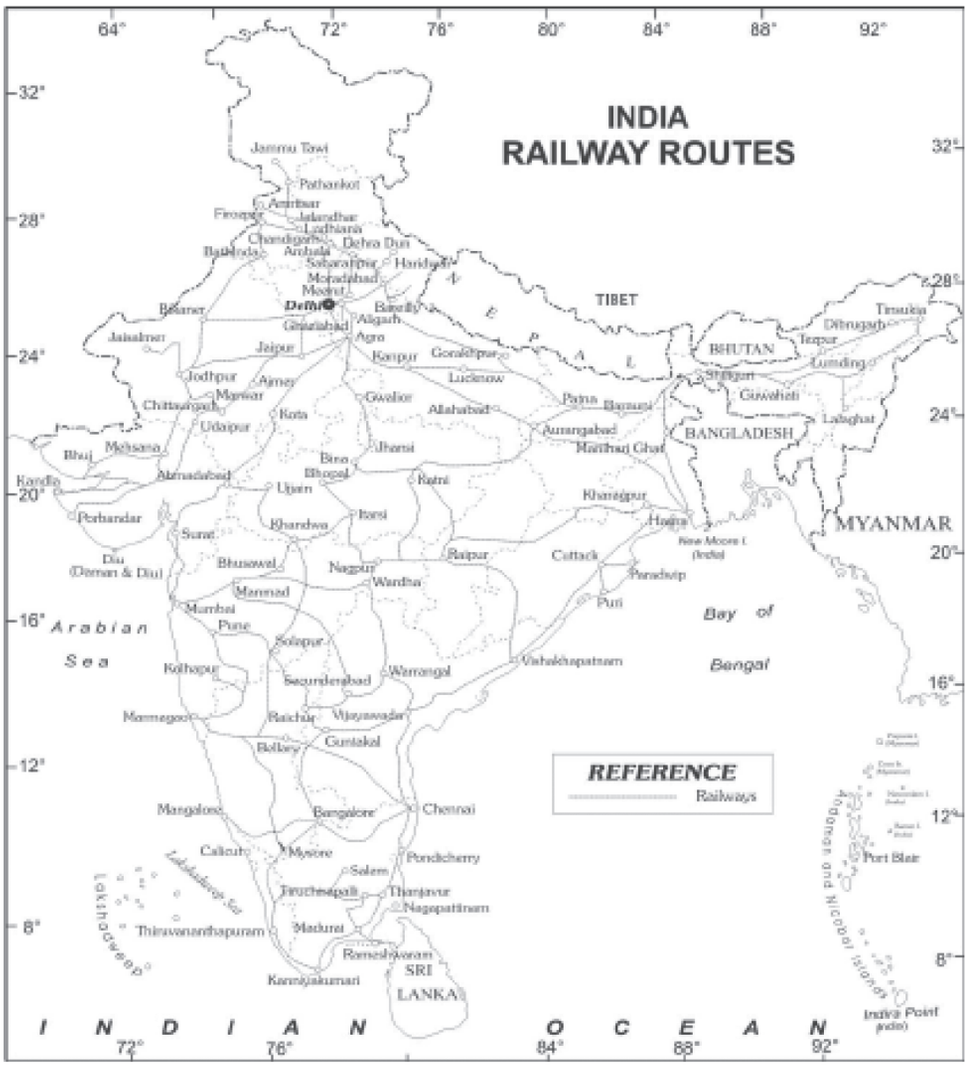

चित्र 5.3: भारत में रेल मार्ग

(ब) मैट्रो ट्रेन और ट्राम

कुछ हद तक दिल्ली मैट्रो रेल ने शहर में यातायात की समस्याओं को सुलझाने में महत्वपूर्ण असर दिखाया है। यह पूरी तरह से वातानुकूलित, सुरक्षित और साफ़-सुथरा है। यह प्रमुख पर्यटन स्थलों के लिए कनेक्टिविटी उपलब्ध कराती है और यात्रियों को आरामदायक यात्रा प्रदान करती है।

ब्रिटिश समय से कोलकाता शहर में ट्राम चल रही है। ट्राम स्थानीय यात्रियों के साथ-साथ पर्यटकों को भी रोज आरामदायक और सस्ती यात्रा प्रदान करती है। कोलकाता ट्राम मार्ग में बहुत से विशिष्ट विशेषताएँ हैं। यह ट्राली पोल और पैर घंटा का उपयोग करता है जो अंतरराष्ट्रीय ट्राम प्रणाली में नहीं होता है।

टिप्पणियाँ

(iii) हवाई परिवहन

हवाई परिवहन का उपयोग लंबी दूरी के पर्यटकों और उनके सामानों को ले जाने के लिए किया जाता है। पर्यटन के विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। वैश्विक स्तर पर हवाई परिवहन की माँग बढ़ रही है। इसके द्वारा विश्व में किसी भी स्थान की यात्रा 24 घंटे में पूरी की जा सकती है। यात्रियों के आराम के लिए ज़रूरी मूलभूत सुविधाओं को हवाई अड्डा प्रदान करता है। भारत सरकार दिल्ली और मुंबई हवाई अड्डे को उन्नत और आधुनिकीकरण करने में बहुत बड़ी राशि खर्च कर रही है। करीब 97 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय पर्यटक भारत में हवाई परिवहन द्वारा आते हैं। दिल्ली और मुंबई 70 प्रतिशत से अधिक अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए मुख्य प्रवेश मार्ग है।

अब सभी 16 नामांकित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर पर्यटक चार्टर विमान द्वारा उतर सकते हैं। ये हवाई अड्डे अहमदाबाद, आगरा, अमृतसर, बैंगलूरू, कोलकाता, चेन्नई, कोचीन, दिल्ली, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, मुंबई, तिरूवनन्तपुरम, वाराणसी और पोर्ट ब्लेयर में हैं। बहुत-सी पब्लिक और प्राइवेट हवाई यात्रा एजेंसी कम बजट में ज़्यादा से ज़्यादा यात्रियों को आकर्षित करने के लिए रियायती टिकट का विशेष पैकेज देती हैं।

(iv) जल परिवहन

सिंधु घाटी सभ्यता के समय से ही नदियों को वस्तुओं और मानव के परिवहन हेतु प्रयोग किया जाता है। पर्यटन के संदर्भ में जल परिवहन के तीन प्रमुख आयाम हैं:

(i) तटीय जल यात्रा

(ii) अंतर्देशीय जल मार्ग

(iii) समुद्र परिवहन

भारत के पूर्व में बंगाल की खाड़ी पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिंद महासागर हैं। मुख्य स्थल भाग की कुल जलीय सीमा के साथ लक्ष्यद्वीप एवं अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह के कुल जल सीमा की लंबाई लगभग 7500 किमी. है। हमारे देश में अंतर्देशीय जलमार्ग और समुद्री बंदरगाह का बहुत बड़ा विस्तार है। अंतर्देशीय जल मार्ग में नदियाँ, नहरें, बैकवाटर और संकरी खाड़ियाँ शामिल हैं। हमारे देश में 12 प्रमुख बंदरगाह तथा 185 गैर-प्रमुख बंदरगाह हैं। भारत के पश्चिमी तट पर कंडला, पोरबंदर, मुंबई, जवाहरलाल नेहरू (महाराष्ट्र) मारमागाँव, मैंगलौर और कोची बंदरगाह हैं। पूर्वी तट पर तूतीकोरिन, नागापट्टीनम, चेन्नई, विशाखापट्टनम, पारादीप, हल्दीया और कोलकाता बंदरगाह हैं। सभी तटीय राज्यों में कम से कम एक प्रमुख बंदरगाह है। गुजरात, महाराष्ट्र तथा पश्चिमी बंगाल में दो-दो प्रमुख बंदरगाह है। तमिलनाडु राज्य में तीन प्रमुख बंदरगाह हैं।

भारत में कुल परिवहन का मात्र एक प्रतिशत जल मार्ग द्वारा परिवहन होता है जबकि विभिन्न नदियों को मिलाकर यात्रा योग्य अंतर्देशीय जलमार्ग 14500 किमी. का है। इसमें से कुल 3700 किमी. मार्ग मशीन वाले नाव और स्टीमर के लिए उपयुक्त है। भारत में तीन प्रमुख राष्ट्रीय जल

मार्ग हैं। ये इलाहाबाद से हल्दीया (1620 किमी.), सादीया से धूबरी (891 किमी.) और कोट्टापुरम से कोलम (205 किमी.) है। ये जलमार्ग भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसलिए ये भारत में यात्रा और पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा देते हैं।

चित्र 5.4: भारत में हवाई और समुद्री मार्ग

जल परिवहन का प्रयोग पश्चिम बंगाल पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए भी किया जाता है। पश्चिम बंगाल पर्यटन विभाग ने पर्यटकों को सुंदरवन तक ले जाने के लिए विशेष कार्यक्रम पेश किया है। गोवा पर्यटन विभाग पर्यटकों के लिए आधे या पूरे दिन की समुद्री यात्राओं का आयोजन करता है। पर्यटकों को गंगा, ब्रह्मपुत्र और हुगली नदियों पर क्रूज पर्यटन का बहुत अधिक आनंद

आता है। नदी राफ्टिंग पहले से ही ऋषिकेश और हरिद्वार के बीच चल रही है। झीलें और बैकवाटर्स जैसे केरल में वेम्बानाड झील, कश्मीर में डल झील, नैनिताल में नैनी झील, माऊंट आबू में नक्की झील, ओडिसा में चिलका झील आदि बहुत ज़्यादा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। घूमने आने वाले पर्यटकों को लक्ष्यद्वीप और अण्डमान निकोबार द्वीप पर नाव और जहाज़ से ले जाया जाता हैं। वहाँ उनके लिए भिन्न प्रकार की मनोरंजक क्रियाकलाप की व्यवस्था की जाती है।

5.5 पर्यटक को प्रोत्साहित करने के लिए परिवहन

परिवहन पर्यटन के एक अभिन्न अंग के रूप में कार्य करता है जो पर्यटक के उद्गम और गंतव्य क्षेत्रों को जोड़ता है। परिवहन व्यवस्था की क्षमता पर्यटक प्रवाह की गति को निर्धारित करती है। परिवहन व्यवस्था की क्षमता में वृद्धि के अलावा आराम का प्रावधान, सुरक्षित रूप से काफी तेज गति, टिकट में छूट और हल्के अल्पाहार पर्यटन को प्रोत्साहित करते हैं। यह पर्यटन क्रियाकलापों को उस क्षेत्र में बढ़ावा देते हैं। कभी-कभी परिवहन सेवाओं में अच्छा या बुरा अनुभव पूरे जीवन के लिए पर्यटकों के दिमाग पर छाप छोड़ देते हैं। अत: यह स्पष्ट है कि पर्यटन के वृद्धि और विकास के लिए पर्यटक परिवहन प्रणाली बहुत आवश्यक है।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ उपाय भी आवश्यक हैं :

i. पर्यटन स्थल की दूरी और किराया के बारे में स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। इसके साथ ही समय-सारिणी भी दी जानी चाहिए। यात्रा को जोड़ने वाली बस, रेल और हवाई जैसे साधनों की स्पष्ट सूचना आवश्यक रूप से दिया जाना चाहिए।

ii. आगमन और प्रस्थान की नवीनतम जानकारी पूछताछ कार्यालय, इंटरनेट और टेलिफोन पर उपलब्ध होनी चाहिए।

iii. वरिष्ट और दिव्यांग पर्यटकों से अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

iv. सड़क, रेलवे स्टेशनों और हवाई टर्मिनलों पर मानक सूचक और प्रतीकों की एक प्रणाली विकसित और स्थापित की जानी चाहिए।

v. पर्यटन परिवहन में बुनियादी ढ़ांचों का निर्माण और सुधार किया जाना चाहिए।

vi. पर्यावरण के अनुकूल परिवहनों को विकसित किया जाना चाहिए।

vii. सभी टर्मिनल और स्टेशन साफ़ सुथरे और स्वच्छ होने चाहिए।

viii. जो लोग पर्यटकों को गुमराह और धोखा देते हैं उनके खिलाफ़ सख्त कदम उठाने चाहिए।

ix. पर्यटक पुलिस मदद के लिए होनी चाहिए, खासतौर से महिला पर्यटकों के लिए।

क्रियाकलाप 5.1

किसी भी पर्यटक स्थल पर जाइए और कुछ पर्यटकों से मिलिए। उन्हें किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा उसके बारे में पूछिए। पर्यटन परिवहन प्रणाली में सुधार के लिए उनसे सुझाव प्राप्त कीजिए।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. परिवहन के विभिन्न प्रमुख साधन क्या है?
2. भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने वाली विशेष ट्रेनों के बारे में संक्षेप में लिखिए।
3. पर्यटकों द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले हवाई और जल परिवहन के बीच अंतर बताइए।
4. अच्छी यातायात प्रणाली के लिए कोई चार सुझाव दीजिए।

आपने क्या सीखा

- पर्यटन की वृद्धि और विकास के लिए परिवहन का विकास ज़रूरी है। यह वहाँ पहुँचने के लिए पर्यटकों को सुगम्यता प्रदान करता है। किसी भी क्षेत्र में कम सुगम्यता पर्यटन को बाधित करती है।
- परिवहन न केवल पर्यटन के लिए अपितु आर्थिक विकास के लिए भी रीढ़ की हड्डी है। विभिन्न पर्यटन स्थलों के बीच अच्छी कनेक्टिविटी प्रदान करना पर्यटकों को आकर्षित करती है।
- आर्थिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में पर्यटक भिन्न हैसियत वाले होते हैं। इसलिए पर्यटकों को गंतव्यों तक पहुँचाने के लिए प्रत्येक प्रकार के विकल्प उपलब्ध होने चाहिए।
- किसी भी क्षेत्र में उपलब्ध सुविधा वहाँ प्रदत्त प्रावधानों पर निर्भर करती है। अत: क्षेत्र और आवश्यकताओं के आधार पर परिवहन प्रणाली चार प्रकार की हैं:
  1. सड़क परिवहन
  2. रेल परिवहन
  3. हवाई परिवहन
  4. जल परिवहन
- ये सारी परिवहन सुविधाएँ भिन्न हैं और भिन्न-भिन्न विशेषताएँ प्रदान करती हैं।
- हवाई परिवहन सबसे तीव्र साधन है जो लोगों को बहुत जल्दी दूर गंतव्य स्थान तक ले जा सकती है लेकिन यह अन्य तीन साधनों की अपेक्षा ज़्यादा महँगी है।
- रेल परिवहन ज़्यादा सुविधाजनक है, यदि ज़्यादा सामान के साथ ज़्यादा दूरी तय करनी हो। यह सस्ती और बहुत से लोगों को एक साथ ले जा सकती है।
- सड़क परिवहन घर-घर तक सेवा प्रदान करती है। यहाँ तक कि यह अन्य परिवहन साधनों जैसे रेल, हवाई और जल मार्ग के साथ भी जोड़ती है।
- जल परिवहन लोगों/पर्यटकों को रोमांच देता है। ऐसे पर्यटकों के परिभ्रमण की व्यवस्था किया जाता है। यह सबसे सस्ता साधन है लेकिन यह ज़्यादा समय लेता है और कम ऊर्जा उपभोग करता है। बहुत ज़्यादा भारी सामान बहुत आसानी से कम पैसा देकर पहुँचाया जाता है। आजकल क्रूज यात्राएँ बहुत लोकप्रिय हो रही हैं।

पाठांत प्रश्न

1. पर्यटन को बढ़ावा देने में यातायात के साधन का विश्लेषण कीजिए।
2. पर्यटक यातायात के विभिन्न साधनों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
3. भारत में पर्यटन विकास में भारतीय रेल की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।
4. भूमंडलीकरण के युग में पर्यटन उद्योग को हवाई यातायात कैसे वृद्धि कर रहा है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. एक साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर व्यक्ति और सामान का स्थानांतरण परिवहन है। यह पर्यटन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विभिन्न स्थानों और लोगों के बीच अभिगम्यता प्रदान करता है। परिवहन के चार प्रमुख साधन हैं: 1. सड़क परिवहन, 2. रेल परिवहन, 3. हवाई परिवहन और 4. जल परिवहन। सड़क परिवहन के बहुत से लाभ हैं जैसे – लचक, विश्वसनीयता, गति और परिवहन के अन्य साधनों की अपेक्षा तत्पर एवं सस्ती है। सड़क परिवहन रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डा और बंदरगाह तक पहुँचने का मार्ग प्रदान करती है। विभिन्न प्रकार के सड़क वाहन जैसे कार, टैक्सी, कोच, बसें और जीप प्रयोग में लाए जाते हैं।

2. भारत में बहुत-सी विशेष ट्रेनें हैं जो देश में पर्यटन को बढ़ावा देती हैं। उनमें से कुछ टॉय ट्रेन, पैलेस ऑन व्हील्स, महाराजा एक्सप्रेस, डेक्कन ओडेसी, महापरिनिर्वाण है।

3. हवाई जहाज व्यक्तियों और पर्यटकों को वायु से परिवहन करता है। हवाई परिवहन पर्यटकों और उनके सामानों को लंबी दूरी तक ले जाने में प्रयोग होता है। यह दुनिया के किसी भी स्थान पर 24 घंटों के अंदर आसानी से पहुँच सकता है। जल परिवहन, नदी, झील, नहर, समुद्र आदि द्वारा संभव है। यह बहुत सस्ता है लेकिन यह हवाई परिवहन की अपेक्षा अधिक समय लेता है।

4. (अ) पर्यटन स्थलों की स्थिति, दूरी तथा किराये के बारे में स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए।

   (ब) परिवहन के आने और जाने एवं समय-सारिणी के बारे में जानकारी देनी चाहिए।

   (स) पर्यटक परिवहन के मूलभूत ढ़ाँचे का सुधार और विकास होना चाहिए।

   (द) प्रणाली के मानक चिह्नों और प्रतीकों को विकसित करना चाहिए और सड़कों, रेलवे स्टेशनों और हवाई टर्मिनल पर स्थापित करना चाहिए।

माड्यूल-2 : पर्यटन के सांस्कृतिक आयाम

6. भारतीय संस्कृति और धरोहर की समझ
7. भारत की मंचीय कला की विरासत
8. पर्यटकों को लुभाती भारतीय वास्तुकला

टिप्पणियाँ

6

भारतीय संस्कृति और धरोहर की समझ

भारतीय सांस्कृतिक विरासत न केवल बहुत प्राचीन संस्कृतियों में से एक है अपितु बहुत व्यापक और विविध भी है। प्राचीन से वर्तमान समय तक कई वंश और धर्म यहाँ पर आए और संस्कृति पर अपनी छाप छोड़ गए। ऐसे लोग या तो अस्थायी रूप से भारत के संपर्क में आए या फिर इसकी सीमाओं में स्थायी तौर पर बस गए और एक विलग भारतीय संस्कृति को विकसित किया। इसके परिणामस्वरूप अनेक संस्कृतियों का संश्लेषण हुआ। अपनी समृद्ध और अमूल्य सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर के फलस्वरूप भारत को विविधता और महान आश्चर्यों की भूमि के रूप में जाना गया। भारत की संस्कृति का अभिप्राय भारत के लोगों की जीवन-शैली से है। देश के अंदर संगीत, वास्तुकला, भोजन और परम्पराएँ अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग हैं। भारतीय संस्कृति को प्राय: संस्कृतियों के अनेक स्वरूप का योग कहा जाता है, जिसमें लाखों वर्ष पुरानी परम्पराएँ शामिल हैं। यह पूरे भारतीय उप-महाद्वीप में फैली हुई है। भारत की विविध संस्कृति के अनेक तत्वों ने पूरे विश्व को अच्छी तरह प्रभावित किया है। अपने समवेत रूप में इन सांस्कृतिक गुणों को भारतीय सांस्कृतिक धरोहर कहा जाता है। यह जानना रोचक होगा कि दसवीं सदी में अरब के लोग भारतीय संस्कृति को अजैब-उल-हिंद कहते थे। अजैब-उल-हिंद का शाब्दिक अर्थ है 'अतुल्य भारत'।

क्या आप जानते हैं कि हमें ये परम्पराएँ और पारम्परिक जीवन शैलियाँ अपने समृद्ध अतीत से विरासत में मिली हैं। हमें जो कुछ अपने पूर्वजों से मिलता है उसे विरासत कहा जाता है। लोगों के विचार, उनकी आस्थाएँ और मूल्य, ऐतिहासिक स्मारक, अतीत की घटनाओं के प्रमुख स्थल जो ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध हैं, जैसे पानीपत की लड़ाई, हल्दी घाटी की लड़ाई इत्यादि से हमारी धरोहर का सृजन होता है। इसके अतिरिक्त हम इसमें नृत्य, संगीत शास्त्रीय संगीत कलाओं को शामिल कर सकते हैं।

प्राचीन पूर्वी सभ्यता होने के कारण भारत का इतिहास 5000 वर्ष पुराना है और इसकी संस्कृति बहुत व्यापक, गहन और अद्वितीय है। इसने विश्व की प्रगति और सभ्यता के विकास में बहुत योगदान दिया है। इस पाठ में हम भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं को समझेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- संस्कृति और विरासत के अर्थ और सिद्धांत का वर्णन कर सकेंगे;
- भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को पहचान सकेंगे;
- सांस्कृतिक पहचान, धर्म, भारतीय संस्कृति के क्षेत्र और मानवीय पक्ष की चर्चा कर सकेंगे;
- भारतीय विरासत की विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे।

6.1 संस्कृति और विरासत का अर्थ एवं अवधारणा

'कल्चर' शब्द को लैटिन भाषा के शब्द 'कल्ट अथवा कल्ट्स' से लिया गया है जिसका अर्थ मेहनत या कृषि करना, परिष्कृत करना, शुद्धिकरण और पूजा करना इत्यादि है। सारांश में इस का अर्थ किसी वस्तु को इतना शुद्ध एवं परिष्कृत करना है कि अन्तिम उत्पाद हमारे भीतर सम्मान और प्रशंसा को जगा सके।

आप क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं, कौन सी भाषा बोलते हैं, किस भगवान की पूजा करते हैं-यह सभी संस्कृति के पक्ष हैं। सरल भाषा में यह हमारे सोचने और काम करने के ढंग का मूर्त रूप है। यह वह सब चीजें है जो हमें समाज का सदस्य होने के नाते विरासत में मिली हैं। सामाजिक समूहों का सदस्य होने के नाते मानव की सारी उपलब्धियों को संस्कृति कहा जा सकता है। कला, संगीत, साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, दर्शन, धर्म और विज्ञान को संस्कृति के विभिन्न पक्षों के रूपों में देखा जा सकता है। हालाँकि संस्कृति में रीति-रिवाज, परम्पराएँ, त्योहार, जीवन शैलियाँ और जीवन के विभिन्न मुद्दों पर लोगों के दृष्टिकोण भी सम्मिलित होते हैं।

अत: संस्कृति मानव निर्मित उस वातावरण के अनुरूप है जिसमें एक पीढ़ी द्वारा सभी भौतिक और गैर भौतिक उत्पाद आगामी पीढ़ी को सौंपे जाते हैं।

हमारे जीने और सोचने के तरीकों में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति ही संस्कृति है। इसको हमारे साहित्य, धार्मिक व्यवहारों, मनोरंजन और आनंद में देखा जा सकता है। संस्कृति के दो विलग अवयव हैं जिन्हें भौतिक और गैर भौतिक कहा जाता है। भौतिक संस्कृति में ऐसी वस्तुएँ शामिल होती हैं जो हमारे जीवन के भौतिक पक्षों जैसे हमारी वेशभूषा, भोजन और घरेलू चीज़ों से जुड़ी होती हैं। गैर-भौतिक संस्कृति में हमारे विचार, आदर्श, विचारधारा और विश्वास शामिल होते हैं।

संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान में तथा एक देश से दूसरे देश में बदल जाती है। इसका विकास स्थानीय, क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय संदर्भ में काम कर रही ऐतिहासिक प्रक्रियाओं पर आधारित होता है। उदाहरण के लिए हम दूसरों का स्वागत करने के तरीकों, वेशभूषा, खान-पान की आदतों, सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं और व्यवहार में पश्चिम से अलग हैं। दूसरे शब्दों मे किसी भी देश के लोगों की पहचान उनकी अपनी अलग सांस्कृतिक परम्पराओं से होती है। संस्कृति का

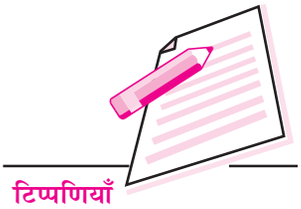

विकास एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। हमने बुजुर्गों से बहुत कुछ सीखा है। जैसे-जेसे समय गुजरता है हम नए विचारों को पहले के विचारों में निरंतर जोड़ते रहते हैं और कभी-कभी हम अनुपयोगी समझे जाने वाले कुछ विचारों को त्याग भी देते हैं।

सांस्कृतिक विरासत में पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने पूर्वजों द्वारा मानव समाज को सौंपे गए सभी पक्ष और मूल्य शामिल होते हैं। इन सबको वे निर्बाध संजोए रखते हैं, उनकी रक्षा करते हैं और उन पर गर्व करते हैं।

विरासत की अवधारणा को स्पष्ट करने में कुछ उदाहरण सहायक होंगे। ताजमहल, गांधीनगर और दिल्ली के स्वामी नारायण मंदिर, आगरा का लाल किला, दिल्ली की कुतुब मीनार, मैसूर का महल, भीलवाड़ा (राजस्थान) का जैन मंदिर, निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, दिल्ली का शीशगंज गुरूद्वारा, सांची का स्तूप, गोवा का चर्च, इंडिया गेट इत्यादि हमारी विरासत के महत्व को दर्शाते हैं और हर प्रकार से उनकी रक्षा की जाती है।

वास्तुकला के निर्माण, स्मारकों एवं भौतिक वस्तुओं के अतिरिक्त बौद्धिक उपलब्धियाँ, दर्शन, ज्ञान के कोष, वैज्ञानिक अन्वेषण और आविष्कार भी विरासत के भाग हैं। भारतीय संदर्भ में गणित, खगोलीय और ज्योतिष के क्षेत्र में - बौद्धायन, आर्यभट्ट, भास्कराचार्य; भौतिकी के क्षेत्र में कनाड और बराहमिहिर; रसायन के क्षेत्र में नागार्जुन; औषधि के क्षेत्र में सुश्रुत और चरक और योग के क्षेत्र में पतंजलि का योगदान भारतीय सांस्कृतिक विरासत के बहुमूल्य कोष हैं। संस्कृति बदल सकती है पर विरासत नहीं। किसी एक संस्कृति अथवा समूह विशेष से संबंध रखने वाले हम लोग किसी अन्य समुदाय अथवा संस्कृति की कुछ विशेषताओं को उधार ले सकते हैं, परंतु भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के साथ हमारा अपनापन नहीं बदल सकता। हमारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत हमें आपस में बांधे रखेगी जैसे भारतीय साहित्य और धार्मिक ग्रंथों वेद, उपनिषद्, गीता और योग इत्यादि ने सभ्यता के विकास के पूरक के रूप में सही ज्ञान, उचित कर्म, व्यवहार और कार्यशैली प्रदान करके बहुत बड़ा योगदान दिया है।

6.2 भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

भारत के मानचित्र पर देखिए, आप पाएँगे कि भारत एक विशाल देश है जिसके भौतिक और सामाजिक परिदृश्य में अनेक प्रकार की विविधता है। हम अपने इर्द-गिर्द लोगों को भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते, भिन्न-भिन्न धर्म के लोगों को भिन्न-भिन्न अनुष्ठान करते देखते हैं। आप इन विविधताओं को उनके खान-पान की आदतों तथा वेशभूषा के स्वरूपों में भी देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त अपने देश में तथा संगीत और नृत्य के अनेक रूपों को देखिए। परंतु इन सारी विविधताओं में एकता निहित है जो सबको आपस में जोड़ती है। लोगों का धीरे-धीरे आपस में मिलना सदियों से चल रहा है। अलग-अलग जातियों, प्रजातीय वंशों और धार्मिक विश्वासों के लोग यहाँ बस गए हैं।

6.2.1 निरंतरता और परिवर्तन

प्रमुख ऐतिहासिक परिवर्तनों और उथल-पुथल के बावजूद निरंतरता के मजबूत सूत्र को पूरे भारतीय इतिहास में वर्तमान समय तक खोजा जा सकता है।

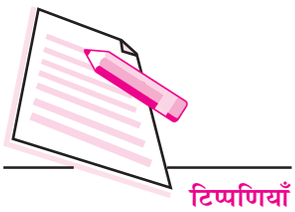

टिप्पणियाँ

भारतीय उपमहाद्वीप में 4500 वर्ष पूर्व हड़प्पा सभ्यता फली-फूली और इसका मैसोपोटामिया एवं चीनी सभ्यता के साथ व्यापार भी था। पुरातत्ववेताओं के पास यह दर्शाने के लिए साक्ष्य हैं कि यहाँ हड़प्पा सभ्यता के परिपक्व होने से पहले भी संस्कृति थी। इस बात से पता चलता है कि हमारा एक लंबा इतिहास रहा है। इसके बावजूद आश्चर्य का विषय है कि आज भी भारत के किसी गांव में घर का स्वरूप हड़प्पा के घरों से बहुत अलग नहीं हैं। हड़प्पा की संस्कृति के बहुत से पहलुओं को आज भी व्यवहार में देखा जा सकता है जैसे देवी माँ और पशुपति की पूजा करना। इसी प्रकार वैदिक, बौद्ध और जैन समुदाय की अनेक परम्पराओं का आज भी पालन किया जाता है। इसने उन सब चीज़ों को नकारा है जो वर्तमान युग में प्रासंगिक नहीं रही। वैदिक धर्म में सुधार के आन्दोलनों से 600 वर्ष ईसा पूर्व जैन और बौद्ध धर्म का पदार्पण हुआ था तथा 18वीं और 19वीं सदी में धार्मिक और सामाजिक जागरूकता पैदा करना- कुछ ऐसे उदाहरण हैं। इसके कारण भारतीय सोच और व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। भारतीय संस्कृति के आधारभूत दर्शन का सूत्र निरंतर बना रहा और आज भी बना हुआ है। अत: निरंतरता और परिवर्तन की प्रक्रिया भारतीय संस्कृति की विशेषता रहे हैं। इससे हमारी संस्कृति में गतिशीलता दिखाई देती है।

6.2.2 अनेकता और एकता

विश्व की कुछ संस्कृतियों में ही भारतीय संस्कृति जैसी विविधता है। शायद आप इस बात से हैरान हों कि केरल के लोग खाना बनाने के लिए नारियल का तेल और उत्तर प्रदेश के लोग सरसों के तेल का प्रयोग क्यों करते है? यह इस कारण है कि केरल तटीय राज्य है जहाँ नारियल की पैदावार अधिक होती है तथा उत्तर प्रदेश मैदानी क्षेत्र है जो सरसों की खेती के अनुकूल है। पंजाब के भांगड़ा अथवा तमिलनाडु के पोंगल और असम के बिहू नृत्य में क्या समानता है? सभी त्यौहार फसलों की कटाई के बाद मनाए जाते हैं। क्या कभी आपने ध्यान दिया है कि हम बंगाली, तमिल, गुजराती अथवा उड़िया जैसी भिन्न भाषाएँ बोलते हैं? भारत अनेक प्रकार के नृत्यों और संगीत का घर है जिन्हें आमतौर पर शादी अथवा बच्चे के जन्म के अवसर पर प्रयोग किया जाता हैं।

हमारे देश में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं जिससे साहित्य समृद्ध हुआ है। विश्व के आठ बड़े धर्मों को मानने वाले लोग यहाँ समरसता से रहते हैं। क्या आप जानते हैं कि भारत जैन, बौद्ध, सिक्ख और निसंदेह हिंदू जैसे अनेक धर्मों का घर है। वास्तुकला मूर्तिकला तथा चित्रकला की अनेक शैलियों का यहाँ विकास हुआ है। संगीत और नृत्य की विभिन्न शैलियाँ, लोक संगीत और शास्त्रीय दोनों का यहाँ अस्तित्व है। इसी प्रकार अन्य त्यौहार और प्रथाएँ हैं। यह व्यापक विविधता भारतीय संस्कृति को संयुक्त और समृद्ध बनाने के साथ सुंदर भी बनाती हैं। हमारी संस्कृति में इतनी विविधता क्यों हैं? इसके अनेक कारण हैं। देश की विशालता और इसके भौतिक और जलवायु लक्षणों में भिन्नता इसका एक स्पष्ट कारण है।

हमारी संस्कृति में अनेकता का दूसरा महत्वपूर्ण कारण विभिन्न जातीय समूहों के बीच अंतर्मिलन है। बहुत पहले से दूर-दराज और नजदीक के लोग यहाँ आते रहे हैं और बसते रहे हैं। हम विभिन्न प्रजातीय समूहों जैसे प्रोटो आस्ट्रेलियाई (Proto-Australoids), द नीग्रो (The Negnords) और मोंगोलोएड (Mongoloids) को भारत में रहते हुए देखते हैं। विभिन्न प्रजातीय समूह जैसे इरानी,

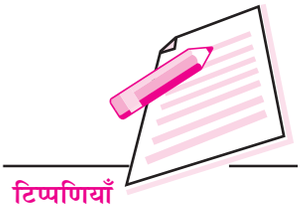

यूनानी, कुषाण, शाक्य, हूण, अरबी, तुर्की मुगल और यूरोपीय लोग भी भारत में आए, यहाँ बस गए और यहाँ के लोगों के साथ घुल-मिल गए। अन्य संस्कृतियों के लोग यहाँ अपनी सांस्कृतिक आदतों, सोच और विचारों को अपने साथ लेकर आए जो यहाँ की संस्कृति के साथ घुल-मिल गए। शर्टस, ट्रोजर्स और स्कर्टस का यहाँ नया आगमन हुआ है जिन्हें 16वीं सदी में यूरोपीय ले कर आए थे। 'रोटी' एक तुर्की शब्द है तथा 'समोसा' मध्य एशिया से आया है। भारतीय उप महाद्वीप में विवाह के समय दूल्हे द्वारा पहनी जाने वाली 'शेरवानी' मध्य एशिया के शेनवान लोगों द्वारा पहना जाने वाला परिधान है। 18वीं सदी में उत्तर भारत में मराठा लाल मिर्च ले कर आए। अत: भारत ने युगों से विभिन्न आदतों और विचारों को समाहित करने की उल्लेखनीय क्षमता का प्रदर्शन किया है। इसने हमारी संस्कृति को विविधता और समृद्धि प्रदान करने में योगदान दिया है।

बाहर की संस्कृतियों के साथ संपर्क के कारण भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच भी सांस्कृतिक आदान-प्रदान चलता रहा है। लखनऊ का चिकन का काम, पंजाब की फुलकारी कढ़ाई, बंगाल की कांथा कढाई, गुजरात के पटोला हमें एक अलग क्षेत्रीय महक का अनुभव करवाते हैं। यद्यपि भारत के दक्षिण, उत्तर, पूर्व और पश्चिम के केन्द्रों की अपनी विशिष्ट संस्कृतियाँ हैं। तब भी वे बिल्कुल विलग रह कर विकसित नहीं हुई हैं। भौतिक बाधाओं के बावजूद भारतीय देश के एक भाग से दूसरे भाग में व्यापार और तीर्थ यात्राओं के लिए जाते रहे हैं। विजय प्राप्त करके अथवा गठजोड़ कर के नए क्षेत्रों को जोड़ा गया। परिणामस्वरूप लोगों ने सांस्कृतिक आदतों को देश के एक भाग से दूसरे भागों में स्थानांतरित किया। फौजी अभियान भी लोगों को एक भाग से दूसरे भाग में ले गए। इसने विचारों के आदान-प्रदान में सहायता प्रदान की। इस प्रकार के संपर्कों ने भारतीय संस्कृति में 'एक जैसा होने' के भाव को विकसित किया जिसे पूरे इतिहास में बनाए रखा गया।

एकता का दूसरा कारक 'जलवायु' है। भौगोलिक विविधता और जलवायु में अंतर के बावजूद भारत में अंतर्निहित एकता अनुभव की जाती है। 'मानसून' भारतीय जलवायु के स्वरूप का एक महत्वपूर्ण घटक है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँधती है। मानसून ने यह सुनिश्चित किया है कि 'कृषि' भारत के लोगों का मुख्य व्यवसाय है। दूसरी ओर भौतिक विशेषताओं में पाए जाने वाले अंतरों ने हमारे खान-पान, वेशभूषा, घरों तथा आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित किया है जिससे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थानों का गठन हुआ। फलस्वरूप इन कारकों ने लोगों की सोच और विचारधारा को प्रभावित किया। अत: भारत की भौतिक विशेषताओं और जलवायु में विभिन्नता भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में संस्कृति का विकास किया है। विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट विशेषताओं ने इन संस्कृतियों को एक पहचान प्रदान की है।

हमारी संस्कृति की संयुक्त पहचान हमारे संगीत, नृत्य, नाटक एवं कलाओं के अन्य रूपों जैसे चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला में भी प्रदर्शित होती है। अनेकता में एकता हमारे राजनीतिक संगठनों में भी दिखाई देती है। प्रारंभिक वैदिक काल में हमारा समाज पशु चारण से संबंधित था लोग चारागाहों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया करते थे। लेकिन जब इन लोगों ने खेती करना शुरू किया तो ये बसने लगे। एक स्थान पर बस जाने से सामुदायिक विकास और शहर बनने लगे जिन्हें नियमों और उपनियमों की ज़रूरत थी। इस प्रकार एक राजनीतिक संगठन का उदय हुआ। इस में सभाएँ और समितियाँ शामिल थीं जो राजनीतिक इकाईयाँ थी तथा इनके

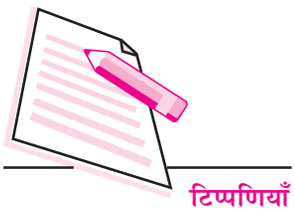

टिप्पणियाँ

माध्यम से लोग शासन में भाग लेते थे। समय के साथ राष्ट्र की अवधारणा प्रकट हुई तथा 'क्षेत्र पर कब्जा' शक्ति और सत्ता का नया साधन बना। कुछ स्थानों पर गणतंत्र बने। छठी शताब्दी ई. पूर्व से चौथी शताब्दी ई. पूर्व का समय भारत में महाजनपदों का युग कहलाता है। इन शाही राज्यों में राजाओं के पास अधिक शक्तियाँ थी। इनके बाद बड़े साम्राज्य भी स्थापित हुए जहाँ सम्राटों के पास सारी शक्तियाँ थीं। आपने प्राचीन सम्राटों अशोक, समुद्रगुप्त और हर्षवर्धन के बारे में सुना होगा। मुगलों ने भी भारत में बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। ब्रिटिश ने 1858 में स्वयं को भारत में स्थापित किया और भारत ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग बन गया। 1947 में हम एक लंबे संघर्ष के बाद स्वतंत्रता को प्राप्त कर सके। आज हम संप्रभु समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणतंत्र हैं और पूरे देश में एक प्रकार की शासन व्यवस्था चल रही है।

6.2.3 धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण

आप जानते ही हैं कि हमारे देश में सोच और आदतों की बहुत विविधता है। ऐसी विविधता में किसी एक विशेष विचारधारा का प्रभुत्व संभव नहीं हैं। स्मरण करें कि भारत में हिंदू, मुस्लिम, इसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन, पारसी और यहूदी रहते हैं। संविधान भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित करता है। प्रत्येक को अपनी पसंद के धर्म को अपनाने, प्रचार करने और फैलाने की स्वतंत्रता है। राज्य का अपना कोई धर्म नहीं है और राज्य सब धर्मों को समान दर्जा देता है। धर्म के आधार पर किसी के साथ भेद-भाव नहीं किया जाता। बहुत हद तक लोगों ने एक व्यापक दृष्टिकोण बना लिया है और वे 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं।

6.2.4 सार्वभौमिकता

सह-अस्तित्व के सिद्धांत को केवल भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं तक ही सीमित नहीं रखा गया। भारत का दृष्टिकोण सार्वभौमिक रहा है और यह पूरे विश्व में शांति और समरसता के संदेश को बढ़ावा देता रहा है। भारत जातिवाद और उपनिवेशवाद के विरूद्ध सख्ती से आवाज़ उठाता रहा है। हमने विश्व में गुट बनाए जाने का भी विरोध किया है। वस्तुत: भारत गुट निरपेक्ष आंदोलन का एक संस्थापक सदस्य रहा है। भारत अन्य अल्प विकसित देशों के विकास हेतु प्रतिबद्ध है। इस प्रकार भारत अपनी जिम्मेवारी निभाता रहा है और पूरे विश्व की प्रगति में अपना योगदान देता रहा है।

यह याद रखना चाहिए कि भारतीय उपमहाद्वीप युगों से सभी राजनीतिक सीमाओं को लाँघते हुए एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में रहा है।

क्रियाकलाप 6.1

1. भारत के मानचित्र पर 'धरोहर' के रूप में प्रसिद्ध स्थलों की पहचान कीजिए।
2. प्रमुख सांस्कृतिक धरोहरों की पहचान कीजिए तथा अपने उत्तर के पक्ष में उदाहरण दीजिए। इन उदाहरणों के चित्रों को उनकी विशेषताओं सहित चिपकाइए।

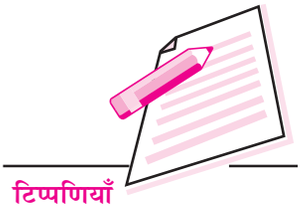

पाठगत प्रश्न 6.1

1. उस राज्य का नाम लिखिए जहाँ भांगड़ा एक लोकप्रिय नृत्य है।
2. असम के नृत्य को किस नाम से जाना जाता है?
3. कांथा कढ़ाई के लिए कौन-सा क्षेत्र प्रसिद्ध है।

6.3 सांस्कृतिक पहचान, धर्म क्षेत्र और प्रजातीयता

हमारी सांस्कृतिक पहचान विभिन्न कारकों जैसे धर्म और क्षेत्र पर आधारित है। परिणामस्वरूप प्रत्येक भारतीय की कई तरह की पहचानें हैं। किस समय कौन-सी पहचान के अन्य बिन्दुओं पर हावी होगी यह क्षेत्रों की राजनीतिक, सामाजिक अथवा आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। अत: प्रत्येक व्यक्ति की कुछ चीज़ें दूसरों के साथ मेल खाती हैं जबकि कुछ अन्य में काफी बड़ा अंतर हो सकता है। उदाहरण के लिए पूरे देश के दृष्टिकोण से एक ही विश्वास और आस्था के लोगों में पूजा के प्रकार और अनुष्ठानों के अतिरिक्त बहुत कम समानता हो सकती है। अनुष्ठानों और पूजा के प्रकार में भी वर्ग और क्षेत्र के अनुसार अंतर होते हैं।

लेकिन आप ऐसा भी पाएँगे कि भिन्न धर्मों और जातियों के लोगों में सामान्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक विशेषताएँ जैसे भाषा, भोजन, वेशभूषा, मूल्य और वैश्विक दृष्टि एक जैसी हो सकती है। बंगाल में हिंदू और मुसलमान दोनों बंगाली होने में गर्व अनुभव करते हैं। अन्य जगहों पर भी हिंदुओं, इसाईयों और मुसलमानों में क्षेत्रीय संस्कृति के बहुत से तत्व सांझे होते हैं।

पाठगत प्रश्न 6.2

1. ऐसे लोगों के दो उदाहरण दीजिए जो बाहर से आकर यहाँ बस गए हों।
2. ऐसी सभ्यता का नाम लिखिए जिनके साथ हड़प्पा सभ्यता के देशों का समुद्र पार व्यापारिक संबंध रहा है।

6.4 भारतीय धरोहर की विशेषताएँ

धरोहर उसको कहते हैं जो हमें पूर्वजों से मिला है। धरोहर वह है जो किसी विशेष स्थान, क्षेत्र, धर्म अथवा देश के लिए बहुत विशिष्ट और खास होती है तो दूसरी ओर किसी परिवार, समुदाय अथवा लोगों के लिए अलग होती है। यह प्राकृतिक और व्यक्ति द्वारा निर्मित हो सकती है अथवा इतिहास के विकास के साथ विकसित हो सकती है।

भारत के गौरवशाली इतिहास ने सुनिश्चित किया है कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों के पास गर्व करने के लिए बहुत बड़ी मात्रा में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत है। देश में

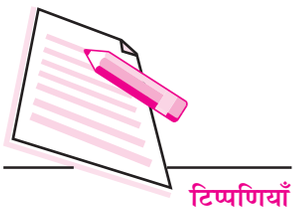

टिप्पणियाँ

चित्ताकर्षक स्मारक और धरोहर स्थल आज पर्यटकों के सामने अपने आनंद, साहस और त्याग की गाथाएँ सुनाने के लिए मौजूद हैं। सभी कहानियाँ इतनी चमत्कारिक हैं कि प्रत्येक कथन के बाद पर्यटक में और सुनने की चाह बनी रहेगी।

सदियों तक भारत में अपनी संस्कृति और परंपराओं के साथ आने वाले लोगों ने जो बाद में यहाँ की संस्कृति और परम्पराओं के साथ घुलमिल गए, एक नई धरोहर और संस्कृति को जन्म दिया। संस्कृतियों के इस मिलन ने धीरे-धीरे और लगातार भारतीयों के विश्वास और मूल्यों को और अधिक समृद्ध किया है। फलस्वरूप हिंदू, बौद्ध, इस्लाम, जैन और इसाईयत ने भारत को विश्व का सबसे बड़ा धर्मनिरपेक्ष देश बना दिया जहाँ दीवाली, क्रिसमस, ईद और बुद्ध जयंती को समान उत्साह और रौनक के साथ मनाया जाता है।

जब हम इतिहास के पन्ने पलटते हैं तो भारत की समृद्ध धरोहर अपनी पूरी महक और रंगों के साथ जीवित हो उठती है जो अभी भी पुराने किलों, महलों, मंदिरों और स्मारकों में जीवित हैं जिन्हें इस बहुआयामी देश के प्रत्येक कोने में पाया जा सकता है। गौरवशाली वास्तुकला, बारीकी से उकेरे गए मूल मंत्र, विरासत के रूप में मिले अलंकृत स्मारकों के चेहरे हमारे हस्तशिल्पियों के कौशल की कहानी कहते हैं। जो कई सदियों तक विश्व को सम्मोहित किए रहे। भारत में आने वाले विदेशी पर्यटक भारतीय धरोहर के सभी स्थानों को नहीं देख पाते क्योंकि इनकी संख्या बहुत अधिक है।

यूनेस्को ने भारत द्वारा विश्व को दिए गए इन सुंदर उपहारों को बचाने के लिए एक मिशन अपनाया है। भले ही यह ताजमहल में संगमरमर पर की गई नक्काशी हो या खजुराहों मंदिर की मूर्तिकला या कोणार्क सूर्य मंदिर मे विज्ञान और कला का अद्‌भुत संगम। भारत के सभी धरोहर स्थान भारत की समृद्ध विरासत को अभिव्यक्त करते हैं। इनको जीवित रख कर हम अपनी भावी पीढ़ियों को एक बहुत ही समृद्ध सांस्कृतिक विरासत सौंप पाएँगे।

भारत में महत्वपूर्ण स्मारकों और स्थलों की संख्या इतनी अधिक है कि अद्‌भुत विरासत के बहुआयामी पक्षों को देखने के लिए एक यात्रा काफी नहीं है। फिर भी पर्यटकों को इससे भारतीय इतिहास और धरोहर की एक झलक देखने को मिल सकती है। अपनी यात्रा के समापन पर उनके दिल में भारतीय विरासत के प्रति निश्चित रूप से आदर का भाव पैदा होगा और वे निकट भविष्य में ऐसी और यात्राएँ करने के लिए मन बनाएँगे।

संस्कृति और धरोहर पिछली पीढ़ियों द्वारा मूर्त अथवा अमूर्त रूप में प्राकृतिक और सांस्कृतिक रूप में दी गई विरासत हैं जिसे वर्तमान में सहेज कर रखने के बाद भावी पीढ़ियों के हितार्थ सौंप दिया जाता है।

सांस्कृतिक धरोहर में मूर्त संस्कृति जैसे भवन, स्मारक, पुस्तकें, कलाकृतियाँ और शिल्प तथ्य शामिल होते हैं। अमूर्त संस्कृति भी हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण भाग है जैसे लोककथाएँ, परम्पराएँ, भाषा और ज्ञान। इसको बहुत समय तक लोगों के सृजन, कल्पना, बुद्धिमता कौशल और कलात्मक योग्यता के माध्यम से विकसित किया जाता है। प्राकृतिक धरोहर में सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण दृश्यावली और जैविक विविधता शामिल होती है। प्राकृतिक विरासत प्राकृतिक और पर्यावरणीय विशेषताओं का बहुरूपदर्शक (केलिडोस्कोप) प्रस्तुत करती है जिसमें प्राकृतिक खूबियाँ जैसे ऊँचे

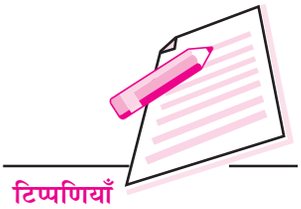

शिखर और पहाड़ियाँ, बड़ी नदियों से लेकर छोटी नदियाँ, नाले और जलधाराएँ, घने जंगल, मरूस्थल और लंबे तटीय रेखाएँ शामिल होती हैं।

भारत को कुल 166 राष्ट्रीय उद्यानों और 515 पक्षी विहारों पर गर्व है जिनमें 390 स्तनधारी, 455 सरीसृप, 210 उभयचर, 1230 पक्षी प्रजातियाँ और 30,000 कीट प्रजातियों को आरण्य प्राप्त है इनसे ये सभी वन्य जीव विरासत के उपयुक्त स्थान बन गए हैं। धरोहर (विरासत) को मुख्य रूप से निम्नलिखित ढंग से वर्गीकृत किया जाता है। इनमें भौतिक वस्तुएँ तथा स्थूल रूप की सामग्री शामिल होती हैं जैसे सिक्के, स्मारक, कला, मूर्तियाँ, मोहरें, उत्कीर्ण सामग्री। बहुत समय तक एकत्र की गई वस्तुएँ जो स्थूल रूप में हो तथा जिन्हें संग्रहालयों में देखा और छुआ जा सके।

अमूर्त धरोहर

यह जीवंत, अदृश्य और अनदेखी परंतु महसूस की जा सकने वाली धरोहर है। इसमें अनेक चीजों जैसे विचार से लेकर परम्पराएँ, जीवन-शैली, व्यवहार, विश्वास और प्रथाएँ इत्यादि शामिल होती हैं। व्यवहारिक गुण जैसे सत्य, निष्कपटता, ईमानदारी, विनम्रता किसी व्यक्ति के चरित्र निर्माण की विशेषताएँ जिन्हें महसूस तो किया जा सकता है परंतु देखा नहीं जा सकता। अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का अर्थ समुदायों, समूहों और कुछ मामलों में व्यक्तियों के साथ जुड़े ऐसे व्यवहार, प्रदर्शन, अभिव्यक्तियाँ, ज्ञान, कौशल के साथ-साथ उपकरण, वस्तुएँ, कला तथ्य और सांस्कृतिक स्थान हैं। इन्हें सांस्कृतिक विरासत का भाग माना जाता है।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (धरोहर) को अपने वातावरण के प्रत्युत्तर, प्रकृति के साथ अपनी अंत: क्रिया और अपने इतिहास के संदर्भ में समुदायों और समूहों द्वारा निरंतर निर्मित किया जाता है जो उन्हें पहचान और निरंतरता प्रदान करती है। इससे सांस्कृतिक विविधता और मानवीय सृजन के प्रति सम्मान बढ़ता है।

प्राकृतिक धरोहर

प्राकृतिक धरोहर में प्राकृतिक विशेषताएँ जैसे पर्वत, जंगल, मरुस्थल, नदियाँ, प्राणिजगत, वनस्पतियाँ, बड़े जलीय आकार जैसे समुद्र और महासागर इत्यादि शामिल होते हैं। यह मनुष्यों द्वारा निर्मित नहीं है अपितु प्रकृति के उपहार हैं जो प्रकृति के कारकों के माध्यम से अपरदन, निम्नीकरण और विलुप्तिकरण तथा संसाधनों पर लोगों के दबाव आदि को झेलते हैं।

सांस्कृतिक धरोहर

सांस्कृतिक धरोहर मानव केंद्रित है और जिसे सृजन, कल्पना, बुद्धिमता, कौशलों लोगों की कलात्मक योग्यताओं के माध्यम से लंबी कालावधि में विकसित किया जाता है।

यह धार्मिक और सामाजिक दोनों के व्यवहारों का संचित परिणाम है। इसको रीति-रिवाजों, नृत्य, संगीत, पक्की आदतों, जीवित जीवन शैलियों, भौतिक और व्यावहारिक स्वरूपों में देखा जा सकता है। यह प्राचीन से मध्य और मध्य से वर्तमान समय तक के संक्रमण काल से गुजर चुकी हैं।

क्रियाकलाप 6.2

1. अपनी स्क्रेप बुक में भारत के प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर के स्थानों के चित्र एकत्र करके चिपकाइए।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. धरोहर (विरासत) की अवधारणा को परिभाषित कीजिए।
2. विभिन्न प्रकार के धरोहरों के नाम लिखिए।
3. मूर्त और अमूर्त धरोहरों के बीच उपयुक्त उदाहरण देकर अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. उपयुक्त उदाहरणों की मदद से प्राकृतिक विरासत की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

आपने क्या सीखा

आओ अब हम कुछ सामान्य विशेषताओं की चर्चा करें जो पूरे विश्व में फैली भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में एक-सी हैं :

- **संस्कृति को सीखा और ग्रहण किया जाता है :** संस्कृति को ग्रहण करने का भाव यह है कि कुछ ऐसे व्यवहार हैं 'जिन्हें विरासत के माध्यम से ग्रहण किया जाता है। व्यक्ति कुछ गुणों को अपने माँ-बाप से ग्रहण करते हैं परंतु सामाजिक-सांस्कृतिक स्वरूप विरासत में नहीं लिए जाते। इन्हें अपने परिवारिक सदस्यों तथा जिस समाज अथवा समूह में रहते हैं उनसे सीखा जाता है। अत: यह स्पष्ट है कि लोगों की संस्कृति उनके कार्यक्षेत्र के भौतिक और सामाजिक वातावरण से प्रभावित होती है।

- **संस्कृति लोगों के समूह द्वारा सांझा की जाती है :** किसी विचार अथवा क्रिया को संस्कृति कहा जा सकता है यदि इसको लोगों के एक समूह द्वारा सांझा किया जाता हो तथा इस पर लोगों का विश्वास तथा उनके द्वारा व्यवहार में लाया जाता हो।

- **संस्कृति संचित होती है :** संस्कृति में निहित भिन्न ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रेषित किया जा सकता है। समय गुजरने के साथ किसी विशेष संस्कृति में अधिक से अधिक ज्ञान जुड़ता जाता है। प्रत्येक जानकारी से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचने वाली समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। यह चक्र समय के साथ एक संस्कृति के रूप में रहता है।

- **संस्कृति बदलती रहती है :** नए सांस्कृतिक गुणों से जुड़ने से ज्ञान, विचार और परम्पराएँ खो जाती हैं। समय गुजरने के साथ किसी विशेष संस्कृति में सांस्कृतिक बदलाव होने की संभावना रहती है।
- **संस्कृति गतिशील होती है :** कोई भी संस्कृति स्थिर अवस्था में नहीं रहती। नए विचारों और नई तकनीकों के जुड़ने से संस्कृति निरंतर बदलती रहती है और समय के साथ पुराने तरीकों के बदल जाने से निरंतर बदलती रहती है।
- **संस्कृति हमें उचित व्यावहारिक स्वरूपों की एक श्रेणी प्रदान करती है:** इसमें शामिल होता है कि किसी गतिविधि को कैसे संचालित किया जाए और किस प्रकार किसी व्यक्ति को कोई कार्य करना चाहिए?
- **संस्कृति विविध होती है :** यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अनेक भाग आपस में अंत: निर्भर होते है। यद्यपि ये भाग अलग होते हैं परंतु एक दूसरे पर निर्भर होते हैं और संस्कृति को संपूर्णता प्रदान करते हैं।
- **संस्कृति आदर्शात्मक होती है :** प्राय: यह व्यवहार के आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत करती है जिस पर उस संस्कृति से संबंध रखने वाले लोगों में स्वीकृति पाने के लिए लोगों को उस आदर्श रूप का अनुकरण करना चाहिए।

पाठान्त प्रश्न

1. संस्कृति के विभिन्न अवयव कौन-से हैं?
2. वस्तुपरक और गैर-वस्तुपरक संस्कृति का अर्थ लिखिए।
3. भारतीय संस्कृति के धर्म-निरपेक्षता के गुण को परिभाषित कीजिए।
4. भारतीय संस्कृति की विलग विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए :
   (अ) भारत में सांस्कृतिक संश्लेषण
   (ब) आध्यात्मिकता
   (स) 'अपनाना' भारतीय संस्कृति की एक विशेषता
6. भारतीय संस्कृति के संदर्भ में 'अनेकता में एकता' की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
7. संस्कृति क्या है? भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं और मूल्यों की उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।
8. संस्कृति और विरासत किस प्रकार पर्यटन के केंद्रीय अवयव बनते हैं?
9. विभिन्न प्रकार के भारतीय धरोहरों के उदाहरण लेकर चर्चा कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. पंजाब
2. बिहू
3. बंगाल

6.2

1. कुषाण और मुगल
2. चीन और मेसोपोटामिया

6.3

1. इसको सीखा और ग्रहण किया जाता है। संदर्भ 6.4
2. मूर्त, अमूर्त, प्राकृतिक और सांस्कृतिक।
3. मूर्त दिखती है जैसे सिक्के, स्मारक, कला तथ्य, वास्तविक मूर्तियाँ इत्यादि। अमूर्त, दिखाई नहीं देती जैसे शैली, व्यवहार और परंपराएँ इत्यादि।
4. प्राकृतिक धरोहर जैसे पक्षी, वृक्ष, जंगल और नदियाँ इत्यादि (पढ़ें सेक्शन 6.4)

7

भारत की मंचीय कला की विरासत

भारत अपनी विशाल वैविध्यपूर्ण संस्कृति के लिए जाना जाता है। किसी अन्य देश की तरह भारत की भी अपनी सांस्कृतिक विरासत के कई पहलू हैं। इस अध्याय में हम संगीत, नृत्य और रंगमंच की चर्चा करेंगे। सांस्कृतिक विरासत के एक महत्वूर्ण घटक के रूप में इसका पर्यटन के साथ महत्वपूर्ण संबंध है। किसी भी समाज विशेष के लोगों के जीवन में इन कलाओं के माध्यम से उनके जीने के तरीके का संकेत मिलता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- मंचीय कलाओं के क्षेत्र; जैसे – संगीत, नृत्य और रंगमंच के विकास की चर्चा कर सकेंगे और
- संगीत, नृत्य और रंगमंच के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे।

7.1 संगीत

भारतीय लोगों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त विविधता को देखा जा सकता है। यह विविधता कलाओं, विशेषत: मंचीय-कलाओं के क्षेत्र में देखी जा सकती है। जो विदेशी यहाँ आए उन्हें भारतीय लोगों ने अपनाया यह भारतीयों के विशाल हृदय को दर्शाता है। भारत ने न केवल इन विदेशियों को उदारतापूर्वक अपनाया, बल्कि उनका प्रोत्साहन कर अपने जीवन का अंग भी बनाया। यदि हम विभिन्न क्षेत्रों में संगीत का विकास देखें, तो यहाँ की विविधता में एकता को कोई भी अच्छी तरह से समझ सकता है और इसकी प्रशंसा कर सकता है।

आप जिस स्वर या राग की सुनकर प्रशंसा करते हैं उसे संगीत के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। यह प्राकृतिक रूप में खूबसूरत पहाड़ियों में झरने की आवाज़ हो सकती है अथवा इसे स्वर ध्वनियों से भी उत्पन्न किया जा सकता है। इन रागों की मधुरता को वाद्ययंत्रों से उन्नत किया जा सकता है। संगीत के क्षेत्र में इन वाद्ययंत्रों का अविष्कार किया गया, उन्हें संशोधित किया गया और रागों के विविध प्रकार के लिए प्रयोग किया गया।

टिप्पणियाँ

मोटे तौर पर संगीत को तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है:

(1) हिंदुस्तानी

(2) कर्नाटक

(3) लोकसंगीत

हिंदुस्तानी संगीत भारत-तुर्की-फ़ारसी संगीत का मिश्रण है। सल्तनत काल में विभिन्न संगीत परंपराओं का समावेशन शरू हो गया था। 13वीं सदी में मंचीय कला प्रदर्शित करने वाले व्यक्तियों को देखा जा सकता है। यह इतिहास में दर्ज है कि किलोखरी (दक्षिणी दिल्ली) में संगीतकारों, सुंदर चेहरे वाले मनोरंजकों, विदूषकों और भाँड़ों की एक कालोनी हुआ करती थी। इसमें रहने वाले लोग फ़ारसी संगीत और छंग, रूबब, कमंचा, मसकक, नाच और तंबूर वाद्ययंत्रों को बजाने में प्रशिक्षित थे। कव्वाल और गज़ल की रचना सुल्तान की प्रशंसा करने के लिए की जाती थी। भारत भ्रमण करने वाले यात्री इब्न-ए-बतूता ने अपनी किताब में दिल्ली में हौज खास के निकट संगीतकारों की एक अलग कॉलोनी के विषय में लिखा है, जिसे ताराबाद (संगीत का शहर) कहा जाता था। इसी प्रकार की एक कॉलोनी को दक्कन में दौलताबाद के पास बसाया गया था। इसमें एक मस्जिद का भी उल्लेख मिलता है जिसमें महिला संगीतकारों द्वारा नमाज (प्रार्थना) अदा की जाती थी। हमें उन महिला कलाकारों का परिचय जिनमें लुली, हुरूकी, डोमिनी, कंचनी और कामाचीनी थी जो संपन्न वर्गों के विवाह समारोह में भाग लिया करती थीं।

कुछ ऐसे विख्यात संगीतकार हैं जिनका नाम हमेशा अमर रहेगा। यहाँ हम ऐसे दो विख्यात संगीतकारों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करेंगे जिन्हें भारतीय संगीत में योगदान के लिए याद किया जाता है। इनमें पहले हज़रत अमीर खुसरो और दूसरे मियाँ तानसेन हैं।

अमीर खुसरो (1253-1325 सी.ई.)

अमीर खुसरो, जिन्हें 'तुती-ए-हिंद' (भारत का तोता) के नाम से भी जाना जाता था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के 'एटा' जिले के गाँव पटियाली में हुआ था। उन्हें उनके साहित्यिक योगदान और देशभक्ति के लिए जाना जाता है। उन्होंने संगीत की विभिन्न कलाओं जैसे - अरबी, फ़ारसी और भारतीय संगीत को सीखा। भारतीय संगीत के विषय में लिखते हुए वह कहते हैं कि ''भारतीय संगीत जो लोगों के दिल और आत्मा में बसता है, किसी भी अन्य देश के संगीत से कहीं बेहतर है।'' भारतीय संगीत में अरबी और फ़ारसी का मिश्रण करके उन्होंने इसे और अधिक गरिमामय बनाया। उन्होंने कई रागों की भी खोज की। उदाहरण के लिए कव्वाली और तराना रागों की खोज अमीर खुसरों ने ही की थी।

इस संदर्भ में एक छोटी सी रोचक घटना को उद्धृत किया जा सकता है। सुल्तान अलाउद्दीन (1296-1320) ने एक बार एक प्रमुख संगीतकार नायक गोपाल को राग सुनाने के लिए आमंत्रित किया। अमीर खुसरो से नायक गोपाल का सामना हुआ और उसे अपनी शैली को प्रदर्शित करने के लिए कहा गया। नायक ने जब अपनी शैली के सातवें चरण को पूरा किया तब अमीर खुसरो ने दावा किया कि गोपाल नायक ने जितने भी रागों को सुनाया है वो सभी अमीर-खुसरो की

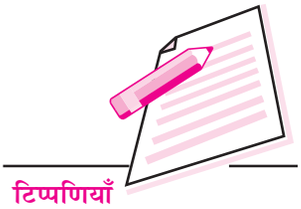

ही खोज थे। हालाँकि गोपाल नायक दक्षिण भारत और अमीर खुसरो उत्तर भारत के संगीत के दो महासागरों को मिलाने वाले स्रोत थे। खुसरो ने स्वयं यह दावा किया था कि उन्होंने संगीत रचना के तीन खंड लिखे थे। सितार की खोज के लिए भी उन्हें जाना जाता है। शेख निज़ामुद्दीन के प्रिय शिष्यों में वे एक थे। शेख निज़ामुद्दीन की दरगाह के पास ही उनके मृत शरीर को दफ़नाया गया था।

चित्र 7.1: एम. हबीब द्वारा दिल्ली के हज़रत अमीर खुसरो के चित्र की प्रतिलिपि

तानसेन

अपने समय के एक महान संगीतकार तानसेन बघेलखंड (1555–1592 ई.) के राजा राम चंद्र के दरबारी थे। उनका जन्म ग्वालियर में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे महान संगीतकार हरिदास के शिष्य थे। उनके संगीत की ख्याति सुनकर सम्राट अकबर ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया था। संगीत के क्षेत्र में उनकी ख्याति को ऐतिहासिक पन्नों पर इस प्रकार लिखा गया है– ''तानसेन एक कलावंत थे – संगीत विज्ञान के क्षेत्र में उनके जैसा उनका समकालीन कोई नहीं था। उनके जैसी मधुर संगीत रचना गाने वाला कोई और नहीं था और न ही उनके समान उत्कृष्ट रचनाएँ संकलित करने वाला कोई था। राजा उनकी योग्यता की बहुत सराहना करते थे और उन्हें बहुत पसंद करते थे। जब सम्राट अकबर ने उनकी ख्याति सुनी तो उन्होंने तानसेन को अपने दरबार में प्रस्तुत करने के लिए कहा। जब तानसेन उनके दरबार में पहुँचे तो सम्राट ने पहले दिन उन्हें दो करोड़ दिरहम दिए जिनका वर्तमान में मूल्य दो लाख रुपये है। अकबर तानसेन के प्रदर्शन को देखकर मोहित हो गए थे। यह तुजुक-ए-जहाँगीरी में भी वर्णित है कि ''फतेहपुर सीकरी के सूफ़ी संत सलीम चिश्ती ने मरते समय अपनी अंतिम इच्छा के रूप में तानसेन को सुनना चाहा था। तुजुक-ए-जहाँगीर के उल्लेख में उन्होंने (सूफ़ी) सम्राट (अकबर) के पास किसी को तानसेन का राग सुनने के लिए भेजा था। तानसेन को संगीत की ध्रुपद शैली को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है।

चित्र 7.2: तानसेन

तानसेन की स्मृति में प्रत्येक वर्ष ग्वालियर में एक संगीत सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। ग्वालियर घराना जिसे सेनिया घराना के नाम से भी जाना जाता है, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सबसे प्राचीन घराना है जिसका संबंध तानसेन से है। इस समारोह को देखने के लिए अधिकतर पर्यटक ग्वालियर शहर में आते हैं।

कर्नाटक संगीत

संगीत जगत में कर्नाटक संगीत के विकास का अपना इतिहास है। दक्षिण भारत में संगीत मुख्यत: ईश्वर में समर्पण से जुड़ा हुआ है। मंचीय कला के तीन रूपों (1) संगीत (2) नृत्य (3) गायन का एक साथ उपयोग ईश्वर को खुश करने के लिए किया जाता है। अत: ये मंचीय कलाएँ देवदास से भी संबंधित है जिन्हें ईश्वर का भक्त (दास) भी कहा जाता है। दक्षिण भारतीय संगीत को कर्नाटक संगीत के नाम से जाना जाता है जिसे भक्ति-संतों ने पहचाना। ये संत इस संगीत से स्वयं को जोड़कर ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए 8वीं सदी में प्रयोग किया करते थे। यहीं से गुरु-शिष्य परंपरा का जन्म हुआ और इसने कठिन अभ्यास से संगीतशास्त्र में अपना एक अहम स्थान बनाया।

सामरिक संगीत

महत्वपूर्ण संगीत प्रकारों में से सामरिक संगीत एक था। युद्ध के समय सैनिकों में जोश भरने के लिए इसे बजाया जाता था। महत्वपूर्ण सैनिक अभियानों में संगीतकार सेना के साथ चलते थे। अकबर के समय में हापा चारण (राजस्थान) और मियाँ लाल खान कलावंत (ग्वालियर) जाने-माने सामरिक संगीतकार थे। कश्मीर के साजिंद (गायक) भी प्रसिद्ध हैं जिन्हें जयपुर के राजपूत सेनापति कच्छवाहा ने अपने दरबार में रखा था। पश्चिमी राजस्थान में एक समुदाय है जिसे ढ़ाढ़ी कहा जाता है। इस समुदाय का पेशा शासकों के साथ युद्ध क्षेत्र में जाना तथा सैनिकों को दुश्मनों के विरुद्ध जोश भरना होता था। इनकी गायन-कला को सिंधू गायन के नाम से जाना जाता था। अत: गायकों के लिए सेना भी एक रोज़गार का क्षेत्र थी। हालाँकि, फुरसत के समय सैनिकों के मनोरंजन का साधन भी यही गायक होते थे।

लोक संगीत

लोक संगीत साधारण जनता और लोक-परंपरा का एक अंग है। समय के साथ लोक संगीत परिष्कृत, कृत्रिम और कुलीन द्वारा संरक्षित हो गया। इन्हें ही हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत का नाम दिया गया। लोक संगीत को किसी क्षेत्र अथवा पेशेवर समुदाय से जोड़कर पहचाना जा सकता है। लोक संगीत का अपना आकर्षण और लोगों को प्रभावित करने का अंदाज होता है। सामान्यतया कोई भी इन गायकों को संगीत मेलों, गलियों, बाजारों, रेलगाड़ियों और बसों में गाते बजाते हुए देख सकता है। गायकी की यह लोक-परंपरा परिवारों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती है। अत: ऐसे अनेक समुदाय हैं जिनका पेशा गायन है। परिवारिक आयोजनों में लोक संगीत को बजाने वाले समुदाय के रूप में डोम और मिरासी को जाना-पहचाना जाता है। थार (राजस्थान) रेगिस्तान में मांगणियार और लांगा पेशेवर गायक और संगीतकार हैं। लांगा समुदाय ने मंचीय कलाओं के प्रदर्शन में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनायी है।

कश्मीर भी विश्व के विभिन्न भागों में बजाए जाने वाले संगीत को आपस में जोड़ने के लिए जाना जाता है। फ़ारस (आधुनिक ईरान, इराक) और मध्य एशिया नवीन संगीत उपकरणों और संगीत रूपों को प्रस्तुत करने वाले प्रमुख स्रोत थे। कर्नाटक संगीत अथवा दक्षिण भारतीय संगीत के उत्तर भारतीय संगीत में योगदान को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। दक्षिण भारत के संगीतशास्त्र की उत्कृष्टता ने कश्मीर के सुल्तान हसन शाह को अपनी ओर आकर्षित किया जिन्होंने दक्षिण के प्रसिद्ध कलाकारों को इसलिए आमंत्रित किया ताकि वे कश्मीर संगीत में कुछ तत्त्वों को शामिल करके इसे समृद्ध बना सकें। संगीत के प्रति हसन शाह के शौक ने संगीत विभाग की स्थापना की जिसका मुखिया श्रीवर को बनाया गया। सुल्तान युसूफ़ शाह की रानी हब्बा ख़ातून ने 'रस्त कश्मीर' राग को प्रस्तुत किया था। इस प्रकार, कश्मीरी संगीत ने भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। आमेर (जयपुर) के राजा ने कश्मीरी संगीतकारों को अपनी सेना में नियुक्त किया। कश्मीर के लोक संगीतों में छकरी, तंबूर नग़मा और बचा नग़मा शामिल है। इन गीतों को समूह में छोटे से नृत्य के साथ गाया जाता है।

7.2 वाद्य-यंत्र

भारतीय संगीत के विविध उपकरणों – बाँसुरी, तानपुरा, तबला, वीणा, सितार, शहनाई, सरोद, सारंगी, संतूर, मृदंग इत्यादि का उपयोग प्रसिद्ध गायक एवं कलाकार करते हैं।

बाँसुरी

बाँसुरी का ज़िक्र वैदिक काल से मिलता है। बाँसुरी हवा से बजने वाला उपकरण है जिसमें छिद्रों से हवा का प्रवाह होने से आवाज निकलती है। उच्च श्रवता के लिए बाँसुरी में वृहत वायुधारा और हवा की गति का वेग ज़्यादा होना चाहिए। इसे ध्वनि छिद्रों को बढ़ा कर तेज़ किया जा सकता है।

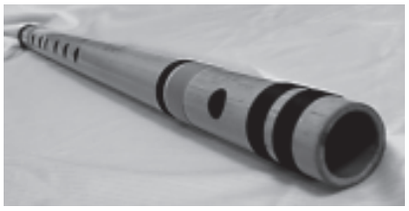

चित्र 7.3: बाँसुरी

विभिन्न अवसरों पर बजने वाली बाँसुरियों के विभिन्न प्रकार होते हैं। बाँसुरी को सांची, अमरावती की मूर्तियों तथा अजंता और एलोरा के चित्रों में देखा जा सकता है। बाँसुरी भगवान कृष्ण से भी संबंधित है। बाँसुरी एक भारतीय वाद्य यंत्र है जो अब पश्चिमी संगीत और आर्क्रेस्ट्रा का हिस्सा बन गया है।

तंबूरा अथवा तानपूरा

यह एक तारों से बना लंबी गर्दन वाला उपकरण है। आकृति में यह सितार जैसा दिखता है। उत्तर भारत में इसे तंबूरा के नाम से जाना जाता है। इसमें चार या पाँच तार होते है जो आयताकार रूप में एक के बाद दूसरे तार की समान दूरी पर लगा होता है जो मूल स्वर को बजाने से श्रुतिमधुर ध्वनि उत्पन्न करते है। तंबूरा नाम को 'तान' शब्द से लिया गया है जो संगीत की भाषा से जुड़ा है। 'पूरा' का अर्थ 'पूर्ण' है। दक्षिण में तंबूरा को लकड़ी से और उत्तर भारत में सुखे कद्दू से बनाया जाता है।

चित्र 7.4: तम्बूरा

तबला

यह भारत का अत्यधिक प्रसिद्ध वाद्ययंत्र है जिसका प्रयोग हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, भक्ति-संगीत और संगीतपूर्ण महफिलों में किया जाता है। भारत के मशहूर तबला वादक ज़ाकिर हुसैन को वर्ष 1992 में सर्वोत्तम संगीत एलबम बनाने के लिए ग्रेमी पुरस्कार से नवाज़ा गया था।

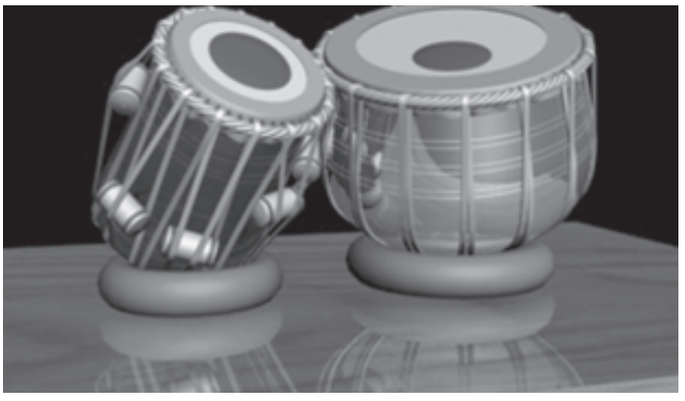

चित्र 7.5: तबला

वीणा

वीणा भी एक प्राचीन वाद्ययंत्र है जिसका उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है। दक्षिण भारत का यह सबसे लोकप्रिय संगीत उपकरण है जिसे सरस्वती वीणा के नाम से भी जाना जाता है। यह तारों को खींचकर निर्मित किया गया उपकरण है जिसे कर्नाटक संगीत में सहयोग के लिए तैयार किया गया है। वीणा के अनेक परिवर्तित रूप हैं जो दक्षिण भारतीय वीणा रूप के परिवार से है।

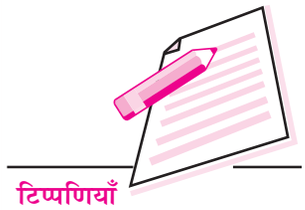

चित्र 7.6: वीणा

सितार

भारतीय शास्त्रीय संगीत को पश्चिमी श्रोताओं से अवगत कराने में सितार ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वीणा परिवार में इसे कोरडोफोन के रूप में वर्गीकृत किया गया है। सितार में सामान्यतया सात तार लगे होते है जिसमें पाँच स्टील के और दो पीतल के होते है। इसकी आवाज उप-महाद्वीप में रहने वाले लोगों के विचारों और भावनाओं को ताज़ा करती है। यह खिंचे हुए तारों का एक उपकरण है जिसका उपयोग हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में मुख्य रूप से होता है। पंडित रविशंकर (1920-2012) एक विख्यात सितार वादक थे। उन्हें वर्ष 1999 में भारतरत्न से सम्मानित किया गया। उन्हें तीन ग्रेमी पुरस्कारों से नवाज़ा गया था।

शहनाई

शहनाई की एयरोफोनिकम वाद्य-यंत्रों की श्रेणी में शामिल किया गया है। भारत में यह अत्यधिक लोकप्रिय वाद्ययंत्र है। इसे उत्तरी भारत में होने वाले विवाह समारोहों और जुलूसों में बजाया जाता है। यह ट्यूब की तरह दिखने वाला उपकरण है जो अपने नीचे के सिरे की तरफ़ चौड़ा होता है। यह माना जाता है कि शहनाई मिस्र से फारस और फ़ारस से भारत में आई। मिस्र के गुम्बदों पर शहनाई को उकेरा गया है और कुछ चित्रकलाओं में भी शहनाई को चित्रित किया गया है। भारत में सबसे मशहूर शहनाई वादक उस्ताद बिसमिल्लाह खाँ (1913-2006) थे। जिन्हें वर्ष 2001 में भारतरत्न से सम्मानित किया गया था।

चित्र 7.7: शहनाई

नाग स्वरम्

नाग स्वरम् आकार में शहनाई से लंबा होता है। इसे नाद स्वरम के नाम से भी जाना जाता है। इसे तमिलनाडु का सबसे प्राचीन और अनोखा वाद्य-यंत्र माना जाता है। इस उपकरण को संगीत एवं देवत्व का एक दुर्लभ संयोग कहना सर्वथा उचित होगा, क्योंकि इसे सबसे शुभ वाद्य-यंत्र माना जाता है। मंदिरों में पाया जाता है और इसे त्योहारों पर बजाया जाता है।

सरोद

भारतीय शास्त्रीय संगीत के वाद्य-यंत्रों में सरोद भी एक है। यह तारों से बना हुआ संगीत का एक उपकरण है। कहा जाता है कि सरोद की नींव की प्रेरणा रबाब से मिली प्रतीत होती है जिसका अविष्कार अफगानिस्तान और कश्मीर में किया गया था। यह भी माना जाता है कि सरोद वास्तव में बास रबाब है। उस्ताद अमज़द अली खान एक मशहूर सरोद वादक हैं। वर्ष 2001 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

चित्र 7.8: सरोद

सारंगी

सारंगी में धनुष आकार का तार होता है। सारंगी भारत का प्रतिनिधित्व करती है। सारंगी शब्द को हिंदी के दो शब्दों से बना माना जाता है – 'साउ' जिसका अर्थ है सौ तथा 'रंग' जिसका अर्थ – रंग होता है। इसे सारंगी इसीलिए कहा जाता है, क्योंकि इस उपकरण का संगीत आनंददायक और संप्रेषणशील होती है। यह संगीत के विभिन्न रूपों को भी इंगित करती है। यह कहा जाता है कि सारंगी की आवाज़ मानव आवाज़ के बहुत समीप है और इसीलिए इसे भारत में सबसे अच्छा सहयोगी वाद्य-यंत्र माना जाता है।

चित्र 7.9: सारंगी

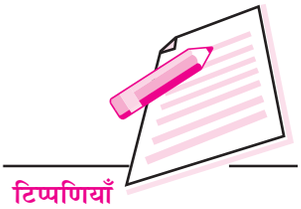

संतूर

संतूर कश्मीरी लोक-संगीत का एक उपकरण है। यह एक लोकप्रिय वाद्य-यंत्र है। इसे मुख्यत: सूफ़ी कलाम गाने में प्रयुक्त किया जाता है। यह देखने में समलंबाकार आकृति का संगीत उपकरण है। सामान्यतया इसे अखरोट की लकड़ी से बनाया जाता है। इसमें अनेक तार लगे होते हैं। इसे प्राचीन समय के शत्-तंत्रीवीणा नामक वाद्ययंत्र से संबद्ध बताया जाता है। लकड़ी की एक हल्की छड़ी से संतूर को बजाया जाता है जिसे 'मेज़राब' कहते हैं। संतूर बजाते समय इन मेज़राबों को तर्जनी और मध्यमा उँगलियों द्वारा पकड़ा जाता है।

चित्र 7.10: संतूर

मृदंग

मृदंग का शाब्दिक अर्थ चिकनी मिट्टी है। यह दक्षिण भारत का एक लोकप्रिय वाद्य-यंत्र है जो कर्नाटक संगीत प्रदर्शित करने वालों को ताल प्रदान करता है। मृदंग एक शास्त्रीय वाद्ययंत्र है जो आघात से बजता है। यह विभिन्न नामों मृदंग, मृदंगम, मरूदगंम और मृथंगम नामों से जाना जाता है। एक छोटे मृदंग को बंगाल में खोल अथवा श्रीखोल कहा जाता है।

गोट्टू वाद्यम

गोट्टू वाद्यम को चित्रवीणा, महा नाटक वीणा नामों से भी जाना जाता है। यह एक दुर्लभ यंत्र है जिसे भारत के दक्षिणी भागों में बजाया जाता है। गोटूवाद्यम की लंबाई 2-3 फीट होती है और यह हथौड़े के आकार की वीणा के समान होता है। तंबूरे की तरह यह गर्दन के सहारे पर अवस्थित होता है और इसमें चार तार लगे होते हैं। कई बार इसे मृदंग के द्वितीय सहायक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता है।

चेंडा

बेलनाकार आकृति का वाद्य-यंत्र चेंडा केरल और कर्नाटक के कुछ भागों में बहुत लोकप्रिय है। यह वीणा जैसा वाद्य-यंत्र है और इसे कर्नाटक में चेंडे कहा जाता है। यह केरल में हिंदू

टिप्पणियाँ

धार्मिक कला के रूप में प्रयुक्त होता है। केरल में चेंड़ा का प्रयोग कथकली और कूडियाट्टम नृत्यों में और सामाजिक अनुष्ठानों में होता है।

रबाब

रबाब अरब का राष्ट्रीय वाद्य-यंत्र है। यह भारत में मध्य एशिया से अफ़गानिस्तान होते हुए पहुँचा। यह कश्मीर का सबसे लोकप्रिय वाद्य-यंत्र था और अकबर के समय में भी काफ़ी लोकप्रिय था। रबाब की पहचान मियाँ तानसेन के कारण बनी। तानसेन के शिष्यों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है- पहला रबाबीयास और दूसरा बीनकरास। उस्ताद प्यार ख़ान और बहादुर ख़ान मशहूर रबाबीयास थे।

ढोल, ढोलक, धाक

ढोल अत्यंत लोकप्रिय वाद्य-यंत्र और लोक-संगीत का प्रमुख अंग है। भारत में विभिन्न प्रकार के ढोल पाये जाते हैं। ये परिष्कृत से लेकर आदिवासियों और सामान्य लोगों द्वारा बजाए जाने वाला वाद्य-यंत्र हैं। बंगाल में ढोल बहुत लोकप्रिय है। ढोल का आकार ढोलक से बड़ा पर धाक से छोटा होता है और भारत के उत्तरी क्षेत्रों में यह बहुत लोकप्रिय है। धाक बंगाल में पूजा-समारोहों में बजाया जाता है।

खंजीरा

खंजीरा को खंजरी भी कहा जाता है। लोकगीतों एवं धार्मिक समारोह में बजाया जाने वाला यह सबसे प्राचीन वाद्य-यंत्र है। दक्षिण भारत के शास्त्रीय संगीत में इसका अहम स्थान है।

पखावज

पखावज दक्षिण भारतीय वाद्य-यंत्र मृदंग का छोटा रूप है। उत्तरी भारतीय संगीत में इसका विशेष स्थान है। ध्रुपद प्रकार की गायकी में इसका प्रयोग किया जाता है। मुगल शासन के दौरान स्वर, संगीत और नृत्य में इस महत्वपूर्ण वाद्य-यंत्र का प्रयोग किया जाता था।

भारतीय संगीत जगत आगे चलकर पश्चिमी वाद्य-यंत्रों जैसे वायलन, हारमोनियम, गिटार, कलेरिनेट और मंडोलीन के समावेशन से समृद्ध हुआ।

क्रियाकलाप 7.1

जब आप ढोल की आवाज़ सुनते हैं तो आप पर विशेष प्रकार का प्रभाव पड़ता है। किन्हीं तीन अन्य वाद्य-यंत्रों को सुनकर अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक भावनाओं को दर्ज करें।

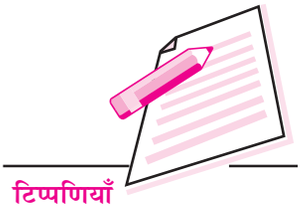

पाठगत प्रश्न 7.1

1. लोक संगीत पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

2. हिंदुस्तानी संगीत, कर्नाटक संगीत से किस प्रकार भिन्न है? उल्लेख कीजिए।

7.3 नृत्य

नृत्य एक प्राकृतिक अभिव्यक्ति है जिसका प्रादुर्भाव सौंदर्यात्मक भावना और शारीरिक क्रियाकलापों और हाव-भावों से जुड़ा हुआ होता है। ये प्राकृतिक सौंदर्यात्मक और रचनात्मक भाव ईश्वर को प्रसन्न करने से संबंधित थे। नृत्य का धर्म से जुड़ाव व्यापक प्रशंसा प्राप्त करने का कारण बना, लेकिन समय के साथ नृत्य के गैर-धार्मिक रूपों का भी विकास हुआ। इस प्रकार के नृत्यों को लौकिक नृत्य कहा जाता है जो विशिष्ट और दरबारी संस्कृति का भाग थे। नृत्य संस्कृति को सिंधु घाटी सभ्यता में खोजा जा सकता है। इसका प्रमाण दो प्रतिमाओं से मिला था। इनमें से एक हड़प्पा से प्राप्त पुरुष नर्तक के धड़ से पता चलता है। दूसरा मोहनजोदड़ों से प्राप्त महिला नर्तकी की आकृति है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नृतकों का जासूसी कार्य में लगे होने का संदर्भ मिलता है।

मध्यकाल के दौरान दो प्रकार के नृत्य थे। विशिष्ट वर्ग के लोगों के लिए शास्त्रीय नृत्य था और सामान्य जनता के लिए वे नर्तक होते थे जो मेलों, बाज़ारों, गलियों में नृत्य करते थे। व्यापारी लोग नर्तकियों और संगीतकारों को अपने साथ रखते थे और समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर उनके कार्यक्रम आयोजित करते थे।

चित्र 7.11: नृत्य करते हुए सूफ़ी, लगभग 1610 ईसवीं द्वारा अबूल हसन

उनकी कलाओं को सवाँरने के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाता था। ये कलाकार सुंदर गहने तथा आभूषण पहनते थे। गुजरात में हमें पुरुष नर्तकों का उल्लेख मिलता है। नृत्यकला में पारंगत व्यक्ति थे- मोहनराव, रंगराव, देशीराव और कान्हुराव। नृत्यकला के कौशल को पातरबाज़ी कहा जाता था। अत: नृत्य करने वाली लड़कियों को पतूर और पातर कहा जाता था। इन नर्तकों का कार्य गुप्त भावनाओं और सांसारिक आनंद को जागृत करना था, जबकि धार्मिक लोग आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति हेतु नृत्य करते थे। हमें 17वीं शताब्दी में सूफ़ी संतों द्वारा बनाई चित्रकला से इस प्रकार के नृत्य का पता चलता है जिसे समा कहा जाता था। मंदिरों में भी नर्तकियाँ होती थीं जिन्हें देवदासी कहा जाता था। वे भगवान को प्रसन्न करने के लिए नृत्य किया करती थीं।

हम नृत्यकला को दो भागों में बाँट सकते हैं:

1. शास्त्रीय नृत्य
2. लोकनृत्य

पाठ-11 में आप भारत में प्रचलित लोकप्रिय शास्त्रीय नृत्यों के रूपों; जैसे- भरतनाट्यम, मोहिनी अट्टम, मणिपुरी, ओड़िसी, कथकली, कथक और कुचीपुड़ी इत्यादि के विषय में पढ़ेंगे।

लोकनृत्य

लाई हराओबा

लाई हराओबा का शाब्दिक अर्थ 'ईश्वर का त्योहार' है। मणिपुर में किसी त्योहार के दौरान इस नृत्य के विभिन्न रूपों का प्रयोग करके ब्रह्माण्ड की रचना एवं उसके विनाश को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह नृत्य पूजा करने वाले विशेष पुरुष और महिला करते हैं, जिन्हें क्रमश: माइबा और माइबी कहा जाता है।

चित्र 1.12: लाई हराओबा

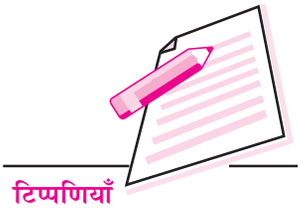

करागम

यह तमिलनाडु में प्रचलित नृत्य का एक रूप है। इसमें नर्तक समूह में नृत्य करते हैं। इस नृत्य में मुख्य नर्तक अपने सिरों पर चावल और पानी से भरे हुए घड़ों को रखकर नृत्य करते हैं। यह समूह अंत में जल एवं स्वास्थ्य की देवी के मंदिर जाते हैं। परंपरा के अनुसार यह नृत्य अगस्त महीने में किया जाता है।

चित्र 7.13: करागम

झीका दसेन

यह संथाल, झारखंड में संथाल आदिवासियों द्वारा किया जाने वाला लोकप्रिय नृत्य है। यह नृत्य पूजा के प्रकार जैसा है। संथालों की धारणा के अनुसार, इस नृत्य को करके कोई भी दैवीय शक्ति प्राप्त कर सकता है।

जागर

जागर नृत्य उत्तर भारत के उत्तराखंड के क्षेत्रों कुमाँऊ और गढ़वाल में ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। इस नृत्य में अनेकानेक पौराणिक एवं काल्पनिक गाथाओं के गीतों को गाया जाता है। स्त्री एवं पुरुष दोनों इस नृत्य में भाग लेते हैं।

भक्ता

भक्ता नृत्य चैत्र (चंद्र कैलेंडर के अंतिम महीने) मास में मयूरभंज (उड़ीसा) में किया जाता है। इसे त्योहार के रूप में तेली समुदाय द्वारा मनाया जाता है। यह अंतिम पंद्रह दिनों तक चलता है।

गरबा

गरबा गुजरात का एक लोकप्रिय नृत्य है। गरबा शब्द संस्कृत भाषा के शब्द गर्भा (गर्भ) और दीप (छोटा दीया) से लिया गया है। इस नृत्य को नवरात्र के अवसर पर किया जाता है। परंपरागत रूप से गरबा नृत्य को जलते हुए दीपक अथवा देवी शक्ति की प्रतिमा के चारों और इक्ट्ठा होकर किया जाता है। यह उत्सव नौ रात्रियों में किया जाता है। इस नृत्य में स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते हैं। इस नृत्य को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते हैं। इस दौरान देश-विदेश से आए पर्यटकों से गुजरात भर जाता है।

चित्र 7.14: गरबा

कवाडि अट्टम

इस नृत्य का संबंध तमिलनाडु से है और यह केवल पुरुष नर्तकों द्वारा ही किया जाता है। कवाडि नृत्य का उद्भव प्राचीन सुमय में तमिल लोगों द्वारा धार्मिक स्थानों की यात्रा करने के समय से माना जाता है। अपने मनोरंजन के लिए ये लोग लंबी यात्रा गाकर और नाच कर किया करते थे। इस नृत्य में नर्तक द्वारा एक खंभे, जिसके दोनों किनारों पर घड़े बंधे होते थे व जिनमें दूध अथवा नारियल पानी भरा होता है, का संतुलन बनाकर किया जाता है।

गिद्धा

यह पंजाब का एक ओजपूर्ण लोकनृत्य है। इस नृत्य को केवल महिलाएँ ही करती हैं। इस नृत्य में ढोल के अलावा अन्य किसी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता। औरतें गीत गाकर और ताली बजाते हुए वृत्ताकार में नृत्य करती हैं।

चित्र 7.15: गिद्धा

घूमर

घूमर राजस्थान का एक लोक नृत्य है, यह माना जाता है कि इसके उद्भव का श्रेय भील जनजाति को है। बाद में इसे राजस्थान के अन्य समुदायों ने भी अपना लिया। घूमर शब्द 'घूमना' से लिया गया है। इस नृत्य में देवी सरस्वती की पूजा की जाती है।

चित्र 7.16: घूमर

लावणी

लावणी शब्द 'लावण्य' से लिया गया है, जिसका अर्थ है सुंदरता। यह समस्त महाराष्ट्र राज्य में सबसे ज़्यादा लोकप्रिय नृत्य और संगीत के प्रकारों में से एक है। परंपरागत रूप से इसे केवल महिला कलाकार गीत गाकर करती हैं, परंतु किन्हीं विशेष अवसरों पर पुरुष भी लावणी गा सकते हैं।

चित्र 7.17: लावणी

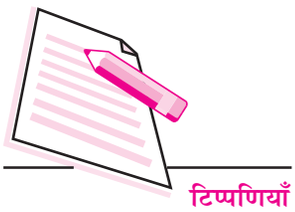

टिप्पणियाँ

लावणी नृत्य के इस रूप को 'तमाशा' के नाम से जाना जाता है। लावणी परंपरागत गीत और नृत्य का मिश्रण है जिसे मुख्यत: ढोलक की थाप पर किया जाता है जो ड्रम की तरह का वाद्य-यंत्र होता है। खुबसूरत महिलाएँ नौ गज की साड़ी पहनकर इस नृत्य को करती हैं।

गीतों को तीव्रता के साथ गाया जाता है। छंद, उत्साह और लय जो आनंदकारी होते है, इस गीत में होते हैं। लावणी का प्रादुर्भाव महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के शुष्क क्षेत्रों में हुआ था।

बिहू

बिहू नृत्य असम में बिहू पर्व से संबंधित है। इस नृत्य में स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते हैं। इस नृत्य को असम के परंपरागत संगीत के साथ किया जाता है। असम में इस नृत्य के विभिन्न रूप हैं; जैसे – 'देओरी बिहू नृत्य', 'मिसिंग बिहू नृत्य' इत्यादि। सुख-दुख के भावों की अभिव्यक्ति इन सभी रूपों में होती है।

मोरूलम

यह गोवा का लोक नृत्य है जिसे शिगमों त्योहार के अवसर पर किया जाता है। मोरूलम नाम 'मोर' से लिया गया है। नर्तक मोर के पंखों और फूलों की मालाओं को गले में पहनकर यह नृत्य करते हैं। परंपरा के अनुसार देवी-देवताओं को जागृत करने के लिए इस नृत्य को किया जाता है।

डांडिया

डांडिया गुजरात का एक प्रसिद्ध लोकप्रिय नृत्य है। इस नृत्य को गरबा के साथ नवरात्रि के अवसर पर किया जाता है। गरबा और डांडिया के मध्य मुख्य अंतर है कि डांडिया लकड़ी की छोटी डंडियों से किया जाता है, जबकि गरबा में हाथ और पैरों की विभिन्न गतियों द्वारा किया जाता है।

भांगड़ा

पंजाब में फसलों की कटाई के अवसर पर इस नृत्य को किया जाता है। भांगड़ा को पंजाब में बग्गा (युद्ध नृत्य) के साथ जोड़कर देखा जाता है। विदेशों में भी पंजाबी लोग इस नृत्य को लेकर गये हैं। यह नृत्य ढोल की थाप और चिमटे की आवाज़ पर किया जाता है। भांगड़ा में गीतों को जोरदार आवाज़ और जोश के साथ गाया जाता है।

कलबेलिया

कलबेलिया राजस्थान के मशहूर नृत्यों में से एक है। कलबेलिया जनजाति के लोगों द्वारा इस नृत्य को किया जाता है। यह नृत्य इन लोगों की संस्कृति का एक हिस्सा है। इसमें स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते हैं। कलबेलिया जनजाति का मुख्य पेशा साँपों को पकड़ना था। अत: इस नृत्य में साँपों की विभिन्न गतियों को दिखाया जाता है।

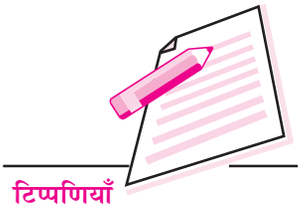

क्रियाकलाप 7.2

आपने त्योहार के अवसरों पर अपने आसपास अनेक नृत्य देखे होंगे। ऐसे किन्हीं दो नृत्यों पर अपने विचार लिखिए। जानकारी के आधार पर यह लिखने का प्रयास कीजिए कि (क) नृत्य करने वाले कौन हैं और नृत्य क्यों कर रहे हैं? (ख) क्या इसका कोई धार्मिक महत्व है? (ग) वे क्या गाते हैं, और उनके गाने का क्या अर्थ है? (घ) इसके पश्चात उन नर्तकों की भावनाओं को लिखें कि वे कैसे अपने हर्षोल्लास को नृत्य में शामिल करते हैं?

पाठगत प्रश्न 7.2

1. भारत के किन्हीं दो लोकनृत्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. मोरूलम का वर्णन कीजिए।
3. नृत्य पर एक टिप्पणी लिखिए।

7.4 भारतीय रंगमंच

रंगमंच की प्रथा काफी प्राचीन है और यह वेदों से जुड़ी है। रंगमंच शब्द नाटक की आरे संकेत करता है। नाटक में तीन मुख्य तत्व – संवाद, संगीत और नृत्य होते हैं। संस्कृत में नाटक शब्द के लिए नट, नाटक, नाट्य (अभिनेता और नाटक) शब्द प्रयुक्त होते हैं। आगे चलकर यह भी पता चला कि यह संस्कृत के मूल शब्द नृत, जिसका अर्थ है 'नृत्य' से बना है। अतः नाटक का उद्भव नृत्य से हुआ। नाटक की सुंदरता बढ़ाने के लिए इसमें संगीत जोड़ दिया गया। नाटक को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है।

1. मंच प्रदर्शन

मंच को तकनीकी रूप से जरजरा कहा जाता है। जरजरा के उद्भव की एक रोचक पौराणिक कथा है। जरजरा को इंद्र के वर्चस्व को स्थापित करने के रूप में माना जाता है। प्रदर्शन में दानवों अथवा राक्षसों को किसी भी प्रकार का विनाश करने से रोकना और अभिनय करने वालों को बल प्रदान करना भी इसका उद्देश्य था, ताकि वे अच्छा प्रदर्शन कर सकें। नाटक की रचना धार्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक विषयवस्तु पर आधारित होती थी। भारतीय नाट्य का सबसे प्राचीन और विश्वसनीय ग्रंथ भरत का 'नाट्यशास्त्र' है। संगीत और नाटक में पवित्रता लाने के लिए नाटक को पाँचवा वेद माना जाता है। नाटक में भाग लेने वाले कलाकारों को भरतपुत्र से संबोधित किया जाता हैं। वास्तव में भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की भौतिक मुद्राओं और हाव-भावों को जानने का मुख्य स्त्रोत मूर्तियाँ हैं। भारतीय संगीत और नृत्य ने कुलीन मुस्लिमों को कैसे प्रभावित किया, इसके बारे में घूमयातुल मुन्या नाम के गुमनाम फारसी लेखक ने 1374-75 में लिखा था। इसने संस्कृत के अनेक शब्दों को फ़ारसी में अनूदित किया था।

चित्र 7.18: मंच प्रदर्शन

13वीं शताब्दी में हमें स्त्री संगीतकारों एवं नर्तकियों के विषय मे जानकारी मिलती है। नुसरत ख़ातून और उसकी बेटी इस तरह की सांस्कृतिक कला में लोकप्रिय थीं। 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अबुल फ़ज़ल ने 36 पुरुष संगीतकारों की सूची बनाई है।

2. नुक्कड़ नाटक

नुक्कड़ नाटक मुख्यत: नुक्कड़ों, गाँवों के चौराहों, कारखानों के सामने, गाड़ी खड़ी करने वाली जगहों, खरीद केन्द्रों इत्यादि पर किए जाते हैं। ये मुख्यत: सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रकृति के होते हैं। नुक्कड़ नाटकों में दर्शकों और प्रदर्शन करने वालों के मध्य परंपरागत भेद अस्पष्ट है। नुक्कड़ नाटकों के अंतर्गत अन्य प्रदर्शन; जैसे- सड़क किनारे जादुई खेल दिखाना, तमाशा, विभिन्न प्रकार की आवाज़ निकालना इत्यादि भी आते हैं। ये नुक्कड़ नाटक स्वाभाविक रूप से काफ़ी पुराने हैं। यहाँ तक कि मध्यकालीन भारतीय समाज में भी इनके संकेत मिलते हैं। 17वीं शताब्दी में एक फ्राँसीसी यात्री जीन-बैपटिस्ट टेवेरियर ने सूरत से आगरा के रास्ते में एक मदारी के रोचक खेल को अपनी पुस्तक में लिखा है। वह बताता है, ''एक दिन अंग्रेज अध्यक्ष के साथ आगरा से सूरत पहँचते समय, कुछ मदारी उनके पास आए और कहने लगे कि क्या आप उनकी कला का प्रदर्शन देखेंगे। वह उनकी कला को देखने के लिए उत्सुक था। सबसे पहले उन्होंने एक तेज आग जलाई और उसमें लोहे की जंजीरों को गर्म होने के लिए रख दिया। इन गर्म जंजीरों को वे अपने शरीर पर मारने लगे। मुझे अहसास हुआ कि उन्हें दर्द हो रहा है, लेकिन वास्तव में उनके शरीर पर चोट का एक भी निशान नहीं था। फिर उन्होंने एक छोटी छड़ी ली और उसे ज़मीन में गाड़ दिया। उन्होंने एक से पूछा कि आप कौन-सा फल खाना चाहते हैं। उसने जवाब दिया - आम। तब एक जादूगर ने स्वयं को कपड़े से ढककर, ज़मीन पर पाँच-छ: बार उठक-बैठक लगाई। मैं उसके पास जाकर देखना चाहता था कि उस आदमी ने ऐसा कैसे किया। मैंने देखा कि उस व्यक्ति ने ब्लेड से अपनी भुजा को काट लिया था। उसने एक लकड़ी पर अपने खून से तिलक किया। हर बार जब भी वह ऊपर उठता वह छड़ी उसकी आँखों के नीचे बढ़ती जाती। तीसरी बार इसमें से टहनियाँ निकलीं और उनमें कलियाँ आनी शुरू हो गईं। चौथी बार वह पेड़-पत्तियों से भर गया तथा पाँचवी बार में हमने देखा उसपर फूल आ गये थे।''

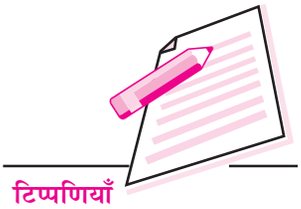

कठपुतली का खेल

कठपुतली भारतीय लोगों की एक महत्वपूर्ण एवं अद्‌भुत खोज है। कठपुतली का उद्‌भव ईसा पूर्व द्वितीय सदी में सिल्लपादिकरम में उल्लेखित है। कठपुतली शब्द लेटिन भाषा के शब्द 'पुपा' से लिया गया है जिसका अर्थ 'गुड़िया' है। कठपुतली प्रदर्शन की विषयवस्तु सामान्यत: 'रामायण' और 'महाभारत' महाकाव्यों से है। इसके अंतर्गत सभी रचनात्मक कलाएँ; जैसे- चित्रकारी, मूर्तिकला, नाटक, संगीत और नृत्य इत्यादि है। भारत में लगभग सभी प्रकार की कठपुतलियाँ पाई जाती हैं।

1. रस्सी से नियंत्रित की जाने वाली कठपुतली
2. परछाई कठपुतली
3. छड़ वाली कठपुतली
4. दस्ताने वाली कठपुतली

चित्र 7.19: कठपुतली प्रदर्शन

1. **रस्सी से नियंत्रित की जाने वाली कठपुतली :** कठपुतली का यह प्रकार कठपुतलियों को लचीलापन देने के लिए प्रयुक्त होता है। उनमें जोड़ होते हैं जिन्हें रस्सियों से नियंत्रित किया जाता है। कठपुतली का यह रूप राजस्थान, उड़ीसा, तमिलनाडु और कर्नाटक में काफ़ी प्रचलित है।

2. **परछाई कठपुतली :** परछाई कठपुतली चमड़े से बनी सीधी आकृति की होती है। इन्हें स्क्रीन के सामने दबाकर स्क्रीन के पीछे से रोशनी डाली जाती है जिससे रंग-बिरंगी परछाईयाँ बनती हैं। इस प्रकार के कठपुतली प्रदर्शन आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक में लोकप्रिय हैं।

3. **छड़ वाली कठपुतली :** इसमें कठपुतली को एक छड़ द्वारा नीचे से नियंत्रित किया जाता है। यह दस्ताने वाली कठपुतली की तरह होती है परंतु इसका आकार बहुत बड़ा होता है। कठपुतली का यह रूप पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में पाया जाता है।

4. **दस्ताने वाली कठपुतली :** दस्ताने वाली कठपुतली को हस्त अथवा हथेली कठपुतली भी कहा जाता है। इनका नियंत्रण कठपुतली वाला अपने हाथ से करता है। तर्जनी उँगली को कठपुतली के सिर में डाला जाता है तथा मध्यमा और अँगूठे को बाँहों वाली जगह में रखा जाता है। इन उँगलियों गतिविधियों से कठपुतली सजीव हो जाती है।

नुक्कड़ नाटक

नुक्क्ड़ नाटक सड़कों पर किये जाने वाले नाटकों का एक रूप है। नुक्कड़ नाटक प्राचीन समय से जारी है। आज के दौर में नुक्कड़ नाटक की विषयवस्तु बदल गई है। उदाहरण के लिए आजकल नुक्कड़ नाटक की विषयवस्तु सामाजिक-राजनीतिक समस्याएँ है। वर्तमान के मुद्दों के बारे में लोगों के बीच जागृति लाना नुक्कड़ नाटक प्रमुख उद्देश्य है। आम जनता में यह बहुत लोकप्रिय है। इसकी लोकप्रियता के कारण ही आज सैकड़ों अकादमी; जैसे- जन नाट्य मंच, आतिश और योग ज्योति इंडिया फाउंडेशन स्थापित हुई जो नुक्कड़ नाटक का प्रचार-प्रसार कर रही है। सफदर हाशमी उन प्रसिद्ध नुक्कड़ नाटककारों में से एक हैं जो इसके भाष्यकार भी हैं। उद्देश्यपरक नुक्कड़ नाटक से प्रसिद्ध होने के कारण उन्होंने 2 जनवरी, 1989 को अपने प्राणों का बलिदान दे दिया।

क्रियाकलाप 7.3

अपने पड़ोस में कठपुतली प्रदर्शन को देखकर निम्नलिखित सूचनाओं को लिखें :

1. ऐसा प्रदर्शन करने वाले लोग कौन हैं और कहाँ से आये हैं?
2. वे यह प्रदर्शन कब से कर रहे हैं?
3. वे किस प्रकार की कठपुतलियों से प्रदर्शन करते हैं?
4. वे जनता को क्या संदेश देना चाहते हैं?
5. उनके प्रदर्शन को देखने वाले लोगों की प्रतिक्रिया जानिए।
6. अंत में अपने विचारों को देते हुए यह पहचान कीजिए और लिखिए (क) समानता और (ख) असमानता।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. रंगमंच के प्रारंभिक उद्भव की विवेचना कीजिए।
2. नुक्कड़ नाटक पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. जरजरा के प्रचलित उद्भव पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

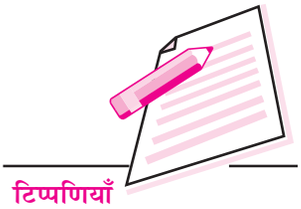

आपने क्या सीखा

- ऐसे कुछ प्रसिद्ध संगीतकार हैं जिनका नाम हमेशा अमर रहेगा। इनमें – (1) हज़रत अमीर खुसरो और (2) मियाँ तानसेन का नाम है।
- दक्षिण भारतीय संगीत जिसे कर्नाटक संगीत के नाम से भी जाना जाता है, को भक्त-संतों से पहचान मिली जिन्होंने 8वीं शताब्दी में स्वयं को ईश्वर से जोड़कर उन्हें प्रसन्न करने के लिए प्रशंसा गीत गाये।
- पश्चिमी राजस्थान में एक समुदाय है जिसे ढ़ाढ़ी कहा जाता है। उनका मुख्य पेशा राजाओं के साथ युद्धक्षेत्र में जाकर दुश्मन सैनिकों के विरुद्ध सेना में जोश भरना था।
- लोकसंगीत स्थानीय परंपरा और आम जनता का हिस्सा है।
- कश्मीर में लोकप्रिय संगीत – छकरी, तंबूर नग़मा और बच-नग़मा है। यह समूह में और छोटे नृत्य के साथ गया जाता है।
- मशहूर गायकों और प्रदर्शनकारियों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले विभिन्न वाद्य-यंत्रों में बांसुरी, तानपूरा, तबला, वीणा, सितार, शहनाई, सरोद, सारंगी, संतूर और मृदंग इत्यादि हैं।
- भारत में प्रचलित लोकप्रिय नृत्यों में- भरतनाट्यम, मोहनी अट्टम, मणिपुरी, ओडिशी, कथकली, कथक, कुचीपुड़ी इत्यादि हैं।
- नाट्य में तीन मुख्य तत्व (1) संवाद, (2) संगीत और (3) नृत्य होते हैं।
- रंगकला को मुख्यत: निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटा जा सकता है-

  1. रंगमंच प्रदर्शन
  2. नुक्कड़ थियेटर
  3. कठपुतली प्रदर्शन
  4. नुक्कड़ नाटक।

पाठांत प्रश्न

1. भारत में संगीत के विभिन्न रूपों के विकास का उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।
2. भारत में संगीत के विभिन्न वाद्य-यंत्रों पर वर्णनात्मक टिप्पणी लिखिए।
3. भारत में शास्त्रीय नृत्य के विभिन्न रूप कौन-कौन से हैं? उनकी सूची बनाइए।
4. भारत में नृत्य की प्रारंभिक विकास पर चर्चा कीजिए।
5. नुक्कड़ थियेटर से आप क्या समझते हैं? टवेरियर द्वारा आगरा से सूरत यात्रा के दौरान वर्णित नुक्कड़ नाटक का विवरण प्रस्तुत कीजिए।
6. भारत में पाई जाने वाली कठपुतलियों के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. संगीत से संबंद्ध आम जनता द्वारा मेलों, त्योहारों/विवाह-समारोहों में आनंद उठाना।
2. हिंदुस्तानी संगीत भारत-तुर्की रूप का मिश्रण है, जबकि कर्नाटक संगीत ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए बजाया जाता है।

7.2

1. डांडिया नवरात्रि के अवसर पर प्रदर्शित किया जाता है। कलबेलिया एक जनजातिय नृत्य है इसमें साँप की विभिन्न गतियों को नृत्य में दिखाया जाता है।
2. गोवा नृत्य को शिंग्रो त्योहार पर किया जाता है।
3. नृत्य एक प्राकृतिक अभिव्यक्ति है जिसकी उत्पत्ति सौंदर्यबोध और भावना से साकार रूप में प्रकट होती है। हम नृत्य की कलाओं को दो भागों (1) शास्त्रीय नृत्य और (2) लोक नृत्य में बाँट सकते हैं।

7.3

1. रामायण और महाभारत
2. रंगमंच पर पताका लगाकर दानवों अथवा राक्षसों से रंगमंच की रक्षा करना है ताकि वे इसमें व्यवधान उत्पन्न न कर सकें।

8

पर्यटकों को लुभाती भारतीय वास्तुकला

दिल्ली, आगरा, जयपुर, मुंबई और कोलकाता शहरों की यात्रा करने के अलावा अन्य शहरों की यात्रा कर रहे भारतीय एवं विदेशी पर्यटक यहाँ सुन्दर इमारतों को पायेंगे। ये इमारतें, स्मारक, महल, मंदिर, चर्च और मस्जिद हो सकते हैं। कई पीढ़ियाँ इन अड़िग और मज़बूत रूप से खड़ी इमारतों का हिस्सा रही हैं, जो हमें अपने गौरवशाली अतीत की याद दिलाती हैं। इसलिए कला एवं वास्तुकला भारतीय संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। आज हम जिस वास्तुकला में विशिष्ट-विशेषताओं को देखते हैं वह भारतीय इतिहास के दीर्घ काल में विकसित हुई हैं। भारतीय वास्तुकला के प्राचीन और महत्वपूर्ण साक्ष्य हमें हड़प्पा सभ्यता के शहरों में मिलते हैं जो अद्वितीय शहर योजना को दर्शाता है। हड़प्पा काल से पहले वास्तुकला की शैलियों को हिंदू, बौद्ध और जैन में वर्गीकृत किया गया है। मध्यकाल ने वास्तुकला की फारसी और स्वदेशी शैलियों के मिश्रण को देखा। इसके पश्चात् औपनिवेशिक काल में भारत को पश्चिमी वास्तुकला ने प्रभावित किया। इस प्रकार भारतीय वास्तुकला स्वदेशी शैलियों और बाह्य प्रभावों का संश्लेषण है, जिसने इसे एक अद्वितीय गुण प्रदान किया है। इस रोचक एवं महत्वूपर्ण पाठ्यक्रम के विद्यार्थी होने के नाते आपको भारतीय वास्तुकला के साथ इससे जुड़े स्मारकों को जानना और भी महत्वपूर्ण है, ताकि आप स्वयं के साथ-साथ पर्यटक ग्राहकों का मार्गदर्शन कर सकें।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- विभिन्न समय मे बने हुए भारतीय वास्तुकला एवं मूर्तिकला की विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे;
- भारतीय वास्तुकला में वर्ष दर वर्ष हुए विकास को जान सकेंगे;
- भारतीय वास्तुकला के विकास में बौद्ध एवं जैन समुदायों के योगदान को पहचान सकेंगे;
- भारत के मंदिरों के निर्माण में गुप्त, पल्लव और चोल शासकों द्वारा प्रयुक्त वास्तुकला का वर्णन कर सकेंगे;

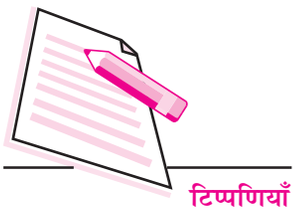

टिप्पणियाँ

- मध्यकाल के उन विभिन्न प्रभावों की पहचान कर सकेंगे जिन्होंने भारतीय वास्तुकला पर छाप छोड़ी; और
- औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत महत्वपूर्ण वास्तुकला शैलियों को इंगित कर सकेंगे।

8.1 वास्तुकला का उद्भव और भारतीय स्वरूप

भारतीय वास्तुकला देश के विभिन्न भागों और क्षेत्रों में विभिन्न युगों में विकसित हुई। इन प्राकृतिक और पूर्व एतिहासिक और ऐतिहासिक कालों के अलावा भारतीय वास्तुकला के विकास को सामान्य तौर पर महान एवं महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विकास ने प्रभावित किया था। सामान्यत: उप-महाद्वीप में महान साम्राज्यों के उद्भव एवं पतन ने भारतीय वास्तुकला को प्रभावित कर इसे नवीन आकार प्रदान किया। जिसका प्रभाव देश के विभिन्न क्षेत्रों पर देखा जा सकता है। इन विभिन्नताओं को इन स्थानों का भ्रमण करने वाले पर्यटक देख सकते हैं।

वास्तुकला एक आधुनिक घटना नहीं है। गुफा में रहने वाले स्त्री और पुरूषों ने जब अपना आश्रय बनाना शुरू किया, इसका उद्भव तभी से हो गया। इसने उनके रहने लायक स्थानों पर घर बनाने की खोज को भी जाग्रत किया जिसमें अनर्तचिन्हित सौन्दर्य था, जिसे देखकर आँखों को आनंद की अनुभूति होती थी। इस प्रकार वास्तुकला का उद्भव हुआ जो गृह निर्माताओं की आवश्यकता, कल्पना, क्षमता तथा श्रमिकों की योग्यता का मिश्रण था। इसने स्थानीय और क्षेत्रीय सांस्कृतिक परम्पराओं और भिन्न-भिन्न समय की सामाजिक, आर्थिक, संपन्नता, धार्मिक क्रियाकलाप को भी शामिल किया। वास्तुकला का अध्ययन हमें सांस्कृतिक विविधताओं के विषय में बताता है और भारत की संपन्न परंपराओं को समझने में हमारी मदद करता है।

8.2 हड़प्पा काल

पर्यटकों के लिए भ्रमण एवं अध्ययन करने का सबसे रोचक स्थान सिंधु घाटी की सभ्यता है जिसके कुछ भाग भारत में पाए जाते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के हड़प्पा और मोहनजोदड़ों एवं अन्य स्थानों की खुदाई ने बहुत ही आधुनिक शहरी सभ्यता को प्रकट किया जिसमें निपुण नगर योजना और तकनीकी कौशल की जानकारी मिलती है। उन्नत जल निकासी प्रणाली के साथ नियोजित सड़कें और भवन दर्शाते हैं कि ऐसी उच्च संस्कृति भारत में विकसित हुई। जाहिर है कि हड़प्पा के लोग तीन प्रकार की इमारतों, रहने वाले घर, स्तंभित हॉल और सार्वजनिक स्नानागार का निर्माण करते थे। यदि आप पर्यटन को अपना पेशा बनाना चाहते है, तो आपको कुछ तथ्यों की जानकारी होना आवश्यक है ताकि आप पर्यटकों का मार्गदर्शन कर सकें।

हड़पा वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ उनकी उच्च दर्जे की नगर योजना कौशल है जो स्पष्टतया ज्यामितीय आकार अथवा ग्रीड की रूपरेखा में बनाए गए थे। सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं और बड़े नियोजित तरीके से बनाई गई थीं। सिंधु घाटी में अधिवासों को नदी किनारे बनाया गया था जिन्हें अक्सर भयंकर बाढ़ नष्ट कर देती थी। इन आपदाओं के बावजूद सिंधु घाटी के लोगों ने उसी जगह नये निर्माण किए। इस प्रकार इन परत दर परत बसे अवशेषों का पता यहाँ पर हुई खुदाई से हुआ। सिंधु घाटी सभ्यता का अन्तिम पतन लगभग ईसा से दो

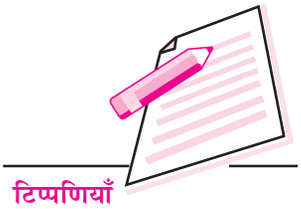

टिप्पणियाँ

हजार वर्ष पूर्व में हुआ जो आज तक एक रहस्य बना हुआ है। गुजरात में एक जगह लोथल से जहाज बनाने के स्थान (गोदी बाड़ा) अवशेष प्राप्त हुए है जिससे यहाँ पर समुद्री मार्ग से व्यापार होने का पता चलता है।

> अच्छी तरह पकाई हुई ईटों से अनेक पर्तों में गृह निर्माण किया जाता था जो काफी मजबूत होते थे। इनकी मजबूती का पता इसी से चलता है कि पाँच हजार वर्षों के विनाश के बावजूद वे सफलतापूर्वक बची रही हैं।

हड़प्पा वासियों को मूर्तिकला और शिल्प का ज्ञान था। मोहनजोदड़ों से मिली नृत्य करती लड़की की कांसे की मूर्ति विश्व में प्रथम मूर्तिकला का प्रमाण है। एक पुरुष की योग करती हुई मिट्टी की मूर्ति को भी खुदाई से प्राप्त किया गया। खुदाई में सुन्दर व्यक्तिगत गहने, मुलायम पत्थरों से बनी मोहरें जिन पर चित्रों से कुछ व्यक्त किया गया था तथा कूबड़ वाले बैलों की आकृतियाँ और पशुपति गेंडा की मूर्ति भी मिली है।

इसके बाद वैदिक आर्यों का यहाँ आगमन हुआ। ये लोग लकड़ी, बांस और कुशा से बने घरों में रहते थे। आर्य संस्कृति एक ग्रामीण संस्कृति थी। अत: कोई भी यहाँ भव्य इमारतों के उदाहरण नहीं ढूंढ सकता है। ऐसा इसलिए था क्योंकि आर्यों ने शाही महलों के निर्माण के लिए खराब होने वाली सामग्रियों का प्रयोग किया। जैसे लकड़ी जो समय के साथ नष्ट होते गए। वैदिक काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता अग्नि वेदी को बनाना था जो उस समय के लोगों के सामाजिक और धार्मिक जीवन का एक अहम हिस्सा थी और आज भी है। अधिकांश हिंदुओं के घरों में विशेषकर शादी समारोह के अवसर पर ये अग्निवेदियाँ महत्वपूर्ण भूमिक अदा करती हैं। जल्दी ही आंगनों और मंडपों में अग्निवेदियों की स्थापना अग्नि के पूजन के लिए हुई जो वास्तुकला की महत्वपूर्ण विशेषता थी। हमें आश्रमों और गुरुकुलों का भी उल्लेख मिलता है। दुर्भाग्य से आज वैदिक काल के ढांचों के अवशेषों को देखा नहीं जा सकता। वास्तुकला के इतिहास में उनका योगदान अपने घरों के निर्माण में लकड़ी के साथ ईंटों और पत्थरों का प्रयोग था।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत ने अपने इतिहास के एक महत्वपूर्ण चरण में प्रवेश किया। उस समय दो नवीन धर्मों- जैन और बौद्ध का आविर्भाव हुआ जिसने पूर्व वास्तुकला शैली के विकास में मदद की। बौद्ध स्तूपों का निर्माण उन जगहों पर हुआ जहाँ बुद्ध के अवशेषों को संरक्षित करके रखा गया था। जहाँ-जहाँ बुद्ध से सम्बन्धित प्रमुख घटनाएँ घटी थी वहाँ-वहाँ स्तूपों का निर्माण मिट्टी के बड़े टीलों से किया गया था, जिन्हें बड़ी ही सावधानी से मिट्टी की छोटी ईंटों से चारों तरफ से घेरकर पकाया गया था। एक स्तूप का निर्माण उनकी जन्म स्थली लुम्बिनी में, दूसरा गया में जहाँ बौद्ध वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था, तीसरा सारनाथ में जहाँ उन्होंने पहला धर्मोपदेश दिया तथा चौथा कुशीनगर में हुआ जहाँ पर उन्हें महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई।

बुद्ध के समाधि स्थल पर टीले और बुद्ध के जीवन की मुख्य घटनाओं के स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गए क्योंकि ये देश के अतिमहत्वपूर्ण स्थापत्य कलाओं में से एक हैं। बौद्धविहार और वाचनालय, शिक्षा एवं शिक्षा ग्रहण करने के लिए बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियों के लिए महत्वपूर्ण बन गए। केंद्रों की स्थापना इन स्थानों पर हुई। आम जनता और संन्यासियों के लिए शिक्षण और पारस्परिक व्यवहार हेतु सम्मेलन कक्षों की भी स्थापना की गई।

अब से धर्म ने वास्तुकला को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। जब बौद्धों और जैनियों ने स्तूपों, विहारों और चैत्यों का निर्माण शुरू किया, तब प्रथम मंदिर निर्माण वास्तुकला गुप्त काल में हुई। यह ज्ञान आपको पर्यटक के रूप में इनके महत्व को समझने में सहायक होगा।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. भारतीय वास्तुकला के क्रमिक विकास से आप क्या समझते हैं?
2. हड़प्पा वासियों ने अपनी सभ्यता की रक्षा कैसी की?
3. हड़प्पा लोगों का तकनीकी कौशल किस प्रकार दिखायी देता था?
4. भारत में प्रथम मंदिर की स्थापना कब हुई?

8.3 प्रारंभिक ऐतिहासिक काल

मौर्य काल (322–182 ई.पू.) में, विशेषकर अशोक के काल में वास्तुकला में काफी प्रगति हुई। मौर्य कालीन कला और वास्तुकला में फारसी और यूनानी प्रभाव की झलक दिखायी पड़ती है। अशोक के शासन काल में कई विशाल शिलाओं की स्थापना की गई जिनपर 'धम्म' की शिक्षाओं को उकेरा गया। सबसे महत्वपूर्ण खंभों जिनपर जानवरों की आकृतियाँ बनी थी अपने आप में अद्भूत और शानदार हैं। सारनाथ के अशोक स्तंभ को भारतीय गणराज्य ने राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है। प्रत्येक शिला का वजन लगभग 50 टन और ऊँचाई 50 फीट है।

चित्र 8.1: बौद्ध का साँची स्तूप

साँची और सारनाथ स्तूप मौर्य वास्तुकला की उपलब्धियों के प्रतीक हैं। साँची स्तूप के दरवाजों पर चित्रित सुन्दर दृश्यों को जातक कथाओं से लिया गया है जो वास्तुकारों के कौशल और सौंदर्य बोध का नमूना है। (चत्र 8.1)

यूनानी और भारतीय कला के मिश्रण से गंधार कला का विकास हुआ जो बाद में विकसित हुई। बुद्ध और बोधिसत्व के सजीव चित्रों वाली मूतियों को यूनानी देवता की तरह पत्थर, टेरीकोटा, सीमेंट और चिकनी मिट्टी से बनाया गया था।

चित्र 8.2

चित्र 8.3: नागार्जुनकोंडा

नागार्जुनकोंडा

नागार्जुनकोंडा एक और अन्य स्थान है जो बौद्ध वास्तुकला के लिए विख्यात है। गुप्त काल को हिंदू मंदिरों के निर्माण का उद्भव काल माना जाता है। इसका उदाहरण देवगढ़ (झांसी जिला) का मंदिर है। जिसमें एक केन्द्रीय गुफा अथवा गर्भगृह है जहाँ पर देवी की मूर्ति रखी गयी थी। दूसरा मंदिर भीतरगांव (कानपुर जिले) मे है ये दोनो इस काल के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। (चित्र 8.2 तथा 8.3)

गुफा वास्तुकला

गुफा वास्तुकला का विकास भारतीय वास्तुकला के इतिहास की एक अन्य अनोखी विशेषता है। यह भारतीय वास्तुकला के इतिहास का एक महत्वपूर्ण चरण है। द्वितीय शताब्दी से लेकर 10वीं शताब्दी के मध्य हुई खुदाई में हजारों गुफाओं का पता चला है। इन गुफाओं में महाराष्ट्र की अजन्ता और एलोरा की गुफाएँ और मध्यप्रदेश के विदिशा की उदयगिरी गुफा प्रसिद्ध है। इन गुफाओं में बौद्ध विहार, चैत्य के साथ-साथ मंडप और हिंदू देवी देवताओं के खंभों से बने मंदिर हैं।

चित्र 8.4: महाबलीपुरम में स्मारकों का समूह

चट्टान काटकर बनाए गए मंदिर

ईसा युग के प्रारंभिक काल में पश्चिमी दक्कन भाग में चट्टान काटकर बनाये गए मंदिरों के प्राचीन अवशेष खुदाई में प्राप्त किए गए। कार्ले के चैत्य में सुन्दर बड़े कमरें, सुसज्जित दीवारें मिलीं जो चट्टान काटकर बनाए गए मंदिरों का अद्भुत उदाहरण है। राष्ट्रकुटों द्वारा एलोरा में निर्मित कैलाश मंदिर और पल्लवों द्वारा महाबलीपुरम में बनवाया गया 'रथ' मंदिर चट्टान काटकर बनाये गये मंदिरों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। संभवतया चट्टानों के स्थायित्व और शाश्वत रूप से अडिग खड़े ये मंदिर कला की चाहत रखने वाले एवं गृह निर्माताओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। (चित्र 8.4)

स्वतंत्र रूप से खड़े मंदिर

गुप्त काल में शुरू हुई मंदिर निर्माण की गतिविधियाँ पश्चातवर्ती कालों में निरंतर प्रगति करती रही। दक्षिण भारत में पल्लव, चोल, पाड्य, होयसाल तथा बाद में विजयनगर साम्राज्य के शासक महान मंदिरों के निर्माता थे। पल्लव शासकों ने महाबलीपुरम में तट मंदिर बनवाया। पल्लवों ने काँचीपुरम में अन्य संरचना वाले कैलाशनाथ मंदिर और वैकुण्ठ पेरूमल मंदिरों का निर्माण करवाया।

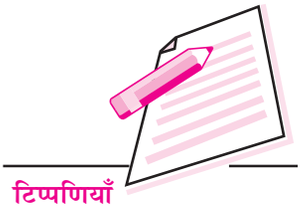

चोलों ने कई मंदिरों का निर्माण करवाया जिनमें तंजौर में स्थित वृहदेश्वर मंदिर सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। चोलों ने दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला की नवीन शैली जिसे द्रविड़ शैली कहा गया को विकसित किया। इसमें विमान अथवा शिखर, ऊँची दीवारें तथा एक वृहत दरवाजा जिसपर गौपुरम था, को विकसित किया। शानदार मंदिरों को बेलूर में बनवाया गया। जहाँ पत्थरों पर खुदाई ने अपनी चरम सीमा प्राप्त की।

उत्तर एवं पूर्वी भारत में भी सुन्दर मंदिरों का निर्माण हुआ। इन मंदिरों में जिस शैली का प्रयोग किया गया उन्हें 'नागर' शैली कहा जाता है। इनमें से अधिकांश में शिखर (घुमावदार छत्त) गर्भगृह तथा मंडप थे।

उड़ीसा में कुछ सर्वाधिक सुन्दर मंदिर हैं जैसे गंग शासकों द्वारा बनवाया गया लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर कर मुक्तेश्वर मंदिर तथा पुरी में जगन्नाथ मंदिर। कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण पूर्वी गंग शासक नरसिम्ह देव प्रथम ने 13वीं शताब्दी में करवाया था। यह मंदिर सूर्य को समर्पित है जिसका आकार बारह पहियों वाले रथ के समान है।

खजुराहों मंदिर परिसर का निर्माण चन्देल शासकों द्वारा 10वीं और 11वीं शताब्दी के मध्य में मध्य प्रदेश क्षेत्र के बुन्देलखंड में करवाया गया। इनमें सबसे महत्वपूर्ण कन्देरिया महादेव मंदिर है। (चित्र 8.5)

चित्र 8.5: कन्देरिया महादेव मंदिर

राजस्थान के माऊंट आबू में दिलवाड़ा मंदिर है जो जैन तीर्थाकरों को समर्पित हैं। इन मंदिरों का निर्माण शुद्ध सफेद संगमरमर पत्थरों से तथा इन्हें अद्भुत मुर्तिकलाओं से सुसज्जित किया गया था। इनका निर्माण सोलंकी शासकों के संरक्षण में हुआ था।

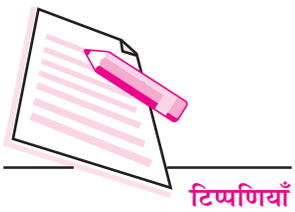

टिप्पणियाँ

गुजरात में सोमनाथ मंदिर, बनारस का विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का गोविन्द मंदिर, गुवाहाटी में कामाख्या देवी मंदिर, कश्मीर में शंकराचार्य मंदिर तथा कोलकाता के कालीघाट में स्थित काली मंदिर, ऐसे कुछ महत्वपूर्ण मंदिर हैं जो भारतीय उपमहाद्वीप में मंदिर निर्माण गतिविधियों के साक्ष्य हैं।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. मौर्य वास्तुकला की उपलब्धियों को दर्शाने वाले किन्ही दो स्तूपों के नाम लिखें।
2. अशोक साम्राज्य में धम्म शिक्षा को कहाँ पर खुदवाया गया था?
3. भारत में वास्तुकला की कुछ पद्धतियों के नाम लिखिए।
4. उदयगिरि की गुफाएँ कहाँ हैं?
5. एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण किसने करवाया?
6. महाबलीपुरम के रथ मंदिर का निर्माण किसने करवाया?
7. वास्तुकला की द्रविड़ शैली क्या है?
8. तंजौर में चोल राजा द्वारा बनवाये गए मंदिर का नाम बताइएँ।
9. वास्तुकला की नागर शैली को परिभाषित कीजिए।
10. कोणार्क में सूर्य मंदिर को किसने बनवाया?
11. राजस्थान के माऊंट आबू के प्रसिद्ध जैन मंदिरों का नाम बताएँ।

8.4 मध्यकाल में वास्तुकला

दिल्ली सल्तनत

13वीं शताब्दी में तुर्कों के आगमन के साथ ही भारत में वास्तुकला की एक नवीन शैली – फारसी, अरबी और मध्य एशिया का उद्भव हुआ। इन इमारतों की यांत्रिक विशेषता – गुम्बद, मेहराब, और मीनारें थीं। शासकों द्वारा बनवाये गए महलों, मस्जिदों और कब्रों की अपनी विशेषताएँ थीं जिनमें स्वदेशी वास्तुकला को मिश्रित कर वास्तुकला की एक नवीन संश्लेषण विधि को प्राप्त किया गया था। ऐसा इसिलए हुआ क्योंकि दिल्ली के तुर्क शासकों ने यहाँ के स्थानीय शिल्पकारों जो अपने काम में बहुत निपुण थे और जिन्होंने पहले भी सुन्दर इमारतों का निर्माण किया था की सेवाओं को अपने लिए प्रयुक्त किया। परिणामस्वरूप जिन इमारतों को बनाया गया उनपर इस्लाम संरचना के साथ-साथ स्थानीय रूपरेखा और शिल्पकारी भी साफ़ दिखाई देती है। उनकी रूपरेखा में मध्यमार्ग को अपनाया गया जिसमें इस्लाम और स्थानीय शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है।

चित्र 8.6: कुतुबमीनार दिल्ली

इस समय की सबसे पहली इमारत दिल्ली में एक मस्जिद और कुतुबमीनार है। कुतुबमीनार एक लाट या मीनार है जिसकी ऊँचाई 70 फीट है। यह एक तंग लाट है जिसमें पांच तल हैं। मस्जिद और लाट दोनों पर सुन्दर लिखावट उत्कीर्ण की गई है। सुल्तानों ने बाद में भी कई सुन्दर इमारतों का निर्माण करवाया। अलाउद्दीन खिलजी ने कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद का आकार बढ़वाकर इसके अहाते में एक वृहत दरवाजे को बनवाया। इस वृहद दरवाजे को अलाई दरवाजा कहा जाता है जो एक सुन्दर वस्तुकला की रूपरेखा को दर्शाता है। इस इमारत की सुन्दरता बढ़ाने के लिए इसमें सजावटी पदार्थों का प्रयोग किया गया था। उसने दिल्ली में हौजखास का भी निर्माण करवाया था जो द्रवचालित संरचना थी। मोहम्मद तुलगक, फिरोज तुगलक की कब्रें तथा तुगलकाबाद का किला इसके कुछ उदाहरण हैं। यद्यपि इनकी इमारतें सुंदर नहीं थी, लेकिन इनमें मजबूत दीवारें थी जो विशाल और आकर्षक थी। अफगान शासन के समय दिल्ली में इब्राहिम लोधी की कब्र तथा सासाराम में शेरशाह की कब्र बनवाई गई थी। इस काल की वास्तुकला शैली यह दर्शाती है कि किस प्रकार से स्थानीय शैली को अपनाया गया और उन्हें कैसे प्रयुक्त किया गया। इस समय के दौरान तुर्क यहाँ पर बसने की प्रक्रिया में लगे हुए थे। यहाँ के शासकों को मंगोलों से धमकियाँ मिल रही थी जिन्होंने उत्तर में अचानक आक्रमण कर दिया था। इसी कारण इस समय बनायी गई इमारतें मजबूत, दृढ़ और उपयोगी थी।

क्षेत्रीय साम्राज्य

बंगाल, गुजरात और दक्कन में क्षेत्रीय साम्राज्यों की स्थापना के साथ सुन्दर इमारतें जिनकी अपनी शैलीयाँ थी को बनाया गया। जामा मस्जिद, सादी सैयद मस्जिद और अहमदाबाद का हिलता टॉवर इस वास्तुकला के उदाहरण हैं। मध्य भारत के मांडू में जामा मस्जिद, हिंडोला महल तथा जहाज महल का निर्माण किया गया। दक्कन में सुल्तानों ने बहुत सी इमारतों का निर्माण कराया। गुलबर्ग स्थित जामा मस्जिद, बीदर में महमूद गवन का मदरसा, इब्राहिम रौजा, बीजापुर का गोल-गुम्बज

तथा गोलकुंडा का किला कुछ प्रसिद्ध इमारतें हैं। गोल-गुम्बज में विश्व की सबसे बड़ी गुम्बद है। इन सभी इमारतों का प्रारूप एवं शैली उत्तर भारत की इमारतों से भिन्न हैं। बंगाल में कई ढांचों की आयताकार शैली और छतों की अजीब शैली क्षेत्रीय वास्तुकला की महत्वपूर्ण विशेषता है, जैसे बंगाल में अदीना मस्जिद और पडुंआ में जलाल-उ-दीन की कब्र, खिल दरवाजा तथा गौर में तंतीपरा मस्जिद। जौनपुर में शराकी शासकों द्वारा निर्मित अटाला मस्जिद में विशाल स्क्रीन है जो गुम्बद को ढ़के हुए हैं, जबकि मालवा में होशंगशाह की कब्र पूर्ण रूप से संगमरमर से बनी है, जिसमें पीले और काले मार्बल को सुन्दरता से शिल्पकारों ने जड़ा है। विजयनगर जो इस दौरान स्थापित हुआ था, के शासकों ने भी अनेक सुन्दर इमारतों और मंदिरों का निर्माण करवाया। यद्यपि आज केवल उनके अवशेष ही बचे हैं फिर भी हम्पी में विथालस्वामी और हजर रमा के मंदिर इसके अच्छे उदाहरण हैं।

मुगल

मुगलों के आगमन के साथ वास्तुकला के एक नवीन युग की शुरुआत हुई। शैली का संश्लेषण जिसकी शुरूआत पहले ही हो गयी थी, इस समय अपने चरम पर थी। मुगल वास्तुकला का आरम्भ अकबर के शासन के दौरान हुआ। दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा मुगल वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति है। इस शानदार इमारत में लाल पत्थरों का प्रयोग किया गया था। इसका एक मुख्य दरवाज है और मकबरा बगीचे के बीचो-बीच बना है। कई इतिहासविद् इसे ताजमहल के पूर्व की कृति मानते हैं। अकबर ने आगरा और फतेहपुर सीकरी में किले बनवाये। बुलंद दरवाजा मुगल साम्राज्य की भव्यता को दर्शाता है। इस इमारत का निर्माण अकबर की गुजरात विजय के बाद कराया गया था। बुलंद दरवाजा की मेहराब 41 मीटर ऊँची है और संभवत: यह विश्व का सबसे ऊँचा मुख्य दरवाजा है। सलीम चिश्ती की दरगाह, जोधाबाई का महल, इबादत खाना बीरबल का घर तथा फतेहपुर सीकरी में अन्य इमारतें फारसी एवं भारतीय वास्तुकला का संश्लेषण प्रस्तुत करती

चित्र 8.7: आगरा का किला

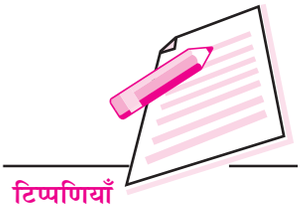

हैं। जहाँगीर के शासन के दौरान अकबर की समाधि आगरा के समीप सिकंदरा में बनवाई गयी थी। उसने इतिमाद-उद-दौला का सुंदर मकबरा भी बनवाया जो पूर्णतया संगमरमर से बना था। मुगल शासकों में शाहजहाँ सबसे महान इमारत रचनाकार था। उसने सबसे ज़्यादा संगमरमर का प्रयोग किया। पत्थरों पर जड़ाई का सुन्दर काम (जिसे पीएटर डूरो कहा जाता है), सुन्दर मेहराब तथा मीनारें उसकी इमारतों की विशेषताएँ थी। दिल्ली का लाल किला और जामा मस्जिद तथा सबसे ऊपर ताजमहल शाहजहाँ द्वारा बनवाई गई कुछ इमारतें हैं। शाहजहाँ की पत्नी मुमताज महल का मकबरा ताजमहल संगमरमर से बना है जो वास्तुकला की उन सभी विशेषताओं को दर्शाता है जो मुगल काल में विकसित हुई। इसमें एक केन्द्रीय गुम्बद है, चार सुन्दर मीनारें हैं, एक मुख्य द्वार, पत्थरों पर उत्कीर्ण सुन्दर कार्य तथा इसे चारों ओर से घेरे हुए बगीचा है। मुगल काल के बाद वाले काल पर मुगल वास्तुकला का अहम प्रभाव था। इमारतें प्राचीन भारतीय शैलियों के मजबूत और अत्यधिक प्रभाव को दर्शाती हैं जिनमें आंगन और ऊँचे खंभे थे। इसी शैली के वास्तुकला में प्रथम बार सजीव - हाथी, शेर, मोर तथा अन्य पक्षियों को कोष्ठकों में बनवाया गया था।

मुगल कालीन वास्तुकला में एक अद्वितीय विकास हुआ। इस समय मकबरों और अन्य इमारतों के चारों ओर सुंदर बगीचों का निर्माण किया गया था। कश्मीर और लाहौर में शालीमार बाग का निर्माण जहांगीर और शाहजहाँ ने करवाया। मुगलों ने भारतीय संस्कृति और वास्तुकला के विकास को प्रोत्साहित किया।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. तुर्कों की वास्तुकला शैली क्या थी?
2. सल्तनत काल में बनाए गए कुछ मकबरों और मस्जिदों के नाम बताएँ।
3. विश्व का सबसे ऊँचा गुम्बद कौन-सा हैं?
4. पिएटरा ड्यूरा क्या है?
5. शक्तिशाली मुगल साम्राज्य की भव्यता को कौन-सी इमारत दर्शाती है?

8.5 औपनिवेशिक वास्तुकला तथा आधुनिक काल

भारत में अगला आगमन अंग्रेजों का था जिन्होंने यहाँ पर 200 वर्षों तक शासन किया तथा औपनिवेशिक वास्तुकला की विरासत अपनी बनाई गई इमारतों के रूप में छोड़कर गए।

कुछ महत्वपूर्ण यूरोपीय जो छठी शताब्दी में यहाँ आना शुरू हुए, उन्होंने कई गिरजाघरों और अन्य इमारतों का निर्माण करवाया। पुर्तगालियों ने कई गिरजाघरों का निर्माण गोवा में करवाया। इनमें सबसे प्रसिद्ध बेसिलका वोम जीसस और सेंट फ्रांसिस के गिरजाघर हैं। अंग्रेजों ने भी प्रशासनिक और आवासीय परिसरों का निर्माण करवाया जो उनके शाही अंदाज को व्यक्त करता है। औपनिवेशिक भवन निर्माण कला में कुछ यूनानी और रोमन प्रभाव को देखा जा सकता है। दिल्ली

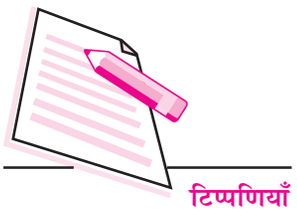

टिप्पणियाँ

में संसद भवन और कनॉट प्लेस इसके अच्छे उदाहरण हैं। वास्तुविद लुटियन ने राष्ट्रपति भवन का नक्शा बनाया था जो अंग्रेजी शासन काल में वायसराय का आवास होता था। यह बलुआ पत्थर से बनाया गया है जिसमें कनोपी (छतरी) और राजस्थानी डिजाइन की जालियाँ लगाई गई हैं। कोलकाता जो अंग्रेजों की राजधानी हुआ करती थी में विक्टोरिया स्मारक संगमरमर की एक भव्य इमारत है। अब यह औपनिवेशिक अंग्रेजी सामान का अजायबघर है। कोलकाता में लेखकों की इमारत (रायटर्स बिल्डिंग) पर सरकारी अधिकारियों की पीढ़ियाँ अंग्रेजी शासन में काम करती थी, आज भी बंगाल का प्रशासनिक केन्द्र है। कुछ मध्ययुगीन तत्वों को गिरजाघर की इमारतों जैसे कोलकाता के सेन्ट पोल केथडरल में देखे जा सकते हैं। अंग्रेज अपने पीछे आकर्षक रेलवे स्टेशनों जैसे मुम्बई में विक्टोरिया स्टेशन को छोड़कर गये। 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात इमारतों की समकालीन शैली अब उसका साक्ष्य हैं। चंडीगढ़ में इमारतों की रूप-रेखा फ्रांसिसी वास्तुविद ले कोरबसीअर ने की थी। दिल्ली में आस्ट्रियन वास्तुविद स्टेन ने भारत अंतरराष्ट्रीय केन्द्र जहाँ पर विश्व के जाने माने प्रबुद्ध लोगों के सम्मेलन होते हैं, रचना की थी। हाल ही में यहाँ पर देश विदेश के बौद्धिक संपदा के घनी व्यक्तियों ने मंत्रणा की। इंडिया हेबीटेट सेन्टर राजधानी में बौद्धिक गतिविधियों का केन्द्र है।

विगत कुछ दर्शकों में कुछ भारतीय प्रतिभावान वास्तुविदों का प्रादुर्भाव हुआ है। इनमें से कुछ प्रीमियर स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर से जो स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्कीटेक्चर, दिल्ली से प्रशिक्षित हैं। वास्तुविद राज रेवल और चार्ल्स कोरिया इस नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। राज रेवल दिल्ली में स्कोप परिसर का तथा जवाहर व्यापार भवन का डिजाइन तैयार किया है। उन्होंने स्थानीय इमारत सामग्री बलुआ पत्थर की भवन निर्माण के रूप में प्रयोग में लिया है जिसपर वह गर्व करते हैं। उन्होंने इसमें रोम के चौक की तरह सीढ़ियाँ और खुले स्थानों का मिश्रण किया है। पिछले दशक से घरेलू वास्तुकला में सभी महानगरीय शहरों में हाउसिंग सहकारी समितियाँ जगह-जगह बन गई हैं जिनमें उपयोगिता और योजनाबद्ध तरह से सौंदर्य बोध का मिश्रण है।

पाठगत प्रश्न 8.4

1. पुर्तगाली लोगों द्वारा बनवाए गए प्रसिद्ध गिरजाघर कौन से थे?
2. राष्ट्रपति भवन का डिजाइन तैयार करने वाले वास्तुविद का नाम बताइए।
3. भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के दौरान भवन निर्माण की कौन-सी शैली दिखाई देती हैं?
4. आजकल कोलकाता स्थित विक्टोरिया मेमोरियल इमारत में क्या रखा गया हैं?
5. चण्डीगढ़ शहर का डिजाइन किसने बनाया था?
6. उस वास्तुविद का नाम बताएँ जिसने दिल्ली में भारत अंतरराष्ट्रीय केन्द्र का डिजाइन तैयार किया।
7. आधुनिक भारत के प्रसिद्ध वास्तुविदों के नाम बताएँ।

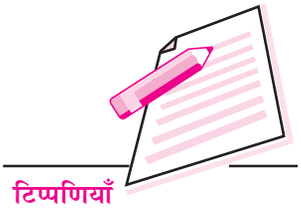

8.6 भारत में नगर और शहर

इस पाठ में आपने भारत के प्रचीन, मध्यकाल एवं आधुनिक काल की वास्तुकलाओं के विषय में पढ़ा है। पिछले खण्ड में आपने दिल्ली में स्थित योजना एवं वास्तुकला स्कूल के विषय में भी पढ़ा है। आपने देखा कि योजना वास्तुकला के साथ-साथ चली। क्या आप जानते हैं कि योजना वास्तव में नगर योजना है जोकि शहरी विकास से जुड़ी हैं। यह स्पष्ट है कि हम जब भी वास्तुकला के विषय में सोचते हैं अथवा बात करते हैं, हमें नगर योजना अथवा शहरी विकास के लिए इससे संबंधित विचारों को सोचना पड़ता है। इस खण्ड में हम भारत में नगरों एवं शहरों में वृद्धि और विकास के विषय में पढ़ेंगे। यह वास्तव में एक रोचक कथा है। हम भारत के समकालीन महानगरों चेन्नई, मुम्बई, कोलकाता तथा दिल्ली शहरों को जानने हेतु कुछ समय व्यतीत करेंगे। हम इन शहरों के उद्भव का पता लगाने का प्रयास करेंगे तथा उनकी इमारतों के महत्वपूर्ण ढांचों के विषय में भी सीखेंगे।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हड़प्पा सभ्यता से शुरू होकर भारत की नगर योजना का एक लंबा इतिहास रहा है जिसे 2350 ई.पू. से जाना जा सकता है। जैसा कि आप पहले से ही जानते हैं कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो दोनों शहरों में विकसित जल निकासी, समकोण पर काटने वाली सड़कें, उच्च स्थान पर बना एक किला और जिसके निचले भाग पर बाकी सारी जनता रहती थी। राजस्थान के कालीबंगा और कच्छ में स्थित सुरकोटड़ा की भी सभ्यताएँ समान ही थी। वर्ष 600 ई.पू. के आगे हमें उन नगरों एवं शहरों के विषय में भी पता चलता है जो आर्यों एवं द्रविड़ों की संस्कृति से संबंधित थी। ये राजगीर, वाराणसी, अयोध्या, हस्तिनापुर, उज्जैन, श्रावस्ती, कपिलवस्तु तथा कौशाम्बी थे। हमें मौर्यकाल के कई नगरों जिन्हें जनपद (छोटे नगर) और महाजनपद (बड़े नगर) कहा जाता था।

मुसलमानों के भारत में आने के साथ, दृश्य में परिवर्तन शुरू हो गया। नगरों में इस्लाम के प्रभाव को देखा जा सकता है। मस्जिद, किले और महल अब शहरी दृश्यों में देखे जा सकते थे। अबुल फजल के मतानुसार 1594 ई. में नगरों की संख्या 2837 थी। ऐसा इसिलए था क्योंकि कई बड़े गांवों को छोटे नगरों में बदल दिया गया था जिन्हें कस्बा कहा जाता था। इन कस्बों पर शीघ्र ही स्थानीय शिल्पकारों का कब्जा हो गया जिन्होंने अपनी विशेष कला पर काम करना शुरू कर दिया जैसे- आगरा में चमड़े और संगमरमर का कार्य। सिंध में सूती कपड़ों तथा रेशम के वस्त्रों में विशिष्टता थी। जबकि गुजरात को स्वर्ण और रेशम के धागे बनाने के कार्य में विशिष्टता हासिल थी। जरी को निर्मित कर अन्य देशों को निर्यात किया जाता था।

बाद में 16वीं शताब्दी के दौरान समुद्री मार्ग से यूरोप के लोगों का आगमन हुआ जिससे बंदरगाह शहरों की स्थापना हुई जैसे गोवा में, पणजी (1510), महाराष्ट्र में मुम्बई (1532) तथा दक्षिण में मछलीपट्टनम (1605), नागपट्टनम (1658) मद्रास (1639) तथा पूर्व में कोलकाता (1690)। अंग्रेजों ने इन बंदरगाह शहरों का निर्माण क्यों किया इसका मुख्य कारण उस समय इंगलैंड विश्व में औद्योगिक अर्थव्यवस्था में शीर्ष पर था, जबकि भारत ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चा माल आपूर्ति करने एवं निर्मित सामानों को खरीदने वाला बड़ा खरीददार था। 1853 के पश्चात अंग्रेजों ने देश के अन्दरूनी भागों से सामान को बंदरगाहों तक पहुँचाने के लिए रेल पटरियों को बिछाना

टिप्पणियाँ

शुरू कर दिया था, जो उन क्षेत्रों को मिलाती थी जो कच्चे माल की आपूर्ति और तैयार माल को प्राप्त करने में सहायक थी। 1905 तक लगभग 2800 मील लंबी रेल पटरियों को बिछा दिया गया था जो ब्रिटिश अर्थव्यवस्था तथा उसके राजनीतिक एवं सैनिक हितों के लिए लाभदायक था। संप्रेषण उद्देश्यों के लिए डाक एवं तार की लाइनों को भी बिछा दिया गया।

20वीं शताब्दी के आरम्भ में बंबई (मुंबई), कलकत्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई) प्रशासन, व्यापार एवं उद्योगों के प्रमुख केन्द्र बन गए थे। कुछ स्थान जैसे कलकत्ता का डलहौजी चौराहा, मद्रास का सेन्ट जॉर्ज किला, दिल्ली में कनॉट प्लेस तथा मुंबई का मरीन ड्राइव का समुद्र तट यूरोपवासियों को उनके गृहनगरों की याद दिलाता था। वे अपने कब्जे वाले स्थानों के वातावरण की शीतलता को भी चाहते थे जैसा उन्हें यूरोप में प्राप्त था। अत: इन बड़े शहरों के निकट पर्वतीय नगरों की स्थापना की गई जिससे भारत की झूलसती गर्मी से बचा जा सके जैसे उत्तर में मसूरी, शिमला और नैनीताल, पूर्व में दार्जलिंग तथा शिलोंग तथा दक्षिण में नीलगिरी तथा कोडाइकनाल।

नगरों में नये आवासीय क्षेत्रों जैसे सिविल लाईन्स तथा कैंटोनमेंट की स्थापना की गई। जिस जगह पर नागरिक प्रशासनिक अधिकारी रहते थे उसे सिविल लाइन्स तथा ब्रिटिश सेना अधिकारियों के आवास को कैंटोनमेंट क्षेत्र कहा जाता था। क्या आप जानते हैं आज भी इन दोनों क्षेत्रों में जाने-माने प्रशासिक और सेना के अधिकारी रहते हैं।

पाठगत प्रश्न 8.5

1. भारत में प्राचीन काल में स्थापित 5 शहरों के नाम :

   i) ....., ii) ....., iii) .....,

   iv) ....., v) .....

2. अंग्रेजों द्वारा स्थापित 5 बंदरगाहों के नाम :

   i) ....., ii) ....., iii) .....,

   iv) ....., v) .....

3. अंग्रेजों द्वारा बसाये गए 5 हिल स्टेशन (पर्वतीय नगर) :

   i) ....., ii) ....., iii) .....,

   iv) ....., v) .....

4. सिविल लाइन में कौन रहते थे?

5. कैंटोनमेंट का क्या अर्थ था?

इस खण्ड में भारत के कुछ प्रसिद्ध महलों की सूची दी गई है। यदि आप इनमें से कुछ के विषय में जानकारी प्राप्त करते हों तो इससे आपका अध्ययन रुचिकर होगा। उदाहरण के लिए:

a. इन्हें किसने बनवाया?

b. इन महलों के विषय में बताएँ।

c. आज इन महलों की क्या स्थिति है?

यदि आप पर्यटकों का मार्गदर्शन अथवा पर्यटन संबंधी कोई व्यवसाय खोलना चाहते हैं तो इससे आपको काफी मदद मिलेगी। यदि आप इन स्थानों के विषय में और भी जानना चाहते हैं तो यह आपकी अपनी संस्कृति के बारे में जानने के लिए अच्छा होगा।

A) भारत में स्थित महल

- खास महल, आगरा का किला, आगरा
- मैसूर महल, मैसूर
- झील महल, उदयपुर
- उमेद भवन महल, उदयपुर
- आगरा किला – मुगलों का आलिशान आवास, आगरा
- ऐना महल – कच्छ शासक का शानदार आवास
- अम्बर महल – पूर्व आलिशान आवास, जयपुर
- अम्बा विलास महल – मैसूर
- बंगलूरू महल – बंगलूरू
- छत्रपति शाहू महल – छत्रपति शहू महराज का आलिशान आवास, कोल्हापुर
- चेलूवम्बा विलास महल – मैसूर
- चौमाहला महल – हैदराबाद
- सिटी पैलेस – उदयपुर – जयपुर के महाराज की गद्दी
- सिटी पैलेस उदयपुर – उदयपुर के महाराणा की गद्दी
- दिल्ली का लाल किला – दिल्ली के मुगल बादशाह की गद्दी
- फलकनुमा महल – हैदराबाद का शाही महल
- फतेहपुर सीकरी – सम्राट अकबर का शाही आवास

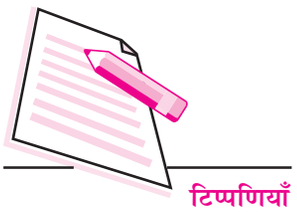

टिप्पणियाँ

- गोहर महल – भोपाल का शाही आवास
- गोरबंध महल – जैसलमेर
- ग्रांड पैलेस श्रीनगर – पूर्व में शाही आवास, आज श्रीनगर होटल
- हवा महल पूर्व में शाही आवास, जयपुर
- हिल पैलेस, भिपुनिथरा, कोचीन – कोचीन के महाराजा का पूर्व शाही आवास, अब भारत का सबसे बड़ा पुरातत्व अजायबघर
- जगमोहन महल – मैसूर
- जग मंदिर – उदयपुर में शाहजहाँ का शाही आवास
- जग निवास – (झील महल) उदयपुर में शाही आवास
- जल महल – पूर्व में शाही आवास, अब होटल, जयपुर
- जया लक्ष्मी विलास पैलेस – मैसूर
- जय विलास महल – ग्वालियर के महाराजा की गद्दी
- जैसलमेर फोर्ट – जैसलमेर के महाराजा की गद्दी
- करणजी विलास महल – मैसूर
- कांगड़ा फोर्ट – कांगड़ा के महाराजा की गद्दी
- खासबाग महल – रामपुर के महाराजा का महल
- किंग कोठी पैलेस – निजाम सप्तम उस्मान अली खान का महल
- कोदिआर पैलेस – त्रावणकोर परिवार का शाही आवास
- लालगढ़ महल – पूर्व में शाही आवास आज होटल, बीकानेर
- लक्ष्मी विलास महल – बड़ोदा के महाराज की गद्दी
- लक्ष्मीपुरम महल – केरल
- ललिथ महल पैलेस – मैसूर
- लोकरंजन महल – मैसूर
- मार्बल पैलेस – कोलकाता
- मट्टनचेरी पैलेस – (डच पैलेस), कोचीन – कोचीन के महाराजा का पूर्व शाही आवास, वर्तमान में पुरातत्व अजायबघर

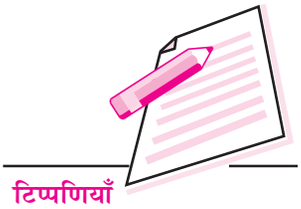

- नारायण निवास महल – पूर्व में शाही आवास, आज जयपुर में एक होटल
- न्यू पैलेस – कोल्हापुर के महाराजा की गद्दी
- पदमनाभापुरम महल – त्रावणकोर के महाराजा की गद्दी
- प्राग महल – कच्छ के शासकों का शाही महल
- पुरानी हवेली – हैदराबाद के निजाम की गद्दी
- राजेन्द्र विलास पैलेस – मैसूर
- राजमहल पैलेस – पूर्व में शाही आवास आज जयपुर में होटल
- राजबरी – कूच बिहार के महाराजा की गद्दी
- रामबाग पैलेस – जयपुर के महाराजा का पूर्व में महल (अब होटल)
- समोद पैलेस – पूर्व में शाही महल अब होटल, जयपुर
- शनिवार वाड़ा – पेशवाओं का शाही आवास, पूणे
- शौकत महल – पूर्व में शाही आवास, भोपाल
- थंजावुर नायक – थंजावुर (तंजौर) नायक महल, थंजावुर
- उम्मेद भवन पैलेस – जोधपुर के महाराजा की गद्दी
- ऊपरकोट फोर्ट – जूनागढ़ के नवाब की गद्दी, गुजरात
- वसंत महल पैलेस – मैसूर
- विजय विलास पैलेस – मांडवी – कच्छ के शासकों का शाही आवास

B) अजायबघर

अजायबघर संरक्षण का कार्य करते हैं। भारत में अत्यधिक अजयाबघर हैं जो पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करते हैं। इसीलिए यहाँ पर अत्यधिक लोकप्रिय और बड़े अजायबघरों के विषय में बताया गया है।

भारत में शीर्षस्थ अजायबघर

हवा महल अजायबघर : यह हवा हमल के अंदर है जो जयपुर में है। इसका निर्माण महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने 1799 में करवाया। इसकी संरचना मधुमक्खी के छत्ते की तरह है। जिसमें खिड़कियो को इस तरह लगाया गया है जिससे महल में वर्षभर हवा आती रहे। यह पवनों के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें छोटी-छोटी हजारों खिड़कियाँ हैं। यदि आप इन्हें बाहर से देखेंगे तो ये

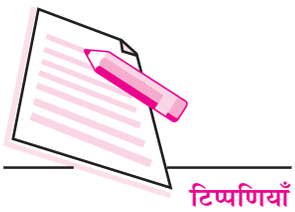

टिप्पणियाँ

मधुमक्खी के छत्तों की तरह दिखाई देंगी। इन्हें महल में इस प्रकार लगाया गया है कि हवा वर्ष भर इसमें आती जाती रहे जिससे महल का तापमान बदलते मौसम के अनुरूप रहे। पाण्डुलिपि दीर्घा, सैनिक सामान की दीर्घा और सिक्कों की दीर्घा इस अजायबघर के आकर्षक का केन्द्र हैं।

कोलकाता भारतीय अजायबघर में अनेकों आश्चर्य हैं। इसमें छह खण्ड हैं– पुरातत्व, ऐंथ्रोपोलोजी, भूविज्ञान, जंतुविज्ञान, उद्योग एवं कला। यह इतना बड़ा है कि इस अजायबघर को पूरा देखने में तीन दिन लग जाते हैं।

जयगढ़ फोर्ट अजायबघर – राजपूताना और मुगल वास्तुकला की एवं उनके रहन सहन की सुन्दर छाप प्रदान करता है। यह राजस्थानी शासन और संस्कृति की अद्वितीय छटा को प्रस्तुत करता है। कोई भी राजस्थानी राजशाही को न केवल अजायबघर में अपितु यहाँ की रेत में जो राजस्थान की सड़कों को ढ़के हुए हैं में देख सकता है।

कर्नाटक सरकारी अजायबघर देश का सबसे पुराना अजायबघर है। यह कर्नाटक विरासत का सबसे अच्छी नुमाइशों में से एक हैं। यह अजायबघर सबसे अच्छे और अद्वितीय उदाहरण को प्रस्तुत करता है।

महाराजा सवाई सिंह अजायबघर – यह एक सुंदर और अच्छी तरह से बना संग्रहालय है। इसकी स्थापना 1959 में हुई। यह प्राचीन युग को समकालीन ढ़ंग से चित्रित करता है जिसमें राजसी आभा है।

राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

यह भारत का सबसे बड़ा संग्रहालय है। इसकी स्थापना 1949 ई. में हुई। इसमें पूर्व एतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल की कला के विविध विलेख हैं। इस संग्रहालय में 200000 कलाकृतियाँ है, जो भारतीय तथा विदेशी है। इसमें 5000 वर्षों के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।

इसमें कला इतिहास का राष्ट्रीय संग्रहालय भी है। इसके संरक्षण और म्यूजियोलॉजी की स्थापना 1983 में हुई जो अब वर्ष 1989 से विश्वविद्यालय के रूप में मान ली गई है। इसमें स्नात्कोत्तर स्तर और डॉक्टरेट स्तर पर इतिहास कला, कला संरक्षण और कला नवीनीकरण पाठ्यक्रमों की शिक्षा दी जाती है।

इसमें विविध रचनात्मक परम्पराओं और अनुशासन का प्रर्याप्त मात्रा में संग्रहण है जो विविधता में एकता को प्रस्तुत करता है। इसमें भूत के साथ वर्तमान काल का बेजोड़ मिश्रण है और भविष्य के लिए मजबूत दृष्टिकोण है जो इतिहास को जीवन में शामिल करता है। बौद्ध कला वर्ग में बुद्ध के पवित्र अवशेषों का समावेशन है, जिसका पता पिपरेहवा बस्ती, उत्तर प्रदेश में चला। इस संग्रहण में पुरातत्व, भुजाएँ, कवच, सजावटी कला, गहने, पाण्डुलिपियाँ तथा चित्रकला इत्यादि हैं।

राष्ट्रीय अभिलेखागार अजायबघर पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत संस्कृति विभाग का कार्यालय है। इसमें भारत सरकार के पुराने रिकार्डों को सुरक्षित रखा गया है। यहाँ पर रखे गए

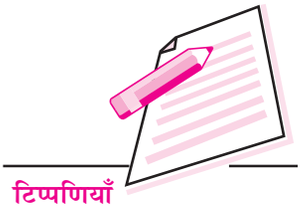

टिप्पणियाँ

दस्तावेज प्रशासकों और बुद्धिजीवियों के प्रयोग के लिए हैं। लेकिन ये आम जनता को देखने के लिए भी उपलब्ध हैं। इसमें भारत का सबसे प्राचीन अभिलेख हैं जो इतना पुराना है जितना भारत विश्व में है।

नेहरू मेमोरियल संग्रहालय जवारलाल नेहरू के जीवन और उनकी जीवन शैली को दर्शाता है। अनुसंधान कार्य में लगे लोगों के लिए यहाँ एक बड़ा पुस्तकालय है।

लालकिला पुरातत्व संग्रहालय में मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर की व्यक्तिगत वस्तुएँ जैसे रेशमी वस्त्र और हुक्का यहाँ पर रखा गया है। यहाँ पर तलवारें, बुने हुए गलीचे, शतरंज पट्ट और नक्काशीदार तलवारें भी देखने के लिए रखी गई हैं।

राष्ट्रीय टिकट संग्रहण अजायबधर में पुरोन स्टांपों का संग्रहण है जो इसे दिल्ली का एक अनोखा स्थान बनाती है।

प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय की स्थापना 20वीं शताब्दी में हुई। अभी हाल ही में इसका नाम छत्रपति शिवाजी महाराज अजायबघर रखा गया है। इसकी स्थापना प्रिंस ऑफ वेल्स के आगमन की स्मृति में कुछ प्रमुख नागरिकों ने भारत सरकार की मदद से की। यह बीत गए युग की कहानी बताता है।

विक्टोरिया टर्मिनल के बाद यह मुम्बई शहर के आकर्षण का दूसरा केन्द्र है।

स्टेट म्यूजियम ऑफ त्रिपुरा की स्थापना 1970 अगरतला में हुई। यह विभिन्न उद्देश्यों के लिए एक ही अजायबघर है। इसमें चार दीर्घाएँ हैं जिनके नाम आदिवासी और सांस्कृतिक दीर्घा हैं। चित्रकला तथा फोटो दीर्घाएँ हैं। इसमें सभी कालों की मूर्तिकलाएँ भी हैं। इसकी देखभाल संस्कृति एवं कला निदेशालय करता है।

आओ अब हम भारत के चार महानगरों – चेन्नई, कोलकाता, मुम्बई और दिल्ली के बारे में पढ़ते हैं। आप अवश्य ही इन शहरों के विषय में जानते होंगे।

8.6.1 चेन्नई

चेन्नई का पूर्व नाम मद्रास था जो तमिलनाडू राज्य की राजधानी है तथा यह देश के चार महानगरों में से एक है। यह शहर फोर्ट सेन्ट जार्ज के चारो ओर बसा है तथा समय के साथ-साथ इसमें आस-पास के नगर और गांव समाहित हो गए। 19वीं शताब्दी में यह शहर मद्रास प्रेसीडेंसी की गद्दी बन गया। यह भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के दक्षिणी खंड का भाग था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात वर्ष 1947 में यह शहर मद्रास राज्य की राजधानी बना जिसका नाम बदलकर 1968 में तमिलनाडू कर दिया गया। इसने अपनी परम्परागत तमिल हिंदू संस्कृति को बरकरार रखा और यह विदेशी प्रभाव और भारतीय संस्कृति के मिश्रण को उपलब्ध कराने में सफल रहा। चेन्नई में अंग्रेजी प्रभाव का साक्ष्य विभिन्न गिरजाघरों, इमारतों और स्थानों पर विस्तृत रूप से पंक्तियों में लगाए गए पेड़ों से मिलता है।

टिप्पणियाँ

वर्ष 1892 में बनी उच्च न्यायालय की इमारत को विश्व में लंदन न्यायालय के बाद सबसे बड़ा न्यायिक परिसर कहा जाता है। सेंट जार्ज किले की मुख्य पहचान इसके सुन्दर मेहराब और दीर्घाएँ थी जो नवीन वास्तुकला की चमक बिखेरती हैं।

बर्फ घरों का उपयोग उत्तरी अमेरिका ग्रेट लेक्स से बड़े टूकडों में लाई गई बर्फ को भंडारित करने के लिए होता था और औपनिवेशिक काल में वातानुकूलन के उद्देश्य से इन्हें भारत भेजा जाता था।

एक दूसरी सुन्दर संरचना जो इस समय बनी सेंट जॉन चर्च था। इसमें विस्तृत प्राचीन मेहराबें और सुन्दर रंगीन कांच की खिड़कियाँ थी। इसमें मध्यनाभि, गलियारे, एक मीनार और रास्ते थे। एक गुम्बद और सर्पिल आकार की सीढ़ीयाँ थी। इसकी दीवारें मलबे से बनाई गई थी। जो सामने से कुर्ला बफ स्टोन से बनी थी जबकि घट, मेहराबें और ट्रेसिंग पोरबंदर पत्थर से निर्मित थी। इसकी छतें सागवान की लकड़ी से बनी थी तथा फर्श पर टाइलें इंग्लैंड से आयातित थी। (चित्र 8.8)

चित्र 8.8: सेंट जॉन गिरजाघर

एक अन्य संरचना जो इस समय बनी बड़ा डाकखाना था। इसका निर्माण 1872 में पूर्ण हुआ। इस डाकखाने में एक बड़ा केन्द्रीय कक्ष है जिसका एक बहुत ऊँचा गुम्बद है। यह स्थानीय बेसाल्ट में बनाया गया था जिसे सजावटी तौर पर कुर्ला के पीले पत्थरों और धरंगादरा के सफेद पत्थरों से निर्मित किया गया था। यह पर्यटकों के आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र है। अंदर बनी एक मेज है जिसके ऊपर संगमरमर लगा है। जिसकी छत ऊँची है तथा सीढ़ियों का आकार अंग्रेजों की शान और शौकत को दर्शाती है। (चित्र 8.9)

चित्र 8.9: पोस्ट ऑफिस

8.6.2 कोलकाता

कोलकाता के उद्भव और इतिहास के बारे में जानना रोचक है। क्या आप जानते हैं कि यह 1911 तक अंग्रेजी शासन की राजधानी थी। इसकी स्थापना कोलकाता के रूप में वर्ष 1686 में हुई जो भारत में अंग्रेजी साम्राज्य प्रसार का एक कारण था। इस शहर का विकास 1756 तक चला जब बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों पर आक्रमण कर उन्हें यहाँ से खदेड़ दिया। 1757 में प्लासी का युद्ध हुआ जिसमें रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में अंग्रेजों ने नवाब को हराकर फिर से कोलकाता पर अधिकार स्थापित किया।

चित्र 8.10: कोलकाता में सर्वोच्च न्यायालय

1774 में कोलकाता में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना हुई और यह न्याय की गद्दी बना (चित्र 8.10)। वर्ष 1911 मं अंग्रेजों ने राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित की। आप यह जानते होंगे कि वर्ष 2001 में कलकत्ता के स्थान पर आधिकारिक रूप से इसका नाम कोलकाता कर दिया गया। आओ अब हम कोलकाता की उन सुंदर इमारतों को देखें जो आज भी मौजूद हैं।

हावड़ा ब्रिज हुगली नदी पर बना है। यह हावड़ा को कोलकाता से जोड़ता है। यह 270 फीट ऊँचे दो खंभों पर खडा है तथा जिसे किसी भी प्रकार के नट और बोल्ट का उपयोग किए बिना बनाया गया है। यह ब्रिज कोलकाता का मुख्य प्रतीक है। यह विश्व में सबसे ज़्यादा व्यस्त पूल है। (चित्र 8.11)

चित्र 8.11: हावड़ा ब्रिज

उत्तरी कोलकाता में स्थित **मार्बल पैलेस** का निर्माण 1835 में हुआ। इसमें एक अद्भूत कला दीर्घा है। इसमें कला, मूर्तिकला, चित्रकला तथा तेलीय चित्रकारी की वस्तुएँ दर्शायी गई हैं। यहाँ पर एक चिड़ियाघर भी है जहाँ पर आप आज विभिन्न प्रकार के पक्षी और जानवरों को देख सकते हैं। वास्तव में यहाँ पर दूर्लभ प्रजाति के पक्षियों का संग्रह है।

चित्र 8.12: फोर्ट विलियम

फोर्ट विलियम हुगली नदी के किनारे स्थित है। इसका निर्माण अंग्रेजों ने करवाया था, जिसकी शुरूआत राबर्ट क्लाइव ने 1696 ई. में की थी। यह 1780 ई. में पूर्ण हुआ। फोर्ट विलियम की

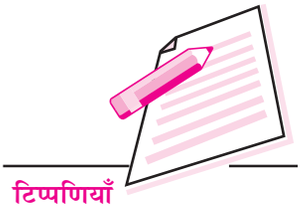

स्थापना का मुख्य कारण आक्रमणकारियों के आक्रमण से रक्षा करना था। फोर्ट विलियम के आस-पास के क्षेत्र को साफ़ किया गया जहाँ आज एक विस्तृत मैदान है जिसमें प्रदर्शनियों और मेलों का आयोजन होता है (चित्र 8.12)

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल (चित्र 8.13) कोलकाता में एक प्रसिद्ध अजायबघर है। जिसका निर्माण वर्ष 1921 में हुआ। यह एक अद्भूत स्थान है जो आगंतुकों को विश्व के प्राचीन इतिहास का दर्शन कराता है। आज विक्टोरिया संग्रहालय कोलकाता का सबसे शानदार अजायबघर है। इसकी ऊँचाई 184 फीट है जिसका निर्माण 64 एकड़ भूमि पर हुआ था।

चित्र 8.13: विक्टोरिया मेमोरियल

क्या आप जानते हैं कि ईडन गार्डन क्लब की स्थापना कोलकाता में वर्ष 1864 में हुई। आज इसमें 1,20000 व्यक्ति बैठ सकते हैं। कोलकाता भ्रमण करने वाले भ्रमणकारियों को यह अपनी ओर आकर्षित करता है।

चित्र 8.14: ईडन गार्डन

रॉइटर इमारत का निर्माण 1690 में शुरू हुआ। इसका यह नाम ईस्ट इंडिया कम्पनी के कनिष्ठ लेखकों के आवास स्थान के नाम पर पड़ा। इस प्राचीन संरचना का निर्माण लेफ्टिनेट गर्वनर एशले ईडन (1877) के कार्यकाल में हुआ। (चित्र 8.15)

चित्र 8.15: रॉइटर इमारत

8.6.3 मुम्बई

मुम्बई भारत के पश्चिमी तट पर अरब सागर के किनारे स्थित है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि यह एक समय सात द्वीपों का एक समूह था। हालाँकि यह पूर्व ऐतिहासिक काल से यहीं पर अवस्थित है। मुम्बई शहर 17वीं शताब्दी में अंग्रेजों के आगमन की तारीख से है। उस समय इसका नाम बोम्बे था। हालाँकि इसके आकार में सही परिवर्तन 19वीं शताब्दी में आया। यह देश का पहला शहर था जिसकी अपनी रेल लाइन थी। कलकत्ता के साथ ही ये दो ऐसे शहर थे जहाँ समाचार-पत्रों का प्रादुर्भाव हुआ।

19वीं शताब्दी के द्वितीय भाग मे बोम्बे में कई नागरिक और सार्वजनिक इमारतों का निर्माण हुआ जो प्राचीन विक्टोरियन शैली की थी। उदाहरण के लिए सचिवालय (1874), परिषद हॉल (1876) तथा ऍलफिंसटन कॉलेज (1890)। लेकिन सबसे आकर्षक शैली विक्टोरियन टर्मिनल की थी जिसे अब छत्रपति शिवाजी अड्डे के नाम से जाना जाता है। लेकिन यह रेलवे स्टेशन से ज़्यादा धर्मपीठ की तरह दिखता है। इसमें नक्काशी किए हुए पत्थर तथा रंगीन शीशे की खिड़कियाँ हैं। (चित्र 8.16)

चित्र 8.16: छत्रपति शिवाजी टर्मिनल

भारत का मशहूर मुख्यद्वार गेटवे ऑफ इण्डिया भारत-सारासेनीक शैली में पीले पत्थरों से बना था जो जार्ज पंचम और रानी मेरी के भारत आगमन के सम्मान में निर्मित किया गया था। यह वर्ष 1924 में पूर्ण हुआ और इसके बनाने में 24 लाख रूपये का खर्च आया था जो उस समय बहुत बड़ी धनराशि था। इसमें 26 मीटर की एक मेहराब और चार बुर्ज हैं। इसमें बहुत ही पेचीदा जालियाँ जिनपर पीले बेसॉल्ट पत्थरों पर नक्काशी की गई है। (चित्र 8.17)

चित्र 8.17: गेटवे ऑफ इंडिया

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही मुम्बई भारत का व्यापार एवं वाणिजय का एक अग्रिम शहर रहा है। स्टॉक एक्सचेंज, व्यापार केंद्र, प्रसिद्ध फिल्म उद्योग जिसे बालीवुड कहा जाता है तथा पश्चिमीकरण

के नाम पर कुछ भी देखें, सब यहाँ पर है। जैसे कि आपको पता है, आज यह भारत का सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक शहर है। इसमें महत्वपूर्ण उद्योग जैसे – कपड़ा, वित्त एवं फिल्म निर्माण है। आप मशहूर बालीवुड से अवगत होंगे जो विश्व में सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है। यहाँ कई हिंदी फिल्में बनती हैं। किसी समय भारत के मुख्य द्वार के नाम से प्रसिद्ध शहर में अंग्रेजों के साक्ष्य आज भी दिखाई देते हैं।

पाठगत प्रश्न 8.6

1. चेन्नई के चार प्रमुख स्थानों के नाम बताएँ।

   i) _____ ii) _____

   iii) _____ iv) _____

2. कोलकाता के चार प्रसिद्ध स्थानों के नाम बताएँ।

   i) _____ ii) _____

   iii) _____ iv) _____

3. मुम्बई के चार प्रमुख स्थानों के नाम बताएँ।

   i) _____ ii) _____

   iii) _____ iv) _____

8.6.4 दिल्ली

क्या आप जानते हैं कि वर्ष 1911 में दिल्ली अंग्रेजी शासन की राजधानी बनी। इसीलिए दिल्ली ने वर्ष 2011 में अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया। स्पष्टतया 1911 में आधुनिक शहर जिसे अब नई दिल्ली कहा जाता है बना। हालाँकि दिल्ली का इतिहास इससे भी पुराना है। यह माना जाता है कि सात पुराने शहरों को मिलाकर दिल्ली बनाई गयी थी। ऐसा माना जाता है कि दिल्ली का पहला शहर युधिष्ठिर ने यमुना के दाहिने किनारे पर बसाया था, जो पांडव पुत्रों में सबसे बड़ा था। इसका नाम इन्द्रप्रस्थ था। यकीनन आपको महाभारत की कहानी याद होगी जिसमें कौरव और पांडवों के मध्य भयंकर युद्ध हुआ था।

किवदंतियों के अनुसार दिल्ली की स्थापना राजा ढिल्लू ने की थी। द्वितीय शताब्दी के दौरान भूगोलवेत्ता टोलेमी ने नक्शे पर दिल्ली को देदला नाम से अंकित किया था। उस समय के बाद से आगे दिल्ली का निरंतर विकास होता रहा। आज इसका विस्तार इतना ज़्यादा हो गया है कि आज यह न केवल भारत अपितु विश्व के बड़े शहरों में से एक है।

दिल्ली से जुड़ी एक रोचक किंवदन्ती है। कहानी इस प्रकार है– एक सर्प वासुकी को सम्राट अशोक के काल में कुतुबमीनार परिसर के अंदर एक लोहे के खंभे के साथ जमीन में गाड़ दिया

गया। कई वर्षों के बाद जब तोमर वंश के शासक अनंगपाल ने दिल्ली पर कब्जा किया तो उसने इस लोहे के खंभे को उखाड़कर उस सर्प को मुक्त कर दिया। उस समय यह भविष्यवाणी की गई कि कोई भी साम्राज्य लंबे समय तक शासन नहीं कर पायेगा। तोमर वंश के बाद चौहान आये जिन्होंने किला राय पिथौरा शहर की स्थापना लाल कोट क्षेत्र में महरौली के निकट की। पृथ्वीराज चौहान महरौली से ही अपने शासन को चलाता था।

चित्र 8.18: कुतुबमीनार

दिल्ली एक बार फिर प्रकाश में उस समय आई जब दास साम्राजय सत्ता में आया। आपको पढ़कर याद होगा कि कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार का निर्माण शुरू करवाया था। (चित्र 8.18)। जिसको इल्तुतमिश ने पूरा करवाया। बाद में जब अलाउद्दीन खिलजी सुल्तान बना इसका नाम सिरी था जो शक्ति का केन्द्र होता था। सिरी का किला आज भी है तथा दिल्ली के इस क्षेत्र को शाहपुरजट के नाम से जाना जाता है। सिरी की भी एक रोचक कहानी है। अलाउद्दीन खिलजी के शासन को मंगोल आक्रमण का निरंतर भय था। इनमें से कुछ मंगोल जो यहाँ पर रह गये वे शहर में विद्रोह करते रहते थे। अलाउद्दीन खिलजी ने इन विद्रोहियों के सिर कटवाकर शहर की दीवारों के नीचे दफना दिए थे। इसलिए इस स्थान का नाम सिरी पड़ा। जैसा कि आप जानते हैं कि सिर का अर्थ 'सर' होता है। हम आज भी इस शब्द का प्रयोग सिर के लिए करते हैं।

कुछ वर्षों बाद जब तुलगक साम्राज्य सत्ता में आया तो सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक ने तुगलकाबाद शहर का निर्माण करवाया। इसका निर्माण एक मजबूत नगर के रूप में किया गया था। गियासुद्दीन की मृत्यु के पश्चात मुहम्मद बिन तुगलक (1320–1388) ने पुराने दिल्ली शहर को एक इकाई के रूप में जहांपनाह के नाम से स्थापित किया चित्र 8.19)।

चित्र 8.19: तुगलकाबाद फोर्ट

इब्नबतूता जो मोहम्मद बिन तुगलक के दरबार में था ने इस शहर का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है। उसने इसके विषय में लिखा है ''भारत का एक महानगर एक वृहद और खुबसुरत शहर, बल एवं सुंदरता का जोड़। यह एक ऐसी दीवार से घिरा है जिसका विश्व में कोई सानी नहीं है तथा भारत का सबसे बड़ा शहर तथा समस्त मुस्लिम पूर्व देश से बड़ा शहर है।

तुगलक साम्राज्य का एक और महत्वपूर्ण शासक फिरोज शाह था। इसके शासन के दौरान दिल्ली की घनी आबादी थी जो एक विस्तृत क्षेत्र पर फैली हुई थी। उसने फिरोजशह कोटला के समीप फिरोजाबाद शहर की स्थापना की। हालाँकि समरकंद के राजा तैमूर ने 1398 में इसकी शान को नष्ट कर दिया जिसमें जहाँपनाह भी शामिल था। तैमूर अपने साथ भारतीय वास्तुकला और यहाँ के कामगारों को समरकंद में मस्जिद बनवाने के लिए ले गया। इसके पश्चात आने वाले शासक आगरा में अपनी राजधानी ले गये।

यह मुगल शासक हुमाँयू था जिसने प्राचीन इन्द्रप्रस्थ के टीले पर दीनपनाह का निर्माण करवाया। हालाँकि हुमायूँ के परपोते शाहजहाँ ने दिल्ली की शान को पुनः प्राप्त किया। उसने 1639 में दिल्ली में लाल किले का निर्माण शुरू करवाया तथा इसे 1648 में पूर्ण किया। उसने प्रसिद्ध जामा मस्जिद का निर्माण आरम्भ करवाया। शाहजहाँ के शहर को शहजहानाबाद कहा जाता था। महान कवियों जैसे दर्द, मीर–ताकी–मीर और मिर्जा गालिब इत्यादि ने गजलों और उन भाषाओं की रचना की जैसे इस समय उर्दू प्रचलन में थी। ऐसा माना जाता है कि शाहजहानाबाद ईराक के बगदाद शहर और तुर्की के कॉसटेन्टिपोल से भी सुन्दर शहर था। शताब्दियों उपरान्त इस शहर को नादिर शाह (1739) ने लूटा और नष्ट किया तथा अहमद शाह अब्दाली (1748) ने भी लूटा। इसके भीतर निरंतर विद्रोह भी होते रहे। इन सभी से यह शहर कमजोर हो गया। इन सभी समस्याओं के बावजूद दिल्ली के पास देने के लिए बहुत कुछ था जैसे – संगीत, नृत्य, ड्रामा तथा स्वादिष्ट व्यंजनों की विविधता के साथ सांस्कृतिक भाषा और साहित्य।

यह कहा जाता था कि दिल्ली 24 सूफी संतों का घर था जिसमें से सर्वाधिक प्रसिद्ध जहाँपनाह क्षेत्र से थे। इनमें से कुछ थे:

1. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी जिसका खनक अथवा डेरा महरौली में था।
2. निजामुद्दीन औलिया, जिसका खनक निजामुद्दीन में था।

3. शेख नसीरूद्दीन महमूद, जो आज चिराग-ए-दिल्ली नाम से लोकप्रिय है।

4. अमीर खुसरों जो एक महान कवि, संगीतकार और विद्वान थे।

1707 के पश्चात मुगल शक्ति क्षीण होने लगी फलस्वरूप दिल्ली कमजोर हो गई। 1803 में अंग्रेजों ने मराठों को हराकर दिल्ली पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। कश्मीरी गेट और सिविल लाईन क्षेत्र उनके प्रमुख केन्द्र बन गए। जहाँ पर अंग्रेजों ने कई खूबसूरत इमारतें बनबाई। वर्ष 1911 में अंग्रेजों ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया तथा यहाँ एक नवीन शहर को बसाया गया जिसे नई दिल्ली कहा जाता है। यह राजसी तर्ज पर बसाई गई। इंडिया गेट का विशाल ढांचा, वायॅसराय का घर जो आज राष्ट्रपति भवन है, संसद भवन तथा उत्तरी और दक्षिणी खंडों आदि का निर्माण भारतीय जनता को प्रभावित करने के लिए किया गया। इस सबके बनवाने का मुख्य कारण भारतीय जनता पर अंग्रेजी साम्राजय की सर्वश्रेष्ठता, राज-शक्ति के साथ-साथ ब्रिटिश राजशाही को दिखाना था। इस नवीन शहर का निर्माण 1932 में पूर्ण हुआ। कनॉट प्लेस आज भी शहर का महत्वपूर्ण व्यापार केन्द्र है। दिल्ली आज भी भारत का महत्वपूर्ण व्यापार, संस्कृति और राजनीति का केन्द्र है। विशाल इमारतें, सुन्दर पार्क, पुल, मैट्रो रेल, सुन्दर हवाई अड्डा, शैक्षिक केन्द्र, अजायबघर, बड़े थोक बाजार, विश्व के बहुत से देशों के दूतावास तथा सभी देशों के उच्चायुक्तों के केन्द्र, बड़े मॉल, मुख्य उद्योग इत्यादि सभी मिलकर इसे सुन्दर शहर बनाते हैं। कहा जाता है कि दिल्ली दिलवालों की है (दिल्ली विशाल दिल वालों की है)।

पाठगत प्रश्न 8.7

1. दिल्ली के अंतर्गत शहरों का मिलान उनके शासकों से करें जिन्होंने उनका निर्माण किया।

क्र.सं.	शहर का नाम	शासक का नाम जिसने इसे बनवाया
1.	इन्द्रप्रस्थ	पृथ्वीराज चौहान
2.	लाल कोट	मुहम्मद बिन तुगलक
3.	मेहरौली	युधिष्ठिर
4.	सीरी	फिरोजशाह तुगलक
5.	जहाँपनाह	हुमायूँ
6.	तुगलकाबाद	शाहजहाँ
7.	फिरोजाबाद	अलाउद्दीन खिलजी
8.	दीनपनाह	अनंगपाल तोमर
9.	शहजहाँनाबाद	गियासुद्दीन तुगलक

2. जहाँपनाह क्षेत्र के चार सूफी संतों के नाम बताएँ।

i) _____ ii) _____

iii) _____ iv) _____

आपने क्या सीखा

- भारतीय वास्तुकला और मूर्तिकला का इतिहास इतना पुराना है जितना सिंधु घाटी की सभ्यता।
- वास्तुकला भारत के किसी भी भाग की विविध संस्कृति जानने की कुंजी है क्योंकि यह विविध समय की सांस्कृतिक परम्पराओं और धार्मिक प्रथाओं से प्रभावित रही है।
- भारत में स्तूप, विहार और चैत्यों के निर्माण में बौद्ध एवं जैन धर्मों का बहुत योगदान है।

  गुप्त, पल्लव, और चोलों के शासनकाल में मंदिर वास्तुकला फली-फूली।
- दिल्ली सल्तनत और मुगल अपने साथ फारसी प्रभाव को लेकर आये। हम भारत-फारसी वास्तुकला शैली के गवाह हैं।
- ब्रिटिश और अन्य औपनिवेशिक, शक्तियाँ भारतीय वास्तुकला पर यूरोपीय प्रभाव लेकर आये और इन्होंने स्थानीय वास्तुकला पर प्रभाव डाला तथा औपनिवेशिक शैली की वास्तुकला को स्थापित किया। इनमें सामग्री का उपयोग इमारतों को सजाने तथा राजसी शौक दिखाने के लिए करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता से शुरू होकर, भारत की नगर योजना का एक सशक्त इतिहास रहा है जिसे 2350 ई.पू. से देखा जा सकता है।
- तब से कई नगरों का निर्माण हुआ।
- 1594 में 2837 नगर थे।
- 20वीं शताब्दी के आरम्भ में बोम्बे (अभी मुम्बई), कलकत्ता (अभी कोलकाता), और मद्रास (अभी चेन्नई) प्रशासनिक, व्यापार के साथ उद्योगों के महत्वपूर्ण शहर थे।
- 1911 में दिल्ली ब्रिटिश शासन की राजधानी बनी। हालाँकि दिल्ली का इतिहास इससे भी पुराना है।
- यह माना जाता है कि प्राचीन काल में सात प्रमुख शहर थे जिनको मिलाकर दिल्ली बनाई गई। ये संभवतया: इन्द्रप्रस्थ, लाल कोट, मेहरौली, सीरी, तुगलकाबाद, फिरोजाबाद और शाहजहाँबाद थे।

पाठांत प्रश्न

1. हड़प्पा सभ्यता की वास्तुकला शैलियों का वर्णन कीजिए।
2. गुप्त, पल्लव और चोल शासकों के भारत में मंदिर वास्तुकला में योदान का वर्णन कीजिए।
3. भारत में पाये जाने वाली विविध वास्तुकला एवं मूर्तिकला शैलियों के विषय में बताइए।

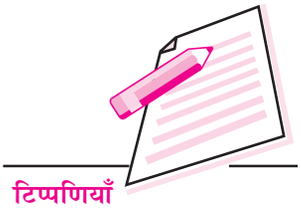

4. बौद्ध एवं जैन धर्म के भारतीय वास्तुकला में योगदान की विवेचना कीजिए।

5. दिल्ली सल्तनत काल में निर्मित स्मारकों को आप कैसे देखते हैं?

6. मुगल काल के दौरान वास्तुकला भारतीय, फारसी, मंगोल और मुगल शैली का संश्लेषण थी। विवेचना कीजिए।

7. आप अपने शब्दों में दिल्ली की कहानी सुनाइए।

8. 'दिल्ली है दिलवालों की' कहावत की सत्यता का पता करें। इस पर एक निबन्ध लिखें। इसके लिए आप इंटरनेट अथवा पुस्तकालय से प्राप्त पुस्तकों की मदद ले सकते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. उपमहाद्वीप में महान साम्राज्यों के उत्थान एवं पतन ने भारतीय संस्कृति के विकास और आकृति को प्रभावित किया।

2. जिप्सम खरल से बनी अच्छी तरह पकायी हुई ईंटों की कई परतों को आपस में मिलाकर पूर्ण निर्माण कार्य किया जाता था, जिससे निर्माण मजबूत बनता था। इमारत की मजबूती इस तथ्य से देखी जा सकती है कि पिछले पाँच हजार साल वर्षों में आए विनाशों से बचकर आज भी अडिग खड़ी है।

3. मोहनजोदड़ो में प्राप्त स्नानागार उनके यांत्रिक कौशल का साक्ष्य है।

4. गुप्त काल के दौरान

8.2

1. साँची स्तूप और सारनाथ स्तूप

2. मोनोलिथिक पत्थर बुर्जों पर

3. गंधार स्कूल, मथुरा स्कूल, अमरावती स्कूल

4. उड़ीसा में

5. राष्ट्रकूट

6. पल्लव

7. मंदिर वास्तुकला शैली जिसमें विमान और शिखर, ऊँची दीवारें और गोपुरम मुख्य द्वार

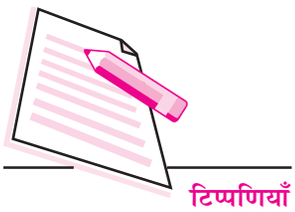

टिप्पणियाँ

8. वृहदेश्वर मंदिर
9. शिखर युक्त मंदिर (सर्पिल छत्तें), गर्भगृह (पवित्र स्थान; और मंडाप (खम्भों से बने बड़े कक्ष)
10. नरसिंह देव – I
11. दिलवाड़ा मंदिर

8.3

1. गुम्बद, मेहराब, मीनारें
2. दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, कुतुब मीनार, मुहम्मद तुगलक मकबरा, फिरोज तुगलक का मकबरा, इब्राहिम लोधी का मकबरा, शेरशाह का मकबरा सासाराम में
3. गोल गुम्बज
4. मुगल शासन के दौरान इमारतों में सजावटी डिजाइन
5. बुलन्द दरवाजा

8.4

1. बेसिलिका बोम जीसस तथा सेंट फ्रांसिस का चर्च
2. लुटियन्स
3. यूनानी और रोमन वास्तुकला शैलियाँ
4. इसमें औपनिवेशिक कलाकृतियों को रखा गया है
5. फ्रांसीसी वास्तुकार कोरबीजर
6. एक आस्ट्रेलियन वास्तुविद स्टेन
7. (i) राज रवेल (ii) चार्ल्स कोरिआ

8.5

1. हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, सुरकोतड़ा, राजगीर, वाराणसी, अयोध्या, हस्तिनापुर, उज्जैन, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कौशाम्बी, और अन्य स्थान जो इस पाठ में नहीं बताये गये।
2. इनमें से कोई पाँच – पणजी, बॉम्बे, मछलीपट्टनम, नागापट्टनम, मद्रास, कोलकाता अथवा कोई अन्य। इस पाठ में नहीं बताया गया हो।

3. इनमें से कोइ पाँच – मसूरी, शिमला, नैनिताल, दार्जलिंग, शिलाँग, नीलगिरी, कोड़ाइकनाल अथवा कोई अन्य। इस पाठ में न बताया गया हो।

4. नागरिक अधिकारी

5. सेना अधिकारी

8.6

1. उच्च न्यायालय की इमारत, बर्फ घर, सेंट जॉन गिरजाघर, बड़ा डाकखाना अथवा कोई अन्य जो इस पाठ में न बताया गया हो।

2. इनमें से कोइ चार – हावड़ा ब्रिज, परिषद हॉल, ऐलिफिंस्टन कॉलेज, विक्टोरिया टर्मिनल (आधुनिक छत्रपति शिवाजी टर्मिनल;, भारत का मुख्य द्वार अथवा कोई अन्य जो इस पाठ में नहीं बताए गए हों।

8.7

1.

क्र. सं.	शहर का नाम	शासक का नाम जिसने इन्हें बनवाया
1.	इन्द्रप्रस्थ	युधिष्ठिर
2.	लाल कोट	अनंगपाल तोमर
3.	मेहरौली	पृथ्वीराज चौहान
4.	सीरी	अलाउद्दीन खिलजी
5.	जहाँपनाह	मुहम्मद बिन तुगलक
6.	तुगलकाबाद	गियासुद्दीन तुगलक
7.	फिरोजाबाद	फिरोजशाह तुगलक
8.	दीनपनाह	हुमायूँ
9.	शहजहाँनाबाद	शाहजहाँ

2. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, निजामुद्दीन ओलिया, शेख नसीरूद्दीन महमूद, अमीर खुसरो अथवा कोइ अन्य जो इस पाठ में नहीं बताया गया हो।

पर्यटन पाठ्यक्रम
(उच्चतर माध्यमिक)

1. औचित्य

अनंत काल से लोग देश के एक भाग से दूसरे भाग में यात्रा करते रहे हैं। परंतु वर्तमान में इसने व्यापक रूप ले लिया है। अब लोग विश्राम, व्यापार, तीर्थयात्रा अथवा आनंद के लिए अपने शहर से बाहर जाने के लिए यात्रा करते हैं। भारत एक विशाल देश है। इसका कुल क्षेत्रफल 3,287,263 वर्ग किलोमीटर जो 29 राज्यों एवं 7 केंद्र शासित प्रदेशों में बंटा हुआ है। अत: राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर्यटन का दरवाज़ा खुला है।

पर्यटन समाज, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और पर्यावरण से तो जुड़े ही हैं, साथ ही मूल निवास के बाहर की यात्राओं को बढ़ावा देने के प्राथमिक उद्देश्य के कारण यह अध्ययन की एक महत्वपूर्ण शाखा भी है। प्रारंभ में स्कूलों में पर्यटन को इतिहास के साथ पढ़ाया जाता था परंतु अब इसे स्कूल, कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

आजकल पर्यटन को एक सामान्य विषय के साथ-साथ व्यावसायिक विषय के रूप में भी पढ़ाया जाता है जिसकी आधारभूत पाठ्य-सामग्री इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन एवं प्रबंधन से ली जाती है। अत: सेकेंडरी एवं सीनियर सेकेंडरी स्तर पर पढ़ रहे विद्यार्थियों को अब पर्यटन उद्योग की जटिल कार्यप्रणाली को समझने का अवसर प्रदान किया गया है। सीनियर सेकेंडरी स्तर पर 'पर्यटन' विद्यार्थियों के लिए स्वाभाविक चुनाव का विषय बन जाता है, क्योंकि सीनियर सेकेंडरी उत्तीर्ण विद्यार्थी आसानी से इसे अपना व्यवसाय बना सकते हैं। फ्रंट आफिस के ज्यादतर कार्य सीनीयर सेकेंडरी उत्तीर्ण विद्यार्थी आसानी से कर सकते हैं। इन विद्यार्थियों को इस उद्योग की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि एवं व्यवहार के बारे में पढ़ाया गया है। अधिकांशत: ये पाठ शिक्षार्थियों में सूचना और ज्ञान पाने की उत्सुकता पैदा करते हैं। 'पर्यटन' का एक पूरे विषय के रूप में पढ़ाने का प्राथमिक उद्देश्य पर्यटन क्षेत्र में सेवाओं की मांग तथा आपूर्ति के बीच समन्वय स्थापित करना है। इसके बाद सीनियर सेकेंडरी उत्तीर्ण विद्यार्थियों के सुविकसित पाठ्यक्रम से इस उद्योग में व्यावसायिक तरीके से काम करने के लिए अपने कौशल को बढ़ाया जा सकता हैं। साथ-ही-साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत और प्रकृति के प्रति चेतना और गर्व की भावना विकसित करने का भी प्रयास किया गया है, क्योंकि ये पर्यटन के महत्वपूर्ण संसाधन हैं। इस पृष्ठभूमि के साथ शिक्षार्थी पूरे विश्वास के साथ ज्ञान एवं कौशल को विकसित करने का पर्याप्त संभावनाओं हेतु पर्यटन विषय का चयन कर सकते हैं।

2. पाठ्यक्रम के उद्देश्य

इस स्तर पर 'पर्यटन' विषय के शिक्षण के प्रमुख तर्कसंगत कारण हैं -

- विभिन्न संस्कृतियों और आस्थाओं के लोगों के बीच शांति, भ्रातृभाव और आपसी समझ की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- विभिन्न प्रकार के पर्यटन एवं पर्यटन उद्योग के प्रति समझ को व्यापक बनाना।
- समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के गहन वर्णन और पर्यटन के विकास में इसके योगदान को बताना।
- रुचि और उत्सुकता जगाना एवं भारत में पर्यटक आकर्षण के विभिन्न स्थलों से परिचित करवाना।
- विरासत और प्राकृतिक आकर्षणों के बीच भेद करने में सहायता देना।

- भौगोलिक लक्षणों; जैसे - स्थलाकृति, भू-आकृति, जलवायु-संबंधी परिस्थितियाँ, समुद्री मार्ग और राजमार्गों की पर्याप्त जानकारी देना, जो पर्यटकों का मार्गनिर्देश करने में उनकी सहायता करेगी।
- यह पहचान कराना कि वैश्विक पर्यटन के विकास के लिए भूगोल और पर्यटन एक-दूसरे के पूरक हैं।
- देश में पर्यटकों को आकर्षित करने के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले कार्य के प्रति गंभीरता उत्पन्न करना।
- पर्यटकों एवं सेवा-प्रदाताओं की पर्यटन-संसाधनों संबंधी अपेक्षा को पूरा करने के लिए प्रबंधकीय सिद्धांतों के प्रयोग की व्याख्या करना।
- वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए चिरस्थायी पर्यटन के सिद्धांतों को लागू करके चहुमुखी विकास प्रदान करना।
- आर्थिक विकास, मानव विकास, सामाजिक समरसता, अंतरराष्ट्रीय समझ, क्षेत्रीय विकास और ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता के विस्तार के लिए पर्यटन उद्योग के महत्व को समझना।
- पर्यटन उद्योग की उन्नति एवं विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक उथल-पुथल के बीच टिके रहने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका को आत्मसात करना।
- आधुनिक यात्रा-एजेंसियों और पर्यटन प्रचालकों द्वारा देश एवं पर्यटन-स्थल की छवि निर्मित करने, रोजगार के अवसर पैदा करने तथा देश के आर्थिक विकास के लिए विदेशी मुद्रा पैदा करने में इनकी भूमिका को विकसित करना एवं सराहना करना।
- व्यावसायिक तरीके से संबंधित जानकारी देने में यात्रा व्यापार उद्योग के महत्त्व की रूपरेखा बनाना।
- अतिथियों को अतिथि-सत्कार उद्योग द्वारा सेवाएँ प्रदान करने में दिए गए योगदान को समझना।
- अतिथि सत्कार उद्योग द्वारा देश के लिए राजस्व पैदा करने में दिए गए योगदान को समझना।

3. दृष्टिकोण

शिक्षार्थियों में पर्यटन और संबंधित क्षेत्रों में पर्यटन के प्रति अति प्रासंगिक और व्यावसायिक दृष्टिकोण निर्मित करने हेतु सैद्धांतिक और व्यावसायिक अनुभव देने की दृष्टि से इस पाठ्यक्रम को तैयार किया गया है। यद्यपि पाठ्यक्रम पर्यटन से जुड़े मुख्य मुद्दों; जैसे - संस्कृति और विरासत, पर्यटक स्थल और आकर्षण, यातायात और अतिथि सत्कार की सेवाएँ, यात्रा एजेंसी और यात्रा प्रचालन इत्यादि संसाधनों की उपलब्धता, पर केंद्रित है। तथापि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के समकालीन विकास पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। विषयवस्तु में विभिन्न प्रकार के पर्यटनों और पर्यटकों को शामिल किया गया है। यात्रा एजेंसी, यात्रा-प्रचालकों और अतिथि-सत्कार सेवा पर विभिन्न मॉड्यूल का लक्ष्य इस उभरते क्षेत्र में शिक्षार्थियों को रोज़गार दिलाना है। पाठ्यक्रम अंतर्विषयक दृष्टिकोण का भी पालन करता है तथा अन्य संबंधित विषयों से कुछ सामग्री ली गई है।

I. पाठ्यक्रम स्वयं शिक्षण सामग्री, व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों, श्रव्य-दृश्य कार्यक्रमों का अनूठा मेल है तथा शिक्षार्थी के व्यापक-निरंतर आकलन पर बल देता है।

II. यह केस स्टडी के उपागम का प्रयोग करता है जिससे शिक्षार्थी यात्रा एजेंसियों, यात्रा-प्रबंधन, समारोहों के प्रबंधन तथा कांफ्रेंसों एवं प्रदर्शनियों से रू-ब-रू हो पाता है।

III. इसमें पर्यटन के अध्ययन को सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक समझ के माध्यम से और प्रबंधन के परिप्रेक्ष्य में शामिल किया गया है, पर्यटन की वृद्धि और विकास में इनकी प्रासंगिकता को भी उजागर करने पर ध्यान दिया गया है।

IV. शिक्षार्थियों को व्यापक रूप से व्यवहारोन्मुख बनाने के लिए शिक्षा उद्योग में समन्वय पर भी ध्यान दिया गया है जो शिक्षार्थियों के लिए रोज़गार बढ़ाने में सहायक होगा।

V. पूरे पाठ्यक्रम में पर्यटन को एक संसाधन, व्यवसाय और उद्योग के रूप में देखा गया है।

4. पाठ्यक्रम-संरचना

प्रत्येक मॉड्यूल के लिए निर्धारित अंक एवं अध्ययन-समय इस प्रकार है –

क्रमांक	मॉड्यूल का शीर्षक	अंक	अध्ययन समय (घंटों में)
1.	पर्यटन के आधार	20	50
2.	पर्यटन के सांस्कृतिक आयाम	16	40
3.	भारत में पर्यटन के सांस्कृतिक एवं धरोहर संबंधी दृष्टिकोण	18	41
4.	पर्यटन आकर्षण के रूप में प्राकृतिक विविधता	18	41
5.	पर्यटन व्यवसाय का प्रबंधन	16	40
6.(A) 6. (B)	यात्रा एवं पर्यटन संचालन व्यापार अथवा अतिथि-सत्कार प्रबंधन	12 12	28 28
	कुल	**100**	**240**

5. पाठ्यक्रम-विवरण

माड्यूल-1: पर्यटन के आधार

अंक : 20 **अध्ययन समय : 50 घंटे**

दृष्टिकोण

शिक्षार्थियों को पर्यटन के मूलभूत सिद्धांतों से परिचित करवाने के लिए इस मॉड्यूल को विकसित किया गया है। इससे शिक्षार्थियों को पर्यटन को एक कारोबार के रूप में समझने में सहायता मिलेगी। उन्हें पर्यटन के विभिन्न पक्षों; जैसे – भ्रमण, अवकाश, दृश्यावलोकन, जनपर्यटन इत्यादि से परिचित करवाएगा। वे लोगों द्वारा समझे जाने वाले यात्रा के विभिन्न रूपों, सिद्धांतों और अवकाश के बारे में अपनी धारणा विकसित कर पाएँगे। वे सीख पाएँगे कि पर्यटन-उत्पाद किन बातों पर आधारित होते हैं तथा किस प्रकार आर्थिक और सामाजिक विकास द्वारा प्रभावित होते हैं।

1. पर्यटन का विकास
2. पर्यटन उद्योग एवं इसका गठन
3. पर्यटन का प्रभाव
4. यात्रा और पर्यटन : भूगोल के मौलिक तत्व
5. पर्यटन के लिए परिवहन

माड्यूल-2: पर्यटन के सांस्कृतिक आयाम

अंक : 16 **अध्ययन समय : 40 घंटे**

दृष्टिकोण

मॉड्यूल को इस प्रकार तैयार किया गया है कि शिक्षार्थी पर्यटन के सांस्कृतिक आयामों से परिचित हों। यह मॉड्यूल भारतीय संस्कृति और विरासत की पूरी तस्वीर प्रस्तुत करता है जिसमें कला और वास्तुकला पर विशेष बल दिया गया है। इस मॉड्यूल में शिक्षार्थियों को भारतीय वास्तुकला और पर्यटन के आकर्षणों के बारे में कुछ रोचक तथ्य जानने के लिए उत्प्रेरित किया गया है। यह मॉड्यूल कुछ लोकप्रिय और यूनेस्को द्वारा धरोहर घोषित किए स्थलों से न केवल भारत अपितु वैश्विक स्तर पर शिक्षार्थियों को परिचित करवाता है। यह भारतीय संस्कृति और विरासत को समझने का एक प्रयास है जो आगे चल कर पर्यटकों को इन स्थानों के देखने पर एक समझ प्रदान करने में सहायता करेगा।

6. भारतीय संस्कृति और धरोहर की समझ
7. भारत की मंचीय कला की विरासत
8. पर्यटकों को लुभाती भारतीय वास्तुकला

माड्यूल-3: भारत में पर्यटन के सांस्कृतिक एवं धरोहर संबंधी दृष्टिकोण

अंक : 18 **अध्ययन समय : 41 घंटे**

दृष्टिकोण

इस मॉड्यूल में हम पर्यटन के सांस्कृतिक और विरासत संबंधी पक्षों को लेंगे। इसका उद्देश्य शिक्षार्थियों को भारत की अनंत काल से चली आ रही विरासत में मिली परंपराओं से परिचित करवाना है। इस सामाजिक और सांस्कृतिक अंतर्निवेश से देश में आने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ाने में सहायता मिलती है, क्योंकि वे देश के इतिहास से परिचित होते हैं तथा स्वयं को दर्शनीय स्थलों, ललित कलाओं, मंचीय कलाओं में से किसी से जोड़ सकते हैं - जिनका मूल अतीत के साथ संबंध है।

9. भारत में संस्कृति और धरोहर-I: हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म
10. भारत में संस्कृति और धरोहर-II: सिख, इस्लाम और ईसाई धर्म
11. भारत के सांस्कृतिक आकर्षण

माड्यूल-4: पर्यटन आकर्षण के रूप में प्राकृतिक विविधता

अंक : 18 **अध्ययन समय : 41 घंटे**

दृष्टिकोण

यह मॉड्यूल भारत में प्राकृतिक विविधता के पर्यटकीय आकर्षण पर केंद्रित है। विविध भौगोलिक स्थलों की स्थिति पर्यटन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं - से परिचित कराना इसका उद्देश्य है। यह मॉड्यूल न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में पर्यटन की उन्नति और विकास पर प्रकाश डालता है।

12. भारत में पर्यटन के प्राकृतिक आकर्षण
13. भारत में पर्यटन की प्रगति और प्रतिरूप
14. विश्व में पर्यटन का विकास और स्वरूप

माड्यूल-5: पर्यटन व्यवसाय का प्रबंधन

अंक : 16 **अध्ययन समय : 40 घंटे**

दृष्टिकोण

इस मॉड्यूल का उद्देश्य शिक्षार्थियों में पर्यटन के मूल प्रबंधकीय सिद्धांतों और व्यवहारों के प्रति समझ पैदा करके उनके व्यावहारिक निर्णय तथा निर्माण कौशल को बढ़ाना तथा पर्यटन क्षेत्र में चिरस्थायी और व्यावसायिक प्रबंधन की संस्कृति को निर्मित करना है। प्रबंधन के सभी मुख्य सक्रिय क्षेत्रों के सिद्धांतों, प्रक्रियाओं और व्यवहारों; जैसे - विपणन, वित्तीय और मानव संसाधनों की मूल समझ प्रदान करने के साथ-साथ यह मॉड्यूल शिक्षार्थियों के संवाद-कौशल और उनके व्यक्तित्व को निखारने का प्रयास करता है।

यह पर्यटन के प्रभाव तथा सेवाक्षेत्र के रूप में उदय को भी उजागर करता है।

15. पर्यटन प्रबंधन
16. मानव संसाधन प्रबंधन-I
17. मानव संसाधन प्रबंधन-II
18. संप्रेषण तथा व्यक्तित्व-विकास
19. पर्यटन-विपणन

माड्यूल-6(A): यात्रा एवं पर्यटन संचालन व्यापार

अंक : 12 **अध्ययन समय : 28 घंटे**

दृष्टिकोण

यह मॉड्यूल शिक्षार्थियों को यात्रा-एजेंसी एवं यात्रा प्रचालकों के भूतकालिक और वर्तमान व्यवसायिक व्यवहारों से परिचित

करवाता है। इससे यूरोप और उत्तरी अमेरिका में संगठित पैकेज के उदभव को समझने में सहायता मिलेगी। यह 19वीं और 20वीं सदी में भारत सहित विश्व में यात्रा एजेंसी व्यवसाय के विकास और क्रमिक प्रगति के विषय में विहंगम दृष्टि प्रदान करता है। यह शिक्षार्थियों को यात्रा-संबंधी सेवाओं की बढ़ती मांग को समझने में सहायता करता है। मुख्य रूप से इसका ध्यान यात्रा-एजेंसी कारोबार को ग्राहकों की संतुष्टि और लाभ का वृद्धि के संगठित और व्यवसायिक तरीके पर केंद्रित है। अंत में मॉड्यूल यात्रा-एजेंसी व्यवसाय के विभिन्न आयामों का समुचित उदाहरणों के साथ वर्णन करता है। इसमें यात्रा-संबंधी सेवाओं; जैसे - कोई कार अथवा बस किराए पर लेना, हवाई, रेल अथवा बस की टिकटों को बुक करना अथवा कैंसल करना अथवा होटल में आपके अथवा दोस्तों या संबंधित व्यक्तियों के लिए होटल बुक करना इत्यादि की जानकारी है। यह पर्यटन में थोक और खुदरा की जानकारी यात्रा एजेंटों के माध्यम से प्रदान करता है, ताकि यात्रा संबंधी सारी सुविधाएँ प्राप्त हो सकें।

20. यात्रा एजेंसियों के कार्य एवं पर्यटन-संचालन व्यापार
21. यात्रा-एजेंसियों के कार्य एवं पर्यटन-संचालन
22. यात्रा-विवरण एवं पर्यटन पैकेजिंग

माड्यूल-6(B): अतिथि-सत्कार प्रबंधन

अंक : 12 **अध्ययन समय : 28 घंटे**

दृष्टिकोण

यह मॉड्यूल अतिथि सत्कार उद्योग की अनिवार्यताओं का वर्णन करता है, ताकि शिक्षार्थी प्रबंधन से अच्छी तरह परिचित हो सकें। यह अतिथि-सत्कार क्षेत्र और इसके विभिन्न कार्यों को समझने में सहायता देता है। भ्रमण को सहयोग देने वाले अतिथि-सत्कार क्षेत्र के साथ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जुड़े सभी क्षेत्रों के बारे में जागरूकता प्रदान करता है। पर्यटन को प्रभावित करने वाले और सहयोग देने वाले विभिन्न अतिथि-सत्कार क्षेत्र हैं। सहज प्रचालन के लिए अतिथि-सत्कार के विभिन्न क्षेत्रक जुड़े हुए हैं।

होटल क्षेत्र में प्रयुक्त विशेष शब्दावली और होटल क्षेत्र में अतिथि-सत्कार पर व्यापक दृष्टि भी इस मॉड्यूल का उद्देश्य है।

20. अतिथि सत्कार एवं खान-पान उद्योग
21. मुख्य कार्यालय का परिचालन
22. होटल के सहायक संचालक

वैकल्पिक मॉड्यूलों को इस प्रकार तैयार किया गया है कि शिक्षार्थी को अपनी पसंद के किसी एक मॉड्यूल को चुन सकते हैं। इन दो मॉड्यूलों को पर्यटन की प्रगति और प्रतिमान, पर्यटन के सांस्कृतिक और विरासत पक्ष की गहरी समझ देने के लिए बड़ी सावधानी से तैयार किया गया है।

6. अध्ययन-योजना

आपको पर्यटन-पाठ्यक्रम के चार भागों में स्व-शिक्षण सामग्री (एस.एल.एम.) अर्थात भाग 1, 2, 3 और 4 में मुद्रित रूप में उपलब्ध है।

- दृश्य और श्रव्य कार्यक्रमों के रूप में अनुपूरक सामग्री
- एन.आई.ओ.एस. की वेबसाइट (www.nios.ac.in) के साथ-साथ यू-टयूब पर पर्यटन संबंधी वीडियो सामग्री उपलब्ध है।
- निजी संपर्क कार्यक्रम (PCP) हेतु आप अपने निकट के अध्ययन-केंद्र से संपर्क कर सकते हैं। व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों के अतिरिक्त मुक्त विद्या वाणी वेबकास्ट के माध्यम से जीवंत श्रव्य पाठ प्रसारित किए जाते हैं जहाँ एन.आई.ओ.एस. की वेबसाईट (www.nios.ac.in) के माध्यम से पहँचा जा सकता है।

7. मूल्यांकन-योजना

शिक्षार्थी का मूल्यांकन निरंतर और व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से ट्यूटर मार्क्ड एसाइनमेंट (टी.एम.ए.) के रूप में सार्वजनिक परीक्षा द्वारा किया जाता है। निम्नलिखित तालिका में विवरण दिया गया है :

मूल्यांकन की विधि	सिलेबस/ सामग्री	समय अवधि	भार
ट्यूटर मार्क्ड एसाइनमेंट (टी.एम.ए.)	एस.एल.एम. के अंतर्गत सारी सामग्री	स्व-निर्धारण	20%
सार्वजनिक/ अंतिम परीक्षा	एस.एल.एम. के अंतर्गत सारी सामग्री	3 घंटे	80%

व्यावसायिक संभावनाएँ

यात्रा और पर्यटन-प्रबंधन से जुड़े व्यावसायियों के लिए विभिन्न रोजगार उपलब्ध हैं।

सरकारी क्षेत्र में आपको पर्यटन बोर्डों (राज्य और केंद्रीय बोर्ड), राजकीय पर्यटन सूचना-कार्यालयों, राजकीय होटलों, विमानन, परिवहन सेवाओं में जॉब मिल सकती है। निजी क्षेत्र में आपको यात्रा-एजेंसियों में टूर प्रचालक अथवा यात्रा परामर्शदाता के रूप में, विमानन, हवाई अड्डों, ट्रेवल और टिकटिंग वेबसाईट्स, वीज़ा और यात्रा-प्रपत्र सेवा फर्मों, होटलों, रिजार्ट्स, यात्री सूचना-केंद्रों, क्रूज इत्यादि में जॉब मिल सकती है।

यदि किसी की पहुँच उद्यमिता कौशल और अच्छे वित्तीय संसाधनों तक है तो वह अपनी निजी यात्रा एजेंसी, टिकटिंग फर्म, भ्रमण एजेंसी, यात्रा परामर्श सेवा, पर्यटक सूचना सेवा इत्यादि प्रारंभ कर सकता है।

यात्रा और भ्रमण व्यावसायियों के लिए निम्नलिखित सामान्य व्यवसाय उपलब्ध हैं -

- एयर होस्टेस
- एयरलाईन कर्मचारी/एयरपोर्ट स्टाफ़
- ग्राहक सेवा प्रबंधक
- उद्यमी
- समारोह प्रबंधक
- टिकट देने वाला स्टाफ़
- टूर (भ्रमण) गाईड
- टूर प्रचालक
- टूर एजेंट
- यात्रा एजेंसी स्टाफ
- यात्रा और पर्यटन परामर्शक
- यात्रा-प्रबंधक
- पर्यटन प्रोत्साहक/विपणनकर्ता

भारत में यात्रा और पर्यटन से जुड़े पाठ्यक्रम निम्नलिखित प्रारूपों में उपलब्ध हैं-

- स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम
- डिप्लोमा पाठ्यक्रम
- सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम
- स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम
- स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम
- स्नातकोत्तर सर्टीफ़िकेट पाठ्यक्रम

भारत में यात्रा और पर्यटन के पाठ्यक्रम

- स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम
- सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम
- स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम
- डिप्लोमा पाठ्यक्रम
- स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम
- स्नातकोत्तर सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम

स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम

- बी.बी.ए. इन हॉस्पिटेलिटी एंड ट्रैवल मैनेजमेंट
- बी.बी.ए. इन एयर ट्रैवल मैनेजमेंट
- बैचलर ऑफ़ टूरिज़्म स्टडीज़
- बैचलर ऑफ़ टूरिज़्म एडमिनिस्ट्रेशन
- बी. काम. ट्रैवल एंड टूरिज़्म मैनेजमेंट
- बी. ए. ट्रैवल एंड टूरिज़्म
- बी.ए. इन ट्रैवल एंड टूरिज़्म मैनेजमेंट
- बी.ए. इन हॉस्पिटेलिटी, ट्रैवल एंड टूरिज़्म मैनेजमेंट
- बी.एस.सी. इन ट्रैवल एंड टूरिज़्म मैनेजमेंट
- बी.ए. टूरिज़्म स्टडीज़
- बी.एस.सी. इन हॉस्पिटेलिटी एंड ट्रैवल मैनेजमेंट
- बी.बी.ए. इन ट्रैवल एंड टूरिज़्म मैनेजमेंट

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

- डिप्लोमा इन ट्रैवल एंड टूरिज़्म मैनेजमेंट
- डिप्लोमा इन हॉस्पिटेलिटी एंड ट्रैवल मैनेजमेंट
- डिप्लोमा इन टूरिज़्म स्टडीज
- डिप्लोमा इन एविएशन हॉस्पिटेलिटी एंड ट्रैवल मैनेजमेंट
- डिप्लोमा इन टूरिस्ट गाईड
- डिप्लोमा इन टूरिज़्म एंड टिकटिंग
- डिप्लोमा इन एयरफेयर एंड टिकटिंग

सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम

- सर्टीफिकेट इन ट्रैवल एंड टूरिज़्म मैनेजमेंट
- सर्टीफिकेट इन ट्रैवल मैनेजमेंट
- सर्टीफिकेट इन टूर गाईड
- सर्टीफिकेट इन टूरिज़्म मैनेजमेंट

प्रश्न-पत्र प्रारूप

विषय : पर्यटन **स्तर : उच्चतर माध्यमिक**

अधिकतम अंक : 100

1. उद्देश्यानुसार अंक विभाजन

उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
ज्ञान	26	26
समझ	50	50
व्यावहारिक प्रयोग	24	24
योग	**100**	**100**

2. प्रश्नों के प्रकानुसार अंक विभाजन

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के अंक	योग
दीर्घ उत्तरीय	7	6	42
लघु उत्तरीय	9	4	36
अति लघु उत्तरीय	11	2	22
योग	**27**		**100**

3. पाठ्य-सामग्री का विषयानुसार अंक विभाजन एवं समय प्रबंधन

क्रमांक	मॉड्यूल का नाम	अंक	अध्ययन अवधि (घंटों में)
1.	पर्यटन के आधार	20	50
2.	पर्यटन के सांस्कृतिक आयाम	16	40
3.	भारत में पर्यटन के सांस्कृतिक एवं धरोहर संबंधी दृष्टिकोण	18	41
4.	पर्यटन आकर्षण के रूप में प्राकृतिक विविधता	18	41
5.	पर्यटन व्यवसाय का प्रबंधन	16	40
6.(A)	यात्रा एवं पर्यटन संचालन व्यापार	12	28
	अथवा		
6. (B)	अतिथि-सत्कार प्रबंधन	12	28
	योग	**100**	**240**

उच्चतर माध्यमिक स्तर
पर्यटन
प्रश्न-पत्र का नमूना

समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

1. बहुआयामी पर्यटन की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 2×1=2

2. धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के कोई दो बिंदु लिखिए। 2×1=2

3. यात्रा और पर्यटन में अंतर स्पष्ट कीजिए। 1+1=2

4. मैसूर का महल वास्तुकला की सबसे लोकप्रिय शैलियों में से एक है- दो उदाहरणों से इस कथन की पुष्टि कीजिए। 2×1=2

5. सांची के बौद्ध स्तूप की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 2×1=2

6. दो उदाहरण देकर मुख्य पर्यटक सर्किटों के महत्त्व का उल्लेख कीजिए। 2×1=2

7. ''आर्य युगीन समाज में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था'' - दो तर्कों से इस कथन को सिद्ध कीजिए। 2×1=2

8. किसी थोक यात्रा-एजेंसी के बारे में निम्नलिखित में से कौन से दो कथन 'सत्य' हैं? 2×1=2

   (क) यह अपने एयर आऊटलेट्स के माध्यम से ग्राहकों को सीधे अपने पैकेज टूर बेच सकती है।

   (ख) इसके पास विदेशी मुद्रा विनिमय की सुविधा होती है।

   (ग) यह दर्शनीय स्थल-भ्रमण एवं भ्रमण-पर्यटन का आयोजन करती है।

   (घ) यह स्थलीय सेवाएँ प्रदान करने की कम इच्छुक होती है।

9. व्यक्तित्व-विकास के लिए आवश्यक कोई दो कौशल सुझाइये। 2×1=2

10. किसी यात्री के लिए 'यात्रा बीमा' के महत्व का स्पष्टीकरण कीजिए। 2×1=2

11. राष्ट्रीय राजमार्गों और राज्य राजमार्गों में अंतर स्पष्ट कीजिए। 2×1=2.

12. संचार के मार्ग में आने वाले चार अवरोधकों का उल्लेख कीजिए। 4×1=4

13. भारत में पर्यटन से जुड़ी किन्हीं चार हाल के प्रवृत्तियों की व्याख्या कीजिए। 4×1=4

14. स्थान 'क' की स्थित 40° पूर्व देशांतर है जहाँ का समय प्रातकाल 10 बज रहा है। एक अन्य स्थान 'ख' 150° पूर्व देशांतर पर स्थित है। 'ख' स्थान पर क्या समय होगा? 4×1=4

15. विज्ञापन और बिक्री प्रोत्साहन में अंतर स्पष्ट कीजिए। 2+2=4

16. किसी यात्रा कार्यक्रम में चार 'न किए जाने वाले' कार्यों को उजागर कीजिए। 4×1=4

17. आपके विचार से धार्मिक उत्सवों के अतिरिक्त कुछ अन्य दिनों को राष्ट्रीय उत्सवों के रूप में मनाने के क्या कारण हो सकते हैं? अपने उत्तर के पक्ष में कोई दो कारण लिखिए। 2+2=4

18. मानव संसाधन की योजना बनाने की आवश्यकता के कोई चार कारण सूचीबद्ध कीजिए। 4×1=4

19. विश्व में पर्यटन की प्रगति को प्रभावित करने वाले किन्हीं चार कारकों की व्याख्या कीजिए। 4×1=4

20. ''किसी अन्य उद्योग की भाँति, अतिथि-सत्कार उद्योग के कई अनियंत्रित घटक हैं जो इसे प्रभावित करते हैं।'' - चार बिंदुओं के आधार पर इस कथन का विश्लेषण कीजिए। 4×1=4

21. पर्यटन के किन्हीं तीन-तीन सकारात्मक और नकारात्मक आर्थिक प्रभावों का वर्णन कीजिए। 3+3=6

22. भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कोई छह उपाय सुझाइए। 6×1=6

23. उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि क्यों और किस प्रकार धार्मिक यात्रा केन्द्र पर्यटक स्थल का दर्जा प्राप्त कर लेते हैं? 6×1=6

24. पर्यटन को प्रभावित करने वाले किन्हीं छह अति महत्वपूर्ण घटकों की चर्चा कीजिए। 6×1=6

25. ''पर्यटन में मानव संसाधनों का प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है'' किन्हीं छह तर्कों की सहायता से कथन को न्यायोचित ठहराइए। 6×1=6

26. पैकेज टूर निर्मित करने की प्रक्रिया में पालन किए जाने वाले किन्हीं छह चरणों का वर्णन कीजिए। 6×1=6

27. सूफ़ी दरगाहों ने भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने में कैसे सहायता की? वर्णन कीजिए। 6×1=6

उच्चतर माध्यमिक स्तर
पर्यटन
नमूने के प्रश्न-पत्र के मूल्यांकन बिंदु

1. बहुआयामी पर्यटन की विशिष्ट विशेषताएँ -

   (i) यह कई देशों में आर्थिक गतिविधि विकसित करने का लाभकारी एवं सक्षम साधन है।

   (ii) यह पर्यटकों की देखभाल करने के लिए भलीभाँति व्यवस्थित है। 2×1=2

2. धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण

   संविधान भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित करता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पसंद के धर्म का प्रचार करने एवं उसके अनुरूप व्यवहार करने की स्वतंत्रता है। राज्य का अपना कोई धर्म नहीं है और राज्य सभी धर्मों के साथ एक समान व्यवहार करता है। धर्म के आधार पर किसी के साथ कोई भेद-भाव नहीं किया जाता। 2

3. जब हम किसी उद्देश्य के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए निकलते हैं तो उसे यात्रा कहते हैं।

   दूसरी ओर, पर्यटन में किसी निश्चित स्थल की यात्रा और वहाँ पर रुकना शामिल होता है। प्रायः यह अपने घर और कार्यस्थल से अलग होता है। 1+1=2

4. (i) वास्तुकला शैली इंडो-सारसेनिक है।

   (ii) इसमें हिंदु, मुस्लिम, राजपूत और गोथिक शैली की वास्तुकलाओं का मिश्रण है। 1+1=2

5. दो विशेषताएँ -

   (i) स्तंभों पर पालिश की हुई है।

   (ii) दरवाजों पर जातक कथाएँ खुदी हुई हैं। 1+1=2

6. (i) ये आवागमन को सुविधापूर्ण बनाता है।

   (ii) यदि वे एक की मार्ग पर स्थित हों; जैसे - दिल्ली-आगरा-जयपुर-दिल्ली तो विशेष प्रबंध किए जा सकते हैं।

   (iii) यह समय की बचत करता है और सस्ता भी होता है। (कोई दो) 2×1=2

7. (i) वे सभाओं में उपस्थिति हो सकती थीं तथा बहस में भाग ले सकती थीं।

   (ii) वे देवताओं को बलि चढ़ा सकती थीं तथा अपने पतियों के साथ यज्ञ में भाग लेती थीं। 2×1=2

8. कथन (क) और (ख) थोक यात्रा एजेंसी से जुड़े हैं। 1+1=2

9. संचार कौशल और व्यक्तिगत प्रस्तुति 1+1=2

10. यात्रा बीमा यात्री के व्यक्तिगत और सामान के नुकसान के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करता है। यह यात्री को जीवन एवं सामान की क्षति होने पर या कार्यक्रम रद्द होने की स्थिति में क्षतिपूर्ति का सुरक्षा कवच प्रदान करता है। 2×1=2

11. राष्ट्रीय राजमार्ग

(i) राष्ट्रीय राजमार्ग वे प्रमुख सड़कें है जो राज्य की राजधानियों को देश के प्रमुख शहरों से जोड़ती हैं।

(ii) राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लम्बाई 70934 किमी. है।

राज्य राजमार्ग

(i) राज्य राजमार्ग राज्य की राजधानी को विभिन्न जिला मुख्यालयों, महत्वपूर्ण शहरों और कस्बों को जोड़ते हैं।

(ii) इन राजमार्गों की कुल लम्बाई राष्ट्रीय राजमार्गों से कहीं अधिक है। 4×½ =2

12. संचार में अवरोधक –

(i) शोर

(ii) दूरी

(iii) सूचनाओं का अधिक होना

(iv) संचार के माध्यम

(किन्हीं चार का संक्षिप्त विवरण) 4×1=4

13. भारत में पर्यटन की नवीन/हाल की प्रवृतियां

(i) भारत विदेशी पर्यटकों के लिए एक प्रिय गंतव्य स्थल है।

(ii) पर्यटक स्थलों एवं आकर्षणों की विविधता के कारण अधिकाधिक पर्यटक भारत आते हैं।

(iii) भारत एक सस्ता पर्यटक स्थल है।

(iv) आर्थिक कारक ने भारत में चिकित्सकीय पर्यटन को बढ़ावा दिया है।

(v) भारत में विदेशी पर्यटक अधिकतम समय तक रुकते हैं।

(कोई चार) 4×1=4

14. 'क' और 'ख' स्थान पर देशांतर रेखाओं में अंतर 150°– 40° = 110° अर्थात 110×4 = 440 मिनट अर्थात 7 घंटे 20 मिनट

चूंकि 'क' 'क' के पश्चिम में है इसलिए 'ख' का समय 'क' से अधिक होगा। अत: 'ख' का समय 10 + 7 घंटे 20 मिनट 17 घंटे 20 मिनट अर्थात सायं के 5.20 बजे होगा। 2+2=4

15 विज्ञापन

(i) विज्ञापन का स्वभाव गैर-वैयक्तिक होता है।

(ii) इनका उद्देश्य मांग पैदा करना होता है।

(iii) यह एक ही समय पर बहुत से लोगों को निशाने पर रखता है।

(iv) विज्ञापन से तुरंत प्रतिक्रिया (फीडबैक) नहीं मिलती। 4×1/2 =2

बिक्री को बढ़ावा देना

(i) यह स्वभाव में वैयक्तिक होता है।

(ii) इसका उद्देश्य बिक्री बढ़ाना होता है।

(iii) विज्ञापन की तुलना में इसका क्षेत्र सीमित होता है।

(iv) बिक्री बढ़ाने से कंपनियों को तुरन्त (फीडबैक) मिलती है। 4×1/2 =2

16 किसी यात्रा कार्यक्रम में 'न किए जाने' वाले कार्य

(i) बहुत अधिक विवरण शामिल नहीं करना चाहिए जिससे भ्रम पैदा होता हो।

(ii) निर्देशों को अस्पष्ट नहीं छोड़ना चाहिए।

(iii) समूह की प्रकृति जैसे आयु वर्ग, शारीरिक अक्षमता, खान-पान की आदतें और भाषा इत्यादि को नहीं भूलना चाहिए।

(iv) होटल की सिफ़ारिश पर सीमाएँ न लाँधें।

(v) ऐसी दुकानों को सम्मिलित न किया जाए जो पंजीकृत न हों तथा बिना अनुमति प्राप्त किए वर्जित क्षेत्रों में नहीं जाइए।

(vi) रेस्टोरेण्ट्स की सिफ़ारिश सलाह को न भूलें।

(कोई चार) 4×1=4

17. (i) उन्हें ऐतिहासिक घटनाओं को मनाने के लिए आयोजित किया जाता है; जैसे - 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

(ii) 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में धूमधाम से पूरे देश में मनाया जाता है।

(iii) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्मदिन 2 अक्तूबर को मनाया जाता है।

(कोई दो) 2+2=4

18. कारण

(i) भावी निजी आवश्यकता।

(ii) उच्च कोटि के प्रतिभाशाली कर्मियों को निर्मित करना।

(iii) कमजोर वर्गों की रक्षा हेतु।

(iv) कंपनी की अंतरराष्ट्रीय विस्तारी रणनीति के लिए।

(v) यह कर्मियों के कार्य की नींव है।

(कोई चार) 4×1=4

19. कारक

(i) पर्यटकों की खर्च किए जाने योग्य अधिक आय।

(ii) सवैतनिक अवकाश अथवा अवकाश की पात्रता।

(iii) यात्रा खर्च

(iv) प्रौद्योगिकी

(v) पैकेज देने वाले टूर प्रचालक

(vi) अद्यतन ज्ञान/मीडिया

(vii) विकासशील देशों में मध्यम वर्ग का बढ़ना

(किन्हीं चार का व्याख्या के साथ उल्लेख) 4×1=4

20. अतिथि सत्कार उद्योग को प्रभावित करने वाले घटक –

(i) आर्थिक घटक

(ii) कानूनी परिवर्तन

(iii) प्रौद्योगिकी

(iv) प्रतिस्पर्धा

(चारों विश्लेषण सहित) 4×1=4

21. नकारात्मक आर्थिक प्रभाव

(i) पर्यटन में बहुत छुपी कीमते होती हैं जो लक्ष्य देशों पर बुरा आर्थिक प्रभाव डालती है।

(ii) निर्धन और विकासशील देशों में धन पर्यटन के ढ़ाँचे को विकसित करने पर खर्च किया जाता है।

(iii) सभी कुछ शामिल रखने वाले पैकेज टूर में स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभ कमाने का कोई विकल्प नहीं बचता।

(iv) कोई अन्य नकारात्मक प्रभाव।

(कोई तीन) 3×1=3

सकारात्मक आर्थिक प्रभाव

(i) पर्यटन द्वारा अर्जित आय अन्य आर्थिक क्षेत्रों में वृद्धि को बढ़ावा दे सकती है।

(ii) विदेशी पर्यटकों से विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती है।

(iii) इससे रोज़गार के अवसर पैदा किए जाते हैं।

(iv) कोई अन्य सकारात्मक प्रभाव।

(कोई तीन) 3×1=3

22. (i) स्थानों की स्थिति, दूरी और पर्यटक-स्थलों के किराये की सही सूचना देनी चाहिए।

(ii) स्थानों से जोड़ने वाली बस, रेल अथवा हवाई जहाज़ की सूचना उपलब्ध होनी चाहिए।

(iii) सूचना-पट्ट, इंटरनेट और टेलीफ़ोन पर आगमन और प्रस्थान की नवीनतम जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए।

(iv) सहायक डेस्क चौबीस घंटे उपलब्ध रहना चाहिए।

(v) वृद्ध और शारीरिक रूप से अक्षम पर्यटकों के साथ ठीक व्यवहार किया जाना चाहिए।

(vi) सड़कों, रेलवे स्टेशनों और हवाई अड्डों पर मानक चिह्न और संकेत विकसित करके लगाए जाने चाहिए।

(vii) इको फ्रेंडली (पर्यावरण मित्र) टर्मिनल विकसित करने चाहिए।

(viii) सभी टर्मिनल और स्टेशन साफ़-सुधरे और स्वास्थानुकूल होने चाहिए।

(कोई छः बिन्दु) 6×1=6

23. (i) धर्म और तीर्थ यात्राएँ मानव-जीवन का महत्वपूर्ण भाग हैं।

(ii) लोग अपने देवियों और देवताओं से जुड़े रहते हैं।

(iii) ओडिसा में पुरी हिंदुओं के चार धामों में से एक हैं।

(iv) मोनेस्ट्रीज और विहार।

(v) अमृतसर का स्वर्ण मंदिर।

(vi) हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह। 6×1=6

24. (i) भौगोलिक घटक

(ii) सांस्कृतिक समारोह और उत्सव मनाना

(iii) स्थान की रक्षा और सुरक्षा

(iv) आर्थिक

(v) रहने का स्थान, परिवहन और भोजन इत्यादि सेवाएँ और सुविधाएँ

(vi) पर्यटकों के ठहराव को आरामदायक बनाने वाली सरकारी नीतियाँ

(vii) परिवहन और सुरक्षा के लिए सुविधाएँ

(कोई छः बिन्दु) 6×1=6

25. (i) मानव संसाधन पर्यटन का अविभाज्य अंग है।

(ii) पर्यटन उद्योग विभिन्न क्षेत्रों का मिश्रित रूप है और प्रत्येक क्षेत्र को मानव संसाधन की अपनी आवश्यकता है।

(iii) एक क्षेत्र में भी विशेषज्ञताओं की आवश्यकता होती हैं।

(iv) अलग-अलग रोज़गारों के लिए अलग प्रकार के प्रशिक्षित कार्मिक प्रबंधकों की जरूरत होती है।

(v) पर्यटन के प्रत्यक्ष क्षेत्र को भिन्न प्रकार के प्रशिक्षण की जरूरत होती है।

(vi) पर्यटन और मानव संसाधन अन्तर्मिश्रित होते हैं।

(vii) पर्यटन एक सेवा उद्योग है और इसकी कोई गतिविधि मानव संसाधन के बिना सम्भव नहीं है।

(viii) अन्य कोई सही उत्तर

(कोई छः बिन्दु) 6×1=6

26. टूर पैकेज बनाने के लिए उठाए जाने वाले कदमों का क्रम

(i) बाज़ार-शोध

(ii) यात्रा कार्यक्रम की तैयारी

(iii) पहचान करना

(iv) संपर्क

(v) पैकेज की कीमत लगाना

(vi) टूर पत्रिका

(vii) उत्पादों का विपणन

(viii) प्रलेखन

(कोई छः बिन्दु) 6×1=6

27. (i) श्रद्धालु यहाँ प्रार्थना करने आते हैं - अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए।

(ii) जिन श्रद्धालुओं की इच्छा पूरी हो जाती है वे आभार प्रकट करने आते हैं।

(iii) दिल्ली में बख़्तियार काली का मंदिर - फूल वालों की सैर का महत्वपूर्ण स्थल।

(iv) कश्मीर के हज़रत बल में पैगम्बर हज़रत मोहम्मद साहब के पवित्र बाल रखे हुए हैं।

(v) चरन शरीफ़ हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक है।

(vi) कश्मीर में गेसू दरगाह एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। 6×1=6